एक ऐसी नास्तिक लड़की की कहानी
जो सच जानने निकली थी

क़सम उस वक़्त की

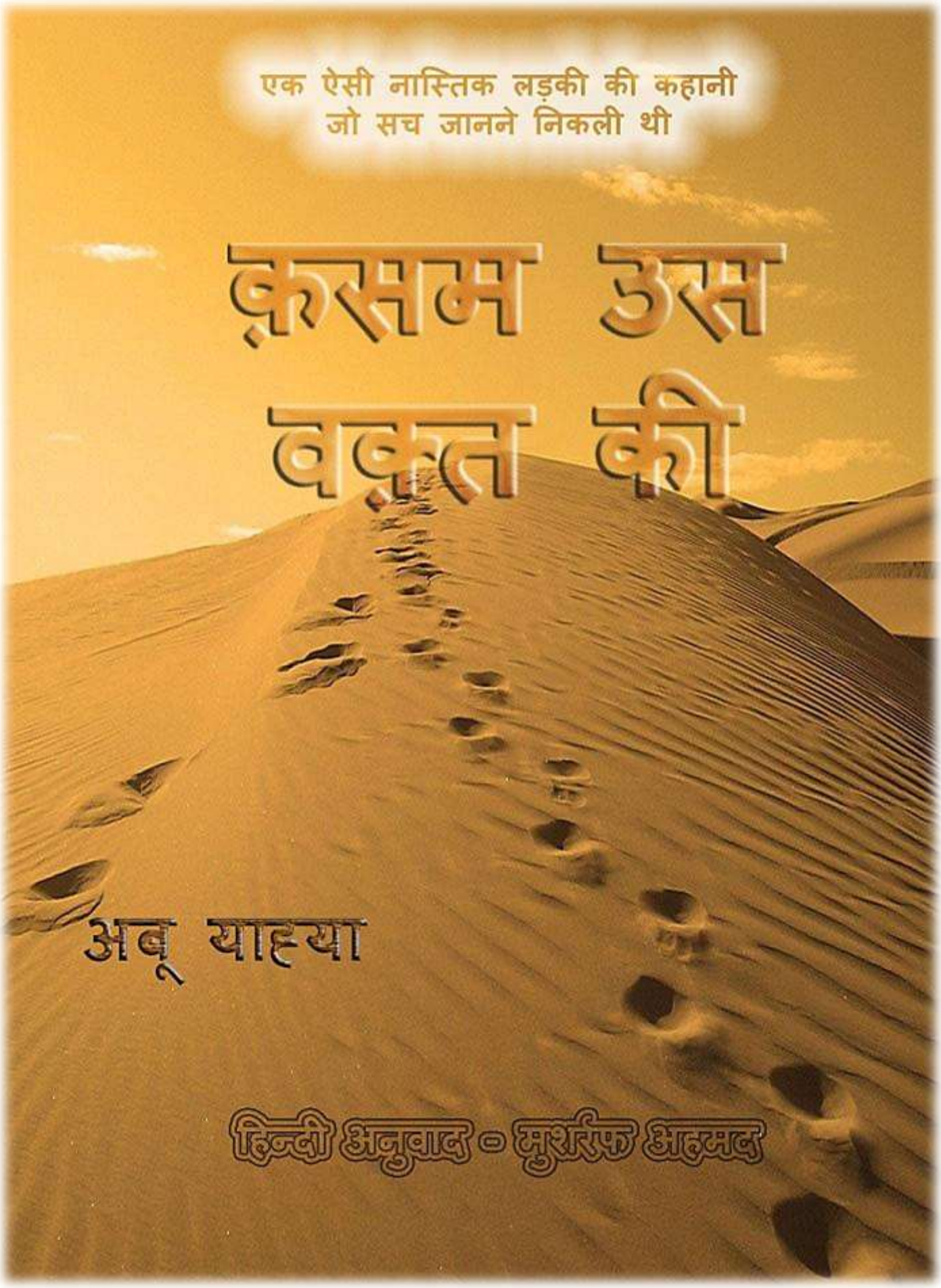

अबू याह्या

हिन्दी अनुवाद - मुशर्रफ अहमद

क़सम उस वक़्त की

- एक ऐसी नास्तिक लड़की की कहानी जो सच जानने निकली थी।
- एक खुदा के सच्चे बन्दे की दास्तान।
- खुदा के होने और क़यामत के आने का ऐसा सुबूत जिसको झुटलाया नहीं जा सकता।
- रसूलों की सच्चाई और उनकी ज़िन्दगी का जिन्दा सुबूत।
- कुफ्र और नास्तिकता के हर सवाल का जवाब हर शक़ का इलाज।
- एक ऐसी किताब जो आप के ईमान को यकीन में बदल दे।
- आज की नौजवान नस्ल के लिए बहतरीन तौहफा।

किताब का नाम _____ क़सम उस वक़्त की

लेखक _____ अबू याह्या

हिन्दी अनुवाद _____ मुशर्रफ अहमद

वेब साईट _____ www.inzaar.org

मूल्य _____

मिलने का पता _____

®सर्वाधिकार लेखक के पास सुरक्षित हैं.

®All rights are reserved to the author.

और जो लोग हमारी राह में कोशिश करेंगे हम उन पर अपनी राहें ज़रूर खोलेंगे

बे शक़ अल्लाह नेक लोगों के साथ है.

(अल-कुरआन 29:69)

विषय सूची — पृष्ठ संख्या

❖ भूमिका >>>>>>>>>> 6

❖ काफ़िर लड़की की एक दुआ >>>>>>>>>> 7

❖ बेलिबासी (नग्न) की ज़िल्लत >>>>>>>>>> 39

❖ फ्राइड की मौत >>>>>>>>>> 56

❖ वल-अस्र - ज़माना गवाह है >>>>>>>>>> 81

❖ पहली कयामत >>>>>>>>>> 96

❖ लम्बे इन्सान और आंधी >>>>>>>>>> 117

❖ पहला क़त्ल >>>>>>>>>> 142

❖ पत्थर तराशने वाले और पत्थर दिल >>>>>>>>>> 154

❖ राख़ और धूल >>>>>>>>>> 171

❖ तीन ना इंसाफी >>>>>>>>>> 184

❖ सच्चाई की कीमत >>>>>>>>>> 201

❖ आखरी चमत्कार >>>>>>>>>> 227

❖ तेरे जैसा कौन है ? >>>>>>>>>> 251

भूमिका

पाठकों की सेवा में "क़सम उस वक़्त की" के नाम से यह नॉविल प्रस्तुत है। अल्लाह के रहमो करम से इस किताब में खुदा के होने और क़यामत के वुजूद को साबित किया गया है और ऐसे साबित किया गया है कि इन्कार की कोई गुंजाइश बाकि नहीं रहती। ज़ाहिर है यह काम एक चमत्कार है जो किसी इन्सान के वश की बात नहीं, लेकिन अल्हम्दुलिल्लाह यह काम काएनात के रब ने अपनी किताब कुरआन मजीद में खुद ही कर रखा है। इस नॉवेल में कुरआन मजीद का यही चमत्कार पेश करने की कोशिश की गई है जो आखरी हद तक सच्चाई को साबित कर देता है। इस मामूली बन्दे के अनुसार कुरआन करीम का यही वो चमत्कार है जो दुनिया रहने तक हर इंसान पर सच्चाई को आखरी हद तक साबित कर देता है। हमारे विद्वान इस चमत्कार को समझते और अपनी किताबों में लिखते रहते हैं लेकिन ज़्यादा तर आम मुसलमान इसको आसानी से समझ नहीं पाते। मगर हर मुसलमान की यह जिम्मेदारी है कि वो इस चमत्कार को समझे और दूसरों को समझाए। इंशा अल्लाह यह नॉविल इस काम को एक कहानी के रूप में आसान करने में बहुत सहायक साबित होगा।

मैंने इसमें कुरआन की असल दलील (तर्क) के साथ साथ कई और पहलु से इस्लाम पर उठाए जाने वाले सवालों के जवाब भी दिए हैं। यह वो सवाल और ऐतराज़ हैं जो बरसों से लोग मेरे सामने रखते आए हैं। मैं जानता हूँ हर जवाब के बाद एक नया ऐतराज़ किया जा सकता है लेकिन कुरआन की जो दलील इस किताब में बयान की गई है वह एक ऐसा ज़िन्दा चमत्कार है जिसका जवाब देना किसी नास्तिक के लिए मुमकिन नहीं।

कुरआन मजीद में यह दलील जगह जगह बिखरी हुई है लेकिन इसके लिए एक सबसे छोटी मगर सबसे व्यापक सूरेह "अल-अस्र" को बुन्याद बना कर मैंने यह नॉविल लिखा है। नॉविल का नाम "क़सम उस वक़्त की" कुरआन मजीद की इसी सूरेह के पहले शब्द "वाल-अस्र" से लिया गया है.

अबू याह्या

काफ़िर लड़की की एक दुआ

"मुझे समझ में नहीं आता कि इस बेवकूफ में नाना अब्बू को क्या खास बात नज़र आई है, क्या अम्मी के बाद वह मेरी ज़िन्दगी भी बर्बाद देखना चाहते हैं?"

गुस्से और झुंझलाहट से भरपूर ये शब्द वो पहली बात थे जो फारिया को देख नाएमा की ज़ुबान से निकले थे, यह फारिया के लिए एक बिल्कुल उसकी उम्मीद से उलट उसका स्वागत हुआ था।

फारिया कुछ देर पहले जब नाएमा के कमरे में दाखिल हुई तो वह किसी गहरी सोच में डूबी अपने बिस्तर पर बैठी हुई थी। उसकी निगाहें खिड़की से बाहर आसमान की ओर बे मक़सद भटक रही थीं। वह अपनी सोच में इतना मगन थी कि उसे फारिया के आने का एहसास भी नहीं हुआ। वह उसके आने से बे खबर अपनी सोचों की दुनिया में खोई रही।

फारिया कुछ देर खड़ी नाएमा को देखती रही, उसे नाएमा के चेहरे पर एक नज़र डालते ही अहसास हो गया कि वे ख्यालों के जिस समुद्र में खोई हुई है वहां सिर्फ लहरें ही नहीं बल्कि किसी बड़े तूफ़ान के आसार भी हैं, उसकी ख़ामोशी जिस तूफान की खबर दे रही थी उसके सारे आसार नाएमा के चेहरे पर बिखरे जाहिर हो रहे थे।

फारिया को यह अंदाजा तो अपने घर पर ही हो गया था कि मामला कुछ गड़बड़ है, आज जैसे ही वह कॉलेज से घर पहुंची तो नाएमा का फोन आ गया कि फ़ौरन मेरे पास चली आओ, पहले तो फारिया समझी कि नाएमा के नाना इस्माइल साहब की तबीयत की खराबी का कुछ मसला है, क्योंकि पिछले दिनों वह अस्पताल में थे और आज नाएमा कॉलेज भी नहीं आई थी, मगर नाएमा ने बताया कि उनकी तबीयत ठीक है, हालांकि उसने फारिया से बहुत इसरार (आग्रह) किया कि वह फ़ौरन उसके पास चली आए, इसलिए खाना खाते ही वह उसके घर चली आई। यहाँ आ कर उसने नाएमा को जिस फ़िक्र के समुन्द्र में गुम देखा उसने उसकी चिंता और भी बढ़ा दी, नाएमा ख्यालों की जिस दुनिया में खोई हुई थी वहां न दरवाज़ा खुलने की आवाज़ पहुंच सकी थी न फारिया के क़दमों की आहट।

फारिया अपनी बेस्ट फ्रेंड को इस हाल में देखकर बेचैन हो गई, वह बचपन से बहुत गहरी सहेलियां थीं, दोनों एक ही मुहल्ले में रहे स्कूल से लेकर कॉलेज तक साथ पढ़े थे, वह नाएमा की सोच, उसके व्यवहार और उसकी नस नस से वाकिफ थी, उसे पता था कि नाएमा ने ज़िन्दगी कितनी महरूमियों (वंचित) में गुज़ारी है, मगर ज़िन्दगी की हर मुश्किल को उसने बड़ी हिम्मत से झेला था, पिछले दिनों अपने नाना की बीमारी में उसने जिस तरह अपनी मां का साथ दिया था वह खुद उसकी हिम्मत की एक मिसाल थी, घर में नाना के सिवा कोई और मर्द नहीं था, लेकिन उसने बड़ी बहादुरी से इन हालात का सामना किया और नाना की सेवा में आगे आगे रही, अपनी ऐसी हौंसला मंद सहेली की परेशानी फारिया के लिए चिंताजनक थी।

फारिया के कमरे में आने के काफी देर बाद भी जब नाएमा ने उसके आने का कोई नोटिस नहीं लिया तो फारिया ने बहुत प्यार से नाएमा के सर पर हाथ रखकर उसे यहाँ अपने होने की खबर दी।

"हमारी फलसफी (दार्शनिक) हसीना किसकी यादों में खोई हुई है?"

फारिया एक सुखद मज़ाक से बात शुरू करना चाह रही थी, लेकिन जवाब में उसे एक सख्त व तेज वाक्य सुनने को मिला जो हर तरह के रिफरेन्स के बिना था।

वह कौन बेवक़ूफ़ था जो उसके नाना अब्बू को नज़र आ गया था और नाएमा की ज़िन्दगी से उसका क्या रिश्ता था, फारिया को कुछ समझ में नहीं आया। उसने नाएमा के बराबर में बैठते हुए प्यार से उसकी कमर को थपथपाया और बोली:

"मसला क्या है? पूरी बात बताओ, ऐसे तो मेरी समझ में कुछ नहीं आएगा।"

"तुम्हें पता है ना कि पिछले कुछ अरसे से हमारे घर में एक बला आ गई है।"

नाएमा ने बुरा सा मुँह बना कर जवाब दिया।

मगर फारिया पर नाएमा का मुद्दा साफ़ (स्पष्ट) नहीं हो सका, उसने न समझने के अंदाज़ में सवाल किया:

"यार यह पहेली क्यों बुझा रही हो? साफ साफ बताओ किस बला की बात कर रही हो?"

नाएमा ने झल्ला कर कहा:

"वही बला जो पिछले हफ्ते नाना अब्बू की बीमारी में मुस्तकिल तौर (स्थायी रूप) से हमें चिमट गई थी।"

"तुम अब्दुल्लाह भाई की बात कर रही हो?" फारिया पर अब साफ़ हो गया था कि इस खतरनाक लहजे में किसकी बात हो रही है, उसने फिर भी सवाल के रूप में अपनी बात की पुष्टि चाही, नाएमा ने हाँ में सर हिलाते हुए उसी अपमानजनक लहजे में अब्दुल्ला की बात जारी रखी।

"हां उसी बेवकूफ की बात कर रही हूँ जो रोज़ नाना अब्बू के साथ रात को जबरदस्ती रुकता था, हालांकि इसकी कोई जरूरत नहीं थी, पांच सात दिन अस्पताल में इन महोदय ने नाना अब्बू की क्या सेवा कर ली कि अब वह मुझे कोई बकरी समझ कर मेरी रस्सी उम्र भर के लिए उसके हवाले करने पर तुल गए हैं और अम्मी को भी उन्होंने राज़ी कर लिया है।"

नाएमा के लहज़े में गुस्सा, नफरत, हिकारत (तिरस्कार) सब एक साथ जमा थे।

"अच्छा तो ये बात है।" फारिया ने सर हिलाते हुए कहा। मामला अब उसकी समझ में आ चुका था, वह उसका गुस्सा ठंडा करने के लिए उसे प्यार से समझाने लगी।

"देखो नाएमा! तुम्हारी ज़िंदगी का फैसला तुम्हारी मर्ज़ी के खिलाफ नहीं हो सकता, मैं आंटी को जानती हूँ और नाना अब्बू को भी, वे दोनों तुमसे बेहद प्यार करते हैं और तुम्हारी सहमति के बिना कोई फैसला नहीं करेंगे, मगर क्या आंटी ने तुमसे कोई बात की है?"

उसने एक सवाल पर अपनी बात खत्म की तो नाएमा ने हाँ में सर हिलाते हुए कहा:

"हां उन्होंने मुझसे पूछा था।"

"तो तुमने क्या जवाब दिया?"

"वही जो तुम्हें दे चुकी हूं।"

"फिर उन्होंने क्या कहा?"

"बस खामोश हो गईं।"

''यार तो बस बात खत्म हो गई, वे यह बात नाना अब्बू को बता देंगी। लेकिन यह बताओ कि तुम्हें इतना गुस्सा किस बात पर है? फारिया ने थोड़ा हैरानी (आश्चर्य) से पूछा।

नाएमा इस सवाल पर खामोश रही तो फारिया ने उसे समझाते हुए कहा:

''वैसे अब्दुल्लाह भाई इतने बुरे तो नहीं कि तुम रिश्ते के नाम से ही इतना नाराज हो जाओ, तुमने ही तो मुझे बताया था कि वह तुम्हारे हसीन चहरे को पहली बार देखते ही बेहोश हो गए थे।''

नाएमा का मूड ठीक करने के लिए फारिया ने लतीफे के अंदाज़ में हंसते हुए कहा। मगर नाएमा के चेहरे पर मुस्कान की कोई झलक दिखाई नहीं दी, वह सिरियस अंदाज़ में बोली:

''उस आदमी का न कोई कैरियर है न स्टेटस, न शक्ल है न सूरत, फिर ऊपर से उसकी मज़हबी (धार्मिक) बातें, नाना अब्बू की बीमारी में उसकी बातें सुन सुन कर मैं तो तंग आ गई थी।''

नाएमा के एक एक शब्द से हिकारत (तिरस्कार) का ज़हर छलक रहा था।

''यार कुछ तो खुदा का खौफ (डर) करो।'' फारिया भी अपने चेहरे पर गंभीरता लाते हुए बोली:

''अब्दुल्लाह भाई का इस समय कोई बड़ा स्टेटस नहीं मगर कैरियर बहुत शानदार है, उनके पास इंजीनियरिंग और फायनांस की बड़ी डिग्रीयां हैं, वह पॉजीशन होल्डर रहे हैं, उनकी जॉब भी अच्छी खासी है बल्कि तरक्की की भी संभावना है, रही शक्ल की बात तो यह हकीक़त है कि वह किसी हीरो की तरह नहीं दीखते, न ऐसे हैं कि हजारों में अलग नज़र आएं, मगर इतनी बुरी शक्ल भी नहीं कि तुम उनके साथ खड़ी होकर शर्मिंदा हो जाओ, अच्छी भली शक्लो सूरत के हैं। और जिन्हें तुम मज़हबी (धार्मिक) बातें कह रही हो, वो तो तसल्ली की कुछ बातें थीं जो वह नाना अब्बू की बीमारी के दौरान उनसे, आंटी से और तुमसे करते रहे.... इसमें क्या बुराई है?''

नाएमा ने पूरी बात का जवाब देने के बजाय फारिया के पहले वाक्य को पकड़ लिया।

''किस खुदा का खौफ करूँ मैं? उसका जिसने बचपन में मुझसे मेरा बाप छीन लिया, उसका जिसने सारी ज़िन्दगी सिवाए गरीबी और बुरे हालात के मुझे कुछ नहीं दिया? या उसका जिसने जवानी में मेरी माँ को विधवा कर दिया?''

नाएमा के मुंह से शब्द नहीं जहर में बुझे हुए तीर निकल रहे थे।

"नहीं फारिया जी नहीं! मैं जाहिल नहीं हूँ, साइकोलॉजी और फिलॉसफी की स्टुडेंट हूँ, मैंने बड़े बड़े दार्शनिकों को पढ़ रखा है, यह मज़हबी ढकोसले मुझे धोखा नहीं दे सकते, न अब्दुल्लाह जैसे धार्मिक बहरूपयों की बातें मुझे बेवकूफ बना सकती हैं।"

जज़्बात की शिद्दत (भावनाओं की तीव्रता) से नाएमा का चेहरा लाल हो चुका था, वह रुके बिना बे थकान बोले चली जा रही थी।

"अल्लाह सब ठीक कर देगा..... उसके हर काम में बहतरी होता है..... वह अपने बन्दों (भक्तों) से बेहद प्यार करता है....." नाएमा पल भर साँस लेने को रुकी और फिर बोलने लगी:

"क्या ठीक किया है उसने मेरे साथ? और मेरे साथ ही क्या पूरी दुनिया के साथ क्या ठीक किया है उसने, कितनी गरीबी है यहां, कितनी बीमारियां हैं यहां, कितना ज़ुल्म है इस दुनिया में, ख़त्म न होने वाली जाति की रैंकिंग है, दौलत का असमान बटवारा है, मैडम इस दुनिया में किसी भगवान का आदेश नहीं चलता, यहाँ सिर्फ माद्दे (पदार्थ) की हुक्मरानी है, यहाँ सिर्फ दौलत और ताक़त का राज है, यही एक हक़ीकत है, इसके सिवा कोई दूसरी हक़ीकत नहीं है। अपने अमल (प्रक्रिया) से हर आदमी बता रहा है कि यही एक हक़ीकत है, लेकिन चेहरे पर मुनाफिकत (दोगलापन) का नकाब चढ़ाए रहता है, लेकिन मैं मुनाफिक नहीं हूँ।"

नाएमा की बातें सुनकर फारिया कुछ परेशान हो गई, यह पहला मौका नहीं था कि वह अपने इन बागी विचारों को उसके सामने ज़ाहिर कर रही थी। नाएमा को अपनी ज़िन्दगी और हालात (परिस्थितियों) से शिकवा तो शुरू से ही था, लेकिन जब से इस कॉलेज में उसने फलसफे के टॉपिक को पढ़ना शुरू किया और बड़े बड़े फलसफ्यों (दार्शनिकों) के विचारों का अध्ययन किया था, तब से उसकी बगावत सैद्धांतिक रूप धारण कर गई थी, मगर आज उसने जो लब और लहजा और अंदाज़ (शैली) अपनाया था, वह फारिया ने भी पहले कभी नहीं देखा था। वह बात खत्म करने के लिए बोली:

"अच्छा छोड़ो यार! इस टॉपिक पर हम पहले भी कई बार बहस कर चुके हैं....."

नाएमा ने उसकी बात बीच से काटते हुए कहा:

"और हर बार मैं तुम्हें ला जवाब कर चुकी हूँ।"

"मैं ही नहीं नाना अब्बू सहित कई लोग तुम्हारी इन खुराफात (मिथकों) का शिकार हो चुके हैं।"

"मेरे अकली एतराज़ (तर्कसंगत आपत्तियों) को अगर तुम खुराफात कहकर आंखें चुराना चाहती हो तो तुम्हारी मर्जी। वैसे लाजवाब तो मैंने नाना अब्बू को भी दिया था।"

"हाँ! मुझे वह दिन याद है।"

फारिया ने हंसते हुए कहा:

"और उसी दिन के बाद वह बेचारे तुमसे ऐसे डरे कि अपनी जमा पूंजी खर्च करके तुम्हें और आंटी को उमरा कराने मक्का ले गए कि शायद मक्का मदीना जाकर तुम कुछ सुधर जाओ। लेकिन लगता है सुधरने के बजाय तुम और ज़्यादा बिगड़ कर आई हो।"

"मैं तो मजबूरी में गई थी। नाना और अम्मी कहने लगे कि हम दोनों उमरे (तीर्थ यात्रा) पर जा रहे हैं, तुम अकेली यहां कैसे रहोगी, इसलिए मुझे उनके साथ जाना पड़ा। और वहाँ जा कर मैं तो बोर ही होती रही थी..... और यह मुसीबत भी वहीं गले पड़ी थी।"

नाएमा ने अपने 'जबरदस्ती' के उमरे के आखिर में जिस मुसीबत का ज़िक्र किया था, उसको समझने के लिए फारिया को कोई सवाल पूछने की जरूरत नहीं थी, फारिया जानती थी कि उसका इशारा अब्दुल्लाह की ओर है।

नाएमा ने इसी टोन में बात करते हुए फारिया पर हमला किया:

"लेकिन यार ये तो बताओ तुम्हारे ख्याल में यह बेवकूफी का काम नहीं है कि लाखों रुपये खर्च करके इंसान पत्थरों को देखने और छूने चला जाए, इसके बजाय यह पैसे किसी गरीब की मदद पर खर्च नहीं होने चाहिए?"

इसके बाद नाएमा जो ज्यादा अध्ययन के बिना (आधार) पर एक चलता फिरता इनसाइक्लो पीडिया थी आंकड़ों से यह साबित करने लगी कि जितने पैसे हज और उमरे की यात्रा पर खर्च होते हैं, इससे गरीब लोगों की कितनी समस्याओं का हल हो सकता है, फारिया के पास ऐसी बातों का कोई जवाब नहीं था। उस बेचारी ने जान बचाने के लिए कहा:

"यार मैं तुमसे बहस में नहीं जीत सकती, मैं बस इतना जानती हूँ हम यह अल्लाह के लिए करते हैं, हम सब को उसकी नेमतों का शुक्र अदा करना चाहिए, और सबसे बढ़कर यह शुक्र अदा तुम्हें करना चाहिए इसलिए कि..... "

फारिया ने अपना वाक्य अधूरा छोड़ा और नाएमा को कंधों से पकड़ कर दीवार पर लगे आईने के सामने खड़ा करते हुए बोली।

"अल्लाह तआला ने इतना ख़ूबसूरत चेहरा और ऐसा दिलकश वजूद (आकर्षक अस्तित्व) लाखों में शायद ही किसी को दिया होगा, इसका ही शुक्र कर लिया करो।"

नाएमा अपनी तारीफ पर खुश होने के बजाय तंजिया (व्यंग भरी) हंसी हंसते हुए फारिया से बोली:

" मेरी जान! मेरी माँ भी जवानी में मेरे जैसी थी, मगर जानती हो उसके साथ क्या हुआ.... मेरे नाना ने एक बहुत शरीफ, ईमानदार मगर गरीब आदमी से उन्हें ब्याह दिया। मैं दस महीने की थी कि मेरे पिता का कैंसर से निधन हो गया, वे ऐन जवानी में तड़प तड़प कर मरे और मेरी माँ जवानी ही में विधवा होने का दाग लिए बैठी रह गई। मेरे बाप ने विरासत में मेरी माँ के लिए विधवा होने के दाग के सिवा कुछ नहीं छोड़ा। जिसके बाद मेरी माँ मुझे लेकर नाना के घर लौट आईं, उन्होंने दूसरी शादी करने के बजाय मेरी परवरिश की खातिर अपनी जवानी बर्बाद कर दी। अब मेरे नाना चाहते हैं कि इस घर में फिर एक्शन रीप्ले हो। और तुम कहती हो कि मैं शुक्र करूं।"

"तो ना करो शुक्र। जो दिल चाहे वो करो।"

फारिया ने थोड़ा नाराज लहजे में कहा तो नाएमा को एहसास हुआ कि वह बेचारी इतनी देर से उसकी दिलजोई की कोशिश कर रही है। जवाब में वे उसके साथ बिना वजह ही सख्त हो रही है। वह अपने लहज़े और बात पर शर्मिंदा होते हुए नरमी से बोली:

"सौरी यार.... मुझे गुस्सा अम्मी और नाना पर था और मैंने तुम पर उतार दिया।"

उसको नरम पड़ते देखकर फारिया ने उसके उस बुरे लहज़े की तरफ ध्यान दिलाया जिसमें उसने कुछ देर पहले अल्लाह का ज़िक्र किया था:

"मेरी तो खैर कोई बात नहीं, लेकिन अल्लाह तआला के मामले में सतर्क रहा करो। हम सब उसके बन्दे हैं और वे हमारा मालिक है।"

"छोड़ो यार.... यह सब फिज़ूल बातें हैं।"

नाएमा एक बार फिर पटरी से उतरने लगी तो फारिया ने उसे समझाया:

"देखो मेरी बहन! मैं तुम्हारे जैसी ख़ूबसूरत हूँ ना समझदार। एक आम सी लड़की हूँ, बल्कि एवरेज से भी कम कहो, मेरी सगाई भी एक आम से लड़के के साथ हुई है। लेकिन मैं बहुत खुश हूँ, तुम से कहीं ज्यादा खुश हूँ। इसलिए कि खुशी इस बात का नाम नहीं कि हमें ज़िन्दगी में क्या मिला है, बल्कि जो कुछ मिला है उसमें खुश रहना असल चीज़ है। यह सफल जीवन का नुस्खा है जो तुम अपने सारे ज्ञान और बुद्धि के बाद भी नहीं समझ सकी।

तुम समझदार हो, बहुत ख़ूबसूरत हो, मगर अल्लाह की इन नेमतों को भी तुमने अपनी नकारात्मक सोच की बदोलत अपने लिए एक मुसीबत बना लिया है।"

नाएमा इस बार चुप रही। फारिया ने अपनी बात का असर होता देख बोलना जारी रखा:

"तुम शिक्षा और ज्ञान में बहुत आगे हो। हर बार एग्ज़ाम में तुम्हारी पॉजीशन अच्छी आती है। तुम शक्ल में ही ख़ूबसूरत नहीं बल्कि अल्लाह ने तुम्हें शख्सियत (व्यक्तित्व) और समझ भी बहुत अच्छी दी है। तुम्हारे कपड़ों का ढंग, तुम्हारा उठना बैठना, बातचीत का अंदाज़ हर उस आदमी को प्रभावित करदेता है जो तुमसे पहली बार मिलता है। तुम इन सब नेमतों का शुक्र अदा किया करो, शुक्र से नेमतें बढ़ती हैं।"

"नेमतें शुक्र से नहीं बढ़ा करतीं, मौक़े का फायदा उठाने से बढ़ती हैं।"

नाएमा ने फारिया की सारी अख्लाकी (नैतिक) नसीहत को भौतिक दर्शन के दो वाक्यों में बराबर कर दिया था।

"और मैंने फैसला कर लिया है कि मैं इन मौकों का फायदा उठाऊँगी जो किस्मत से मुझे मिल गए हैं।"

नाएमा ने सोच समझ कर अल्लाह तआला के बजाय किस्मत को अपना शुभचिंतक करार दिया था।

"मैं ऐसी जगह शादी करूंगी जहां मेरा भविष्य बिल्कुल सुरक्षित हो, बहुत अमीर परिवार हो। बंगला, गाड़ी हों, नौकर हों, बैंक बैलेंस हो। हर तरह की खरीदारी के लिए क्रेडिट कार्ड हों, फॉरेन ट्रिप्स हों और बस....."

नाएमा ने आखिरी बात कहते हुए आँखें बंद कर लीं, वह शायद काल्पनिक दुनिया में खुद को इन्हीं सब चीजों के बीच देख रही थी।

.....

अब्दुल्ला के बारे में नाएमा के जो जज़्बात (भावनाएं) थे वो फारिया के लिए कोई अजीब बात नहीं थी। अब्दुल्लाह का पिछले कई महीनों से नाएमा के नाना इस्माइल साहब के पास आना जाना था। तीन लोगों के इस छोटे से परिवार से अब्दुल्लाह की मुलाकात कुछ समय पहले उस वक़्त हुई थी जब इस्माइल साहब अपनी बेटी आमना और नवासी नाएमा के साथ उमरा अदा करने मक्का गए थे। उमरा अदा करने के बाद वह अपनी फैमली से बिछड़ गए थे। अब्दुल्लाह ने उस वक़्त उनकी मदद की और उस जगह तक उन्हें रास्ता भी दिखाया जहां उनकी बेटी और नवासी उनका इंतजार कर रही थीं। यह सारी बातें फारिया की जानकारी में नाएमा ही से आई थीं।

वापस आकर उन्होंने अब्दुल्लाह से मेल जोल बनाए रखा और कई बार उसे अपने घर पर बुलाया था। फारिया नाएमा की सहेली ही नहीं इस छोटे से परिवार के एक सदस्य की तरह थी। इसलिए वे भी अब्दुल्ला से अच्छी तरह परिचित हो चुकी थी। नाएमा से उलट फारिया एक मज़हबी ज़हन रखती थी। दुसरे नौजवानों की तरह उसके मन में भी कई सवाल थे। इस्माइल साहब जब जब अब्दुल्लाह से बातें कर रहे होते तो वह भी कभी कभार जाकर बैठ जाती और अब्दुल्लाह से अपने मन में पैदा होने वाले सवालों का जवाब हासिल करती। वह अब्दुल्लाह के व्यक्तित्व और शराफत से भी बहुत प्रभावित थी।

अब्दुल्लाह के लहजे का ठहराव, बातचीत में मान-मर्यादा, निगाहों में हया और बोलने में विनम्रता ऐसी चीजें थीं जो उसे उसकी उम्र के लोगों से बहुत अलग बनाती थीं। इन सबसे बढ़कर

अब्दुल्लाह का ज्ञान बहुत प्रभावशाली था जो उसकी उम्र के हिसाब से बहुत ज्यादा था। इन सब बातों के आधार पर फारिया अब्दुल्लाह की बहुत इज्जत करती थी। हालांकि नाएमा का मामला इसके बिल्कुल ही उलट था। अपनी मज़हब से बेपरवाह तबीयत (स्वभाव) के बिना पर उसे पहले दिन से ही अब्दुल्लाह की बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

इस की वजह शुरुआत ही में पेश आने वाली एक घटना थी, फारिया जिस की गवाह भी थी और किसी हद तक इसकी जिम्मेदार भी, इस घटना ने नाएमा के दिल में अब्दुल्लाह के बारे में वह दरार डाल दी जो आने वाले दिनों में एक बड़ी खाई में बदल गई। यह घटना उस समय हुई जब फारिया और नाएमा की एक सहेली किरण नाएमा के घर आई हुई थी।

.....

किरण इन्टर करने के समय में फारिया और नाएमा की दोस्त बनी थी, वह थी तो असल में नाएमा की हम ख्याल और उसी की दोस्त थी मगर नाएमा की दोस्ती से फारिया से भी उसका मिलना जुलना हो गया। किरण के पिता एक कॉलेज में फिलोस्फी के प्रोफेसर थे। वह मज़हब और मज़हब के मानने वालों के सख्त खिलाफ थे। उनके संस्कारों में उनकी बेटी किरण भी ऐसे ही विचार रखती थी और बड़े फख्र से उनका इज़हार भी करती थी। नाएमा के लिए तो इसमें खैर कोई परेशानी नहीं थी लेकिन फारिया को यह बातें बिल्कुल पसंद नहीं आती थीं। बात अगर कुछ मज़हबी लोगों के बुरे व्यवहार की आलोचना की होती तो फारिया को कोई परेशानी नहीं थी। मगर किरण मज़हबी आमाल (धार्मिककार्यों) तो दूर की बात अकीदे (आस्था) को भी अहमयत नहीं देती थी।

इंटर के बाद किरण अलग कॉलेज में पढ़ने लगी जबकि नाएमा और फारिया साथ ही रहे। कॉलेज के बाद फारिया ने किरण से मिलना जुलना बाकी नहीं रखा था लेकिन नाएमा से किरण की दोस्ती बाक़ी रही और वे दोनों कभी कभी मुलाकात कर लेती थीं। फिर एक दिन नाएमा ने फारिया से बताया कि किरण के पिता अपने परिवार को ले कर एक पश्चिमी देश शिफ्ट हो रहे हैं। जाने से पहले किरण उससे मिलने आ रही है इसलिए वह भी उसके घर आ जाए। इसलिए फारिया भी उसके घर आ गई ताकि कुछ पुराने दिनों के बारे में गपशप हो जाए और वह किरण को अलविदा भी कह सके फिर किरण भी नाएमा के घर आ गई।

उन तीनों सहेलियों की यह मुलाकात इस पहलू से बहुत अच्छी रही कि पुरानी क्लास फेलो से मुलाकात हो गई, लेकिन फारिया के लिए किरण से मिलना कई पहलुओं से बड़ा तकलीफ़ देने वाला था। उसे पहला झटका तो किरण को देख कर ही लगा, उसे दुपट्टे का बे वज़न कपड़ा हमेशा एक बोझ लगता था। कॉलेज में यह बोझ वे किसी न किसी तरह ढो रही थी, लेकिन अब वह इस भारी बोझ को अपने कंधों से उतार कर फेंक चुकी थी। कपड़े नए फैशन के अनुसार कांट छांट कर उन सभी हथियारों से लैस थे जो विपरीत सेक्स के मन में तहलका मचा देते हैं। बातचीत शुरू हुई तो फारिया के लिए हालात और बर्दाश्त से बाहर होने लगे जब किरण ने आदत के मुताबिक मज़हब का मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। वह अपनी बातचीत में पश्चिमी देशों के रहन-सहन की बहुत तारीफ कर रही थी। फिर बिना किसी वजह के यह तारीफ उस वक़्त मज़हब की बुराई करने में बदल गई जब किरण ने कहा:

"यार पश्चिम देशों ने यह सारी तरक्की मज़हब और इश्वर के अकीदे (अवधारणा) से निजात पाकर हासिल की है।"

"तुम बिल्कुल ठीक कह रही हो।" नाएमा ने उसका समर्थन करते हुए कहा।

"पता नहीं हमारे यहाँ वो वक़्त कब आएगा जब लोग ऐसे दकयानूसी ख्यालों से छुटकारा पाएँगे। मैं तो एक पश्चिमी स्कोलर की इस बात में यकीन करती हूं कि इंसानियत तब तक आज़ाद नहीं हो सकती जब तक ईश्वर को दिए अपने सारे हक़ वापस नहीं ले लेती।"

किरण ने विकास के साथ आज़ादी को भी एक बे खुदा ज़िन्दगी से साबित करते हुए कहा तो फारिया से रहा न गया:

"यार किरण तुम पता नहीं किस तरह की इंसान हो, खुदा एक जिन्दा हस्ती है जिसे फलसफों की भूल भुलय्यों से ख़त्म नहीं किया जा सकता।"

"तुम नादान हो फारिया, तुम्हें नहीं पता कि खुदा की कल्पना इंसान ने खुद गढ़ी है।"

किरण ने कुछ प्यार के लहजे में फारिया को समझाया और फिर अपने दावे के समर्थन में एक शेर पढ़ा:

खुदा को एहले जहाँ, जब बना चुके तो नियाज़....

पुकार उठे खुदा ने हमें बनाया है।

किरण का शेर पूरी तरह खत्म भी नहीं हुआ था कि दरवाजे की घंटी बजी। फारिया जिसके लिए यहाँ बैठना अब मुश्किल हो चुका था वह तेजी से उठते हुए बोली:

"मैं देखती हूँ बाहर कौन है।"

फारिया ने दरवाजा खोला तो बाहर अब्दुल्लाह खड़ा हुआ था। फारिया को देखकर वह अपनी आदत के मुताबिक (अनुसार) मुस्कुराया और अपने ठहरे हुए लहज़े में बोला:

"अस्सलामु अलैकुम फारिया.... आप ख़ैरियत से हैं?"

फिर उसके जवाब का इंतिज़ार किए बिना अपने आने का मकसद बताते हुए बोला:

"मुझे इस्माइल साहब से मिलना है, क्या वह घर पर हैं?"

उस वक़्त इस्माइल साहब घर पर नहीं थे। फारिया को यह भी मालूम था कि वह आमना बेगम के साथ बाहर गए हैं और रात से पहले नहीं आएंगे। मगर इस वक़्त वह किरण की नाक तोड़ना चाहती थी और नाक तोड़ने वाला आदमी उसके सामने खड़ा था। यह मुमकिन नहीं था कि वह अब्दुल्लाह को बाहर से लौटा देती। उसने अब्दुल्लाह को अंदर आने का इशारा करते हुए कहा:

"अब्दुल्लाह भाई! वह तो घर पर नहीं हैं लेकिन थोड़ी ही देर में आ जाएंगे। तब तक आप अंदर आकर इंतजार कर लीजये।"

अब्दुल्लाह ने एक पल के लिए सोचा फिर उसके साथ में चलता हुआ ड्राइंग रूम तक आ गया, उसे अंदर आता देखकर नाएमा ने तेजी से दुपट्टा सर पर रखा। लेकिन किरण पहले की तरह ही बेतकल्लुफ़ी से पैर पर पैर चढ़ाए बैठी रही। फारिया ने उसका परिचय किरण से कराते हुए कहा:

"यह अब्दुल्लाह भाई हैं और यह किरण हैं, हमारी पिछली क्लास फेलो,"

फिर उसने नाएमा को संबोधित किया जो उसे हैरत और नाराज़गी के साथ घूर रही थी:

"अब्दुल्लाह भाई नाना अब्बू से मिलने आए थे। वह तो हैं नहीं, मैंने सोचा उनके साथ एक कप चाय ही पी ली जाए।"

फारिया एक पल के लिए रुकी और शरारत भरे अंदाज में मुस्कराते हुए नाएमा से बोली:

"नाएमा मेहमानों के लिए ज़रा चाय तो बनाओ।"

नाएमा फारिया की बात सुनकर झुंझला उठी, उसे गुस्सा आ रहा था कि जब नाना और अम्मी घर पर नहीं हैं तो फारिया अब्दुल्लाह को अन्दर ले कर क्यों आई और वह भी तब जब उसकी एक पुरानी सहेली उससे मिलने आई हुई है। लेकिन शराफत और लिहाज़ में इस समय वह कुछ कह भी नहीं सकती थी, इसलिए मजबूरी में उसे उठना पड़ा। वह झल्लाए हुए अंदाज में किचन की ओर चली गई। उसके जाने के बाद फारिया ने एक सोफे पर बैठते हुए अब्दुल्लाह से कहा:

"आप बैठिए ना।"

अब्दुल्लाह बैठ गया और फारिया किरण से अब्दुल्लाह का परिचय विस्तार से कराने लगी।

अब्दुल्लाह का एजुकेशनल और प्रोफेशनल परिचय काफी प्रभावशाली था। परिचय पूरा हुआ तो किरण एक गर्मजोश मुस्कराहट के साथ उसकी ओर थोड़ा झुकती हुई बोली:

"बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर।"

वे झुकते समय इस बात से बिल्कुल बेपरवाह थी कि उसने दुपट्टा नहीं डाल रखा है।

जवाब में अब्दुल्लाह ने कहा:

"मुझे भी बहुत खुशी हुई।"

यह कहते हुए अब्दुल्लाह ने नजर उठाकर किरण की ओर देखा और तेजी के साथ नज़र झुकाली। उसके बाद जब तक अब्दुल्लाह बैठा रहा उसने नज़र उठाकर किरण को नहीं देखा। ख़ामोशी का एक लंबा अंतराल आया जिसके बाद फारिया ने युद्ध का मैदान सजाते हुए कहा:

"यार किरण वो..... अब्दुल्ला भाई के आने से पहले तुम क्या शेर पढ़ रही थीं?"

किरण ने एक पल के लिए रुक कर गौर से अब्दुल्लाह को देखा। वह नज़रों ही नज़रों में अब्दुल्लाह को तौल रही थी। अब्दुल्लाह के झुके हुए सर ने उसकी हिम्मत बंधाई। उसने पूरे विश्वास के साथ शेर दोहरा दिया। उसके चुप होने पर फारिया ने अब्दुल्लाह से कहा:

''किरण का मानना है कि ईश्वर की अवधारणा से मुक्ति हासिल किए बिना विकास मुमकिन नहीं है।''

किरण को अपनी बात पर इतना भरोसा था कि वह अब्दुल्लाह का जवाब सुने बिना बोली:

''धर्म, मज़हब यह प्री मॉडर्निज़्म में इस काएनात की एक्सप्लेनेशन का एक तरीका था, लेकिन अब जब साइंस की तरक्की ने हमें बताया है कि यह ब्रह्मांड किन फिज़िकल नियमों के आधार पर चल रहा है, हमें किसी ईश्वर को मानने की जरूरत नहीं है।''

किरण के लहजे में अपनी बात पर यकीन कमाल के दर्जे पर पहुंचा हुआ था, उसके शब्दों में 'प्री मॉडर्निज़्म' के शब्द बता रहे थे कि वे ईश्वर को नकारने के विचारों की परंपरा से परिचित थी, अब्दुल्लाह ने जो ज्ञान और इन विचारों की परंपरा को किरण से ज्यादा जानता था, धैर्य से उसकी बात सुनी और धीमे लहज़े में बोला:

''आपने कभी गौर किया कि 'फिज़िकल लॉज़' के होने का मतलब यह नहीं कि यहां कोई खुदा नहीं, बल्कि इसका मतलब यह है कि यहां कोई लॉ मेकर भी ज़रूर होगा, क्या यह कॉमन सेंस की बात नहीं?''

किरण उसका जवाब सुनकर हड़बड़ा गई, उसके चेहरे से साफ जाहिर था कि वह अब्दुल्लाह को जवाब देना चाह रही है, लेकिन इस बात का कोई फौरी जवाब उससे बन नहीं पड़ रहा था, लेकिन अब किरण को अंदाज़ा हो चुका था कि सर झुकाए बैठा हुआ यह शख्स जिसे वह गवारी समझ रही थी, इतना पैदल नहीं था।

अब्दुल्लाह ने एक ब्रेक के बाद कहा:

''यही कुरआन का तरीका है। ब्रह्मांड जिन फिज़िकल लॉज़ के तहत चल रहा है वह उन से पैदा होने वाले प्रबंधन (नज़्म), व्यवस्था (तरतीब), संगठन (तंजीम) को बार बार सामने रख कर यह स्पष्ट करता है कि ब्रह्मांड की इतनी अलग और परस्पर विरोधी चीज़े चमत्कारी ढंग से संगठित हैं और मिलकर वह लाइफ सपोर्टिंग सिस्टम बनाती हैं जो सरासर इंसान का दोस्त और जीवन सहायक है, यह बिना किसी निर्माता के हस्तक्षेप के कैसे मुमकिन है?''

कुरआन के नाम पर किरण ने बुरा सा मुँह बनाकर कहा:

''कुरआन का नाम तो आप बिल्कुल न लें, सारी धार्मिक किताबों की तरह इसमें भी बड़ी गलतियाँ पाई जाती हैं।''

फारिया जो किरण की यह बात पहले भी कई बार सुन चुकी थी तफसील करते हुए बोली:

''किरण का कहना है कि कुरआन में भाषा और व्याकरण की कई गलतियाँ हैं, इसलिए यह अल्लाह का कलाम नहीं हो सकता।''

फारिया की इस बात पर अब्दुल्लाह ने सर उठा कर उसे देखा और हंसते हुए कहा:

''किरण साहिबा तो अल्लाह को ही नहीं मानती, इसलिए कुरआन का अल्लाह की तरफ से होना या न होना वैसे भी उनका मसला नहीं होनी चाहिए, मगर मैं बताता हूँ कि यह असल में किन का मसला है, यह मसला हकीकत में इस्लाम विरोधियों का है जो अल्लाह को तो मानते हैं, लेकिन कुरआन अल्लाह का कलाम है यह नहीं मानते, मगर ऐसी बातों की कमज़ोरी तो दो मिनट में साबित हो सकती है।''

''वह कैसे?'' फारया ने जिज्ञासा के साथ कहा।

''देखये कुरआन अल्लाह का कलाम नहीं है, यह साबित करना सबसे ज्यादा कुरआन के पहले श्रोताओं (मुख़ातिब) अरब के मुशरिकों के लिए महत्वपूर्ण था, यह काम सबसे आसानी से वही कर भी सकते थे, क्योंकि वह शेरो शाइरी कविता और साहित्य (अदब) और वाग्मिता (ब्लागत) के बादशाह थे, उन्हें यह कोशिश ज़रूर करनी चाहिए थी क्योंकि वह इस्लाम के सबसे बड़े दुश्मन थे, इस दुश्मनी में उन्होंने हर चाल को आज़माय, लेकिन कभी यह नहीं कहा कि कुरआन में व्याकरण या भाषा की कोई गलती है, सवाल यह है कि अगर कुरआन में कोई गलती वे लोग खोज नहीं सके तो सैकड़ों साल बाद पैदा होने वाले लोग कैसे कुरआन की भाषा की गलती निकाल सकते हैं? यह तो ऐसे ही है जैसे उर्दू या फारसी भाषा बोलने वाला कोई आदमी ग्रामर की किताबों से अंग्रेजी सीखे और फिर दुनिया को यह बताए कि उसने शैक्सपियर के कलाम में गलतियाँ निकाल ली हैं या फिर कोई अंग्रेज किसी तरह उर्दू सीख कर दुनिया को बताए कि मिर्ज़ा ग़ालिब के कलाम में फलां फलां गलतियाँ पाई जाती हैं, याद रखिए क्लासिकल लिट्रेचर से ही भाषा के नियम वुजूद में आते हैं, नियमों के आधार पर उन्हें परखना कम अकली की दलील है, यही वजह है कि जो ग़लतियां इस्लाम विरोधी लोग कुरआन में निकालते हैं वे किसी अनजान

आदमी को तो कुछ प्रभावित कर सकती हैं, लेकिन भाषा का अच्छा ज्ञान रखने वाला कोई आदमी उनसे पहले कभी प्रभावित हुआ है न आगे कभी हो सकता है, इसलिए कि ये सारे ऐतराज़ बचकाना हैं,''

फिर उसने एक और आसान मिसाल से अपनी बात को समझाया:

''अरबी ग्रामर के आधार पर कुरआन में गलतियाँ निकालना ऐसा ही है जैसे मैडिकल की किसी किताब में किसी मानव अंग के कुछ फंक्शन्स लिखे हों, फिर शोध से पता चले कि यह अंग एक और काम भी करता है। अब सही रवैया तो यह होगा कि इस काम या फंक्शन को मेडिकल की किताब में लिख दिया जाए, न कि मेडिकल की किताब को आधार बनाकर यह कहा जाए कि फलां अंग में एक गलती की खोज हो गई है,''

अब्दुल्लाह बोल रहा था और किरण के चेहरे पर एक रंग आ रहा था और एक जा रहा था। अब्दुल्लाह ने उसके ज्ञान का स्रोत भी उसे बता दिया था और ऐतराज़ का एक साफ़ जवाब भी दे दिया था, इसी दौरान नाएमा चाय की ट्रे उठाए कमरे में दाखिल हुई। उसे अंदर आता देखकर फारिया ने कहा:

''कुछ लोगों को लगता है कि दुनिया में जो ज़ुल्म, नाइंसाफी और तरह तरह के एक्सीडेंट पाए जाते हैं, वे इस बात को मानने की इजाज़त नहीं देते कि इस दुनिया का कोई बनाने वाला और मालिक है।''

नाएमा चाय रखकर चुपचाप बैठ गई, उसके चेहरे पर तनाव था, वजह साफ दिखाई दे रही थी, यह ऐतराज़ नाएमा का था। अब्दुल्ला ने बदस्तूर झुके हुए सर और आहिस्ता आवाज़ से कहा:

''यह दुनिया को आखिरत (मौत के बाद) के बिना देखने का नतीजा है, अल्लाह के नज़दीक (अनुसार) असल दुनिया और असल ज़िन्दगी आखिरत की है, जबकि यह अस्थायी और ख़त्म होने वाली दुनिया तो सिर्फ इम्तिहान के लिए बनाई है। इस मक़सद के लिए यहाँ इंसान को कर्म का अधिकार व आज़ादी दी गई है, इस अधिकार से ज़ुल्म वजूद (अस्तित्व) में आता है, इसी तरह इम्तिहान के लिए ही एक्सीडेंट भी होते रहते हैं, यह भी इम्तिहान के लिए ही दुनिया में रखे गए हैं। लेकिन यह हक़ीकत का सिर्फ एक पहलू है, इस दुनिया में एक्सीडेंट से ज्यादा नेमतें

(आशीर्वाद) और महरबानियां हैं, इंसान को दोनों ओर देखना चाहिए, नेमत पर शुक्र और मुसीबत में सब्र (धैर्य) करना चाहिए, जन्नत (स्वर्ग) इसी का बदला है।''

नाएमा चुपचाप सुनती रही, उसके ऐतराजों की इमारत सालों साल में बन कर तैयार हुई थी, अब्दुल्लाह के कुछ वाक्यों का उस पर कोई असर नहीं हुआ, लेकिन किरण ने नाएमा की तरफ से अब्दुल्लाह को जवाब देना जरूरी समझा, वह नाएमा की ओर देखते हुए बोली:

''यह जन्नत भी एक और काल्पनिक अवधारणा है.....धार्मिक यूटोपिया।

भई यही वे बातें हैं जो हमें दुनिया में विकास से वंचित रखे हुए हैं, आखिरत और ईश्वर की बातें करके हम लोगों ने धर्म को अफीम बना लिया है और अपनी क्षमताओं का उपयोग करना छोड़ दिया है।''

किरण नाएमा का समर्थन चाहती थी, मगर नाएमा दिल से सहमत होने के बावजूद चुप रही, वह अब्दुल्लाह के सामने कुछ बोलना नहीं चाह रही थी, नाएमा के बजाय अब्दुल्लाह ने इस बात के जवाब में बोलते हुए कहा:

''जो लोग ऐसा करते हैं वे गलत करते हैं, मगर अल्लाह तआला तो यह नहीं कहते कि अपनी क्षमताओं का इस्तिमाल न करो, वह तो दुनिया के बारे में भी चीज़े हांसिल करने को कहते हैं और इससे बढ़कर जन्नत के बारे में भी बताते हैं कि इसमें जाने के लिए ज़रूरी है कि इंसान अल्लाह के लिए कोशिश करे।''

किरण जन्नत के दोबारा ज़िक्र से तिलमिला उठी, वह तुनक कर बोली:

''हां वही जन्नत जिसके बारे शायर ने क्या खूब कहा है:

दोज़ख की दीवार पर चढ़कर मैंने और शैतान देखा....

सहमी हुई हूरों के पीछे वहशी मुल्ला भाग रहे हैं....''

फिर उसने हंसते हुए अब्दुल्लाह से कहा:

''आप बुरा मत मान्येगा लेकिन आप के कुरआन में हर जगह हूरों ही का तो ज़िक्र है।''

किरण की बात से अब्दुल्लाह को अंदाज़ा हो गया कि बातचीत अब तर्क करने की हदों से बाहर निकल चुकी है, उसने बड़े मान-मर्यादा से कहा:

"आपकी जानकारी सही नहीं हैं, कुरआन की छह हजार दो सो छत्तीस आयात में सिर्फ चार जगह पर हूर शब्द आया है, मगर इस बात को जाने दीजिए, ज़रूरी बात यह है कि हमें हर हाल में तहज़ीब (सभ्यता) और शाइस्तगी (विनम्रता) का दामन थामे रहना चाहिए।"

अब्दुल्लाह का इशारा किरण के सुनाए हुए शेर की ओर था।

"जी तहज़ीब (सभ्यता) और शाइस्तगी (विनम्रता) का यह पाठ आप पहले ज़रा मुल्लाओं को सिखा दें जो अपने से अलग हर नज़रये के लोगों को काफिर और वाजिबुल क़त्ल (जिसको मारना अनिवार्य हो) बताते हैं, जो खुद को सरासर सही और अपने सिवा हर एक को सरासर गलत समझते हैं, जो इख्तिलाफ़ (मतभेद) बर्दाश्त कर सकते हैं न किसी और नज़रये (मत) के इंसान को जीने का हक़ देने के लिए तैयार हैं, जो उनसे असहमत हो जाए भूखे भेड़ियों की तरह उसके पीछे लग जाते हैं, लगता है आप मज़हबी इख्तिलाफ़ में एक दूसरे के खिलाफ लगाए गए फतवों, उछाले गए कीचड़, इलज़ाम, बोहतान (झूठी निंदा) और बदनामी और सांप्रदायिक हत्या व गारतगरी को जानते नहीं हैं।"

किरण ने तेज़ लहजे में बात शुरू की और एक तंज़ (व्यंग्य) पर इसे खत्म किया। अब्दुल्लाह ने तेजी का जवाब बहुत नरमी और तहज़ीब से देते हुए कहा:

"जी मुझे पता है, सब जानता हूँ, लेकिन उनकी बदतमीजियों से मेरे और आपके लिए बदतमीज़ होना जायज़ नहीं हो जाता, दीन (धर्म) में असल इंसान तो पैगम्बर (ﷺ) हैं और मेरे नबी ने मुझे तहज़ीब और शाइस्तगी (विनम्रता) ही सिखाई है, मैं उसका दामन कभी हाथ से नहीं छोड़ सकता।

रहे आम इंसान तो उनमें हर तरह के लोग होते हैं, पिछली उम्मतों (पीढ़ियों) में तो पूरी गुमराही आ गई थी, हमारे यहाँ कम से कम लोगों की एक बड़ी तादाद ईमान की राह पर और आला अख़लाक़ (उच्च नैतिकता) के रास्ते पर खड़ी होकर हमेशा लोगों को सच्चाई की ओर बुलाती रहेगी। ऐसे लोग आज भी मौजूद हैं, आप उन्हें क्यों नहीं तलाश करतीं ? हमें शहद चूसने वाली

मधुमक्खी की तरह बनना चाहिए जो फूलों की तलाश में रहती हैं, गंदगी की मक्खी बनना किसी आला (उच्च) इंसान को शोभा नहीं देता।"

किरण के पास इन बातों का कोई जवाब नहीं था, मगर उसके चेहरे की बेपरवाही साफ बता रही थी कि उस पर अब्दुल्लाह की किसी बात का कोई असर नहीं हुआ,

अब्दुल्लाह ने फारिया से मुखातिब (संबोधित) होकर कहा:

"याद है फारिया! पिछले दिनों मैंने आपके एक सवाल के जवाब में कहा था कि हम मुसलमान समझते हैं कि हम सिर्फ अमल (कर्म) की आज़माइश में हैं, फ़िक्र (विचार) और अकीदे (विश्वास) का मुश्किल इम्तिहान सिर्फ गैर मुसलमों का होता है।"

फारिया ने सर हिलाते हुए कहा:

"जी मुझे याद है, आपने कहा था कि हम मुसलमानों का असल अलमिया (विडंबना) यह है कि हम फ़िक्र (विचार) और ईमान के इम्तिहान को यहूदी व ईसाईयों का मसला (समस्या) समझते हैं, हालांकि हमारे लिए भी यह इम्तिहान जारी है। दूसरों के लिए इसका मतलब ईमान क़ुबूल करना है और हमारे लिए इसका मतलब सच्चाई क़ुबूल करना है, मगर हम में से अक्सर लोग अपने मतलब की हद तक सच्चाई कुबूल करने में दिलचस्पी (रुचि) रखते हैं। जो सच्चाई हमारे तास्सुबात (पूर्वाग्रहों,पक्षपात) के खिलाफ हो हमें इसमें कोई दिलचस्पी महसूस नहीं होती। बल्कि कई बार तो हम इस सच्चाई के दुश्मन हो जाते हैं।"

फारिया का इशारा बिलकुल साफ़ (स्पष्ट) था, मगर अब्दुल्लाह अब इस बात को ख़त्म करना चाहता था, इसलिए उसने बातचीत का रुख बदलते हुए नाएमा से पूछा:

"इस्माइल साहब कब तक आएंगे?"

"वह और अम्मी काम से गए हैं, रात तक आएंगे।"

नाएमा ने असल बात बता दी जो फारिया ने छिपाली थी, अब्दुल्ला यह सुनते ही खड़ा हो गया।

"अच्छा तो मैं फिर बाद में आऊँगा, उन्हें मेरा सलाम कहिएगा।"

"आप चाय तो पी लीजिए।" फारिया ने उसे रोकते हुए कहा तो उसने जवाब दिया:

''नहीं शुक्रिया.... मैं वैसे ही आप की महफ़िल में काफी दखल दे चूका.... मैं माफ़ी चाहता हूं।''

उसने नाएमा की तरफ देखकर कहा, मगर वह खामोश रही, नाएमा को इस बात का बहुत अफसोस था कि उसकी सहेली किरण उसके घर आखरी बार मिलने आई भी तो उसके लिए एक नागवार (अप्रिय) सिचुएशन पैदा हो गई। अब्दुल्लाह उठकर कमरे से बाहर गया तो फारिया भी उसे दरवाजे तक छोड़ने बाहर चली गई। उसके जाने के बाद किरण नाएमा से बोली:

''यह आदमी बाहर से तो शिक्षित है, लेकिन अंदर से एक जाहिल मौलवी के सिवा कुछ नहीं है। मैं तो लिहाज कर गयी कि तुम्हारा मेहमान है, वरना ऐसा मज़ा चखाती कि हमेशा याद रखता।''

किरण ने अपना गुस्सा अब्दुल्लाह पर उतारते हुए कहा।

''हां तुम सही कह रही हो। मज़हब (धर्म) अफीम का नशा बनकर इन लोगों की नस नस में उतरा हुआ होता है।''

नाएमा अब्दुल्लाह और किरण की बातचीत के अधिकांश हिस्से में शामिल नहीं थी, मगर फ़िक्री (वैचारिक) तौर पर वह किरण की तरफ ही थी, इसलिए उसने किरण की हां में हां मिलाई।

''यार ये साहब हैं कौन और तुम्हारे घर का रुख कैसे कर लिया?'' किरण ने बहुत गहरी बात करने के अंदाज़ में नाएमा से सवाल किया।

''यह मेरे नाना के चहेते हैं, उन्हीं से मिलने आते हैं।''

नाएमा ने नागवारी के साथ जवाब दिया।

''मगर यार तुम बचकर रहना, कहीं यह उज्जड़ मुल्ला हमारी हूरों से ज्यादा हसीन नाएमा के पीछे न लग जाए और फिर तुम इससे सहमी सहमी न भाग रही हो।''

किरण ने बेहूदा तरीके से ज़ोर ज़ोर से हँसते हुए कहा।

नाएमा ने कोई जवाब नहीं दिया, मगर चहरे के से साफ जाहिर था कि उसके दिल में अब्दुल्लाह के लिए नफरत के जज़्बात पैदा हो चुके थे।

.....

इस बात के लगभग दो हफ्ते बाद एक दिन अचानक नाएमा के नाना इस्माइल साहब के सीने में दर्द उठा, उस दिन इत्तिफ़ाक से अब्दुल्लाह उनसे मिलने आया हुआ था। इस्माइल साहब अक्सर अब्दुल्लाह को अपने घर बुला लेते थे। उन्हें अब्दुल्लाह के रूप में एक बहुत काबिल और नेक नौजवान नजर आया था जो आम युवाओं से अलग बहुत जिम्मेदार, समझदार और शरीफ था। इसमें कोई शक़ नहीं कि कुदरत ने अब्दुल्लाह को बहुत कीमती व्यक्तिगत गुणों से नवाज़ा था, बहुत ज्यादा समझदारी और सलाहियत (क्षमता) की बिना पर उसे स्कूल के समय से ही स्कोलरशिप मिलती रही। यूँ माँ बाप के साये से महरूम (वंचित) होने के बावजूद वे हायर एजुकेशन हासिल करने में सफल हो गया था। शिक्षा के फ़ौरन बाद एक अच्छी जॉब से वह अपने करियर की शुरुआत कर चुका था और लगातार तरक्की की सीढ़ियों पर कामयाबी से चढ़ रहा था।

ज़िन्दगी ग़मों और खुशियों की धूप छाँव का नाम है। सारे आसार यह थे कि ज़िन्दगी की तपती धूप सहने के बाद अब खुशियों की घटाएँ उस पर साया करने वाली थी, इसका अंदाज़ा अब्दुल्लाह ने बरसात से पहले चलने वाली ठंडी हवाओं की तरह पहले ही कर लिया था जब वो उमरे पर गया था। इस्माइल साहब के परिवार में उसे वह सब कुछ नजर आ गया था जिससे वे आज तक महरूम (वंचित) था। इसलिए उनके बुलाने पर वह हर बार बहुत शौक और ख़ुशी से उनके घर जाता था। दूसरी तरफ इस्माइल साहब को भी इस नौजवान के रूप में अपनी औलाद की कमी का एहसास दूर होता दिखाई दे रहा था। अब्दुल्लाह में उन्हें जिम्मेदारी और सलाहियत (क्षमता) दिखी थी जिसकी वजह से उनका इरादा था कि वह अपनी नवासी और बेटी की जिम्मेदारी उसको सौंप कर इत्मीनान से दुनिया से विदा हो सकते हैं।

उस दिन भी वह इस्माइल साहब के बुलाने पर ऑफिस से वापस आते हुए उनके घर आ गया था। वह ड्राइंग रूम में बैठा काफी देर से उनका इंतजार कर रहा था, मगर वे नहीं आए, फिर उनकी बेटी आमना बेगम ने बताया कि उनके सीने में दर्द उठ रहा है। अब्दुल्लाह ने फ़ौरन उन्हें अस्पताल ले जाने की ना सिर्फ सलाह दी बल्कि खुद इसरार (आग्रह) करके उन्हें अस्पताल ले गया। वहां पता चला कि इस्माइल साहब को हल्का सा हार्ट अटैक हो चुका है, डॉक्टरों ने उन्हें अच्छी तरह जाँच करने और अहतयात के तौर पर अस्पताल में भर्ती कर लिया।

इस परिवार के बड़े भी और जिम्मेदार भी इस्माइल साहब थे। जब वह खुद अस्पताल आ गए तो एक मुश्किल पैदा हो गई, आर्थिक तौर पर तो कुछ न कुछ वे अच्छे बुरे वक़्त के लिए घर में पैसे रखा करते थे, मगर पैसे ही सब कुछ नहीं हुआ करते, ऐसे हालात से निपटने के लिए किसी मर्द का होना बहुत जरूरी होता है। इस कमी को अब्दुल्लाह ने बहुत खूबी से निभाया, वह दिन में अपने ऑफिस जाता और रात भर उनके साथ अस्पताल में रुकता था, सुबह के समय आमना बेगम आ जातीं और दोपहर से शाम तक नाएमा उनके साथ रुकती थी।

नाएमा एक आत्म विश्वास से भरपूर और साहसी लड़की थी, उसे विश्वास था कि वह इस मुश्किल को अकेले बहुत आसानी से संभाल सकती है। अब्दुल्लाह वैसे भी उसे शुरू से ही पसंद नहीं था, उसने बहुत मना किया कि वह रात को न रुके, लेकिन अब्दुल्लाह का इसरार (आग्रह) था कि रात को वही रुकेगा। इस्माइल साहब ने इस बात में उस का साथ दिया और नाएमा की माँ आमना बेगम ने भी उसके होने को एक ग़ैबी मदद समझा, यूं अस्पताल के उन दिनों में वह इस परिवार से करीब होता चला गया। सिवाय नाएमा के जिस के दिल में हर गुजरते दिन के साथ अब्दुल्लाह से ना गवारी बढ़ती चली जा रही थी।

इस ना गवारी की वजह भी इन्हीं दिनों में नाएमा पर साफ़ (स्पष्ट) होने लगी थी। यह अब्दुल्लाह के अंदर मौजूद अल्लाह की गहरी मुहब्बत थी जो बात बे बात पर उसकी जुबान पर अल्लाह का नाम लेकर आती थी। नाएमा को इस नाम से चिढ़ थी, जब अल्लाह के नाम से चिढ़ थी तो अब्दुल्लाह के बारे में उसकी राय कैसे अलग हो सकती थी ?

.....

यह इस्माइल साहब का अस्पताल में चौथा दिन था। पहले उनकी एंजियोग्राफी हुई जिसके बाद डॉक्टरों ने उनकी एंजियोप्लास्टी कर दी। अब उनकी हालत खतरे से बाहर हो चुकी थी और वह खुद को बेहतर महसूस कर रहे थे, मगर चार दिन की फ़िक्र (चिंता) और बेआरामी की वजह से आमना बेगम आज खुद को कुछ बेहतर महसूस नहीं कर रही थीं।

सियाने ठीक कहते हैं कि बीमारी सिर्फ एक आदमी पर नहीं आती पूरे परिवार पर आती है। यही इस्माइल साहब के घर के साथ हुआ था। बीमार तो वो हुए थे मगर नाएमा और आमना बेगम भी लगातार बे आरामी की चपेट में थे, सबसे बेआराम अब्दुल्लाह था मगर उसका क्या ज़िक्र कि

उसने यह जिम्मेदारी अपनी मर्ज़ी से ली थी। फिर वह और नाएमा युवा थे, बेआरामी को थोड़ा हिम्मत से झेल गए, मगर आमना बेगम पर आज इस थकान का असर हो चुका था। अपने पिता की उन्हें फ़िक्र भी बहुत थी, यह भी डर था कि अब्बू को कुछ हो गया तो हम दो औरतों के लिए मुश्किल ज़िन्दगी और मुश्किल हो जाएगी। इस चिंता और थकान ने आज उन्हें कुछ बीमार कर दिया था। इसलिए रात होने के बावजूद वह अभी तक अस्पताल नहीं आई थीं, वरना उनका रूटीन था कि अब्दुल्लाह के आने के बाद रात में नाएमा को अस्पताल से घर ले जाने के लिए वह खुद आती थीं।

इस वक़्त नाएमा अस्पताल में नाना अब्बू के पास बैठी उन्हीं का इंतजार कर रही थी। थोड़ी देर पहले अब्दुल्लाह आ चुका था। अब्दुल्लाह के लिए नाएमा का साथ होना एक सुखद अनुभव होता था, मगर नाएमा का मामला उससे बिल्कुल उल्टा था। उसने अब्दुल्लाह के आते ही घड़ी देखनी शुरू कर दी थी, उसे घर जाने की जल्दी नहीं थी, उसकी असल परेशानी यह थी कि वह अब्दुल्लाह के साथ एक पल बैठना भी गवारा नहीं करना चाहती थी। नाएमा को चन्द दिनों में ही तजुर्बा (अनुभव) हो गया कि यह शख्स बीमारी को इतना गलैमराईज़ करता था कि सेहत मंद आदमी को भी अपने आप को बीमार देखने की इच्छा पैदा हो जाती है। बीमार का अल्लाह के पास इनाम, अल्लाह की नज़दीकी (निकटता), गुनाहों की माफी और पैगम्बरों (ईशदूत) की बीमारियों में सब्र के किस्से जब वह सुनाने लगता तो आमना बेगम और इस्माइल साहब सर धुनते और नाएमा का दिल चाहता कि अपनी जूती उठाए और उसके सिर पर बरसा दे। कभी कभी उसका दिल चाहता कि किसी तरह अब्दुल्लाह को अस्पताल की तीसरी मंजिल से नीचे धक्का दे दे ताकि उसकी टाँगें टूट जाएं। वे महीने भर अस्पताल में रहे और अपने आप को यह सारे मज़हबी किस्से जिन्हें नाएमा खुराफात (मिथक) कहती थी, सुनाता रहे।

आज का दिन नाएमा के लिए बहुत गनीमत था कि अभी तक अब्दुल्लाह चुप था। इसकी वजह शायद यह थी कि आमना बेगम अभी नहीं आई थीं, क्योंकि अपना दुखड़ा वही रोती थीं और तसल्ली (सांत्वना) की बातें भी अब्दुल्लाह उन ही से किया करता था। लेकिन फिर भी नाएमा को अब्दुल्लाह का वजूद (अस्तित्व) ही बुरा लग रहा था, इसलिए वह उठकर बाहर चली गई।

काफी देर तक जब नाएमा न लौटी तो इस्माइल साहब ने अब्दुल्लाह से कहा:

''बेटा! ज़रा जाकर नाएमा को देखो, वह कहाँ रह गई है,''

अब्दुल्लाह हाँ में सर हिलाता हुए उठा और नाएमा की तलाश में इधर उधर देखता हुआ वार्ड से बाहर आ गया। वह यहां पहुंचा ही था कि उसे नाएमा फारिया के साथ खड़ी हुई नजर आई।

फारिया ने भी अब्दुल्लाह को देख लिया था वह अब्दुल्लाह से बहुत तपाक से मिलते हुए बोली:

"अस्सलामु अलैकुम अब्दुल्लाह भाई! आप कैसे हैं? मैं यहाँ लेने तो नाएमा को आई हूँ, लेकिन ख्वाहिश (इच्छा) यह थी कि आपसे मुलाकात हो जाए, सो अल्लाह ने यह ख्वाहिश भी पूरी करा दी।"

अब्दुल्लाह ने भी उसे इसी गर्मजोशी से जवाब दिया:

"मैं अलहम्दु लिल्लाह बिल्कुल ठीक हूँ। लेकिन पहले यह बताइये कि आज नाएमा को लेने आंटी क्यों नहीं आईं ?"

"उनकी तबीयत बिल्कुल ठीक है, बस ज़रा बुखार सा महसूस कर रही हैं, लेकिन मैंने उन्हें गोली खिला दी थी, मैं उन्हें बिस्तर पर लिटा कर उनसे इसरार (आग्रह) करके यहाँ आई हूँ कि मैं नाएमा को खुद लेकर आजाउंगी। आप लोग बिल्कुल परेशान न हों।"

उसने अब्दुल्लाह को जवाब देते-देते नाएमा की ओर देखकर कहा जो आमना बेगम की बीमारी का सुन कर परेशान हो गई थी। शायद आमना बेगम की बीमारी वाली बात उसने अभी तक नाएमा को नहीं बताई थी। अब्दुल्लाह ने नाएमा को परेशान देखा तो उसे तसल्ली देते हुए कहा:

"इंशा अल्लाह वह बिल्कुल ठीक हो जाएंगी, यह दुख बीमारी तो ज़िन्दगी का हिस्सा है, इंशा अल्लाह सब ठीक हो जाएगा, अल्लाह सब ठीक कर देगा।"

अब्दुल्ला के इस जुल्मे (वाक्य) पर नाएमा का दिमाग घूम गया, वह कई दिनों से अब्दुल्लाह की इस तरह की बातें बर्दाश्त कर रही थी। इस वक़्त वह अपनी मां की तबीयत का सुनकर बहुत परेशान थी, ऐसे में अब्दुल्लाह की बात ने जले पर नमक का काम किया था। उसने शायद खुद पर बहुत काबू किया और बहुत आराम के साथ बोली:

"अब्दुल्लाह साहब मेरी मां बीमार हैं, उन्हें बुखार है, उन्हें अल्लाह नहीं बुखार की दवाई ठीक करेगी और अगर आप को मेरी बात से इख्तिलाफ (असहमती) है तो ऐसा करें कि अस्पताल तो

बंद करवा दें और एक रूहानी शिफ़ाखाना खोल कर बैठ जाएं, फिर तावीज़ लिख-लिख कर सारे मरीजों में बाँट दें अल्लाह ने चाहा तो सब लोग उसी से ठीक हो जाएँगे।"

नाएमा का लहज़ा तो नरम था लेकिन उसके शब्दों में ताने ही ताने थे।

अब्दुल्लाह इस उम्मीद के खिलाफ हमले के लिए बिलकुल तैयार नहीं था वह थोड़ा घबरा कर बोला:

"नहीं.....वो.....मेरा.... मतलब यह था कि अल्लाह उन्हें ठीक कर देगा, इलाज तो ज़रूर कराना चाहिए।"

"और अगर इलाज न किया जाए तो क्या तब भी अल्लाह ठीक कर देगा?"

नाएमा उसे शर्मिन्दा कर देने पर तुल चुकी थी।

"नहीं.... इलाज तो ज़रूर कराना चाहिए, यह भी अल्लाह का हुक्म है, लेकिन ठीक अल्लाह ही करता है।"

अब फारिया को अंदाज़ा हो गया चूका था कि नाएमा की क्या हालत है, उसने महसूस कर लिया कि अगर उसने नाएमा को नही रोका तो वो इस बात का लिहाज़ किये बगैर कि अब्दुल्लाह उन लोगों का मददगार है उस से उलझ पड़ेगी, वो फ़ौरन बीच में बोल पड़ी।

"नाएमा! आंटी तुम्हारा इंतिज़ार कर रही है और तुम यहाँ बातों में लग गई,"

फिर उसने अब्दुल्लाह से मुख़ातिब (संबोधित) हो कर कहा:

"अब्दुल्लाह भाई थैंक यू वैरी मच, आप नाना अब्बू को बता दीजयेगा कि नाएमा मेरे साथ चली गई, और आंटी की तबीअत का कुछ ना कहियेगा, वो इंशा अल्लाह सुबह तक बिल्कुल ठीक हो चुकी होंगी, उनसे कहना कि मैं यहाँ पास ही किसी काम से आई थी, इस लिए नाएमा को साथ ले गई।"

"मैं आप को अपनी गाड़ी में छोड़ आता हूँ।" अब्दुल्लाह ने मदद की नियत से पेशकश की।

"आप का बहुत शुक्रिया.... हम आसानी से चले गाएँगे आप प्लीज़ नाना अब्बू के पास जाइये वो आप का वेट कर रहे होंगे।"

अब्दुल्लाह की बात का जवाब इस बार नाएमा ने दिया था, शायद उसे अहसास हो चूका था कि वो बिना किसी वजह के अब्दुल्लाह से बदतमीज़ी कर रही थी।

नाएमा का शुक्रिया अब्दुल्लाह के लिए बिना उम्मीद के मिलने वाली नेमत थी, वो उन्हें अल्लाह हाफिज़ कह कर ख़ुशी ख़ुशी वापस लौट गया।

.....

नाएमा में यह मज़हब बेज़ारी (धर्म में अरुचि) और अपने आप से दुश्मनी पहले दिन से नहीं थी, इस की बहुत सारी वजह थी जिन्होंने ने नाएमा को इतना ज्यादा सख्त बना दिया था, उसकी खुद की ज़िन्दगी आम खुशियों से महरूम (वंचित) रही थी।

वह एक बे हद संवेदनशील (हस्सास) और बुद्धिमान लड़की थी, उसके बहुत सारे सवाल थे, मगर अक्ली जवाब कहीं नहीं थे, आखिर कार उन जवाबों की तलाश में वो फलसफे की दहलीज़ तक जा पहुँची, इंटर कॉलेज में किरण की दोस्ती ने उसे फिलोस्फी और नास्तिक विचारों से रूबरू करा दिया।

किरण एक एवरेज नॉलिज और एवरेज बुद्धि की लड़की थी और वो हमेशा ऐसी ही रही मगर नाएमा की स्टडी बहुत गहरी थी, इन्टर के बाद ग्रेजुएशन में उसने ऑप्शनल सब्जैक्ट के तौर पर फिलोस्फी और साइकोलॉजी को ले लिया तो उस पर इल्म की नई दुनियाएं खुल गई।

नाएमा की ज़िन्दगी में मेहरूमयों ने जो शिकायत भर दी थी फलसफे की नॉलिज ने उस शिकायत को एक फिकरी और अमली (बौद्धिक और व्यावहारिक) यकीन में बदल दिया था। एक तरफ उस कि खुद की लाचारी और फलसफ्याना इफ्कार (दार्शनिक विचारधारा) की तालीम थी तो दूसरी तरफ उसने समाज में जितनी भी मज़हब्यत (धार्मिकता) देखी वो सब ज़ाहिरी चीज़ों के अलावा कुछ नहीं थी। माँ और नाना को बचपन से रोज़ा नमाज़ पढ़ते देखा था, शुरू शुरू में तो वो यह सब करती थी लेकिन जैसे जैसे समझदारी बढ़ी दिमाग़ी तौर पर इन चीज़ों से दूर होती गई। नमाज़ अब वो अक्सर छोड़ देती थी और अगर कभी पढ़ती तो माँ और नाना के कहने पर उनकी ख़ुशी के लिए पढ़ लेती थी, हालांकि रोज़े हर साल रसम के तौर पर पूरे रखती थी लेकिन

उसमे भी नाएमा का ख्याल यह था कि इस तरह गरीबों के दुःख दर्द का ज्यादा अहसास पैदा होता है।

अच्छे टीचर बड़ी नेमत होते हैं, मगर नाएमा की बदकिस्मती कि उसे ऐसा कोई अच्छा उस्ताद न मिल सका, उस ने जब कभी मज़हब को लेकर कोई सवाल उठाया तो डरा धमका कर, जहन्नम का खौफ दिलाकर, अल्लाह के गज़ब का ज़िक्र कर के उसके सवालों को कुचल दिया गया।

स्कूल से निकल कर कॉलिज में पहुँची तो कुछ मज़हबी हल्के (धार्मिक सभाएं) देखें, उसे भी दर्स (पाठ) में बुलाया जाता, शुरू शुरू में तो वो गई भी लेकिन थोड़े ही दिनों में उसे अहसास हो गया कि सारा ज़ोर मच्छरों को छानने की तरफ है हर एक बड़े आराम से पूरा पूरा ऊँट निगल रहा है, गिनती के चंद ज़ाहिरी आमाल (कर्म) ईमान की असल पहचान बन चुके थे और बड़े बड़े अख्लाकी (नैतिक) आमाल का ज़िक्र भी नहीं था।

उसने देखा कि मज़हब के नाम पर खड़े लगभग सभी लोग वही कुछ कर रहे हैं जो बाकी लोग करते हैं, यानि अपना फाएदा और अपना बचाओ सबसे पहले, चाहे अख्लाकियात (नैतिक मूल्यों) कितनी भी क्यों ना कुचली जाए, जैसे दुसरे लोगों के दिल नफरत, जलन, कुढ़न और दुश्मनी से भर जाते हैं वैसे ही यह लोग भी हैं, जैसे दूसरों की बुराई करना, चुगल खोरी, झूट, इलज़ाम, चिढ़न, दूसरों को कोसना, और खुद को बड़ा समझने का शिकार दुसरे लोग होते हैं ऐसे ही यह भी हैं।

उसने अपनी पढ़ाई के दौरान मज़हबी लोगों का नुक्ता नज़र (दृष्टिकोण) पढ़ा तो उसपर यह दहला देने वाला खुलासा हुआ कि सारे मज़हबी फिरके एक दुसरे को काफ़िर और गुमराह समझते हैं, हर गिरोह अपने को सच्चा बताता है, हर मज़हबी (धार्मिक) ग्रुप की यह कोशिश थी कि किसी तरह लोगों को घेर कर अपने साथ मिलाया जाए और जो एक दफा साथ आजाए उसको तास्सुब (पूर्वाग्रह) और ज़हनी गुलामी की जंजीरों में इस तरह जकड़ा जाए कि वो किसी और की बात सुनने और समझने के काबिल ही ना रहे, इस मकसद के लिए दूसरों को बदनाम करना, उनकी बात को गलत तरीके से पेश करना, उनकी तरफ झूटी बाते लगाना, उनके खिलाफ फतवे देना, उनके खिलाफ लोगों में गुस्सा पैदा करना और उनकी नीयतों पर शक करना एक रोज़ मर्रा की बात है। हद तो यह है कि जिन लोगों से इख्तिलाफ़ (मतभेद) हो जाए उनकी जान लेने को भी उनमे से बहुत से लोग जायज़ करार देते हैं, बाकि लोग सांप्रदायिक बुन्याद पर क़त्ल होने वालों

की मौत पर इत्मीनान जताते हैं या कम से कम ख़ामोश रहते हैं, इस के साथ हर फ़िरका (समुदाय) अपनी हक़ परस्ती और सच्चाई का ढिंढोरा पीटता हुआ भी नज़र आता।

मज़हब की इस दुनियां में खुदा की हैसियत एक कौमी मज़हबी देवता की थी जिसे आम इंसानों को डराने के लिए हथियार के तौर पर इस्तिमाल किया जाता है, इस कौमी देवता के नाम पर खड़े होने वाले अपने हित या मतभेद के हर मौक़े पर नैतिक मूल्यों को पूरी तरह भूल कर बिलकुल आम इंसानों जैसा बर्ताव करते हैं, हर कोई भौतिकवाद (मादियत) की दौड़ में लगा हुआ है, कुछ लोग ईश्वर का नाम लेकर यह करते हैं और बाकि लोग उसका नाम लिए बगैर इस रेस का हिस्सा बने हुए हैं।

नाएमा ने एक दो बार इस तरह की बातें कुछ लोगों से कहने की कोशिश की तो उसके खिलाफ ऐसा प्रोपेगंडा किया गया कि वो पूरे कॉलिज में बेमजहब (अधर्मी) और नास्तिक मशहूर हो गई, कुछ ने उसे पश्चिम की एजेंट और इस्लामी दुश्मन क़रार दे दिया, नाएमा इस प्रोपेगंडे से दंग रह गई, उसके दिल में मज़हब (धर्म) और मज़हबी लोगों के खिलाफ इतना ज्यादा गुस्सा पैदा हो गया कि उसे मज़हब एक गाली और ईश्वर का तसव्वुर (कल्पना) मज़हबी लोगों का घड़ा हुआ एक अफसाना महसूस होना शुरू हो गया।

उसके बाद नाएमा की आखरी टहरने की जगह बस पश्चिमी फलसफा (दर्शन) ही रह गया था, वे धीरे धीरे उससे प्रभावित होती चली गई, उसे महसूस हुआ कि वो भौतिकवादी बहतर हैं जो मान कर के इस दौड़ में हिस्सा लेते हैं उस लोगों के मुकाबले जो नाम तो ईश्वर का लेते हैं मगर उनके दिल नीजी फायदे और नफरतों से भरे हुए हैं उसे अपनी ज़िन्दगी में कोई ऐसा मज़हबी आदमी नहीं मिला था जो फिक्री (बौद्धिक) तौर पर उसके सवालों के जवाब दे सके और साथ साथ सीरत और किरदार (चरित्र) में भी नीजी फायदों और नफरतों से दूर रह कर ईमान, अहसान, इन्साफ, रहम और मुहब्बत की ऐसी ज़िन्दगी गुज़रता हो जिसका ज़िक्र उसने किताबों में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत में पढ़ा था।

इसलिए उसका यह यकीन बढ़ता चला गया कि धर्म एक फरेब है, ईश्वर का तसव्वुर (कल्पना) मज़हबी लोगों का घड़ा हुआ एक जाल है जिस के ताने बाने अंधविश्वास की डोर से बुने जाते हैं और जिसमे गिरफ्तार लोगों को अक़ीदत (आस्था) और डर की दोहरी जंजीरों में जकड़ कर उन्हें मानसिक गुलाम बना लिया जाता है, हकीक़त वही है जिसे ज़्यादातर भौतिकवादी फलसफी बयान

करते हैं, यानि यह काएनात अंधे बहरे मादे (पदार्थ) की कारस्तानी है, दुनियां की कामयाबी और तरक्की ही असल चीज़ है।

इस सब के बावजूद अच्छे अहले इल्म (विद्वानों) को पढ़ने के नतीजे में और खुद अपने नेचर के बिना पर नाएमा अख्लाकी (नैतिक) तौर पर बहुत मज़बूत थी, बहुत बावकार (प्रतिष्ठित) और नर्म मिजाज़ थी, जहाँ तक मुमकिन होता लोगों की मदद करती और लोगों के साथ बहुत अच्छी तरह पेश आती थी सिवाए अब्दुल्लाह के..... सिर्फ अब्दुल्लाह था जिससे उसे पहले दिन से बैर हो गया था।

.....

यह इस्माइल साहब के अस्पताल में आखरी दिन थे, डॉक्टर्स ने बताया था कि एक दो दिन में उन्हें छुट्टी मिल जाएगी।

नाएमा कॉलिज से आकर खाने वगैरह से निपटती और सीधे अस्पताल आ जाया करती थी, आज भी ऐसा ही हुआ, वह अस्पताल की बिल्डिंग में दाखिल हुई और कई जगह से गुज़रते हुए अपने नाना के वार्ड की तरफ जा रही थी कि अचानक एक गरीब सी देहाती औरत ने उसका हाथ पकड़ कर रोना शुरू कर दिया, वो रोती जाती और कहती जाती कि मेम साहब मेरी मदद करो, मुझ गरीब पर रहम करो।

इसमें कोई शक़ नहीं था कि नाएमा अपनी पर्सनालिटी और रख रखाव में कोई "मेम साहब" ही लगती थी, एक तो शक्ल सूरत और कद काठी अल्लाह ने ऐसा दिया था, दूसरी तरफ उसका रख रखाव कपड़े और चाल हर चीज़ में अपना ही हुस्न और एक शान थी, दूर से देखने ही से पता चल जाता था कि कोई खाते पीते घराने की खास लेडी आ रही हो।

नाएमा ने आराम से अपना हाथ छुड़ाया और उस औरत से मालूम किया:

"क्या परेशानी है क्यों रो रही हो ?"

"मेम साहब! मेरा बच्चा अस्पताल में है, उसका ओप्रेशन होना है अस्पताल वाले कहते हैं कि फ़ौरन 65 हज़ार रूपये जमा कराओ वरना ओप्रेशन नहीं करेंगे, मैं बहुत गरीब हूँ, बाहर गाँव से

इलाज के लिए शहर आई हूँ, मेरा मर्द मजदूर है, हमारे पास जो कुछ था हमने दे दिया, यहाँ हमारा कोई जानने वाला नहीं, अब इतने पैसे मैं कहाँ से लाऊं, अल्लाह के वास्ते मेरी मदद करो"

अल्लाह का नाम सुन कर नाएमा को पहले तो बहुत गुस्सा आया, उसका दिल चाहा कि वो उस से कह दे कि जाओ अल्लाह से मांगो मुझसे क्यों मांगती हो, फिर सोचा कि इस तरह की बातों का यह ठीक समय नहीं है, उसने पूछाः

"कौन मांग रहा है पैसे?"

जवाब में वह गरीब औरत उसे अपने साथ वहां के ऑफिस में ले गई, नाएमा ने वहां मौजूद आदमी से बात की तो उसने बताया कि यह औरत ठीक कह रही है, उस पर नाएमा ने ड्यूटी कर रहे उस आदमी से कहा:

"आप लोग क्या किसी गरीब की कोई मदद नहीं करते ?"

जवाब मिला:

"मैडम यह प्राइवेट हॉस्पिटल है, ऐसे गरीब यहाँ हर दिन बहुत आते हैं, अगर उनकी मदद करते रहे तो हॉस्पिटल बंद हो जाएगा, इससे कहिये कि बच्चे को सरकारी अस्पताल ले जाए।"

नाएमा ने उस औरत की तरफ देखा तो उसने कहा:

"हम पहले वहीँ गए थे मगर वहां कोई बैड खाली नहीं था, फिर डॉक्टरों ने हड़ताल कर दी, इस लिए हम उसे यहाँ ले आए, अब ये कह रहे हैं कि जब तक पैसे नहीं आएँगे ओप्रेशन नहीं होगा।"

नाएमा दोबारा उस आदमी की तरफ पलटी और पूछा:

"क्या कोई डिस्काउंट नहीं होता कोई इस तरह का चैरिटी फंड नहीं है यहाँ ?"

"जी हमने पहले ही फंड से मदद भी करदी है और डिस्काउंट भी दे चुके हैं, इससे ज्यादा हम और कुछ नहीं कर सकते।"

"चाहे बच्चा मर जाए ?" नाएमा ने झुंजला कर कहा तो जवाब मिला।

''अस्पताल में लोग मरते भी हैं, वैसे आप को अगर इतना ही दर्द है तो खुद मदद करदें, आप खुद भी खाते पीते घराने की लगती हैं।''

नाएमा ने एक पल के लिए सोचा, इस एक पल में वो अपनी मजबूरियों और अपने संसाधनों का हिसाब कर रही थी, फिर वो फैसला कर देने के अंदाज़ में बोली:

''पैसे एक घंटे में मिल जाएँगे, आप ट्रीटमेंट शुरू करवाएँ।''

यह कह कर वो औरत की तरफ पलटी और कहा:

''माई! तुम यहीं रुको मैं एक घंटे में आती हूँ।''

वो अस्पताल से निकली और घर की तरफ रवाना हो गई, रास्ते में अपनी माँ को फोन पर उसने बता दिया कि उसे कुछ देर हो जाएगी वे परेशान ना हों। घर पहुँच कर उसने अपनी अलमारी खोली और ज्वेलरी के एक बोक्स को निकाला, उसमे एक बहुत कीमती और ख़ूबसूरत लॉकेट रखा हुआ था, लॉकेट सोने का था और सोने की एक मोटी चेन में लगा हुआ था, उस लॉकेट पर नाएमा के नाम का पहला अक्षर N बहुत खूबसूरती के साथ जड़ा था, नाएमा ने मैट्रिक में पूरे स्कूल में टॉप किया था, जिस पर उसके नाना ने खुश हो कर उसे यह लॉकेट बनवा कर दिया था, नाएमा को यह लॉकेट और इसका डिज़ाइन बहुत पसंद था, उसे वो आम तौर पर किसी समारोह में बड़े ध्यान से पहनती थी, नाएमा ने उस लॉकेट को हाथ में उठाया, कुछ देर उसे देखती रही फिर एक घहरी सांस ले कर उसने लॉकेट अपने पर्स में रखा और तेजी से चलते हुए घर से निकल कर रवाना हो गई।

एक घंटे के अन्दर वह दोबारा उसी अस्पताल में उसी जगह खड़ी थी और उस औरत की तरफ से 65 हज़ार रूपये जमा करा रही थी, औरत उसके साथ ही थी, जब वो पलटी तो देखा कि वो औरत उसके शुक्र (आभार) के अहसास से रो रही है, वह झोलियाँ भर भर के उसे दुआएं दे रही थी।

''बेटी अल्लाह तुझे खुश रखे, तुझे किसी शाहज़ादे से बियाहदे, तू किसी बड़े लीडर की बीवी बने, तुझे दोनों जहान की इज्ज़त मिले, बेटी मैं तेरा शुक्रिया कैसे अदा करूँ, गरीब के पास दुआ के सिवा और क्या होता है।''

वो औरत अब मेम साहब से बेटी पर आ गई थी, उसे अंदाज़ा हो चुका था कि यह एक नौजवान गैर शादी शुदा लड़की है।

"शुक्रिया अपने अल्लाह का अदा कर दो।"

नाएमा के लहज़े में तंज़ (व्यंग्य) की बजाए गहरी उदासी थी, उदासी इस अहसास की थी के उसने सिर्फ एक गरीब की मदद की है, यहाँ ना जाने कितने लोग इस तरह मर जाते होंगे, अस्पताल के ऑफिस से निकली और अपने नाना के वार्ड की तरफ चलने लगी, रास्ते में एक खुली जगह आई जहाँ आसमान नज़र आ रहा था, वो एक पल के लिए रुकी और आसमान की तरफ सर उठा कर देखने लगी, यहाँ से सूरज नज़र नहीं आ रहा था मगर साफ़ नीले आसमान पर बिखरी तेज़ रौशनी की हर किरण यह बता रही थी कि आसमान की सल्तनत पर सूरज बड़ी शान के साथ बिराजमान है, उसकी चमक ने ज़मीन से आसमान तक नूर फैला रखा है और उसके तेज़ से ज़मीन सुलग रही है, नाएमा की आँखों से आंसू की एक बूँद निकली और उसके गाल से फिसल कर नीचे गिर गई, वो धीरे से बोली:

"मैं तो एक ही को बचा सकी, हो सके तो बाकि लोगों को तू बचा ले।"

अरसा हुआ नाएमा ने दुआ मांगनी छोड़ दी थी, अपने नाना की बीमारी में भी उसने खुदा को नहीं पुकारा था, मगर इस वक़्त ना जाने क्या हुआ था कि उसका कुफ्र टूट गया या फिर शायद यह एक काफिर लड़की की आखरी दुआ थी, ना आसमान से कोई जवाब आया ना उसे इसकी कोई उम्मीद थी।

नाएमा सर झुका कर अपनी सोचों में गुम आगे बढ़ गई, वो धीरे धीरे चलते हुए आगे बढ़ रही थी, उधर आसमान पर अचानक बादल का एक टुकड़ा आया और सूरज को ढक कर ज़मीन को उसकी तपिश से बचा लिया, नाएमा अन्दर चली गई थी, वो नहीं देख सकी कि उसकी दुआ के फ़ौरन बाद तेज़ धूंप का असर खत्म हो गया और उसकी जगह एक खुशगवार (सुखद) साए ने ले ली थी।

****

बेलिबासी (नग्न) की ज़िल्लत

इस्माइल साहब को घर आए हुए एक महीना हो चुका था। उनकी तबीयत अब पूरी तरह ठीक हो चुकी थी, कुछ सावधानी थी जो वह डॉक्टरों की सलाह पर कर रहे थे, अब्दुल्लाह भी कई बार उनकी तबीयत जानने आया था, उन दोनों की दिलचस्पी एक ही चीज़ से थी यानी मज़हब (धर्म) इसलिए ज्यादातर उनकी बातचीत भी इसी टॉपिक पर होती थी, वे अक्सर कुरआन लेकर उनके पास बैठ जाता और अलग अलग आलिमों (विद्वानों) की राय की रौशनी में कुरआन की आयातों की तफसील बयान करता। धीरे-धीरे इस्माइल साहब उसकी सीरत (किरदार) के साथ उसकी नॉलिज से भी प्रभावित होते जा रहे थे।

उन्हें अब्दुल्लाह के साथ रहकर अंदाज़ा हो रहा था कि यह लड़का असाधारण बुद्धिमान और प्रतिभाशाली है। इसके साथ उसकी अच्छी परख और पढ़ने की आदत की वजह से उसका इल्म (ज्ञान) और समझ कमाल की है, जो बात एक पढ़े लिखे मज़हबी (धार्मिक) आदमी को भी पता नहीं होती थी वह अब्दुल्लाह बहुत आसानी से बयान कर दिया करता था। इस्माइल साहब अक्सर कहते थे कि वह देखने में एक आम सा गैर मज़हबी आदमी लगता है, लेकिन वह किसी आलिम से भी ज्यादा इल्म रखता है। जवाब में अब्दुल्ला हंस कर चुप हो जाता।

अब्दुल्लाह उन्हें क्या बताता कि मज़हबी इल्म को अपना ओढ़ना-बिछौना बना लेना तो अब्दुल्लाह का सपना था, मगर दूसरी ओर दुनियावी तालीम के बाद मिलने वाली तरक्की ने उसके लिए सिर्फ यही रास्ता छोड़ा था कि वह दिन भर ऑफिस में काम करे और शाम में अपनी मज़हबी इल्म की भूक को मिटाया करे। उसकी ज़िन्दगी एक संघर्ष में गुज़र रही थी, उसकी शिक्षा कुछ और थी और इसका शौंक कुछ और था। कुछ समय पहले वह उमरा करने गया तो अल्लाह से यही दुआ करता रहा था कि उसकी मंजिल उसके सामने साफ (स्पष्ट) हो जाए, उसके लिए ऐसे रास्ते खुल जाएं कि वह अपने आप को खुदा के लिए खास (समर्पित) कर सके, मगर फिलहाल यह एक सपना ही था, हकीक़त यह थी कि परिवार के साए से महरूम एक यतीम के सामने पहला मक़सद था कि वह अपनी बुनियादी जरूरतों घर, कार, शादी, बच्चों और परिवार की ज़रूरतों को पूरा करने का इन्तिज़ाम करे।

इस्माइल साहब के घर में उसे अपनी मंजिल नजर आने लगी थी, नाएमा उसके दिल के दरवाजे पर दस्तक दिए बिना दाखिल हुई और चुपके से दिल के खाने में अपना मुस्तकिल (स्थायी) ठिकाना बना लिया, यह जगह उससे खाली कराना अब मुमकिन नहीं रहा था। दूसरी तरफ इस्माइल साहब भी कई बार दबी ज़ुबान में यह बात कह चुके थे कि वह उसे अपना बेटा बनाना चाहते हैं। यूँ वह अपनी नई ज़िंदगी के सपने आँखों में सजाए हर गुजरते दिन के साथ अपनी मंजिल की ओर बढ़ रहा था, इस बात से बेखबर कि जल्द ही उसके सपने बिखरने वाले हैं।

एक शाम जब अब्दुल्लाह इस्माइल साहब से मिल कर अपने घर रवाना हुआ तो आमना बेगम इस्माइल साहब को दवा खिलाने उनके कमरे में आईं, इस्माइल साहब ने दवा खाने के बाद अपनी बेटी से पूछा:

"बेटा! तुमने नाएमा से अब्दुल्लाह के बारे में बात की? मुझे अब अपनी ज़िन्दगी का खतरा लगा रहता है और यह लड़का मुझे बहुत पसंद है, मैं चाहता हूँ कि अपनी ज़िन्दगी ही में नाएमा की जिम्मेदारी से निपट जाऊं।"

"अबू! नाएमा इस रिश्ते को राज़ी नहीं है।" आमना बेगम ने सर झुकाकर जवाब दिया।

यह सुनकर इस्माइल साहब कुछ देर के लिए खामोश हो गए, उन्हें शायद यह उम्मीद नहीं थी कि उनकी नातिन उनके पसंद किए हुए रिश्ते से इन्कार कर देगी, कुछ देर की चुप्पी के बाद उन्होंने पूछा:

"अब्दुल्लाह में खराबी क्या है ?"

"वही जो नाएमा के पिता शहज़ाद में थी।" आमना बेगम ने उदासी के साथ जवाब दिया।

"शहज़ाद के साथ तो तकदीर ने धोका किया, वरना आज वह जिन्दा होता तो हालात बिल्कुल अलग होते, मगर तकदीर हर बार खराब नहीं होती।"

"अब ज़माना बदल गया है अबू!।" आमना ने समझाने वाले अंदाज़ में कहा:

"अब हम अपने बच्चों पर अपनी मर्ज़ी नहीं ठूंस सकते, आज के बच्चे हमारी पीढ़ी की तरह अपनी तकदीर पर सब्र करके नहीं रहते, वह अपनी किस्मत आप बनाना चाहते हैं, वह फैसले

सुनते नहीं, अपने फैसले आप करना चाहते हैं ताकि उनके फैसले गलत हों तो उसका इलज़ाम कम से कम खुद को तो दें, अपने बड़ों को तो कटघरे में खड़ा न करें।"

"तुम्हारी बात ठीक है, लेकिन देखो तो सही अब्दुल्लाह में कितनी खूबयाँ (गुण) हैं, वह अच्छी शक्ल का है, बहुत काबिल है, अच्छी नौकरी करता है, फिर उसने अभी अस्पताल में हमारा कैसे साथ दिया है, सारा दिन जॉब करता और सारी रात मेरे सिरहाने एक कुर्सी पर बैठा रहता था, और नेक देखो कितना है। अगर नेकी, शराफत और सलाहियत (क्षमता) को देखने में नाएमा की नौजवान आंखें कामयाब नहीं हो रहीं तो तुम तो देख सकती हो।"

"अबू! नाएमा जहां से ज़िन्दगी शुरू करना चाहती है, अब्दुल्लाह शायद बुढ़ापे तक भी उस मंजिल पर न पहुंच सके, आप यह भी तो देखये अब्दुल्लाह और उसके खानदान का हमें बहुत ज्यादा पता नहीं है, इतनी कम मुलाकातों में इतने बड़े फैसले नहीं किए जाते। फिर नाएमा के लिए और कई रिश्ते आ रहे हैं, नाएमा ख़ूबसूरत है, पढ़ी लिखी है, अच्छे परिवार से है, एक दो रिश्ते नाएमा के पहले ही आए हुए हैं, उनमें से एक तो बिल्कुल वैसा ही है जैसा नाएमा चाहती है।"

"कहीं नाएमा की अपनी कोई पसंद तो नहीं ?" इस्माइल साहब ने एक संभावना को सामने रखते हुए पूछा तो आमना बेगम ने फ़ौरन मना कर दिया।

"नहीं ऐसी कोई बात नहीं, नाएमा का कभी किसी लड़के से कोई मेल जोल नहीं रहा। बस उसके कुछ डर हैं कि जो दुख उसने झेले हैं उसकी औलाद को ना झेलने पड़े। फिर उसके जैसी लड़कियाँ ऊंचा ही सोचती हैं, उस जैसी शक्ल सूरत वाली लड़की फितरी तौर (स्वाभाविक रूप) से आजकल के समाज में रहकर ऐसा ही सोचेंगी। समाज में ख़ूबसूरती का जो सिक्का आज कल सबसे ज्यादा चलता है वह नाएमा के पास बेहिसाब है, फिर वे औसत दर्जे के रिश्ते पर कैसे हामी भरदेगी ? मैं भी इसे कोई समझदारी नहीं समझती।"

माँ ने अपना वजन बेटी के पलड़े में डालते हुए मानो अपना फैसला भी सुना दिया था।

इस्माइल साहब ने हार मानते हुए बेटी से पूछा:

"दूसरा रिश्ता कैसा है?"

"बहुत अमीर घराने का है, लड़का अमेरिका में पढ़ाई के आखरी दौर (अंतिम चरण) में है, कुछ महीनों में आने वाला है और वे लोग इसके बाद फ़ौरन ही शादी करना चाहते हैं। मैंने तस्वीर देखी है लड़के की, बहुत अच्छा लड़का है। जिसने यह रिश्ता बताया वो औरत बता रही थीं कि उन्हें रिश्तों की कोई कमी नहीं एक ढूँडे तो हजार मिलेंगे, मगर क्यों कि वह औरत मेरी पुरानी जानने वाली है, इसलिए सबसे पहले उसने मुझसे कहा है। वह कह रही थी कि फ़ौरन हां कह दें, ऐसे रिश्ते बार बार नहीं मिलते।"

"फिर मुझसे क्या पूछती हो नाएमा ही से पूछ लो।" इस्माइल साहब ने थोड़ा बेरुखी और बेपरवाही के साथ कहा।

"मुझे पता है जो कुछ नाएमा को चाहिए वह सब इस रिश्ते में मौजूद है, मुझे विश्वास है वे हाँ कह देगी, उसकी सहेली फारिया की भी सगाई हो चुकी है और अब नाएमा की शादी भी हो जानी चाहिए, आप हाँ कह दें तो अगले हफ्ते बकाएदा बातचीत हो जाएगी।"

"मेरी हां तो बस एक रस्मी (औपचारिक) सी बात है, मगर मैं अब्दुल्लाह का सामना कैसे करूँगा?"

"तो क्या आप ने अब्दुल्लाह से बात कर ली थी?"

"मैंने तुमसे बात करने से पहले उसकी मर्ज़ी इशारों में ले ली थी कि कहीं उसकी कोई और पसंद न हो, मैं नहीं चाहता था कि नाएमा से हम बात कर लें और अब्दुल्लाह बाद में मना कर दे। यूं नाएमा को कोई दुख पहुँचे, मगर यहाँ मामला ही उल्टा हो गया, अब तो अब्दुल्लाह को दुख होगा, मैंने सोचा था कि सारी ज़िन्दगी अल्लाह ने बेटा नहीं दिया, अब अब्दुल्लाह जैसा बेटा मिलेगा जो मेरे मन मुताबिक मेरे सपनों के जैसा है, मगर शायद ज़िन्दगी के आखरी हिस्से में भी यही कमी और देखनी थी।"

"अब्दुल्लाह अगर सच में ईमानदार और हकीक़त में अच्छा लड़का है तो वो अब भी आपके पास आता रहेगा।"

"पता नहीं आगे क्या होगा?" इस्माइल साहब ने धीरे से कहा और आंखें बंद कर लीं।

.....

दो हफ्ते बाद एक सादा से फंक्शन में नाएमा की सगाई हो गई, लड़का देश से बाहर था, उसके घर वाले गहने और मिठाई लेकर उनके घर आ गए थे। इसी मौक़े (अवसर) पर शादी की तारीख भी तय हो गई जो तीन महीने बाद की थी, इस पर दोनों तरफ के लोग बहुत खुश थे, नाएमा आमतौर पर बहुत सादा रहती थी, मगर सगाई वाले दिन जब वह मेकअप करके बकाएदा तैयार हुई तो हर देखने वाले को लगा कि मानो चाँद ज़मीन पर उतर आया है, दूसरी तरफ नाएमा के ससुराल वालों की गाड़ियाँ, खानदान और स्टैण्डर्ड देखकर हर आदमी नाएमा की किस्मत पर हैरानी ज़ाहिर कर रहा था कि वे कितने बड़े घर में ब्याही जा रही है, उसके ससुराल वाले तो बड़े धूम धाम से यह मांगनी करना चाह रहे थे, लेकिन इस्माइल साहब ने अपनी बीमारी का बहाना बता कर प्रोग्राम को सादा रखवाया था।

उन्हें यह चिंता भी थी कि वे किसी तरह भी उनके हम पल्ला नहीं थे, नाएमा अपनी नासमझी और आमना अपनी बेटी के प्यार की वजह से यहां रिश्ता तो कर रहीं थीं, मगर उन्हें पता नहीं था कि ऐसे असमान रिश्तों में क्या दिक्कतें पेश आती हैं। वे क्या करते, उनके हाथ में कुछ भी नहीं रहा था, उनका दिल अंदर से बहुत उदास था, अब्दुल्लाह की तरफ से उनके दिल पर एक बोझ था, इन अंदेशों और बोझ के साथ शायद वह अकेले आदमी थे जो खुश नहीं थे। अगले दिन उन्होंने यह बोझ उतारने का फैसला कर लिया।

.....

अब्दुल्लाह आज बहुत खुश था। वे झूमते हुए अपनी नई चमचमाती कार को चलाता हुआ इस्माइल साहब के घर जा रहा था, कल शाम उनका फोन आया था कि वह उनसे आकर मिल ले। वह खुद उनसे मिलने जाना चाहता था, उसने पिछले हफ्ते एक मल्टीनेशनल कंपनी में नई जॉब ज्वाइन की थी, इस कंपनी ने उसे रहने के लिए एक घर और नई कार भी दी थी। अब अब्दुल्लाह की ज़िन्दगी में कोई कमी थी तो सिर्फ नाएमा की। नाएमा पिछले कुछ समय में उसकी ज़िन्दगी और ख्यालों का हिस्सा बन चुकी थी। मुहब्बत क्या होती है, इंसान को वह कैसे पिघला देती है, कैसे उसे सरशार (समर्पित) कर देती है, किस तरह दुनियां के हर रंग को बदल देती है, आजकल अब्दुल्लाह इसी तजुरबे (अनुभव) से गुज़र रहा था। उसे यकीन था कि कुदरत ने नाएमा के रूप में उसे उसकी ज़िन्दगी का सबसे अच्छा तोहफा देने का फैसला कर लिया है,

इस्माइल साहब की बातों से भी उसे अंदाज़ा हो चुका था कि वह उसे इस रिश्ते के लिए क़ुबूल कर चुके हैं।

सब कुछ ऐसा ही हो रहा था जैसा उसने चाहा था, जैसी उसकी ख्वाहिश (इच्छा) थी .... और सबसे बढ़कर जैसे उसके सपने थे। वह उस परवरदिगार (प्रभु) की शुक्र गुज़ारी (आभार) के अहसास में जी रहा था जिसने एक दो साल के भीतर उसकी ज़िन्दगी बदल दी थी, पढ़ाई के आखिरी दौर में ही एक अच्छी जॉब ऑफर हो गई थी, थोड़ा तजुर्बा (अनुभव) होते ही मार्केट में उसकी बहुत अहमयत हो गई, इसलिए फ़ौरन उसने नई जॉब की खोज शुरू कर दी और ज्यादा भागदौड़ के बिना ही उसे एक मल्टीनेशनल कंपनी में जॉब मिल गई, जहां अच्छी सैलरी के साथ कई बेनिफिट्स भी उसे दिये गए थे।

इन्ही ख्यालों में मगन वह नाएमा के घर पहुंचा, कॉल बेल बजाई तो दरवाजा नाएमा ने ही खोला, नाएमा को देखकर अपने आप उसका दिल धड़कने लगा, उसका दिल चाहा कि सबसे पहले वह नाएमा को अपनी नई जॉब और कामयाबी का बताए, मगर नाएमा ने तो उसके सलाम तक का जवाब नहीं दिया था, उसे चुपचाप अंदर ड्राइंग रूम में बिठा कर वह अपने नाना को बुलाने चली गई, नाएमा का रवैया शुरू से ही उसके साथ कुछ ऐसा था, मगर अब्दुल्लाह का मानना था कि वह कम बोलने वाली और शर्मीली लड़की है, इसलिए फितरी तौर (स्वाभाविक रूप) से एक अजनबी नौजवान से किसी तरह की बातचीत करने से कतराती है।

थोड़ी देर में इस्माइल साहब ड्राइंग रूम में आ गए तो अब्दुल्लाह ने आगे बढ़कर उनसे मुसाफा किया और उनका हाथ पकड़ कर उन्हें सोफे पर बिठाया, वह सोफे पर बैठते हुए बोले:

"बेटा काफी दिनों से तुमसे कोई राबता (संपर्क) नहीं हुआ, कहां बिज़ी थे?"

"जी में जरा नई जॉब की जिम्मेदारियों को संभालने में बिज़ी था, इसलिए हाज़िर (उपस्थित) नहीं हो सका।"

यह कहते हुए अपने साथ लाई हुई मिठाई उसने उनके सामने रखी और फिर बड़ी ख़ुशी और उत्साह के साथ उन्हें अपनी नई जॉब और मिलने वाली सैलरी और सुविधाओं की तफसील बताने लगा, यह सब बताकर वह बोला:

"सर मेरा अपना तो कोई है नहीं, इसलिए मुझे आपको यह सब कुछ बता कर बहुत खुशी हो रही है, आप आंटी और नाएमा को भी यह मिठाई दे दीजियेगा।"

"हां बेटा जरूर दूंगा, तुम्हारी कामयाबी से मुझे बहुत खुशी होती है, मुझे भी तुम्हें मिठाई खिलानी है.... दरअसल परसों हमने नाएमा की सगाई कर दी है, तीन महीने बाद उसकी शादी की तारीख तय हुई है।"

इस्माइल साहब यह सब कह रहे थे तो उनका सर झुका हुआ था, वह खुद में इतनी हिम्मत नहीं पा रहे थे कि जिस लड़के को वह बार बार यह कह चुके थे कि मैं सारी जिंदगी के लिए तुम्हें अपना बेटा बनाना चाहता हूं, उससे नजरें मिलाकर उसे यह बताएं कि अब इसकी कोई उम्मीद नहीं है।

यह इस्माइल साहब की हालात थी और दूसरी तरफ उनके मुंह से निकले हुए शब्द हवा में सनसनाती हुई गोलियों की तरह अब्दुल्लाह के कानों तक पहुंचे और उसकी रूह और दिल को अंदर तक छेदते चले गए, एक पल के लिए खामोशी छा गई, इस पल में अब्दुल्लाह अपनी पूरी ताक़त और हिम्मत खर्च करके अपने छलनी हुए वजूद (अस्तित्व) को समेटने की कोशिश कर रहा था, उसकी पूरी कोशिश थी कि उसे अपने चेहरे के हावभाव, लब व लहज़े और उन आंसुओं पर काबू रहे जो सैलाब की तरह जज़्बात के हर बंद को तोड़कर बाहर निकलने के लिए बेचैन थे।

अब्दुल्लाह ने सारी ज़िन्दगी महरूमयों (वंचित) में बिताई थी, उन महरूमयों का सबसे बड़ा फाएदा उसे आज हो रहा था..... जब उसे ज़िन्दगी की सबसे बड़ी महरूमी की खबर मिल रही थी..... जब अमृत के प्याले से उसे ज़हर का सागर पीने को मिल रहा था। मगर सारी ज़िन्दगी के सब्र, ज़ब्त (संयम) और बर्दाश्त की बिना पर इस पल में अपने आप को कुचल कर खुद पर काबू पाने में उसे काफी मदद मिल रही थी, उसने अपनी पूरी ताकत इस्तिमाल की और आवाज़ के उतार चढ़ाव पर काबू पाते हुए बोला:

"सर आप को बहुत बहुत मुबारक हो, आंटी और नाएमा को भी मेरी तरफ से बधाई दें दीजयेगा।"

पूरे विश्वास के साथ स्थिर आवाज़ में यह लाइन बोलने के बाद वह चुप हो गया, उसने अपनी ज़िन्दगी की एक और जंग जीत ली थी।

दूसरी तरफ इस्माइल साहब की जान में जान आ गई थी और वह तफसील से नाएमा के ससुराल और होने वाले पति के बारे में बताने लगे, इस बयान में दौलत, कारखानों और गाड़ियों, नौकरों की तफसील बहुत ज्यादा थी, यह बात भी इसमें शामिल थी कि लड़का हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ रहा है और हनी मून के लिए उसका प्रोग्राम था कि यूरोप और अमेरिका के दो महाद्वीपों में जाया जाए। शायद इस्माइल साहब इसके बहाने अब्दुल्लाह के सामने अपनी सफाई पेश कर रहे थे कि ऐसे रिश्ते का इन्कार हम कैसे कर सकते थे। वे यह बात बताकर अब्दुल्लाह को दुखी नहीं करना चाहते थे कि जिस लड़की को वह दिल की गहराई में जगह दे चुका है, वह उसे पहले ही धुतकार चुकी थी।

.....

पूरी रात गुज़र गई, अब्दुल्लाह ने एक लुक्मा खाया ना एक पल सोया, उसके आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे, वह नाएमा के घर से बाहर निकलने तक बहुत शांत नज़र आता रहा, लेकिन अपनी कार में बैठ कर जैसे ही वह मेन रोड पर आया उसने अपने आप से विरोध करना छोड़ दिया, सारे बंद टूट गए और दिल का सैलाब आँखों के रस्ते बह निकला, सारे रास्ते वह हिचकियां लेकर रोता रहा, रात गए तक उसकी हालात में कोई फर्क नहीं आया था।

वह इशा (रात) की नमाज़ के लिए मुसल्ले पर खड़ा हुआ तो उससे हट नहीं सका, रात भर वह मुसल्ले पर खड़ा रहा, एक पल के लिए उसके आँसू नहीं रुके, वह बिलक बिलक कर रोता रहा और बार बार सजदे में जाकर एक ही बात कहता।

"परवरदिगार मुझे तुझ से कोई शिकवा नहीं और अगर शिकवा है तो सिर्फ तुझी से है, तेरे सिवा ना किसी से कुछ कहना है ना कहीं और जाना है, मुझे तेरा हर फैसला मंज़ूर है, लेकिन मेरा अपना आप मेरा साथ नहीं देता, मेरे आँसू मेरा कहा नहीं मानते, तू मुझे माफ कर दे।"

अब्दुल्लाह का दिल फटा जा रहा था, उसकी ज़िन्दगी महरूमयों की एक पूरी कहानी थी, बचपन से माँ बाप का साया न मिला, बहन भाई भी नहीं थे, एक यतीम बच्चा दूर और पास के रिश्तेदारों पर बोझ था, एक जगह से दूसरी जगह धक्के खाता रहा, किस्मत से बेपनाह ज़हानत (बुद्धिमानी) की वजह से पढ़ाई का सिलसिला किसी न किसी तरह जारी रहा, शऊर (चेतना) में कदम रखते ही अपना बोझ खुद उठाया और होस्टल्स में रहकर पढ़ाई पूरी की, न घरबार न

रिश्तेदार न दोस्त यार, और अब जब वह समझ रहा था कि समय अपने हर ज़ख्म की कीमत अदा करने जा रहा है तो ज़िन्दगी की सबसे बड़ी महरूमी उसके सामने आ गई, इस महरूमी ने अब्दुल्लाह को पूरी तरह से तोड़ फोड़ कर रखा दिया था।

अब वह इस महरूमी के साथ उस दर पर खड़ा था जहां आने वाले कभी खाली हाथ नहीं लौटते, जहां मांगने वाले ज़मीन की बादशाही भी मांग लें तो सब को सब कुछ देकर भी इस अन दाता के खजाने में जर्रे (कण) बराबर कमी नहीं आती। जहाँ मायूसी कुफ्र होती है।

मगर अब्दुल्लाह कुछ मांग नहीं रहा था, बस वह खुदा के सामने खड़ा रहा, रोता रहा और नमाज़ पढ़ता रहा, अब्दुल्लाह के लिए यह महरूमी की वो स्याह रात थी जिसके अंधेरों ने उम्र भर के लिए अब्दुल्लाह को घेर लिया था, मगर उसे नहीं पता था कि यह बखशिश की रात है, वह बखशिश जो क़यामत के बाद भी खत्म नहीं होगी।

वह खुद अभी बहुत कम उम्र था, अपनी ईमानी ज़िन्दगी के शुरू के दौर में था, उसे मामूली सा अंदाज़ा भी नहीं था कि वे किस आला हस्ती के सामने खड़ा है.... वह हस्ती जो अपने बन्दों के लिए किसी भी हद तक जा सकती है, अब्दुल्लाह कुछ नहीं मांग रहा था मगर जो उसे चाहिए था वह देने वाले को बिना बताए पता था, उसे यह भी पता था कि इस आजिज बन्दे की पहली ज़रूरत सब्र (धैर्य) है, सो सब से पहले वही दिया गया, कुरआन का एक बड़ा हिस्सा अब्दुल्लाह को ज़ुबानी (मौखिक) याद था, फज्र (सुबह) से कुछ पहले वह कुरआन पढ़ता हुआ सूरेह नमल के इस स्थान पर पहुंचा:

"अनुवाद:- बेशक बादशाह जब किसी बस्ती में दाखिल होते हैं तो वहां की हर चीज़ को तबाह कर देते हैं और उसके इज्ज़त दारों को ज़लील कर डालते हैं।"

अब्दुल्लाह इस आयत तक पहुंच कर, फिर आगे नहीं बढ़ सका। वह बार बार यही आयत पढ़ता रहा, वह उसे दोहराता रहा यहाँ तक कि उस पर वाज़ेह (स्पष्ट) हो गया कि यह आयत उसे क्या बता रही है, यह कि अल्लाह सबसे बड़ा बादशाह है, और दिल की बस्ती सबसे बड़ी बादशाहत होती है, इस बस्ती में अगर अल्लाह दाखिल हो जाए तो किसी और को वे वहां बर्दाश्त नहीं कर सकता, इसके बाद वह वहां मौजूद हर इज्ज़त दार और महबूब चीज को निकाल फेंकाता है, इंसान इसे महरूमी समझते हैं लेकिन यह तौहीद (एकेश्वरवाद) का सबसे बड़ा मुक़ाम है, अब्दुल्लाह का

दिल हमेशा खुदा का घर बना रहा था, लेकिन पिछले कुछ दिनों से इस घर में एक देवी की पूजा शुरू हो गई थी। हर पल की खबर रखने वाला आसमानो जमीन का गैरतमंद (स्वाभिमानी) मालिक यह शिर्क (मिलावट) कैसे सहन कर सकता था। इसलिए आज रात इस देवी को दिल के मंदिर से निकाल बाहर किया गया, इस इबादत खाने में अब कभी अल्लाह के अलावा किसी और का गुज़र नहीं हो सकता था, अब्दुल्लाह के लिए यही इस आयत का मतलब था, शिर्क खत्म हो गया, तौहीद बाकी रह गई, अब्दुल्लाह को करार मिला, आंसू थम गए।

सुबह की नमाज़ पढ़ कर अब्दुल्लाह लेटा, नींद तो सूली पर भी आ जाती है, सो उसे भी आ गई। वह उठा तो ऑफिस जाने का समय निकल चुका था, मगर अब उसे ऑफिस जाना भी नहीं था, सोने से पहले वे एक फैसला और कर चुका था, वह कश्मोकश (असमंजस) जो बहुत अरसे से उसके अंदर जारी थी आज उसका फैसला भी हो गया था। वह सोच रहा था कि ज़िन्दगी बहुत छोटी है, यह इसलिए नहीं है कि गाड़ी, बंगले और कैरियर के पीछे भागते हुए गुज़ारी जाए, इसका एक ही मकसद होना चाहिए, वह रब जो हर नेमत देने वाला और हर महरूमी को दूर करने वाला है, उसका परिचय इस दुनिया के हर इंसान से कराया जाए, उसकी मुहब्बत की शमा हर सीने में जलाई जाए, उसकी ज़ात व सिफात (विशेषताओं) से लोगों को आगाह करना और उसकी मुलाकात के लिए लोगों को तैयार करना सबसे बड़ा काम है, उसने सोने से पहले एक दुआ की थी।

"परवरदिगार! इस दुनिया में हर शख्स (व्यक्ति) की एक कीमत होती है और हर शख्स बिकता है, मैं अपने वजूद (अस्तित्व) को किसी मल्टीनेशनल कंपनी के हाथो नहीं बेच सकता, मैं तुझ से अपना सौदा करता हूँ, तू मुझे ख़रीदले।"

सुबह उठने के बाद अब्दुल्लाह ने पहला काम यह किया कि नई जॉब से अपना इस्तिफा लिख दिया।

.....

जैसे जैसे नाएमा की शादी के दिन करीब आ रहे थे शादी की तैयारियों का सिलसिला जोर पकड़ता जा रहा था, इस्माइल साहब की ज्यादा तर बचत पहले से ही उमरा करने में निकल चुकी थी, फिर वह दिल की बहुत महंगी बीमारी का शिकार हो गए।

जो बचा था वे मिलाया और कुछ रूपये एक ज़मीन बेचकर हासिल किये और सारे पैसे बेटी के हवाले कर दिए, आमना बेगम एक सलीके से काम करने वाली औरत थीं, नाएमा के लिए वह उसके बचपन से ही कुछ न कुछ बचा रखती थीं, इसलिए इज्ज़त व आबरू के साथ तैयारी हो रही थी। मगर जिन लोगों से वास्ता पड़ा था उनके मुकाबले में हर तैयारी बे हैस्यत थी।

इस बात का अंदाज़ा इस्माइल साहब को पहले दिन से था, अब आमना बेगम को भी हर गुजरते दिन के साथ होता जा रहा था। जैसे जैसे लड़के वालों की तरफ से शादी के इन्तिज़ाम और तैयारियों की तफसील (विवरण) उनके सामने आती उनके हाथ पाओं फूलते चले जा रहे थे।

इन सब चिंताओं से अगर कोई बेखबर था तो वह नाएमा थी, यह उसकी ज़िन्दगी में बड़ी खुशियों के दिन थे, उसने जो ख्वाब देखे थे उनकी ताबीर (व्याख्या) अचानक बहुत तेजी से उसके सामने आ चुकी थी। खुशीयों के इन पलों को वह सबसे बढ़कर अपनी गहरी सहेली फारिया के साथ एन्जॉय कर रही थी, आज भी फारिया नाएमा के घर आई हुई थी और उसके कमरे में बैठी शादी के जोड़े टांक रही थी, हंसी मज़ाक की बातचीत का सिलसिला जारी था, बातों बातों में फारिया नाएमा से कहने लगी:

"तुम्हें पता है बाहर अब्दुल्लाह भाई आए हुए हैं? नाना अब्बु के कमरे में उनके पास बैठे हैं।"

"अच्छा! मुझे नहीं मालूम।" नाएमा ने बेपरवाही से जवाब दिया।

"मैं तुम्हारे पास आने से पहले आंटी के पास गई थी, वही बता रही थीं कि उन्होंने नई जॉब कर ली है।"

"हां मेरी सगाई के एक दो दिन बाद वह नई जॉब की मिठाई लेकर आया था।"

"अरे नहीं भई.... यही तो असली बात है, वह जॉब तो बहुत अच्छी थी, मगर उन्होंने वह जॉब छोड़ दी....."

"हां यही इन मिडिल क्लास नौजवानों का मसला होता है, तरक्की की चाहत में जल्दी-जल्दी जॉब बदलते रहते हैं, मगर बूढ़े होने से पहले अपना घर बनाना भी इनके लिए मुश्किल होता है।"

नाएमा ने उसकी बात पूरी होने से पहले ही अपनी टिप्पणी कर दी।

''अरे पागल पूरी बात तो सुन लो, उन्होंने बहुत अच्छी जॉब छोड़ कर पढ़ाने की एक पार्ट टाइम नौकरी कर ली है और बाकी पूरे समय में वह दीनी उलूम (धार्मिक ज्ञान) सीख रहे हैं।''

''चलो अच्छा है, सोसाइटी में एक मौलवी और बढ़ जाएगा।'' नाएमा ने तंज़ (व्यंग) भरी हंसी के साथ कहा।

''मैंने अपने जीवन में इतना डीसंट और नाईस आदमी नहीं देखा, बेचारे अच्छी खासी कैरियर जॉब कर रहे थे, अचानक दिल में क्या समाई कि हर चीज पर लात मारकर इस तरफ निकल गए।''

फारिया ने हमदर्दी और ताज्जुब के मिले जुले जज़्बात के साथ कहा तो नाएमा तुनक कर बोली:

''यह बेवक़ूफ़ पहले दिन से ही एक जाहिल मुल्ला था, पता नहीं कहाँ से नाना अब्बू की जान को चिमट गया है, छोड़कर ही नहीं देता।'' नाएमा के लहजे में इतनी तहकीर (अपमान) थी कि फारिया को बहुत बुरा महसूस हुआ, उसने कहा:

''वह नाना अब्बू की जान को चिमटे नहीं हैं, बल्कि उनका और आमना आंटी का बहुत बड़ा सहारा बन चुके हैं, देखो तुम तो अपने नए घर चली जाओगी मगर नाना और आमना आंटी तुम्हारे बाद अकेले रह जाएंगे, ऐसे में अब्दुल्लाह भाई उनका बहुत बड़ा सहारा होंगे।''

''मेरे बाद वह सहारा नहीं बनेगा बल्कि देखा जाए तो उसने मेरे होते हुए भी मुझे इस घर से निकाल दिया है, जिसे देखो अब्दुल्लाह ही की तारीफ करता रहता है।''

नाएमा के इस वाक्य से फारिया को अंदाज़ा होने लगा कि सारी ज़िन्दगी मां और नाना की मुहब्बत की अकेली हकदार नाएमा को शायद यह बात बहुत बुरी लग रही थी कि इस प्यार में अब कोई दूसरा हिस्से दार हो चुका है, फारिया ने अब्दुल्लाह की सफाई पेश करते हुए कहा:

''बात यह है नाएमा कि अब्दुल्लाह भाई ने शुरू ही से नाना के साथ बड़ी मुहब्बत का रिश्ता रखा था, उनकी बीमारी में उनका बहुत साथ दिया, तुम्हें तो शायद कोई फर्क न पड़ा हो लेकिन उनके होने से आंटी और नाना को बहुत सहारा था। फिर जब तुमने उनसे शादी के लिए मना किया तो हम सभी का मानना था कि वे नाराज हो जाएंगे, मगर उन्होंने शिकायत का एक शब्द तक नहीं कहा, बल्कि उनका रवैया (व्यवहार) और बेहतर हो गया। तुम्हारी शादी के कितने ही कामों में

वही नाना अब्बू और आंटी की मदद कर रहे हैं और उन्हें जगह जगह पर ले कर जाते हैं, ऐसे बेगरज़ (निस्वार्थ) और शरीफ़ इन्सान से कौन प्यार नहीं करेगा।''

फारिया एक पल को रुकी और नाएमा को समझाते हुए बोली:

''उन्होंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम हर वक़्त उनके पीछे लगी रहती हो?''

''वह मेरा क्या बिगाड़ेगा....! He does not exist for me। बस उसकी बातों से मुझे चिढ़ आती है।''

''उनसे चिढ़ने की कहीं यह वजह तो नहीं कि इस घर में मुहब्बत का मरकज़ (केंद्र) पहले एक ही हस्ती नाएमा थी, और अब उसके साथ अब्दुल्लाह भी.....?''

नाएमा ने दिल का चोर पकड़े जाने पर फारिया की बात को काटते हुए कहा:

"I don't care!"

फारिया को लगा कि इस टॉपिक पर बातचीत का कोई फायदा नहीं है, इसलिए उसने टॉपिक बदलना ही ज्यादा सही समझा।

''छोड़ो यार, यह बताओ कि दूल्हे मियां से कोई बातचीत होती है?''

''नहीं भई तुम जानती हो! मैं बिल्कुल भी रोमांटिक नहीं हूँ, अम्मी और नाना को भी नहीं पसंद कि कच्चे रिश्तों में लड़का लड़की एक दूसरे से बात करें, इसलिए उन लोगों की ख्वाहिश (इच्छा) के बाद भी अम्मी ने मेरा मोबाइल नंबर नहीं दिया, मुझे भी यह पसंद नहीं है।''

''लेकिन यार एक बात है! तुम्हारी लॉटरी निकल आई है।''

''हां तकदीर को कभी न कभी तो मेहरबान होना ही था।''

''यार तुम अमीर हो कर हमें भूल तो नहीं जाओगी।''

''अरे पागल हो गई हो क्या! मैं दौलत और स्टेटस की भूखी नहीं हूँ कि उसे पाकर अपना अतीत और रिश्ते भूल जाऊँगी, बस मेरी ख्वाहिश थी कि गरीबी जिस तरह मेरी माँ और मुझे सारी ज़िन्दगी घेरे रही है, मेरे बच्चों और परिवार को ऐसे न घेर ले। फारिया यह ज़िन्दगी बस एक ही बार मिलती है, मैं तो चाहती हूँ कि जितना हो सके इसे इन्जॉय करके अच्छी तरह गुज़ारूँ और

फिर अमीर आदमी के दिल में अगर दूसरों का दर्द हो तो वह दूसरों की बहुत मदद कर सकता है।''

''खैर इसका फैसला तो वक़्त करेगा कि दौलत पाकर तुम दूसरों की मदद करती हो या अपने पुराने रिश्तों को भी भूल जाती हो।''

''फ़िक्र मत करो! मैं बदल नहीं सकती, दुनिया की कोई ताकत मेरे विचारों और सोच को नहीं बदल सकती, मैं अपनी दुनिया की खुद मालिक हूँ, मैं आप अपनी खुदा खुद हूँ।''

खुदाई का दावा करने वाली नाएमा के वहम व गुमान में भी नहीं था कि बहुत जल्द उसका वास्ता असल खुदा अल्लाह ज़ुल्ज़लाल के कमाल (महिमा) से पड़ने वाला है।

.....

साफ शफ्फाक आसमान के नीचे घाटी में दूर दूर तक हरी घास का फर्श बिछा हुआ था, हर जगह अलग अलग रंग के खूबसूरत फूल खिले हुए थे, हर रंग ऐसा था कि निगाहों को अपनी तरफ से हटकर किसी और की तरफ देखने की इजाज़त नहीं देता था, मद्धम हवा के झोंकों के साथ हौले हौले फूल लहरा रहे थे। यूँ लगता था कि प्रकृति ने रंगों के तार पर कोई सुर छेड़ दिया है जिस पर यह फूल और कोपलें बेसुधी की हालत में नाच रही थीं, यह घाटी चारों तरफ से ऊँचे ऊँचे पहाड़ों से घिरी हुई थी, कुछ पहाड़ ऊंचे और हरे भरे पेड़ों से लदे हुए थे, कुछ हरी घास की मखमली चादरें ओढ़े हुए थे, कुछ पहाड़ों की चोटियों पर बर्फ जमी हुई थी। सूरज की किरणें जब उन बर्फ से ढकी चोटियों से टकराती तो सुनहरी किरणों का अक्स हवा में बिखर जाता, बर्फ इतनी पाक व साफ़ थी कि सफेद रंग हर एक रंग का राजा बनकर चमक रहा था, कहीं कहीं यह सफेदी सूरज की किरणों से मिलकर चांदी के रूप में ढल चुकी थी। देखने वाली आँखों के लिए यह तय करना मुश्किल था कि हवा की ऊँचाइयों में आसमानी, हरा, सफेद और सुनहरे रंगों का तालमेल ज्यादा ख़ूबसूरत था या ज़मीन पर उस घाटी के रंग ज्यादा कशिश लिए हुए थे जो फूलों के गुलदस्तों के रूप में हरे भरे पहाड़ों का दिल बने हुए थे।

इस घाटी में और एक बहुत खूबसूरत वजूद (अस्तित्व) भी था, कुदरत का हसीन शाहकार यह वजूद नाएमा का था, इसके गहरे काले और रेशमी बाल जो आम लड़कियों के मुकाबले काफी लम्बे थे, इस समय हवा से दूर तक बिखर रहे थे, काले बालों की कुछ लटें दमकते हुए सुनहरी

चेहरे से छेड़छाड़ कर रही थीं। नाएमा की बड़ी बड़ी आँखें, खड़ी नाक, सुराही दार गर्दन बार बार बहकते हुए बालों का निशाना बन रही थीं, हवा के झोंके नाएमा को भी एक फूल समझकर उसके नरम वजूद से टकराते और अपने आप को उसकी खुशबू में नहलाते। कहीं दूर किसी पेड़ की बाहों में छिपी कोई कोयल कुदरत का एक और साज़ गुनगुना रही थी, थोड़े थोड़े समय पर उठती कोयल की कूक वातावरण में ऐसा संगीत बिखेर रही थी जो इंसान कि रूह के हर तार को छेड़ने के लिए काफी था।

घाटी के बीच में फूलों के बीच खुद को एक तितली की तरह महसूस करती नाएमा भी इसी कशमकश में थी कि कुदरत की खूबसूरती की कौन सी अदा सबसे ज्यादा दिल कश है। उसकी नजर कभी रंगीन फूलों के कालीन पर बहकती चली जाती तो कभी ऊँचे बड़े पहाड़ों की हरयाली और सुनहरी बर्फ उसकी निगाहों को खींच लेती। उसने अपनी ज़िन्दगी में ऐसी खूबसूरत जगह ना कभी देखी थी और न कभी सोची थी।

वह यही कुछ सोच रही थी कि अचानक उसकी नज़र रौशनी के उस गोले की तरफ पड़ी जो आसमान की ऊंचाई से ज़मीन की ओर आ रहा था, यह बड़ी अजीब बात थी। वह टकटकी बांधकर उस गोले को देखने लगी जो धीरे धीरे एक ही दिशा में उसी की तरफ बढ़ता चला आ रहा था, जैसे-जैसे वह करीब आ रहा था उसने एक चमकदार हयूले का रूप धारण कर लिया था, यूँ तो देखने में वह कुछ कुछ इंसानी आकार का हयूला था, लेकिन वह कोई इंसान नहीं था। लेकिन नाएमा को उससे कोई खौफ या डर महसूस नहीं हुआ, बल्कि उसके अंदर यह ख्वाहिश (इच्छा) पैदा हुई कि वह उससे बातें करे, इस ख्वाहिश को पूरा करने के लिए उसे और ज्यादा इंतिज़ार नहीं करना पड़ा, हयूला धीरे धीरे उसके पास आया और जमीन से कुछ फिट ऊपर हवा में रुक गया, इसके साथ ही उससे आवाज आई:

"तो तुम वह नाएमा हो जिसे यह सम्मान दिया गया है।"

उस आवाज में अजीब सा असर था, यह आवाज नाएमा के कानों से गुजर कर दिलो दिमाग के अन्दर गहराई तक पहुंच गई, उस पर आवाज और हयूले का रोब छा गया, वे डरते डरते बोली:

"जी मैं नाएमा हूँ, लेकिन आप कौन हैं....और यह किस सम्मान की बात कर रहे हैं?"

एक बार फिर वही आवाज आई।

"मुझे छोड़ो, सिर्फ यह जान लो कि तुम्हारी अपनी प्यारी चीज़ एक गरीब को देने की अदा तुम्हारे मालिक को बहुत पसंद आई जिसके बाद उसने तुम्हें अपना कुर्ब (निकटता) का सम्मान देने का फैसला किया है।"

नाएमा को कुछ समझ में नहीं आ सका कि इस बात का मतलब क्या है, लेकिन उस पर डर और रोब हावी था इसलिए चाहते हुए भी उसकी आवाज न निकल सकी, वह चुपचाप हयूले की आवाज सुनती रही।

"मगर तुम्हें देख कर मुझे लगता है कि तुम इस सम्मान की हकदार नहीं, अल्लाह तआला बहुत बा इज़्ज़त और बहुत हया वाला है, यह कैसे मुमकिन है कि तुम उसकी दोस्त बनो और तुम्हारा हाल यह है कि तुम बिल्कुल बेलिबास (नग्न) हो?"

इस वाक्य के साथ ही पहली बार नाएमा की नज़र अपने वजूद (अस्तित्व) की ओर लौटी, यह देखकर वह शर्म से पानी पानी हो गई कि उसके शरीर पर कोई कपड़ा नहीं था, वह इतनी देर से खुले मैदान में बिना कपड़ों के ही खड़ी हुई थी, और अब हयूले के सामने भी इसी हाल में थी, उसका दिल चाहा काश जमीन फटे और वह उसमें समा जाए। वह बेबस अपने दोनों हाथों से अपना शरीर छिपाने की कोशिश करते हुए जमीन पर दोहरी होकर बैठती चली गई, उसे बहुत ज्यादा शर्मिंदगी होने लगी, वह फूट फूट कर रोने लगी और हयूले की तरफ देखकर बोली:

"मेरे कपड़े कहाँ गए?"

मगर हयूला गायब हो चुका था, उसने घबरा कर आसपास देखा तो हर तरफ उसे इंसानों की समुद्र जैसी भीड़ नज़र आई, हर आदमी उसे देख कर हंस रहा था। नाएमा यह देखकर तड़प उठी, अपमान और रुसवाई की इस हद का उसने कभी सोचा भी नहीं था। हंसने वाले लोग अब उसकी तरफ देखकर उंगलियां उठा रहे थे और एक दूसरों को उसके बारे में बता रहे थे। वह बेचैन होकर किसी पनाह (शरण) की तलाश में चारों ओर देखने लगी, ऐसे में उसकी नजर हंसी के टहाके लगाते हुए भीड़ में मौजूद एक ख़ामोश और उदास शख्स पर पड़ी, उसे देख कर नाएमा की शर्मिंदगी और बढ़ गई, वह उसे देखकर चिल्लाई और बोली:

"यह मैंने खुद नहीं किया है, मैंने यह खुद नहीं किया।"

"नाएमा बेटा उठो! क्या बात है? क्या हुआ?"

आमना बेगम ने नाएमा को झनझोड़ा तो वह उठ बैठी, उसका दिल डर और दहशत से लरज रहा था, उसकी सिसकियाँ अभी भी जारी थीं, होश में आते ही उसने जल्दी से अपने कपड़ों को छुआ, उसे यह देखकर कुछ सुकून हुआ कि उसके शरीर पर कपड़े मौजूद थे। उसके सामने उसकी माँ आमना थीं, उन्होंने उसे प्यार करते हुए कहा:

"बेटा डरो नहीं, तुमने कोई बुरा सपना देखा है।"

नाएमा दोनों हाथों से सर पकड़ कर बैठ गई, वह कई दिन से यही सपना देख रही थी, मगर हर बार यह सपना बहुत ही खूबसूरत होता था, यह सपना एक खूबसूरत घाटी के मंज़र (दृश्य) तक ही रहता जिसमें वह तितलियों की तरह उड़ती फिरती थी, यह हयूले वाला मंज़र और कपड़ों वाली बात आज पहली बार उसने देखी थी, एक तीसरी बात जो इसी पल उसे याद आई थी वह उसके दिल में एक और घाव लगा गई, अपमान के इस तमाशे में वह आदमी जो उदास और खामोश खड़ा उसे हसरत से देख रहा था, अब्दुल्लाह था।

"नाएमा बेटा पानी पियो।"

आमना बेगम की आवाज़ ने उसके ख्यालों से निकाला, वे एक गिलास में पानी लिए उसके के पास खड़ी थीं। उसने पानी पिया और फिर लेट कर नींद की रूठी हुई देवी को मनाने लगी, फिर न जाने कब उसकी आंख लग गई।

****

फ्राइड की मौत

अगले दिन नाएमा दोपहर के वक़्त अपने कमरे में बैठी हुई सोचों में गुम थी। वह फलसफे (दर्शन) के अलावा साइकोलॉजी की भी स्टूडेंट थी, आम स्टूडेंट से अलग उसकी स्टडी बहुत वसी (व्यापक) थी, इस अध्ययन की रौशनी में वह अपने सपने को समझने की कोशिश कर रही थी, वह सपना ऐसा नहीं था कि नाएमा उसे भूल जाती, अपमान और रुसवाई का वह एहसास जो उसे सपने में हुआ था अभी तक उस पर छाया हुआ था, वह बहुत देर तक अपना psychoanalysis करती रही। सपने में अपनी खुशी और अपने डर की हर गुत्थी को उसने अपने इल्म (ज्ञान) की रौशनी में सुलझा लिया था, अपनी सोच अपनी ख़ुशी और गम अपने हालात और अपने आने वाले वक़्त के हर पहलु पर उसने गौर किया था, सिर्फ एक चीज़ उस सपने में उससे हल नहीं हो रही थी, वह यह थी कि उसे नंगे होने का एहसास क्यों हुआ? उसने सोचा कि शायद इस बात की जड़ें उसके बचपन तक जाती हों जिसकी याद अब उसके दिमाग में मौजूद नहीं है, यह इंटरप्रिटेशन करके वह बे फ़िक्र हो गई।

उसी वक़्त आमना बेगम कमरे में आई और उससे कहा:

"बेटा मैं ज़रा तुम्हारे लिए कुछ खरीदारी करने बाहर जा रही हूँ, तुम ऐसा करो कि दो कप चाय बनाकर अब्बू के कमरे में दे दो, अब्दुल्लाह आया हुआ है।"

यह सुनकर नाएमा का मुंह बन गया, उसने ऊब कर कहा:

"यह महोदय हर दूसरे दिन क्यों आजाते हैं?"

"बेटा वह खुद नहीं आता तुम्हारे नाना बुलाते हैं, दोनों मिलकर कुरआन पढ़ते पढ़ाते हैं, घर में अल्लाह का नाम लेने से ख़ैरो बरकत ही होती है, तुम्हें चाय नहीं बनानी तो न बनाओ, मैं बनाकर दे जाती हूँ।"

गनीमत हुई कि नाएमा ने इस पर कोई नकारात्मक बात करने के बजाय जवाब दिया:

"नहीं आप जाइये में चाय बना कर दे आती हूँ।"

आमना बेगम चली गईं, नाएमा थोड़ी देर तक कमरे में बैठी रही, फिर उदास मन के साथ उठी और किचन में जाकर चाय बनाने लगी, कुछ देर बाद वह चाय बनाकर नाना अब्बू के कमरे की ओर चल दी, कमरे में नाना अब्बू और अब्दुल्लाह दोनों एक मेज के पास इस तरह बैठे थे कि उनकी पीठ दरवाजे की तरफ थी, मेज पर कुरआन रखा हुआ था, वह ट्रे उठाकर कमरे में जा ही रही थी कि उसे नाना अब्बू की आवाज आई:

''यह सूरेह आराफ में तक़वे (धर्मपरायणता) के लिबास (ड्रेस) का जो ज़िक्र है इस का क्या मतलब है?''

कपड़ों की बात सुनकर नाएमा पल भर को ठटक गई और खामोश खड़ी होकर वो सुनने लगी जो अब्दुल्लाह जवाब में कह रहा था।

''यह रूह का लिबास है, यानि इंसानी शख्सियत (व्यक्तित्व) की पोशाक है, देखें जैसे हम कपड़े पहन कर अपने शरीर को ढकते हैं उसी तरह इंसान का अन्दर, उसकी रूह, उसकी शख्सियत जिसे आधुनिक मनोविज्ञान की भाषा में आप सेल्फ कहते हैं, यह उसी की पोशाक है।''

फिर अपनी बात को समझाने में के लिए मनोविज्ञान के सबसे मशहूर नाम सिगमंड फ्राइड का हवाला देते हुए बोला:

''फ्राइड ने जिस तरह Anatomy of the Mental Personality में इसे लिखा है कि यह माइंड का वह हिस्सा है जिसे ईगो कहा जाता है, यही इंसान की असल शख्सियत (व्यक्तित्व) है, इसे भी कपड़ों की जरूरत होती है।''

नाएमा ने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार किसी धार्मिक आदमी के मुंह से फ्राइड और उसके काम का हवाला सुना था, वह चुपचाप खड़ी सुनती रही।

''अल्लाह तआला सूरेह आराफ आयत 26 में यह बताता है कि इन्सान के शरीर को ढकने के लिए उसने कपड़े जैसी नेमत इन्सान को दी है, इसी के साथ अल्लाह ने इंसान को अपनी हस्ती और अच्छाई और बुराई की समझ भी उनके अन्दर रखदी है, जिसके ताने बाने अगर अल्लाह की नाज़िल की हुई किताब की रोशनी में बुने जाएं तो तक़वे की वह पोशाक बन जाती है जो इंसान के उसी सेल्फ को बरहना (नंगा) होने से बचाती है। यह सेल्फ या अंदरूनी शख्सियत (आंतरिक व्यक्तित्व) इंसान के ज़ाहिरी जिस्म से ज़्यादा अहम है, इसलिए इसको पोशाक की ज़्यादा ज़रूरत

होती है, यही ज़रूरत तक़वा या नेकी और परहेज़गारी की वह पोशाक है जिसे अल्लाह तआला हर दूसरे कपड़े से बेहतर बताते हैं, यह तक़वा और कुछ नहीं अल्लाह की याद के अहसास में जीना है, लेकिन ज़्यादा इन्सान अपना सारा ध्यान अपने ज़ाहिर अपने ज़ाहिरी कपड़े और ज़ाहिरी रख रखाव पर देते हैं और तक़वे की पोशाक से इस तरह बे परवाह हो जाते हैं कि अल्लाह की नज़र में वह बिल्कुल नंगे रहते हैं, यानि ईश्वर को भूल कर जीने वाले लोग ईश्वर की नज़र में बिल्कुल नंगे और बेशर्म होते हैं।"

इस आखरी बात को सुनकर नाएमा को ऐसा लगा जैसे किसी ने ज़ोर से उसके मुंह पर थप्पड़ मार दिया हो, अगर अब्दुल्लाह की पीठ के बजाय उसका चेहरा नाएमा की तरफ होता तो वह साफ़ तौर से देख सकता था कि नाएमा का हसीन और गुलाबी चेहरा लाल हो चुका है, अब उसके लिए चुपचाप खड़े रहना मुमकिन नहीं रहा था, वह आगे बढ़ कर बोली:

"नाना अब्बू चाय ले लीजिए।" अपनी आदत के मुताबिक (अनुसार) उसने अब्दुल्लाह को सलाम नहीं किया था, अब्दुल्लाह ने भी उसे नज़र उठाकर नहीं देखा, चाय मेज़ पर रख कर उसने पहले नाना अब्बू को चाय दी, वह बिना चीनी की चाय पीते थे, फिर अब्दुल्लाह से बेरुखी के साथ पूछा:

"चीनी कितनी डालूं?"

"एक चम्मच।"

अब्दुल्लाह ने भी उसी बेरुखी से जवाब दिया, उस का ध्यान कुरआन की तरफ ही रहा, चाय देकर नाएमा को चले जाना चाहिए था, लेकिन उसे लगा कि थोड़ी देर पहले अब्दुल्लाह के हाथों उसका जो अपमान हुआ है इसके जवाब में इस वक़्त अब्दुल्लाह को नीचा दिखाना जरूर है, उसने पूछा:

"सुना है आप अब फुल टाइम दीन (धर्म) सीख रहे हैं।"

"जी" अब्दुल्लाह ने जितना हो सका उतना छोटा जवाब दिया।

"मेरे एक सवाल का जवाब देंगे?" नाएमा ने अपने हथियार मैदान में निकालते हुए कहा:

"एक चौदह सौ साल पुरानी किताब जो आउट-ऑफ-डेट हो चुकी है, अपनी अक्ल और समझ को उसके अधीन करके सोचना क्यों जरूरी है?"

अब्दुल्लाह शायद नाएमा से बात नहीं करना चाह रहा था, इसलिए उसने एक और संक्षिप्त जवाब दिया:

"इसलिए कि यह अल्लाह का कलाम है और अल्लाह हर ज़माने और वक़्त से बुलंद हस्ती है।"

"हम कैसे मान लें कि यह अल्लाह का कलाम है, यह बात तो अकली तौर पर ही ग़लत है कि आप पहले कुछ मानकर फिर विचार शुरू करें, यह तो इल्म की दुनिया में कोई तर्कसंगत तरीका नहीं है?"

नाएमा बहस के लिए पूरी तरह तैयार थी, जबकि इस्माइल साहब को अंदाज़ा हो चुका था कि नाएमा अपने ऐतराजों (आपत्तियों) का तरकश निकाल चुकी है और अब एक एक करके वह तीर चलाएगी जिनका जवाब पहले भी कई लोग नहीं दे सके थे, इन ऐतराजों के जवाब में उसे अक्सर कुफ्र और गुमराही के ताने सुनने को मिले थे या बेकार जवाब और कमजोर दलीलें।

पहली चीज़ से धर्म के खिलाफ नाएमा का गुस्सा और बढ़ता था और दूसरी चीज़ से उसका मनोबल। इसलिए अब्दुल्लाह के सामने शर्मिंदा होने से बचने के लिए उन्हें बातचीत में हस्तक्षेप करना पड़ा वह बोले:

"बेटा यह सवाल तो हम मुसलमानों को करना ही नहीं चाहिए क्योंकि हम कुरआन को अल्लाह का कलाम मानते हैं, इसी विश्वास की रौशनी में हमें कुरआन को समझना चाहिए।"

"नाना अब्बू यही बात तो गैर मुस्लिम अपनी किताबों के बारे में कहते हैं, देखें ना इसाई मज़हब के मशहूर विद्वान सेंट एन्सेल्म कहते हैं कि मैं पहले अकीदा (आस्था) रखता हूँ फिर समझता हूँ, पहले समझ कर फिर अकीदा नहीं बनाता, अब बताइये कि आप में और एक इसाई में क्या फर्क रह गया।"

नवासी ने अपने ज्ञान और अध्ययन की रौशनी में नाना को चारों खाने चित्त कर दिया था, इसके बाद उनके पास कहने के लिए कुछ नहीं बचा, मगर अब अब्दुल्लाह ने सोचा कि उसके सामने नाएमा नहीं एक आम इंसान मौजूद है जो दीन समझना चाहता है, इसलिए उसने पूरी तरह बातचीत में उतरने का फैसला कर लिया। वह इस्माइल साहब से बोला:

"आप अगर इजाज़त दें तो मैं कुछ कहूँ।" फिर उनके जवाब का इंतजार किए बिना वह कहने लगा:

"देखये नाएमा जी कम से कम मैं आप से बिल्कुल सहमत हूँ, और अपके सवाल को बिल्कुल वेलिड समझता हूँ, खुद अल्लाह तआला आप के सवाल को जायज़ समझते हैं, इसलिए वह बहुत तफसील के साथ कुरआन मजीद में इस सवाल का जवाब देते हैं, उनकी तो सारी अपील इंसान की अक्ल को है, यह तो कुफ़्फ़ार थे जो अक्ल को छोड़कर भेदभाव पूर्वाग्रह को अपनाते थे, इसलिए आप इत्मिनान रखिए कि आपका ऐतराज़ बिलकुल सही है, यह आपका हक़ है कि आप को अपनी बात का अक्ली जवाब मिले।"

ज़िन्दगी में पहली बार नाएमा को मालूम हुआ कि अल्लाह तआला हुक्म ठूंसने के बजाय सवालों का जवाब भी देते हैं और लोगों को समझाते भी हैं।

अब आगे अब्दुल्लाह ने उसके सवाल का जवाब देते हुए कहा:

"देखये कुरआन जिस अज़ीम (महान) हस्ती पर नाज़िल हुआ वह कुरआन से बाहर भी इतिहास की रोशनी में पूरी तरह मालूम और मशहूर है, इस हस्ती के बारे में सब को पता है कि नबी होने का ऐलान करने से पहले वह हालांकि आला सीरत (उच्च चरित्र) के मालिक थे, लेकिन कोई मज़हबी आलिम (धार्मिक विद्वान) न थे, वह एक आम व्यापारी थे जिनका कोई मज़हबी बैकग्राउंड नहीं था।

ऐसे में वह अचानक एक दिन उठते हैं और नबी होने का दावा करते हैं, उन पर कुरआन उतरता है, इस कुरआन में तोहीद (एकेश्वरवाद) और आखिरत (मौत के बाद की ज़िन्दगी) की दावत ही नहीं बल्कि अरब और उसके आस पास के देशों के मजहबों की पूरी तफसील है, सवाल यह है कि उन्हें यह सब अचानक कैसे मालूम हो गया? दिलचस्प बात यह है कि उन्हें अचानक न सिर्फ यह सब मालूम हो गया बल्कि इसके बाद उनके विचारों में कभी कोई विकास नहीं हुआ, आप किसी भी मुफक्किर (विचारक,दार्शनिक) की ज़िन्दगी को देख लीजिए, उसके विचारों और ज्ञान में हमेशा एक विकास होता रहता है, वो शुरू में कुछ बातें सीखता है, फिर अपने इल्म और तजुर्बे (विश्लेषण,परीक्षण) के बाद बहुत सी चीजों को रद (अस्वीकार) करता है, नए विचारों को अपनाता है, फिर दुनिया के सामने अपनी बात पेश करता है, इसके बाद भी उसके विचारों और सिद्धांतों में

लगातार प्रगति और बदलाव आता रहता है, सुकरात, प्लेटो और अरस्तू से लेकर डीकार्ट, कांट, हेगल तक और गेटे और शैक्सपियर से ग़ालिब तक कोई ऐसा नहीं है जो बिना किसी इल्म और विचारों के विकास के अपना फलसफा या कलाम दुनिया के सामने पेश कर सका हो, लेकिन मोहम्मद (ﷺ) की हस्ती इस पूरे मामले से बिलकुल अलग और अकेली है। इस चीज़ को एक मज़हबी मिसाल से समझये कि हमारे वक़्त में एक आदमी ने नबी होने का दावा किया।"

"तुम शायद मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी की बात कर रहे हो।" इस्माइल साहब ने बीच में ही पूछा तो अब्दुल्लाह ने कहा:

"जी हाँ, मेरा इशारा उन्हीं की ओर है, मगर देखये कि उनकी पूरी ज़िन्दगी हमारे सामने है, वह कोई अनपढ़ आदमी नहीं थे, धर्म की पूरी परंपरा को जानते थे। मज़हबी मुनाज़े (बहसें) करते थे, उनकी सोच, विचारों और दावों में विकास भी मिलता है और विरोधाभास भी, वह अगर सच्चे नबी होते तो यह कभी नहीं होता, इसलिए कि नबी की बात उसकी खुद की बात नहीं होती बल्कि अल्लाह तआला की बात होती है जिसमें न विरोधाभास हो सकता है न ही उसके इल्म में कोई इज़ाफा (वृद्धि) होता है, इससे अलग नबी मुहम्मद (ﷺ) की सच्चाई का सबूत यह है कि उन्होंने मज़हबी इल्म के ऐतबार से शून्य से अपनी बात शुरू की और जो कहा वह आज तक गलत साबित नहीं हुआ, और जो दावत दुनिया को पहले दिन दी उसमें आखिर तक कभी कोई बदलाव आया न प्रगति हुई और न कहीं विरोधाभास मिलता है, यह काम कोई आम आदमी कैसे कर सकता है?"

नाएमा इस सवाल के जवाब में चुप रही, उस का अंदाज़ बता था कि वह और ज्यादा सुनना चाहती है, इसलिए अब्दुल्लाह बोलता रहा:

"यह तो एक पहलू है, ज्यादा बड़ी बात यह है कि मुहम्मद (ﷺ) एक अकेले और बेआसरा इंसान थे जिसने अकेले अपने कबीले और पूरे अरब सरदारों की दुश्मनी मोल ले ली, उन्होंने सिर्फ उनके अकीदों ही की मुखालफ़त (आलोचना) नहीं की बल्कि इतना बड़ा दावा किया कि कोई आम आदमी कर ही नहीं सकता, उन्होंने पहले दिन से यह कहकर अपनी बात शुरू की थी कि जिसने मेरी बात मानी वह बचेगा और बाकी लोग खुदा के हुक्म को ठुकराने के जुर्म में उसके अज़ाब की चपेट में आकर हलाक हो जाएंगे, जबकि मेरी बात को मानने वाले ज़मीन के मालिक बना दिए जाएँगे, इतना बड़ा दावा या तो कोई मंदबुद्धि कर सकता है या फिर कोई सच्चा रसूल, वे

सच्चे रसूल थे इसलिए जब वह दुनिया से विदा हुए तो उनके मानने वाले अरब के शासक और न मानने वाले हलाक हो चुके थे, यही नहीं, वह भविष्य की घटनाओं की इतनी ठीक भविष्यवाणी करते हैं....."

अब्दुल्लाह एक पल के लिए रुका और मेज से कुरआन हाथ में उठाकर बोला:

"और वे भविष्यवाणियां इस किताब में आज भी मौजूद हैं और अब वे इतिहास का ऐसा हिस्सा बन चुकी जिनसे इन्कार करना मुमकिन ही नहीं है।"

"मिसाल के तौर पर कोई एक भविष्यवाणी बताइए।" नाएमा ने पूछा।

"एक नहीं कई भविष्यवाणियां हैं, मसलन यह कि उस ज़माने में एक बड़ी जंग में रोमन एक तरफ़ा तौर पर हार खा रहे थे, ऐन उनकी हार के समय में कुरआन ने यह भविष्यवाणी की के कुछ सालों में रोमन वापस जीत जाएँगे, ठीक ऐसा ही हुआ। कुरआन ने इसी तरह ऐन मक्का में जब ईमान लाने वाले सबसे ज्यादा ज़ुल्म और कमज़ोरी का शिकार थे यह भविष्यवाणी की कि अगर यह ज़ालिम कुफ़्फ़ार बाज न आए और रसूल अल्लाह (ﷺ) और उनके मानने वालों को इस ज़मीन से निकालने की कोशिश की तो जल्द ही हम इन कुफ़्फ़ार ही को यहाँ से निकाल फेकेंगे, लिहाज़ा ऐसा ही हुआ। और एक बड़ी भविष्यवाणी यह है कि ऐन उस ज़माने में जब पूरा अरब मदीना की छोटी सी बस्ती को घेर कर मुसलमानों को मिटाने पर तुला हुआ था, यह भविष्यवाणी बल्कि वादा किया गया कि रसूल (ﷺ) पर ईमान लाने वालों को जमीन की सत्ता दे दी जाएगी, कुछ सालों में यह भी हो गया और ईमान वाले चमत्कारिक ढंग से दुनिया के अकेले सुपर पावर बन गए। फिर ऐन हार और कमज़ोर होने की हालत में यह भविष्यवाणी की गई थी कि सब लोग भीड़ की भीड़ इस्लाम में दाखिल हो जाएंगे जबकि अबू लहब और उसके साथी जो उस वक़्त के फिरौन बने हुए थे, तबाह और बर्बाद हो जाएंगे, कुछ सालों में ऐसा ही हो गया।"

"और कुरआन के खुद चमत्कार होने वाली बात भी तो बताओ।" इस्माइल साहब ने पहली बार अपनी नवासी को लाजवाब होते देखकर गिरेह लगाई, खुशी उनके चेहरे पर दमक रही थी।

"कुरआन ने अपने पहले मुखातिबों (श्रोताओं) यानी अरब के मुशरिकों जो अरबी भाषा और शेरो शाइरी के बादशाह थे यह चुनौती दी कि अगर तुम समझते हो कि इस नबी ने खुद इस कुरआन

को घड़ा है तो तुम भी ऐसा कलाम बनाकर ले आओ, और याद रहे कि यह वह नबी थे जिन्हें शेरो शाइरी का न कोई शौक था न शेर याद थे, मगर कुरआन का जवाब किसी ने देने की कोशिश भी नहीं की, हालांकि यह नबी (ﷺ) के दावे को झूठा साबित करने और उनके मानने वालों को उनसे फेरने का सबसे आसान नुस्खा था, लेकिन कुफ़्फ़ार ने रसूल (ﷺ) पर हर तरह के इल्ज़ाम लगाए उन्हें शायर और जादूगर कहा, उनके मानने वालों पर हर तरह के ज़ुल्म किए, उनसे जंगे कीं, लेकिन इस चुनौती का जवाब नहीं दे सके। अब बताइए ऐसी हस्ती को आप रसूल मानने से कैसे इनकार करेंगी और कैसे कुरआन को अल्लाह का कलाम नहीं मानेंगी?''

नाएमा का चेहरा उतर चुका था, बात उस पर वाज़ेह (स्पष्ट) हो चुकी थी, अब्दुल्लाह की जगह कोई और होता तो इतनी सही और तर्कसंगत बात शायद वह मान भी जाती, लेकिन अब्दुल्लाह के सामने हार मानना उसकी अना (ईगो) की हार होती, यह उसे हरगिज मंज़ूर नहीं था, अपनी अना और शान का मारा हर इन्सान सही बात की पटरी से उतर जाता है, इसलिए अब नाएमा ने वह काम किया जिस पर हमेशा वह मज़हबी लोगों को लताड़ती रही थी कि वह जब बहस के एक मैदान में हार खा जाते हैं तो हार क़ुबूल किए बिना दूसरा मोर्चा खोल देते हैं, नाएमा ने इस आदत का नाम 'मोलवीयाना क़लाबाज़ी' रखा था, मगर अब यही 'मोलवीयाना क़लाबाज़ी' नाएमा ने भी लगा दी, अब्दुल्लाह की इस पूरी बातचीत के जवाब में उसने कहा:

''आपकी बातें अगर ठीक हों तब भी यह इत्तिफ़ाक से ज्यादा कुछ नहीं है, असल मसला (समस्या) यह है कि जिस ज़ालिमाना (क्रूर) तरीके पर यह दुनिया चली जा रही है, इसे देखने के बाद कोई अकलमंद आदमी किसी खुदा पर ईमान नहीं ला सकता, ईश्वर को मानना प्री-मॉडर्निज़्म का एक तसव्वुर (अवधारणा) है जब इन्सान का अकीदा ही ज़िन्दगी की बुन्याद थी, मॉडर्निज़्म के अकली दौर में यह तसव्वुर पूरी तरह नकारा जा चुका है, खैर अब तो हम पोस्ट मॉडर्निज़्म में जी रहे हैं, इसमें किसी की भावनाओं का सम्मान करते हुए हम सांस्कृतिक रूप से मज़हब और खुदा को मान सकते हैं, मगर सब जानते हैं कि खुदा का तसव्वुर एक अनसाइंटिफिक तसव्वुर है, बहुत पहले थ्योरी ऑफ़ ईवोलूशन ने खुदा के वजूद (अस्तित्व) की अकली बुन्याद खत्म कर दी, साइंस की दुनिया में अब ईश्वर को मानकर कोई शोध नहीं किया जाता।''

नाएमा बहुत समझ दारी से अब्दुल्लाह को उसकी स्पेशलिटी के मैदान यानी मज़हब से निकाल कर अपनी स्पेशलिटी के मैदान यानी साइंस और फलसफे (दर्शन) में ले आई थी, अब बहस

उसके मैदान में होनी थी, जहां नाएमा के ख्याल में उसकी जीत निश्चित थी, हालांकि अब्दुल्लाह इस मैदान का भी खिलाड़ी था, वह पूरे विश्वास से बोला:

"देखये अल्लाह है या नहीं, इसका फैसला करना साइंस का काम है ही नहीं, वह तो यह बताती है कि ब्रह्मांड कैसे काम कर रहा है।

ब्रह्मांड क्यों वजूद में आया, इंसान यहाँ क्यों है, इसका जवाब न साइंस दे सकती है न यह उसका काम है, न साइंस आज तक कोई ऐसा दावा कर सकी है कि उसकी किसी खोज ने साबित कर दिया है कि अल्लाह मौजूद नहीं है, लेकिन हां साइंस ने तो इस ब्रह्मांड के जितने राज़ खोले हैं, वो सिर्फ यह बताते हैं कि इतना ज्यादा पेचीदा मगर संतुलित, कंट्राडिक्टरी मगर कम्पेटिबल यूनिवर्स किसी निर्माता का बनाया हुआ ही हो सकता है।

जहां तक थ्योरी ऑफ़ ईवोलूशन की बात है तो यह बात ठीक है कि डार्विन के ज़माने में विज्ञान जहां पर था वहां ईवोलूशन को खुदा का बदल समझ लिया गया था, मगर बीसवीं सदी और खासकर उसके आखिर में जीवन के सरल रूपों यानी बैक्टीरिया और स्टेम पर होने वाली जांच और जेनेटिक साइंसा की तरक्की ने ईवोलूशन के क़दमों के नीचे से जमीन निकाल दी है।

आधुनिक साइंस के विकास ने ऐसे माइक्रोस्कोप बना दिए हैं और ऐसे तरीके ईजाद कर दिए हैं कि जीव की सादा किस्म की बेहद बारीक तफसील (विवरण) भी हमारे सामने आ चुकी हैं, इस वैज्ञानिक विकास का सबसे बड़ा खुलासा यह है कि जीवन अपने सरल रूप में भी इतन ही पेचीदा है कि थ्योरी ऑफ़ ईवोलूशन उसको परिभाषित नहीं कर सकती कि ऐसी जटिलता इतनी बुनियादी स्तर पर कैसे मौजूद हो सकती है।"

नाएमा ने फ़ौरन बीच में बोलते हुए कहा:

"मैं बताती हूँ कि यह जटिलता कैसे मुमकिन है, दरअसल एक लंबे समय तक जो करोड़ों बल्कि अरबों साल भी हो सकता है, जीवन के किसी भी स्तर पर अनगिनत और एक के बाद एक आने वाली परिवर्तन यह मुमकिन बना सकते हैं, इसकी मिसाल यह है कि....."

"जी मुझे पता है वह मिसाल क्या है।" अब्दुल्लाह ने उसकी बात बीच से काटते हुए कहा:

''अगर कुछ बंदर 'टाइप राइटर' पर बिना सोचे समझे उंगलियां मारने लगें और अरबों साल तक मारते रहें तो मुमकिन है कि वह कोई एक कविता लिख ही डालें, लेकिन जीवन की सारी जटिलताओं को तो छोड़ दें, जीवन के बुनियादी हिस्से यानि सिर्फ डी।एन।ऐ। में मौजूद जानकारी को अगर किताब की तरह लिख दिया जाए तो लाखों पेज की वह किताब बनेगी जिसका हर शब्द, हर पंक्ति और हर अध्याय बल्कि पूरी कितान ही सार्थक, उद्देश्यपूर्ण और पूरी तरह से संघटित होगी।''

फिर वह रुकते हुए नाएमा की तरफ देखते हुए बोला:

''आप जानती हैं कि किसी इत्तिफ़ाक से ऐसी किताब को लिखने के लिए इन बंदरों को कितने साल टाइपिंग करनी पड़ेगा?''

फिर अपने सवाल का जवाब वह खुद ही देते हुए बोला:

''गणित का ज्ञान यह बताता है कि इसके लिए ज़रूरी समय इतना है कि अरबों को खरबों साल से गुणा किया जाए तब भी यह समय ऐसी रचना को इत्तिफाक से वजूद में लाने के लिए कम है, मैं एक मिसाल से आप को समझाता हूँ।''

यह कहकर अब्दुल्लाह ने अपनी जेब से पैन निकाला और मेज पर रखे हुए कागज पर नाएमा का नाम अंग्रेजी में लिखते हुए कहा:

''अंग्रेजी भाषा में कुल 26 अक्षर होते हैं और आपका नाम इनमें से पांच अक्षरों को एक विशेष क्रम से लिखने से बनता है, गणित में ऐसी किसी चीज़ के विन्यास और विनिमय या (Permutation) पता करने के लिए एक फार्मूला होता है।''

यह कहते हुए अब्दुल्लाह ने फार्मूला लिखा और उससे हासिल होने वाले अंक को कागज़ पर बड़ा बड़ा लिखते हुए कहा:

''किसी बंदर को महज संयोग के आधार पर अंग्रेजी भाषा के 26 अक्षरों से पांच अक्षर वाला आपका नाम लिखने के लिए 78 लाख 93 हजार छह सौ की संख्या में पांच अक्षरों वाले शब्द लिखने होंगे तब कहीं जाकर यह सुनिश्चित होगा कि लगभग 80 लाख शब्दों में से एक शब्द 'नाएमा' होगा।''

''यकीन नहीं होता!''

इस्माइल साहब ने हैरत (आश्चर्य) के आलम में कहा तो अब्दुल्लाह मुस्कुराते हुए बोला:

''यह तो सिर्फ एक शब्द का मामला है, बात अगर पूरी किताब की हो जिसका हर शब्द दूसरे शब्द से जुड़ कर कुछ मतलब बताता हो और उसका हर शब्द एक सही क्रम में लिखना हो तो फिर इसे इत्तिफाक से लिखने में इतना ज्यादा समय चाहिए होगा कि आप सोच भी नहीं सकते, अरबों खरबों साल इस गिनती में ऐसे ही हैं जैसे हजारों साल की कहानी में कुछ सेकंड।

जबकि हकीक़त यह है कि जीवन हमारी जिस ज़मीन पर पैदा हुआ और सबसे सरल से लेकर सबसे जटिल तक सभी रूपों में मौजूद है, वहाँ जीवन की किताब कहीं ज्यादा बड़ी और मोटी है और उतनी ही सैट है और दूसरी ओर हादसा यह है कि इस मासूम ज़मीन की उम्र सिर्फ चार अरब साल है, खुद इस ब्रह्मांड की उम्र तेरह चौदह अरब साल से ज्यादा नहीं, यह ना मुमकिन है कि जीवन इतना सही रूप में एक जगह पर इतने कम समय में मौजूद हो, इसलिए साइंस से हमें जिस तरह के ब्रह्मांड की जानकारी मिल रही है, उसके बारे में यह दावा करना कि यह इत्तिफाक से वजूद (अस्तित्व) में आई है, जीवन भी इत्तिफाक से वजूद में आया और जीवन के सभी रूप अपनी सारी पेचीदगियों के साथ इत्तिफाक से वजूद में आए, या फिर एक बेजान, बेअक्ल और जो खुद कोई प्लान नहीं कर सकता ऐसा मेकिनिज्म ब्रह्मांड और जीवन के इस बेमिसाल निज़ाम को कंट्रोल कर रहा है। यह दावा कोई चाहे तो अपना दिल बहलाने के लिए अपना ले, मगर अक्ल इस दावे को कुबूल नहीं करती।''

नाएमा को मालूम हो चुका था कि वह पूरी तरह हार चुकी है, लेकिन तरकश का आखरी तीर निकाल कर उसने चला ही दिया।

''मुझे पता है कि ईवोलूशन पर बहुत लोग ऐतराज़ करते हैं, मगर ज्यादा तर वैज्ञानिक बहरहाल ईवोलूशन को ही मानते हैं।''

''जी हाँ मुझे भी मालूम है,'' अब्दुल्लाह ने मुस्कुराते हुए कहा:

''मगर इसकी कोई साइंटिफिक वजह नहीं है, बल्कि इसकी वजह साफ है, वह यह कि खुदा को न मानना अपने आप में में एक धर्म है, ईवोलूशन इस धर्म का मूल सिद्धांत है, जो लोग इन ऐतराज़ को सही नहीं मानते इसकी वजह यह नहीं कि ऐतराज़ सही नहीं हैं बल्कि ना मानने की वजह

भेदभाव होता है जो हर धर्म का इंसान अपने धर्म के लिए करता है, इस पहलू से एक कट्टर धार्मिक गुरु और एक नास्तिक वैज्ञानिक में कोई फर्क नहीं, दोनों एक ही तरह से पक्षपाती होते हैं।

ऐसे वैज्ञानिक दरअसल निर्माता को नहीं मानना चाहते, निर्माता भी वो जो ईसाइयत और बाइबिल के रूप में सामने आता है, जिसका प्रतिनिधित्व चर्च करते हैं, यह है असली वजह.... दरअसल ईसाइयत ने इंसानियत और खासकर वैज्ञानिकों और फल्सफियों (दार्शनिकों) के साथ मध्य युग में वो सुलूक किया है कि अब वे किसी भी तरह ईसाइयत और चर्च वाले खुदा को क़ुबूल नहीं कर सकते, मुझे यकीन है कि इस्लाम की फितरी तालीम (स्वाभाविक शिक्षा) और इसकी अकली दलीलें जब इंसानियत के सामने आएंगीं तो वह उसे क़ुबूल करने से इंकार नहीं करेगी।"

वह एक पल के लिए रुका और नाएमा को गौर से देखते हुए बोला:

"मुझे तो यह भी यकीन है कि आप भी खुदा के वजूद (अस्तित्व) पर राज़ी हो चुकी हैं, और आज नहीं हुई हैं तो बहुत जल्दी हो जाएंगी।"

नाएमा तंज़ (व्यंग) भरे अंदाज में मुस्कराई और बोली:

"मेरे सवाल बहुत ज्यादा हैं, और शायद उनका जवाब देना आपके लिए मुमकिन भी नहीं, लेकिन इस टॉपिक पर कभी बाद में बात करेंगे, अभी तो आप लोग मेरी वजह से डिस्टर्ब हो रहे हैं।"

यह कहकर वह कमरे से बाहर निकल गई, गुस्से से उसका चेहरा तना हुआ था, बाहर आकर वह सीधा फोन के पास आई और फारिया का नंबर मिलाने लगी।

.....

नाएमा का चेहरा उतरा हुआ था और फारिया नाएमा के सामने बैठी हुई उसे तके जा रही थी, नाएमा आज की घटना की पूरी दास्तान फारिया को सुना चुकी थी, यह कहानी सुनने के बाद फारिया दिल में तो बहुत खुश थी, मगर अपनी सहेली का भ्रम रखने के लिए वह गंभीर शक्ल बनाए बैठी थी, फिर उसने ख़ामोशी तोड़ते हुए कहा:

"तो तुम क्या चाहती हो, मैं अब्दुल्लाह भाई को यहाँ आने से मना कर दूं?"

"मैं उसकी शक्ल भी नहीं देखना चाहती, तुम नहीं जानतीं आज जब वह बोल रहा था तो नाना अब्बू के चेहरे पर कैसी खुशी थी, लगता था कि उनकी औलाद मैं नहीं हूँ बल्कि वह उनकी औलाद है।"

"नहीं ऐसा नहीं है, औलाद तो तुम ही हो और तुम ही रहोगी, लेकिन अगर तुम्हारा मानना यह है कि अब्दुल्लाह भाई को यहाँ आने से मना करने पर तुम्हारा मसला हल हो जाएगा तो मैं यह कर दूंगी।"

एक पल को रुकने के बाद फारिया ने फिर कहा:

"लेकिन नाना अब्बू ने उन्हें बुला लिया तो क्या होगा?"

"तब की तब देखी जाएगी, लेकिन मुझे यकीन है कि इसके बाद वह यहाँ कभी नहीं आएगा, वह अपने आप को समझता क्या है.....जाहिल कहीं का।"

नाएमा की इस बात पर फारिया ने बड़ी मुश्किल से अपनी हंसी रोकते हुए कहा:

"खैर जाहिल तो न कहो उन्हें, बेचारे अच्छे खासे आला तालीम याफ्ता (उच्च शिक्षा प्राप्त) हैं और जैसा कि तुमने आज की दास्तान सुनाई, कुछ न कुछ वे दूसरी चीज़ों के बारे में भी इल्म रखते हैं।"

नाएमा ने नज़र उठाकर फारिया को गौर से देखा, वह तय नहीं कर पाई कि उसकी प्यारी सहेली उसकी तरफ थी या अब्दुल्लाह की तरफ।

फारिया अपना पर्स उठाते हुए बोली:

"यार मैं चलती हूँ, मुझे घर जाकर खाना बनाने में अम्मी की मदद करनी है, तुमने बुलाया था तो मैं आ गई, वैसे तुम्हारा काम हो जाएगा, तुम परेशान न होना।"

यह कहकर वह उठी और नाएमा के गले मिलते हुए बोली:

"तुमने मुझसे कभी कहा था.....तुम खुदा को इसलिए नहीं मानती क्यों कि तुम्हारे लिए सच्चाई अपने तास्सुबात (पूर्वाग्रहों) से कहीं ज़्यादा कीमती है, मेरे जाने के बाद तन्हाई में सोचना.... क्या अभी भी तुम्हारे लिए सच्चाई सबसे कीमती चीज है?"

"और हाँ...." वह एक पल को रुककर बोली:

"तुम में और किरण में बहुत फर्क है, इस बात को हमेशा याद रखना।"

यह कहकर फारिया कमरे से निकल गई, नाएमा एक मूरत की तरह अपनी जगह पर बैठ गई, उसे अच्छी तरह मालूम था कि उसकी सहेली उससे क्या कह कर गई है, उसे यह जानने के लिए बहुत सोचने की जरूरत नहीं थी कि सच्चाई अब उसके लिए सबसे ज़रूरी बात नहीं थी, अब्दुल्लाह से हार न मानना उनके लिए सबसे ज़रूरी बात बन चुकी थी।

उसने अपनी मेज़ की दराज़ खोलकर उसमें से अपनी डायरी निकाली, उसके पहले पेज पर उसने बड़े फख्र से लिख रखा था।

"मेरे लिए सच्चाई हर चीज़ से ज्यादा कीमती है,"

नाएमा कुछ देर तक अपने नोट पढ़ती रही, उसे बहुत कुछ याद आ रहा था, कॉलेज में दूसरी लड़कियों और टीचर्स से मज़हब पर बात करते हुए वे अक्सर कहा करती थी कि आप सब तास्सुबात (पूर्वाग्रहों) के शिकार हैं, फिर वह धार्मिक लोगों के मतभेद और बहसों की दास्तान सुनाकर और उनके बयानों की कमज़ोरियां सामने लाकर जब लोगों को लाजवाब किया करती तब उसे अपने ऊपर बड़ा फख्र महसूस होता था, उसका मानना था कि वह खुद हर पूर्वाग्रह से ऊपर उठ चुकी है, मगर आज उसे मालूम हुआ कि जहां दूसरे खड़े हुए थे वह भी ठीक उसी जगह आकर खड़ी हो गई है, आज से पहले उसका वास्ता पक्षपाती, कट्टरपंथी और फिरका परस्तों से पड़ा था, नाएमा ने उन्हें हमेशा हराया था, आज पहली बार एक खुदा का बन्दा उसके सामने आया और एक ही वार में उसे ढेर कर गया था।

"मगर क्या मुझे वही करना चाहिए जो दूसरे करते हैं?"

उसने अपने आप से पूछा।

"हर आदमी तास्सुब (पूर्वाग्रह) पर खड़ा होता है, मगर साथ ही कुछ बेमतलब के शब्द बोल कर अपने आप को धोखा दे रहा होता है, क्या मैं भी अपने आप को धोखा दूँ?"

वह धीरे से बोली:

''सच्चाई मेरे लिए अभी भी हर चीज़ से ज्यादा कीमती तो है, मगर मैं नहीं जानती थी कि सच्चाई का सफ़र इतना मुश्किल भी हो सकता है, मगर मैं दोगली नहीं बनूँगी, मैं सच क़ुबूल नहीं कर सकती तो कम से कम सच बोल तो सकती हूँ, मुझे अब्दुल्लाह से सख्त नफरत है, मगर जो उसने कहा मेरे पास उसका कोई जवाब नहीं....काश मेरे लिए सच का सफ़र कुछ आसान हो जाए।''

इसके साथ ही नाएमा की आंखों से आंसुओं के मोती छलके और चेहरे से डलकते हुए उसके दामन में समां गए।

.....

अब्दुल्लाह के फोन की घंटी बजी, उसने फोन उठाया और अस्सलामु अलैकुम कहा, दूसरी तरफ से फारिया की आवाज़ आई:

''अब्दुल्लाह भाई फारिया बात कर रही हूँ, आप कैसे हैं?''

अब्दुल्लाह को फारिया की आवाज सुनकर बहुत हैरत (आश्चर्य) हुई, क्योंकि फारिया के पास न उसका नंबर था न कभी उसने पहले फोन किया था, वह समझ नहीं सका कि उसे फोन करने की क्या वजह है, लेकिन उसने अपनी हैरत ज़ाहिर नहीं की और जवाब में कहा:

''अलहम्दु लिल्लाह, मैं बिल्कुल ठीक हूँ, आप सुनाएं कैसी हैं?''

''मैं ठीक हूँ, मुझे असल में आप से एक जरूरी बात करनी है।''

''जी कहिये''

''वो बात यह है कि.....'' फारिया ने कुछ झिजकते हुए कहा:

''नाएमा दरअसल बहुत अच्छी लड़की है, लेकिन उसे आप से कुछ प्रॉब्लम है।''

अब्दुल्लाह के दिल पर एक धक्का सा लगा, लेकिन वह चुपचाप सुनता रहा।

''दरअसल वह मज़हब के कुछ खिलाफ है और आप बहुत धार्मिक हैं, उसके नाना और अम्मी से भी आप बहुत करीब हो चुके हैं, आप बहुत अच्छे हैं, सब आप से प्यार करते हैं, लेकिन नाएमा

बचपन से अपने घर में प्यार का केंद्र बनी रही है, लेकिन अब आप इस प्यार को कुछ शेयर भी करने लगे हैं....आप सुन रहे हैं ना।"

फारिया ने कुछ रुक कर कहा तो अब्दुल्लाह बोला:

"जी मैं सुन रहा हूँ।"

"दरअसल आप नाएमा को गलत मत समझयेगा, वह स्वभाव से बहुत अच्छी लड़की है, इंसानों से उसका स्वभाव बहुत हमदरदाना रहता है उसके गलत विचार अपनी जगह लेकिन न वह बदतमीज है न बदलिहाज़, लेकिन आपके मामले में उसकी सोच कुछ आक्रामक हो चुकी है, अब उसकी शादी होने वाली है, लेकिन आप के घर आने से वह कुछ डिस्टर्ब सी हो जाती है, शायद पिछले दिनों वह आपसे उलझ भी पड़ी थी।"

"नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं थी बस उनके कुछ सवाल थे।"

"अगर आप को उस की कोई बात बुरी लगी हो तो प्लीज़ आप उसे माफ कर दें, मैं उसकी तरफ से माफी मांगती हूं।"

"नहीं मैंने किसी बात का बुरा नहीं माना, नाएमा तो बहुत अच्छी लड़की है।"

"हाँ, आप भी बहुत अच्छे हैं, मेरी तो बड़ी तमन्ना थी कि आप दोनों की शादी हो जाती।"

फारिया को अंदाज़ा नहीं था कि वह अनजाने में अब्दुल्लाह के ठीक हो रहे ज़ख्मों को कुरेद रही है।

"मगर बस नाएमा यह चाहती थी कि उसकी शादी किसी अमीर परिवार में हो, दरअसल वह नहीं चाहती थी कि जो महरूम्याँ उसकी माँ ने झेली हैं अब वह भी झेले, इसी लिए उसने आपसे शादी से इन्कार कर दिया था।"

अब्दुल्लाह को लगा जैसे उसके दिल पर किसी ने घूंसा मार दिया हो, मगर वह अपने आप को संभालना सीख चुका था, वह सपाट लहजे में बोला:

"जी मैं समझ सकता हूं।"

''बस मेरा ख्याल यह था कि आप नाएमा की शादी तक उसके घर न जाएं तो वह थोड़ा बेहतर महसूस करेगी।'' फारिया असल बात आखिरकार ज़ुबान पर ले ही आई।

''आप इत्मिनान (संतोष) रखिये, नाएमा को मुझ से कोई तकलीफ नहीं होगी, लेकिन उनकी शादी के बाद तो मैं इस्माइल साहब से मिलने जा सकता हूँ ना?''

''यह तो आपका बहुत एहसान और बड़प्पन होगा।''

''ठीक है आप फ़िक्र मत कीजिए, और कुछ.....?''

''नहीं बस, शुक्रिया और अल्लाह हाफ़िज़।''

''अल्लाह हाफिज़।''

अब्दुल्लाह ने बोझल दिल के साथ कहा और फोन रख दिया।

.....

टाइम पंख लगाकर उड़ रहा था और शादी के दिन करीब आते जा रहे थे, सपने में बेलिबासी की ज़िल्लत और अब्दुल्लाह के हाथों मिली हार को लगभग एक हफ्ता गुज़र गया था, नाएमा एक दो दिन तो डिस्टर्ब रही लेकिन फिर शादी और उसके बाद की ज़िन्दगी की सोचों ने उसका रुख अपनी तरफ मोड़ लिया, उस रात नाएमा अपनी माँ के साथ बिस्तर पर लेटी हुई इन्हीं सोचों में गुम थी, वह ख्यालों में खुद को यूरोप और अमेरिका में घूमता हुआ सोच रही थी, उसे नहीं खबर थी कि उसकी माँ आमना बेगम किस तरह की चिनताओं से घिरी थीं, वह बेटी की मर्ज़ी और रिश्ते वाली की ज़िद पर इस रिश्ते के लिए राज़ी तो हो गई थीं, मगर अब कुछ सच्चाईयाँ खतरनाक शक्ल में उनके सामने आ रही थीं।

पहली चिंता तो बेटी की जुदाई की थी, उनकी सारी दुनिया नाएमा ही थी, उसकी खातिर ऐन जवानी में बेवा होने के बावजूद उन्होंने दूसरी शादी नहीं की, हालांकि उस वक़्त उनकी माँ जिन्दा थीं जो नाएमा को संभाल सकती थीं, उन्होंने बहुत ज़िद की थी कि आमना दूसरी शादी कर ले। आमना बेवा सही मगर बहुत अच्छी शक्ल सूरत की थीं, रिश्ते भी आ रहे थे, नाएमा को नाना नानी अपने पास रखने के लिए तैयार थे, उनके पास पूरा मौका था कि वह ज़िन्दगी को एक बार

फिर नए सिरे से शुरू करें, गुजरता वक़्त उनकी जिन हसरतों पर बिजलियां गिरा कर उन्हें राख बना चुका था, उस राख से एक नई दुनिया बनाएँ।

मगर उन्होंने अपने ज़िन्दगी और अपनी खुशियों पर अपनी बेटी को तरजीह (प्राथमिकता) दी, उसे बेपनाह मुहब्बत के साथ पाल पोस कर बड़ा किया, समय कैसे बीता और कैसे उनकी छोटी सी नाएमा जवानी की दहलीज़ पर आ पहुंची, उन्हें पता ही नहीं चला, और अब बेटी की जुदाई का वह वक़्त आ गया था जो कि हर माँ पर बहुत मुश्किल होता है, मगर उनके पास तो नाएमा के सिवा कुछ और नहीं था, फिर जहां नाएमा कि शादी हो रही थी वह इतना बड़ा परिवार था कि उस घर में बेटी से मिलने के लिए जाने से पहले सौ बार सोचना पड़ेगा, होने वाला दामाद देश से बाहर पढ़ रहा है, पता नहीं कैसा होगा, बेटी की चाहत में उन्होंने दामाद के बारे में ज़्यादा खोज बीन करने की कोशिश ही नहीं की, बस रिश्ते वाली औरत की बात पर भरोसा कर लिया था, क्या पता कि वह उनकी बेटी को लेकर देश से बाहर शिफ्ट हो जाए, फिर तो वह सालों के लिए अपनी बेटी की सूरत को तरस जाएंगी।

उन्हें अब्दुल्लाह का ख्याल आया, अगर यह शादी उससे हो रही होती तो एक चिंता भी नहीं होती। वह अब उनसे इतना घुल मिल चुका था कि वह उन्हें अपने बच्चों जैसा लगने लगा था, फिर उसका तो कोई था भी नहीं।

"उसे तो मैं अपने घर में ही रख लेती, मेरी बेटी हमेशा मेरे पास ही रहती।"

पछतावों ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया, उनसे पीछा छुड़ाने के लिए वह शादी की तैयारियों के बारे में सोचने लगीं तो चिनताओं ने उन्हें आ घेरा।

नाएमा के ससुराल वालों के रंग ढंग से उन्हें काफी परेशानी हो रही थी, वह शहर के सबसे बड़े कलब में दो हजार लोगों को बुलाकर वलीमा करने का इरादा रखते थे, जवाब में उन्हें किसी फाइव स्टार होटल में पांच सौ लोगों को भी बुलाना पड़ गया तो शादी के लिए सारी जमा पूँजी उसी में खर्च हो जाएगी, वह जितना भी दहेज और गहने बना लेते, उन लोगों के मुकाबले में वो बहुत कम और मामूली ही नजर आता, जेवर से उन्हें कुछ याद आया तो बराबर लेटी हुई नाएमा से उन्होंने सवाल किया:

"बेटा वह तुम्हारे पास एक बड़ा वज़नी सोने का लॉकेट और चेन थी, वह कहाँ है?"

नाएमा इस वक़्त अपने ख्यालों की नई दुनिया की सैर कर रही थी, इस अचानक सवाल से उसे ऐसा लगा जैसे किसी ने उसे झरने के किनारे से नीचे धक्का दे दिया है, कुछ देर तक तो उसे समझ नहीं आया कि इसका क्या जवाब दे, वह सच बताती तो माँ से बहुत डाँट पड़ती, खैर माँ को तो किसी तरह वह मना ही लेती कि लाडली बेटी थी, मगर वह नहीं चाहती थी कि एक अच्छे काम को सब की जानकारी में लाए, मगर अब तो कुछ न कुछ बताना ही था।

उसने कुछ जवाब नहीं दिया तो आमना बेगम ज़्यादा हरकत में आईं:

"मैं सोच रही थी कि इतना भारी लॉकेट और चेन है, क्यों न उसकी जगह एक सैट बनवा लिया जाए, सैट का नाम बड़ा होता है, चेन लॉकेट तो किसी गिनती में नहीं आते।"

उनकी यह बात सुनकर नाएमा को एक बात बनाने का मौका मिल गया, उसने मां से लिपटते हुए कहा:

"अम्मी वह लॉकेट तो मुझे इतना पसंद है कि कुछ हद नहीं, मैं किसी कीमत पर उसे नहीं दूँगी, मैं उसे अपने साथ ऐसे ही ले जाऊँगी, आप कुछ और कर लीजये।"

यह कहकर नाएमा की तो जान छूट गई लेकिन बेटी के जवाब से आमना बेगम की परेशानी और बढ़ गई, इसी परेशानी के आलम में न जाने कब उनकी आंख लग गई, नाएमा भी ज़्यादा देर तक न जाग सकी।

.....

एक बार फिर नाएमा उसी मैदान में खड़ी थी, बिना किसी डर और परेशानी के वे हर जगह उड़ती फिर रही थी, यह खूबसूरत नज़ारे उसके अन्दर तक सुरूर और सुकून भर रहे थे, उसका दिल चाह रहा था कि वक़्त थम जाए और हमेशा वह यूं ही उड़ती रहे, अचानक उसके उड़ने की क्षमता ख़त्म हो गई और वह जमीन पर आकर ठहर गई।

एक बार फिर वही हयूला उसके सामने था, इस बार नाएमा के दिल में उसे देखकर कोई डर नहीं आया, बल्कि एक जिज्ञासा थी, उसने पूछा:

"तुम कौन हो?"

''तुम्हें इस सवाल का जवाब जल्द ही मिल जाएगा.....यह बताओ क्या तुम सच्चाई जानना चाहती हो?''

''मगर मुझे तो सच्चाई मालूम है?''

''तुम्हें कुछ नहीं मालूम, तुम धोखे में जी रही हो, तुम्हें तो यह भी नहीं पता कि लोगों को किस चीज से बचाना चाहिए।''

''मैं समझी नहीं इस बात का क्या मतलब है?''

''तुमने काएनात के मालिक को मुख़ातिब (संबोधित) करके कहा था कि मैं तो एक ही को बचा सकी, हो सके तो बाकी लोगों को तू बचाले।''

''हाँ कहा था।''

''तो फिर सुन लो जिस बच्चे को तुमने बचाना चाहा था उसे दो दिन बाद मौत ने अपने आगोश में ले लिया, अगर बचाना है तो लोगों को इस बात से बचाओ कि वह अल्लाह के सामने इस हाल में पेश हों कि वह नंगे हों, क्योंकि जहन्नम (नरक) की आग ऐसे लोगों का लिबास बन जाएगी।''

यह सुनते ही नाएमा की नज़र अपनी तरफ लौटी और यह देखकर वह तड़प उठी कि एक बार फिर वह बिना कपड़ों के थी। इसके साथ ही नाएमा की आंख खुल गई, ऐसा लग रहा था कि वह सोई ही नहीं है, उसने जो कुछ देखा है जागती हुई आँखों से देखा है, उसे न नींद आ रही थी न यह समझ में आ रहा था कि उसे ऐसे बेतुके सपने क्यों दिख रहे हैं, काफी देर वह इसी उधेड़बुन में लेटी रही, अचानक मस्जिद से सुबह की अज़ान की आवाज़ बुलंद हुई, नाएमा किसी रोबोट की तरह उठी, वाश रूम जाकर वुज़ू किया और न जाने कितने समय बाद सुबह की नमाज़ पढ़ने खड़ी हो गई।

.....

नाएमा कॉलेज में सारा दिन खोई खोई रही, वह इस सपने की गुत्थी को हल नहीं कर पा रही थी, आखिरकार उसने फिर मनोविज्ञान के ज्ञान से मदद लेने का फैसला किया, लाइब्रेरी जा कर उसने कई और किताबों के अलावा सिगमंड फ्रायड की किताब 'The Interpretation of Dreams'

निकालकर पढ़ना शुरू किया, यहाँ उसके सारे सवालों का जवाब था, सपने क्यों आते हैं, उनका मतलब क्या होता है, उनको कैसे समझा जाता है, जवाब बिल्कुल साफ़ थे, यह दबी हुई ख्वाहिशों, मन में छिपे अंदेशे, गुस्सा और नफरत की यादों, रोज़ पेश आने वाली घटनाओं जिन्हें हम चेतना से नीचे मन में कहीं दबा देते हैं, उन सभी की मिलीजुली पैदावार होते हैं, सपने का ज़ाहिरी पहलू अहम नहीं होता बल्कि सपने का ज़ाहिर कुछ और हकीकतों का एक अलामती इज़हार (सिंबॉलिक एक्सप्रेशन) होता है, सपने का मतलब समझने के लिए सपने के ज़ाहिरी पहलू के बजाय यह समझना चाहिए कि वे किन हकीकतों की तरफ इशारा कर रहे हैं, इसके लिए हकीक़त की तलाश अपनी ज़िन्दगी की घटनाओं, तजुरबे, जज़्बात और अतीत और वर्तमान में करनी चाहिए।

मनोविज्ञान और खासकर फ्राइड को पढ़ने के बाद उस पर सारी बात साफ हो गई, यह सपना मज़हब और मज़हबी लोगों से नफरत, समाज की तरफ से मज़हब और खुदा का डरावा, ज़ाती तरक्की और ऐश की ख्वाहिश, सच्चाई की तलाश में उसका सफ़र, उसकी शादी के बाद नई ज़िन्दगी जो आज़ादी और एडवंचर से सजी थी इन सब का मिलाजुला असर था, यह लॉकेट और उस गरीब औरत की मदद वाली बात तो बहरहाल वह घटना थी जो पेश आई थी, इन सब बातों को जोड़कर उसका मन संतुष्ट हो गया, उसने एक गहरी सांस ली और मेज पर सर रखकर रिलैक्स होने लगी, उस का सारा बोझ उतर चुका था, उसने सब कुछ समझ लिया था, अब कोई चिंता उसे नहीं थी।

वह इसी हालत में थी कि अचानक उसके दिमाग में एक धमाका हुआ, पूरे सपने में वह एक बात बिल्कुल नजरअंदाज कर गयी थी, जो एक खबर की हेस्यत रखती थी, वह यह कि जिस बच्चे को उसने बचाना चाहा था वह दो दिन बाद अल्लाह को प्यार हो गया था।

थोड़ी देर तक तो वह इसे ध्यान से झटकने और भूलने की कोशिश करती रही, फिर उसे याद आया कि उस औरत और बच्चे की मदद करने के अगले दिन जब उसके नाना की छुट्टी हुई थी तो वह ऑफिस गई थी, वहां वही आदमी मौजूद था जिससे उसने बच्चे के बारे में बात की थी, उसने नाएमा के पूछने पर बताया था कि उस बच्चे का ऑपरेशन सफल हो चुका है, यह इस बात की दलील थी कि सपने में इसके उलट जो बात कही गई थी नाएमा उसे अपने मन की कारस्तानी समझ कर भूल जाए, नाएमा खुद भी इस बात को नजरअंदाज करना चाहती थी मगर

वह हयूला नाएमा के सर पर फिर सवार हो गया, उससे छुटकारा पाने का एक ही तरीका था.....उसकी कही बात को झुटलाया जाए।

"अच्छा है दिल का यह शक भी दूर हो जाए ताकि आगे से वह इस तरह की बातों और सपनों को बिल्कुल अहमियत (महत्व) न दे।"

नाएमा ने दिल में सोचा, फिर वे लाइब्रेरी से उठी और सीधे उसी अस्पताल जा पहुंची जहां उसके नाना ऐडमिट थे, वह उसके ऑफिस तक आई, इस समय वहाँ कोई अजनबी आदमी ड्यूटी पर था, यह वह आदमी नहीं था जिससे उसने बात की थी, लेकिन उसने वो बात उस आदमी को बताई कि इस तारीख को एक बच्चे का ऑपरेशन हुआ था, उस का क्या हुआ, उस आदमी ने उसे रिकॉर्ड ऑफिस जाने को कहा जहां मरीजों का रिकॉर्ड रखा जाता है।

थोड़ी देर में वह रिकॉर्ड रूम में खड़ी थी, उसे न उस औरत का नाम पता था न उस बच्चे का। सिर्फ तारीख, ऑपरेशन और फीस जो उसने जमा कराई थी याद थी, यह एक मुश्किल काम था मगर अपनी खूबसूरत शख्सियत (व्यक्तिव) के आधार पर उसे यहां भी लोगों से मदद लेने में ज़्यादा मुश्किल नहीं आई, एक आदमी कंप्यूटर के सामने बैठ कर उसकी दी हुई जानकारी से तलाश की कोशिश करने लगा, उसने खातों के कार्यालय से भी मदद ली, बात क्यों कि बहुत पुरानी नहीं थी इसलिए लगभग आधे घंटे में ही मामला साफ हो गया, जिस तारीख में नाएमा ने पैसे जमा कराए थे उसी तारिख और राशि की मदद से बच्चे को ढूंढ लिया गया, इसी दिन उस बच्चे का ऑपरेशन हुआ था, आपरेशन सफल रहा था, उस बच्चे की तबीयत बेहतर हो रही थी, मगर दो दिन बाद उस बच्चे की तबियत अचानक बिगड़ी और उसकी मौत हो गई।

.....

नाएमा ने दोपहर का खाना नहीं खाया, वह अस्पताल से सीधे घर आई थी और चुपचाप कमरे में जाकर लेट गई थी, मां ने खाने को कहा तो कह दिया कि कॉलेज में दोस्तों के साथ खा लिया था, वह खामोश लेटी सिर्फ एक ही बात सोच रही थी, ख़्वाब की ताबीर और मनोविज्ञान से सब कुछ तो मालूम हो गया था, लेकिन यह जवाब कहीं मौजूद नहीं था कि जो घटना असल में हुई, जिसकी नाएमा को कोई जानकारी नहीं थी, वह ठीक ठीक दिनों की गिनती के साथ नाएमा को सपने में कैसे मालूम हो गई? उस हयूले ने यह कैसे बता दिया कि जिस बच्चे को उसने बचाना

चाहा था, जिसकी खातिर उसने अपनी सबसे प्यारी चीज़ को बेच दिया था, वह ठीक दो दिन बाद मर गया। यह कैसे मुमकिन है? यह सवाल हथौड़ा बनकर बार बार उसके दिमाग पर पड़ रहा था, उसे लग रहा था कि साइकोलॉजी के जिस ज्ञान पर उसे यह भरोसा था कि वह इंसान का एनालाईसिस करके उसके बारे में सब कुछ बता सकता है, जिस फलसफे (दर्शन) पर उसे विश्वास था कि वह काएनात की हर गुत्थी सुलझा सकता है, वे सारे ज्ञान अधूरे थे यह यकीन के काबिल नहीं थे, हकीक़त और सच्चाई कहीं और थी, किसी बेहतर जगह पर।

सोचते सोचते उसके दिमाग में पहले सपने के बाद पेश आने वाली घटनाएं घूमने लगीं, तक़वे (धर्मपरायणता) के लिबास का जो मतलब अब्दुल्लाह बता रहा था, इससे उसे अपने सपने में बिना कपड़ों के दिखने का मतलब समझ में आने लगा, कुरआन अल्लाह का कलाम है और मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं, इसके जो सबूत अब्दुल्लाह ने दिए थे और जिन्हें उसने सिर्फ इसलिए नजरअंदाज कर दिया था कि यह सब कुछ उसका दुश्मन अब्दुल्लाह कह रहा था, अब उस की बनाई हुई दीवारों को तोड़कर उसके दिलो दिमाग की दुनिया में अपनी जगह बनाने लगे, अब्दुल्लाह की बात उसके कानों में गूंजने लगी कि रसूल वो बातें बता सकते हैं जो अभी पेश नहीं आई, जैसा वे कहते हैं ठीक वैसा ही हो जाता है, इतने विश्वास से भविष्य की बातें और अतीत की घटनाएं सिर्फ अल्लाह तआला ही की तरफ से बयान की जा सकते हैं।

अब्दुल्लाह ने कोई फलसफ्याना नुक्ता (दार्शनिक बिंदु) नहीं उठाया था, सिर्फ सच्चाईयां थी जिन्हें झुटलाया नहीं जा सकता, जैसे कि यह एक हकीक़त थी कि जिस बच्चे को उसने बचाना चाहा, वह दो दिन बाद मर गया था, यह बात उसे किसी तरह मालूम नहीं थी, लेकिन सपने में बिलकुल सही वक़्त के साथ उसे यह बात मालूम हो गई, यह कैसे मुमकिन हुआ, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था।

.....

नाएमा के सारे घरौंदे टूट चुके थे, मज़हब का दामन पहले ही हाथ से छूट चुका था, फलसफे और साइंस की मुश्किल चीज़ें आज शक़ के घेरे में आ चुकी थी, अगर कोई उस से खुदा के वुजूद को लेकर बहस करता तो वह शायद कभी इतना जल्दी नाएमा में बदलाव नहीं ला सकता था जो अब आ रहा था, लेकिन सच्चाई यह थी कि नाएमा के दिलो दिमाग पर हमला बाहर से नहीं

अंदर से हुआ था, यह वार इतना तेज़ था कि उसने नाएमा के हर मोर्चे को तबाह कर दिया था, उसका पुराना वुजूद (व्यक्तिव) एक धमाके के साथ फ़ना हो चुका था।

वह जिस अनुभव से हाल ही में गुजरी थी वह देखने से तो सिर्फ एक सपना था, वह चाहती तो आसानी से इस सपने को नजरअंदाज कर देती, मगर वह बेज़मीर नहीं थी कि मन की उलझनों को भुला कर जानवरों की सी ज़िन्दगी जीना शुरू कर दे, वह सोचती थी, सवाल उठाती थी और जवाब तलाश किया करती थी, मगर अब सिर्फ सवाल रह गए थे, जवाब कहीं नहीं थे, न उन्हें जानने का कोई ज़रिया बचा था, उसने फिर सपने के बारे में सोचना शुरू कर दिया, वह सपना उसे शुरू से आखिर तक पूरा याद था, वह उसकी एक एक चीज़ को दोहराने लगी, उसे पता चल गया कि उसका सपना एक सपना नहीं था बल्कि उसके साथ किया गया एक मुकालमा (संवाद) था, उसे दिया गया एक सीधा पैगाम (संदेश) था, इस वक़्त उसे याद आया कि उस हयूले ने शुरुआत इस बात से थी कि क्या वे सच्चाई जानना चाहती है, एक पल में नाएमा के मन में बिजली की तरह एक ख्याल उठा, अगर यह सब खुदा की तरफ से है तो अब इस बातचीत में अगली बात मैं करूँगी, अगर कोई खुदा है तो मुझे जवाब जरूर मिलेगा, बेबसी में उसके मुंह से निकला:

"हाँ मैं सच्चाई जानना चाहती हूँ।"

यह कहकर वह उठी और वुज़ू किया और ज़ोहर (दोपहर) की नमाज़ पढ़ने लगी, वह जैसे ही सजदे में गई उसका दिल भर आया, वह रोते हुए कहने लगी:

"परवरदिगार (प्रभु) मैं तुझे नहीं मानती थी, इसलिए कि मेरे बहुत से सवालों का जवाब कहीं नहीं है, इस दुनिया में इतना जुल्म क्यों है, यहाँ इंसाफ क्यों नहीं, अगर यहां अंधे मादे (मेकिनिज्म) का राज नहीं और तेरा हुक्म चलता है तो फिर इतनी नाइंसाफी क्यों है, लोग क्यों मरते हैं क्यों पैदा होते हैं, कुछ लोग महरूम (वंचित) क्यों रह जाते हैं, कुछ लोगों को बिना वजह इतनी नेमतें क्यों मिल जाती हैं, तू है तो सच्चाई लोगों को क्यों नहीं बताता, क्यों तू ने फलसफ्यों (दार्शनिकों) और धार्मिक गुरुओं को यह इजाज़त दे रखी है कि जो चाहें खड़े होकर तेरे नाम पर कह दें, तू खुद कहां है, तेरी सच्ची हिदायत (मार्गदर्शन) कहां है?

परवरदिगार (प्रभु) में अपने दिल से हर पूर्वाग्रह और हर नफरत खत्म करने के लिए तैयार हूँ, मैं मानती हूं कि मुहम्मद तेरे रसूल हैं, मुझे उनकी सच्चाई का यकीन उस आदमी ने दिलाया है जिससे मुझे नफरत है, मगर वह बात ठीक कह रहा था मैं उसकी नफरत के बावजूद यह क़ुबूल करती हूं कि वह सच कह रहा था, मगर अभी पूरा सच मुझे मालूम नहीं हुआ, मैं उस खुदा पर कैसे विश्वास करूं जो ज़ुल्म पर खामोश रहता है, मैं उस खुदा से कैसे मुहब्बत कर लूं जो महरूमियों को जन्म देता है, मैं ईश्वर पर कैसे विश्वास करूं जो सच खोलकर नहीं बताता।''

नाएमा बहुत देर तक रोती रही और सजदे में लगातार यही दुआ करती रही।

****

वल-अस्र - ज़माना गवाह है

एक हफ्ता और गुजर गया अब्दुल्लाह ने अब इस्माइल साहब के घर आना छोड़ दिया था, नाएमा को उसके होने न होने में कोई दिलचस्पी भी नहीँ थी, उसकी शादी के दिन अब बहुत करीब आ चुके थे, घरवालो की ज़िद थी कि नाएमा अब कॉलेज जाना छोड़ दे, मगर उसका कहना था कि वह अपनी पढ़ाई शादी के बाद भी जारी रखना चाहती है, इसलिए जब तक मुमकिन हुआ वह कॉलेज जाएगी।

उसमें एक बहुत बड़ा बदलाव आ चुका था जिसे सब महसूस कर रहे थे कि वह अब पांच वक्त की नमाज पाबंदी से पढ़ती थी इस बदलाव पर उसके नाना अब्बू और अम्मी दोनो बहुत खुश थे, फारिया भी बहुत खुश थी लेकिन उसे ये बात अजीब लगी के अब नाएमा अपनी शादी और भविष्य को लेकर बहुत ज्यादा एक्साईटिड नज़र नहीं आ रही थी। लड़कियां शादी के दिन करीब आने पर ज़्यादा खुशी महसूस करती हैं मगर नाएमा का मामला यह था कि एक उदासी हर समय उसके ऊपर छाई रहती थी।

नाएमा का मसला क्या था उस से किसी ने न पूछा न उसने किसी को बताया, सब समझ रहे थे कि शादी और आने वाले मुमकिन अच्छे बुरे अंदेशों ने नाएमा का ध्यान खुदा की तरफ झुका दिया है, वजह कुछ भी हो सब खुश थे, परेशानी अगर कोई थी तो बस शादी के इन्तिज़ाम करने की और उनके लिए पैसे जमा करने की थी, मगर यह परेशानी इस्माइल साहब और आमना बेगम की परेशानी थी, उन्होंने नाएमा को इस परेशानी की खबर तक होने नहीं दी थी, वो नहीं चाहते थे कि उनकी बेटी की खुशियों में इन परेशानियों की वजह से कुछ कमी आए।

.....

यह बात किसी को नहीं मालूम थी कि नाएमा का अल्लाह के साथ बहुत गहरा और मज़बूत रिश्ता कायम हो चूका है, यह रिश्ता उस पांच वक़्त कि नमाज़ से कहीं ज़्यादा गहरा था जो वह ज़ाहिर में लोगों को पढ़ती हुई नज़र आती थी, उसकी दिन रात एक ही दुआ थी कि सच्चाई उस पर खोल दी जाए।

एक दिन ईशा (रात) की नमाज़ पढ़ कर वो मुसल्ले पर बैठी हुई दुआ कर रही थी, उसकी आखें बंद थी और लगातार आसूं जारी थे, इसी हाल में नाना अब्बू उसके कमरे में आ गए, उसे इस हाल में देख कर वह एक दम ठिटक से गए, उनकी नवासी में इतना बड़ा बदलाव आ चुका था इस का उन्हें अंदाज़ा नहीं था, उनके लिए तो यही बहुत बड़ी बात थी कि उनकी नवासी अब नमाज़ पढ़ने लगी थी, मगर अब अल्लाह के सामने बैठ कर रो भी रही थी यह चीज़ तो उनके गुमान में भी नहीं थी, वे कुछ देर तक मुहब्बत से उसे देखते रहे और फिर वापस लौट गए, थोड़ी देर बाद वे वापस दोबारा आए, इस बार उनके हाथों में कुरआन मजीद था।

इस बीच नाएमा दुआ पूरी कर चुकी थी, उन्होंने कमरे में आते हुए कहा:

"मेरी बेटी क्या दुआ मांग रही थी?"

नाएमा अब उन्हें क्या बताती थी कि वह क्या दुआ मांग रही थी, उसकी दुआ न अपने लिए थी न अपने भविष्य के लिए, न अपनी शादी के बारे में न अपनी आने वाली ज़िन्दगी के बारे में, उसकी दुआ सिर्फ सच्चाई और हकीक़त जानने के लिए थी, सच अब उसके लिए इतना कीमती हो चुका था कि उसके सामने हर दूसरी चीज़ बेकार हो चुकी थी, मगर ज़ाहिर है यह बात वो उन से नहीं कह सकती थी, उसने जवाब में मुस्कुरा कर कहा:

"मैं अल्लाह से वो मांग रही थी जो मेरे लिए इस वक़्त सबसे ज़्यादा ज़रूरी है।"

नाएमा की इस बात का मतलब नाना अब्बू वही समझे जो उन्हें समझना चाहिए था, वो समझे कि उनकी नवासी अपनी शादी और आने वाली ज़िन्दगी के बारे में दुआ मांग रही थी, मगर शर्म में मारे यह नहीं कह सकी बल्कि एक मिली जुली सी बात कह दी, उन्होंने प्यार से नाएमा के सर पर हाथ रख कर कहा:

"मुझे यकीन है अल्लाह मेरी बेटी को अपनी बड़ी बड़ी रहमतों से नवाज़े गा, तुम्हारी शादी शुदा ज़िन्दगी इतनी खुशयों से भरी होगी कि तुम अपने आप को दुनिया की सबसे खुश नसीब लड़की समझोगी।"

नाएमा ने उनकी बात का कोई जवाब नहीं दिया, मगर उनके हाथ में मौजूद कुरआन मजीद को वह गौर से देखने लगी, नाना अब्बू उसकी नज़रों का कुछ मतलब समझते हुए बोले:

"बेटा! दुनिया में बेटियों को कुरआन के साए में बिदा किया जाता है, उनके दहेज में कुरआन मजीद दिया जाता है, मगर अक्सर लडकियों को ज़िन्दगी भर तौफीक नहीं होती के वो कुरआन को समझ कर पढ़ें, मगर मैं यह चाहता हूँ कि अब तुमने अल्लाह की तरफ ध्यान दिया है तो तुम इस किताब को अपनी ज़िन्दगी बना लो, इसमें तुम्हारे हर सवाल का जवाब भी है और तुम्हारे लिए पूरी हिदायत (मार्ग दर्शन) भी।"

"क्या वाकई इस में मेरे हर सवाल का जवाब है?"

नाएमा ने ताज्जुब (आश्चर्य) से पूछा।

"हाँ बेटा! न सिर्फ तुम्हारे सवालों के जवाब हैं बल्कि बहुत अच्छी नसीहतें भी हैं, आओ इधर मेरे साथ बैठो।"

नाना अब्बू ने उसके बेड पर बैठते हुए कुरआन मजीद खोल कर कहा, नाएमा उनके साथ ही बैठ गई, नाना अब्बू ने कुरआन के कुछ पेज अलटे पलटे और सूरेह अस्र निकाली और बोले:

"मैं यह चाहता हूँ कि आज कुरआन करीम की बहुत ही छोटी सूरेह तुम्हे अनुवाद के साथ पढ़ा दूं, इसमें पूरे कुरआन का खुलासा (सार) है।"

"यह कौन सी सूरेह है नाना अब्बू?"

"इस सूरेह का नाम सूरतुल-अस्र है।"

यह कह कर उन्होंने पहले सूरेह अस्र को अरबी में पढ़ा और फिर उसका अनुवाद पढ़ कर नाएमा को सुनाने लगे:

"ज़माना गवाह है, बेशक इन्सान बड़े नुक्सान में हैं सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक काम (कर्म) किये और एक दुसरे को सच्चाई पर जम जाने और सब्र (धैर्य) करने की नसीहत करते रहे।"

नाएमा में हलाकि काफी बदलाव आ चुके थे मगर नाएमा फिर भी नाएमा ही थी, यानि फलसफी (दार्शनिक) नाएमा, यह अनुवाद सुनकर उसके चहरे पर सवालया निशान बन गया, मगर उसने कुछ कहने के बजाए नाना अब्बू के हाथ से कुरआन अपने हाथों में लिया, नाएमा ने दो तीन बार

यह अनुवाद पढ़ा, बजाए इसके कि उसे किसी तरह रहनुमाई (मार्गदर्शन) और हिदायत मिलती उसके दिमाग में फिर सवाल घूमने लगे, उसने नाना अब्बू से कहा:

"नाना अब्बू ज़माना गवाह है का क्या मतलब है?"

नाना अब्बू ने अपने इल्म (ज्ञान) की रौशनी में जवाब देना शुरू किया:

"बेटा ज़माने का मतलब माज़ी (भूतकाल) का ज़माना भी है और हाल (वर्तमान) का भी, यह ज़माना वह चीज़ है जिसमे हम सब इंसान जीते हैं, यह हमारी जमा पूँजी है, यह बर्फ की तरह पिघल रहा है, हमें चाहिए कि हम इस जमा पूँजी को नेकी करने में खर्च करें, तभी हम कामयाब होंगे, और अगर हमने इस जमा पूँजी को ईमान, नेक काम (कर्म), अच्छी बातों, दुसरों को सच्चाई पर जम जाने और सब्र करने की नसीहत मे इस्तिमाल नहीं किया तो हम नुक्सान में रहेंगे।"

"मगर नाना अब्बू ज़माना माज़ी (भूतकाल) का हो या हाल (वर्तमान) का, हमारी ज़िन्दगी का हो या दूसरों की ज़िन्दगी का, उसका सबक (सीख) तो कुछ और है, मेरा अध्ययन तो यह बताता है कि घाटे में हमेशा कमज़ोर रहते हैं, गरीब रहते हैं, ज़माने के नीचे के तबके के लोग रहते हैं, अच्छे लोग तो हर हाल में परेशान रहते हैं, उन्हें अपनी इमानदारी की बड़ी भरी कीमत चुकानी पड़ती है।"

नाएमा का भाषण अब शुरू हो चुका था और इतनी आसानी से रुकने वाला नहीं था।

"आप दूसरों की बात छोड़ये और अपने आप को देखये, आप कितने नेक हैं और अम्मी कितनी अच्छी हैं, लेकिन ज़माने ने आप को गम दुःख और महरूमी के सिवा क्या दिया है, गरीबी और परेशानी में आप ने सारी ज़िन्दगी गुज़ारदी, और मुझे देखें मैं ना नमाज़ पढ़ती थी और ना नेकी के काम करती थी मैं तो ईमान भी नहीँ रखती थी लेकिन सिर्फ इस वजह से कि मैं बहुत खूबसूरत हूँ देखये मेरे लिए अमीर और बडे घराने के दरवाज़े किस तरह खुल गए, हर घर हर दौर और हर ज़माने की कहानी यही है, दुनिया के इतिहास को पढ़लें, हलाकू, चंगेज़, तैमूर और सिकंदर और आज की पश्चिमी कौमें सब ईमान, नेकी के काम और दूसरे इस्लामी काम नहीं करती, मगर आप देखये उनको को अपने जमाने में कैसे कामयाबी मिली, एक इंसान हो या पूरी कौम हो माज़ी हो या हाल हो, माफ कीजिएगा कुरआन मजीद की यह बात मुझे किसी तरह से सही नहीं लगी।"

नाना अब्बू का चेहरा फक़ हो गया, नाएमा के एक के बाद एक सवाल और दलीलों का उनके पास कोई जवाब नही था मगर ज़ाहिर है उन्हें नाएमा को संतुष्ट तो करना था, वो बोले:

"देखो बेटा मैं और तुम्हारी मम्मी बहुत अच्छी जिंदगी गुज़ार रहे हैं।"

"नाना अब्बू! मेरी माँ जवानी में बेवा हो गई, सारी ज़िन्दगी अकेले गुजार दी, मेरे नाना का कोई बेटा नहीं था, एक बेटी थी जो विधवा होने का दाग लिए घर लौट आई, एक बहुत नेक आदमी को सारी ज़िन्दगी बेटी और फिर नवासी का बोझ उठाना पड़ा, नाना अब्बू यह अगर कामयाबी है तो माफ़ कीजिएगा कोई आदमी इस दुनिया में कामयाब होने की तमन्ना भी नहीं करेगा।"

"मगर बेटी मैं अपनी ज़िन्दगी से संतुष्ट हूँ।"

"माफ़ कीजये नाना अब्बू अपनी बदहाली पर यही वह इत्मिनान (संतोष) है जिसे देख कर मॉडर्न स्कॉलर्स मज़हब (धर्म) को अफीम का नशा कहते हैं।

फिर यह भी देखये कि कुरआन यहाँ इत्मिनान की नहीं घाटे और नाकामी की बात कर रहा है, सक्सेस और कामयाबी की बात कर रहा हैं, रहा इत्मिनान का सवाल तो हो सकता है एक बुद्ध भिक्षु, हिन्दू योगी और इसाई राहिब को भी अपने अकीदे पर इतना ही इत्मिनान हो, मन का सुकून तो अपने मन पर थोड़ा काबू करके कोई भी हासिल कर सकता है, इस सुकून से सच्चाइयाँ नहीं बदलती, इस इत्मिनान और मन के सुकून की इल्म (ज्ञान) और अक्ल की दुनिया में कोई हेस्यत नहीं।"

नाना अब्बू नाएमा का एतराज़ काफी हद तक समझ चुके थे, यह ऐतराज़ बिलकुल अकली और इल्मी था, इस लिए अब उन्होंने घाटे और कामयाबी को बुन्याद बना कर जवाब देने की कोशिश की:

"मगर बेटा उन्हें जन्नत नहीं मिल सकती, यहाँ असल में जन्नत में जाने को कामयाबी और जहन्नम में जाने को घाटा कहा गया है, यह काम करने वाले दुनिया में इत्मिनान से रहते हैं और आखिरत में जन्नतुल फिरदोस में जाने की कामयाबी हासिल करते हैं, जबकि इन कामों को ना करने वाले जहन्नम में जाकर अपना सब कुछ गवा देते हैं और यह भारी नुकसान है जिसका वो लोग शिकार होंगे।"

''नाना अब्बू! आप की यह बात एक पहलु से ठीक है, मगर इसमें दिक्कत यह है कि ज़माने को इसकी गवाही में पेश करना ठीक नहीं, इसलिए क्यों कि माज़ी (भूत) और हाल (वर्तमान) के ज़माने का सबक इससे बिलकुल उलट (विपरीत) है, ज़माना तो आम तौर पर नेक लोगों के खिलाफ खड़ा होता है, हाँ ज़माने को सबूत के तौर पर पेश ना किया जाता तो यह बात एक दावे के तौर पर ठीक थी, मगर इस दावे पर मेरा ऐतराज़ यह है कि जन्नत और जहन्नम की बात बहरहाल एक मुस्तक़बिल (भविष्य) की बात है और फिलहाल यह सिर्फ एक दावा ही है, यह दावा किसी ऐसे मुसलमान को इत्मिनान दिला देगा जो पहले से जन्नत जहन्नम पर यकीन रखता हो, लेकिन गैर मुस्लिम के लिए खास कर अगर वो नई नई विचारधारा, फलसफे और थ्योरीज को जानता है तो उसे बिलकुल संतुष्ट नहीं कर सकता।

आज का ज़हन (दिमाग) दावे को नहीं मानता उसे सबूत चाहिए, और माफ कीजयेगा कुरआन ने यहाँ जो ज़माने को सुबूत के तौर पर पेश किया है वो बिलकुल ही उल्टा है जो दावे के खिलाफ जा रहा है।

अगर आप अपनी ज़िन्दगी को कामयाबी और एक अमीर और ताक़त वर लीडर की ज़िन्दगी को नाकामी बताएँगे तो दो चार लोग शायद आप की बात मानलें लेकिन पूरी इंसानियत आप की बात को ठुकरा देगी।''

नाना अब्बू को इस वक़्त अब्दुल्लाह बहुत याद आरहा था, मगर ज़ाहिर है कि इस वक़्त तो कुछ भी नहीं हो सकता था, उनके दिल की गहराई में यह ख्याल आया:

''काश तुम्हारी शादी अब्दुल्लाह के साथ हो रही होती, वह तुम्हारे हर सवाल का जवाब मुझसे बहतर दे देता।''

यह इस्माइल साहब के दिल की आवाज़ थी, मगर उनकी ज़ुबान पर ख़ामोशी ही रही, नाएमा को उनके चेहरे के हावभाव देख कर अंदाज़ा हो चुका था कि उसकी बहस ने माहोल ख़राब कर दिया है, वो उन का दिल रखने के लिए बोली:

''सॉरी नाना अब्बू....हो सकता है मैं ही गलत हूँ, मगर मैं सोचूंगी आप परेशान ना हों।''

इस्माइल साहब को भी खैरयत इसी में लगी कि सीस फायर करलें, उनकी नवासी जितनी भी सीधी राह पर आ गई है उसी पर ख़ुशी मनालें, ऐसा ना हो और ज़्यादा बहस करने से उनकी नवासी नमाज़ भी छोड़ दे, इसलिए वो यह कहते हुए उठ गए:

"बेटा अब तुम आराम करो, इंशा अल्लाह हम बाद में बात करेंगे।"

.....

इस्माइल साहब के जाने के बाद नाएमा उदासी में खामोश हो कर बैठ गई, उसे दुःख हो रहा था कि उसने बिना वजह के एक ऐसी बहस छेड़ दी जिस से उसके नाना को बुरा लगा, मगर वह क्या करती, यह उसके सवाल थे जिनका उसे कभी जवाब नहीं मिला था, जैसे जवाब नाना अब्बू ने दिए थे वो पहले भी कई बार सुन चुकी थी, मगर कभी उन जवाबों ने उसे संतुष्ट नहीं किया था।

उसने कुरआन भी खुद पढ़ने की कोशिश की थी, मगर सच्ची बात यह है कि कुरआन मजीद ना कभी पहले उसकी समझ में आया ना अब आ सका। कुरआन मजीद और नाएमा के बीच एक बुन्यादी रुकावट थी जो फलसफों (दर्शन) ने पैदा कर दी थी, वो यह कि कुरआन मजीद दावे से बात शुरू करता है, जबकि नाएमा किसी ऐसी चीज़ को कोई अहमयत देने को तैयार नहीं थी जो दावे से अपनी बात शुरू करती हो, नाना अब्बू सहित जिन मज़हबी (धार्मिक) लोगों से उसका वास्ता पड़ा था उनमे से कभी किसी ने कुरआन की दलीलों (तर्क) का ज़िक्र नहीं किया था, उसने मज़हबी लिट्रेचर भी काफी पढ़ रखा था, लेकिन यह सारा लिट्रेचर इस बात को ध्यान में रख कर लिखा गया था कि पढ़ने वाला पहले ही तौहीद (एकेश्वरवाद) रसूल और क़यामत को मानने वाला है, इस लिट्रेचर को लिखने वालों में ज़्यादा तर को पता ही नहीं था कि आज कल के पढ़े लिखे नौजवानो के ज़हनो में क्या बदलाव आ चुका है।

इस लिट्रेचर का ज़ोर समझाने से ज़्यादा मनवाने और धमकाने पर था, फिर इसकी बुन्याद भी कुरआन नहीं था, सदियाँ गुज़र चुकी थी कि अक्सर मुसलमानों ने कुरआन मजीद को उठाकर कोने में रख दिया था, कुरआन मजीद जिस घहराई में जाकर बात करता है वो हकीक़त भी अभी गिनती के कुछ लोगों ही के पास रह गई थी, रहा बाक़ी लिट्रेचर तो वो कुरआन के इंटेलेक्चुअल फलसफे से ज़्यादा छोटे छोटे मसले ही पर लम्बी बहसे करता था, यह लिट्रेचर नाएमा के लिए

बेकार था जो कुछ इस लिट्रेचर में था वो कुरआन में नहीं था और जो कुरआन में था वो फलसफी (दार्शनिक) नाएमा की अक्ल को क़ुबूल नहीं था।

इस मामले में बस अब्दुल्लाह ही सबसे अलग था जिसकी बातें मुदल्लल (तर्क संगत) और दिल को छूने वाली थी, और अब्दुल्लाह कहता था कि यह दलीलें कुरआन से ली गई थी, मगर ज़ाहिर है नाएमा अब्दुल्लाह से तो सवाल नहीं कर सकती थी, यह कुछ उसकी अना का सवाल भी था और कुछ अब्दुल्लाह के बैकग्राउंड का भी, इस पर सोने पर सुहागा यह कि अब्दुल्लाह उसके नाना और अम्मी के प्यार को बाटने लगा था इस नज़र से वो उसका बैरी था, अपने बैरी को अपना राज़ दार कैसे बनाती, अपने दुश्मन के आगे झुकना उसे बिलकुल अच्छा नहीं लगता था, दुश्मन भी वह जिसे वो अपने घर से भगा चुकी थी, उसी के सामने अब वो सवाल लेकर कैसे चली जाती।

रात काफी हो चुकी थी, नाएमा को जल्द सोने की आदत थी, वो सोने की तैयारी करने लगी इसके लिए वो दांत साफ करने गई फिर दिल में जाने क्या आया कि वुज़ू भी कर लिया, बिस्तर पर लेटने के बाद वह अल्लाह तआला से दुआ करती रही, उसे उसके सवालों के जवाब तो नहीं मिल रहे थे मगर ना जाने क्यों उसे अब यह विश्वास हो रहा था कि वो जो कहती है अल्लाह तआला उसे सुनते ज़रूर हैं, इसी सोच में डूबी वो नींद में भी डूब गई।

.....

"उठो नाएमा! सोने का वक़्त ख़त्म हो गया, बहुत नींद लेली तुमने, अब जागने का वक़्त आ गया।"

यह आवाज़ नाएमा के कानों में तीसरी बार आई थी, पहली दो बार यह आवाज़ इतनी हलकी थी कि घहरी नींद में वह समझ ही नहीं सकी कि क्या हो रहा है, तीसरी बार आवाज़ इतनी तेज़ थी कि नाएमा ने खुद को नींद से जागते हुए महसूस किया, कुछ देर तक वह बिना हिले लेटी रही, उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह नींद में है या जाग चुकी है, अब कोई आवाज़ उसे नहीं पुकार रही थी, उसे मालूम नहीं था कि वह कहाँ है, उसके चारों तरफ सन्नाटा और घहरा अँधेरा था जो उसे कुछ देखने नहीं दे रहा था, उसकी आखों के सामने बस एक काला आसमान फैला हुआ था, दूर दूर तक न कोई बादल था और ना चाँद की रौशनी के कोई आसार नज़र आ रहे थे, बस

जगमगाते हुए तारों की हलकी सी रौशनी थी, यूँ लगता था जैसे आसमान की काली चादर में जगमग जगमग हीरे जड़े हुए हों, नाएमा के दिल को यह मंज़र (दृश्य) बहुत अच्छा लगा, वह हर चीज़ से बे परवाह हो कर इस मंजर को देखने में मगन हो गई।

वह काफी देर तक इसी हालत में रही कि अचानक आसमान में मौजूद एक रौशनी हिलना शुरू हो गई, वह धीरे धीरे नाएमा की तरफ चल रही थी, कुछ ही देर में नाएमा को मालूम हो गया कि यह रौशनी वही चमकीला हयूला था जो हमेशा नाएमा को नज़र आता था, हयूला नाएमा के पास आकर हवा में ठहर गया था, कुछ देर तक नाएमा उसे देखती रही, वह शायद उसकी तरफ से कुछ कहे जाने का इंतजार कर रही थी, मगर काफी देर तक जब कोई आवाज़ नहीं आई तो नाएमा बोली:

"आप वही हैं ना....जिसने कहा था कि क्या तुम सच्चाई जानना चाहती हो, आज मैं सच्चाई जानना चाहती हूँ।"

हयूले से वही जानी पहचानी आवाज़ आई:

"मुझे मालूम है कि तुम्हारे दिमाग में क्या सवाल हैं, जवाब से पहले सवाल सुनलो, तुम जानना चाहती हो कि खुदा कमजोरों पर ज़ुल्म होने पर भी क्यों खामोश रहता है।

तुम जानना चाहती हो खुदा क्यों बहुत से लोगों को महरूम (वंचित) रखता है और क्यों नेक लोगों के लिए वह बुरा होने देता है और बुरों के साथ भलाई होने देता है।

तुम जानना चाहती हो कि खुदा सच खोल कर क्यों नहीं बताता, क्यों वो अपने होने का और सच्चाई का ऐसा सुबूत नहीं देता जिसको झुटलाना मुमकिन ना हो, यही तीन सवाल हैं ना तुम्हारे दिमाग में।"

नाएमा को उस पल महसूस हुआ कि उसकी ज़िन्दगी की सारी उलझनो को उसने इन तीन सवालों में समेट दिया था।

"हाँ यही सवाल हैं, मगर उनसे पहले यह बताइये कि आप कौन हैं?"

"मैं अस्र हूँ, वक़्त (समय) का बेटा, अल्लाह तआला की एक मामूली सी मखलूक (रचना), अपने आक़ा का एक मामूली सा गुलाम।"

यह बात नाएमा के सर के ऊपर से गुज़र गई, वह और कुछ भी पूछना चाहती थी मगर अब उसे इस हयूले जैसे वुजूद (अस्तित्व) से कुछ परेशानी होने लगी थी, उसने महसूस किया कि अगर यह हयूला कुछ ढंग की शक्ल में आजाए तो शायद वह उससे रिलैक्स हो कर बात कर सके, अपनी उलझन को ज़ाहिर करते हुए उसने पूछ ही लिया:

"आप की कोई शक्ल नहीं है, मुझे इस हयूले जैसे वजूद (अस्तित्व) से उलझन हो रही है।"

"मेरी शक्ल है, लेकिन तुम उसे समझ नहीं सकती, लेकिन तुम्हारी आसानी के लिए मैं एक इंसानी शक्ल में तुम्हारे सामने आ जाता हूँ।"

यह शब्द ख़त्म हुए तो हयूला धीरे धीरे नीचे आना शुरू हुआ और उसके पास ज़मीन पर आकर ठहर गया, फिर अचानक यह हयूला एक इंसानी शक्ल में ढलना शुरू हुआ और थोड़ी ही देर में नाएमा को यूँ लगा कि युनानी कहानियों का कोई देवता इंसानी शक्ल में आगया हो, यह इंसानों जैसा था मगर किसी भी तरह यह कोई इंसानी शक्ल नहीं थी.....इंसान इतने खूबसूरत नहीं हो सकते, नाएमा ने अपनी पूरी ज़िन्दगी में ऐसा खूबसूरत इंसान नहीं देखा था, वह चाहते हुए भी अपनी नज़र उससे हटा नहीं पा रही थी।

वह इंसान या युनानी देवता जो भी था धीरे से नाएमा के पास बैठ गया, इस पल नाएमा के अन्दर की औरत वाली शर्म जागी, उसे अब ध्यान आया कि वह उस आदमी के सामने यूँ ही ज़मीन पर लेती हुई है, वह एकदम उठी और कुछ सिमट कर बैठ गई, इसके साथ ही उसने यह देखा कि पहली बार आज उसके जिस्म पर कपड़े मौजूद हैं, उसे इस बात की बहुत ख़ुशी हुई, उसकी हालत देख कर अस्र के चेहरे पर हलकी सी मुस्कान आ गई और वह बोला:

"घबराओ नहीं! मैं कोई इंसान नहीं हूँ, तुमने इंसानी शक्ल चाही थी तो मैं इस शक्ल में आ गया।"

नाएमा में इधर उधर देखा, हर तरफ अँधेरा छाया हुआ था, उसने पुछा:

"मैं कहाँ हूँ?"

"तुम इंसानों की दुनिया से खुदा की दुनिया में बुलाई गई हो, दुनिया वालों के लिए तुम इस वक़्त सो रही हो, लेकिन तुम्हारे अन्दर के शऊर (चेतना) को जगा कर मैं इस दुनिया में ले आया हूँ।"

वह एक पल के लिए रुका और घहरी मुस्कुराहट के साथ बोला:

"ताकि तुम्हारे सवालों के जवाब दिये जा सकें।"

"क्या मैं अल्लाह तआला से मिल सकूँगी?"

नाएमा ने सवाल किया अस्र के चहरे पर एक रंग आकर गुज़र गया, वह अदब (सम्मान) के साथ गर्दन झुका कर बोला:

"नाएमा इस ब्रह्मांड में अरबों खरबों फ़रिश्ते रुकू और सजदे में पड़े हुए अल्लाह की हम्द व तस्बीह (स्तुति) करते हुए इस के इंतज़ार में हैं कि अल्लाह के हुज़ूर में पेश होने का मौका मिल जाए, अरबों साल गुज़र जाते हैं मगर उन्हें मौका नहीं मिलता।"

फिर उसने नज़र उठाई और नाएमा को हसरत भरी निगाहों से देखते हुए बोला:

"तुम इन्सान दुनिया की सबसे खुश नसीब मखलूक (रचना) हो जिन्हें यह मौका मिला है कि तुम बहुत जल्द उसका दीदार कर सकोगे, मगर....."

मगर के बाद वह एक पल के लिए रुका और एक कड़वी सच्चाई बताने के साथ अपनी बात पूरी कर दी:

"तुम इन्सान बहुत बद नसीब हो क्यों कि तुम में से अधिकांश ने यह मौका अपने हाथ से गवा दिया।"

"मगर इसमें हमारा क्या कुसूर....हमारे साथ तो खुद बहुत न इंसाफी होती है, यहाँ कोई रास्ता बताने वाला नहीं, गुमराह करने वाले बहुत हैं।"

"गलत कहा तुमने, हिदायत (मार्ग दर्शन) अल्लाह ने अपने जिम्मे ले रखी है, यहाँ यह मुमकिन ही नहीं कि कोई इन्सान ईमानदारी के साथ हक़ (सच्चाई) तलाश करे और उसे ना मिले, मगर

तुम इन्सान अपने पूर्वाग्रहों अपनी इच्छाओं अपने जज़्बात से ऊपर ही नहीं उठते, इस लिए हिदायत से महरूम (वंचित) रह जाते हो।"

"हिदायत क्या होती है, यहाँ तो हर आदमी और हर गिरोह की अपनी ही सच्चाई है, हम किस की बात मानें और किसकी ना मानें?"

नाएमा ने अपनी और अपने जैसे दुसरे लोगों की मुश्किल एक सवाल के रूप में अस्र के सामने रख दी।

"हिदायत खुदा के नज़र ना आने वाले वजूद (अस्तित्व) को अक्ल की आखों से खोज लेने का नाम है, यह काएनात (ब्रह्मांड) में फैली हुई उसकी निशानियों की बुन्याद पर उसकी सिफात (गुणों) को खोज लेने का नाम है, यह उसकी अज़मत (महिमा) और मुहब्बत के अहसास में जीने का नाम है, यही वह सच्चाई है जिस का काएनात का ज़र्रा ज़र्रा सुबूत है, यहाँ हर चीज़ अपने मालिक के वजूद (अस्तित्व) रहमत, रबूबियत (supreme power प्रभुता) और इनायात (आशीर्वाद) की गवाह है, मालिक ने काएनात की हर चीज़ को तुम इंसानों की सेवा में लगा रखा है, लेकिन तुम कभी गलती से भी नहीं सोचते कि हर पल तुम जिसकी इनायतों में जीते हो, वो अगर हवा बंद करदे तो तुम एक मिनट में मर जाओगे, वो अगर तुम्हारा पानी बंद करदे तो तुम तड़प तड़प कर मर जाओ, सूरज, चाँद, समुद्र, बादल, नदियाँ, वातावरण मतलब आसमान और ज़मीन की हर चीज़ तुम्हारी सेवा करती है, तुम्हारे हाथ, पैर शरीर के सभी अंग, देखने और सुनने की ताक़त सलाहियत (योग्यता) सब उसी की अता है, लेकिन तुम्हे कभी तौफीक नहीं होती कि दिल से उसका शुक्र (धन्यवाद) करो, उससे मुहब्बत करो, उसकी महानता के अहसास में जियो।"

नाएमा का सर ऐतराफ (समर्पण) के अहसास से झुक गया, अस्र बोलता रहा :

"नाएमा तुम्हे गरीबी का बड़ा दुःख रहता है, उन लोगों के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है जिनकी आखें नहीं होती, हाथ नहीं होते पैर नहीं होते।"

नाएमा के अन्दर के फिलॉसफर ने कहा जो इस वक़्त भी जाग रहा था:

"मगर ऐसे लोगों को पैदा करना भी तो ज़ुल्म है।"

"यह ज़ुल्म का अँधेरा नहीं हिदायत (मार्ग दर्शन) की रौशनी है, अंधे इस लिए पैदा किये जाते हैं कि तुम्हारे जैसे अक्ल के अँधों को हकीक़त नज़र आने लगे, बहरे, गूंगे, अपाहिज इस लिए पैदा किये जाते हैं ताकि घमंडी और खुदा से बेपरवाह लोग इन महरूम (वंचित) लोगों को देख कर अपने ऊपर खुदा के अहसानो को पहचान सकें। मगर तुम इंसान ना खुदा के अहसानों को देखते हो ना उन चीज़ों को जो तुम्हे मिली हुई हैं, तुम सिर्फ ना शुक्री करते हो और शिर्क (ईश्वर के पार्टनर मानना) करके खुदा के वजूद (अस्तित्व) ही का इन्कार करके अंधेरों में रह कर ख़ुशी महसूस करते हो, तुम इंसानों को शर्म नहीं आती कि जिस रब की नेमतों में जीते हो उसे भूल बैठे हो, खाते उसका दिया हो और माला दूसरों के नाम की जपते हो, उस काएनात (ब्रह्मांड) में जिन्दा हो जो खुदा की अज़मत (महानता) की गवाह है मगर तुम्हारे दिलों में दूसरों की अज़मत है, उस धरती पर जिन्दा हो जिस का ज़र्रा ज़र्रा (कण) खुदा के सबसे बड़ा होने का ऐलान कर रहा है मगर तुमने अपने बड़ों को खुदा के बराबर ला बैठाया है, यहाँ तक कि तुम लोग इन सारी सच्चाईयों को देख कर भी खुदा के होने का ही इन्कार कर देते हो।"

नाएमा का सर शर्म से झुका हुआ था।

"मगर नाएमा तुम मालिक की तरफ पलटी हो, तुमने अपने तास्सुब (पूर्वाग्रह) की हर दीवार को तोड़ दिया है, तुम अपनी इच्छाओं से ऊपर उठ चुकी हो, याद रखो ऐसे लोगों को अल्लाह कभी बेसहारा नहीं छोड़ता, उन्हें ज़रूर हिदायत देता है। बाकि किसी घंडी, अपनी इच्छाओं की पैरवी करने वाले और मुतास्सिब (पूर्वाग्रह से ग्रस्त) इंसान की उसकी निगाह में कोई कीमत नहीं, बहुत जल्द ऐसा वक़्त आने वाला है जब ऐसे लोगों को वह अपने कहर से कुचल कर रख देगा। मगर उसने मुझे तुम्हारे पास इस लिए भेजा है ताकि मैं तुम्हारे सवालों के जवाब दूं, तुम एक सच्ची इंसान हो इस लिए जो पूछना है पूछ लो, आज तुम्हारे हर सवाल का जवाब मिलेगा।"

नाएमा ने कुछ सुकून की साँस ली क्यों कि अस्र अब उस पर गुस्सा करने के बजाए असल बात की तरफ आ गया था, लेकिन इसके बाद भी अस्र के अपने वुजूद (अस्तित्व) के बारे में नाएमा के ज़हन में अभी तक उलझन थी, उसने पहले इसी गिरह को खोलना चाहा:

"मैं आप को समझ नहीं सकी, आप कौन हैं, अस्र का मतलब क्या है, वक़्त (समय) का कोई बेटा कैसे हो सकता है?"

''देखो काएनात (ब्रह्मांड) की हर चीज़ अल्लाह की मखलूक (रचना) है, तुम उन्हें चाहे जिस तरह भी समझो मगर दर असल वो अल्लाह की मखलूक होती हैं, वक़्त से बहुत सी चीजों ने जन्म लिया है, दिन, पल, घंटे, साल, सदी, और ज़माने यह सब वक़्त के हिस्से हैं, इन्हें तुम वक़्त की औलाद समझो।''

''और अस्र, यह कैसी औलाद है?''

''मैं यानि अस्र वक़्त की सबसे अहम (महत्वपूर्ण) औलाद हूँ, वक़्त की बाकि औलाद हमेशा मौजूद रहती हैं मगर मैं सिर्फ उस वक़्त ज़ाहिर होता हूँ जब कोई रसूल (Messenger of god) इस दुनिया में भेजा जाता है, मैं रसूलों के दौर का समय और उनका ज़माना हूँ।''

''रसूल में क्या खास बात होती है?''

''रसूल जब आता है तो अल्लाह तआला दुनिया में खुल कर और ऐलानिया मुदाखिलत (हस्तक्षेप) शुरू कर देते हैं, आम हालात में वो ऐसा नहीं करते, मगर अपने रसूल के ज़रिये से वो इंसानों से खुल कर बात करते हैं, उनके सवालों का जवाब देते हैं, और आखिर कार अपने मुजरिमों को सज़ा और नेक लोगों को इनाम यहीं इस दुनिया में सबके सामने दे कर दिखाते हैं।''

नाएमा को अभी भी बात समझ में नहीं आई थी उसे देख कर अस्र ने यह अंदाज़ा लगा लिया था उसने आगे कहा:

''अगर तुम्हे इसी बात को समझने में ज्यादा दिलचस्पी है तो पहले तुम्हे अपने तीसरे सवाल का जवाब हासिल करना चाहिये, यानि खुदा सच खोल कर क्यों नहीं बताता, क्यों वह अपने होने और सच्चाई का ऐसा सुबूत देता जिस के बाद इन्कार करना मुमकिन ना रहे। क्यों कि इसी सवाल के जवाब में तुम्हे मालूम हो जाएगा कि अस्र क्या होता है। अस्र रसूल का ज़माना होता है और यही वो ज़माना है जिसमें खुदा अपने होने और सच्चाई का ऐसा सबूत पेश कर देता है जिसका इन्कार किसी तरह नहीं किया जा सकता।''

अस्र की बात से नाएमा ने सहमती जताते हुए बड़ी एक्साइटिड हो कर कहा:

''ठीक है पहले इसी का जवाब दीजये।''

उसके एक्साइटिड होने पर अस्र मुस्कुराया और बोला:

''चलो उठो! मैं इस सवाल का जवाब तुम्हे बताता हूँ, लेकिन यह जवाब मैं तुम्हे खुद तुम्हारी आखों से दिखाऊंगा, तुम्हे मेरे साथ माज़ी (भूतकाल) की दुनिया में चलना होगा।''

यह कहते हुए अस्र खड़ा हो गया और अपना हाथ नाएमा की तरफ बढ़ा दिया, नाएमा उसका हाथ पकड़ते हुए झिजक रही थी, यह देख कर अस्र ने कहा:

''मेरा हाथ पकड़ लो और उठो, मैं इंसान नहीं हूँ।''

नाएमा खड़ी तो हो गई लेकिन वह अभी तक अस्र का हाथ पकड़ने में झिजक रही थी।

''हमें समय में पीछे की ओर सफ़र करना है, मेरा हाथ नहीं पकड़ोगी तो यहाँ अकेली रह जाओगी।''

नाएमा ने हौसला करके अस्र का हाथ पकड़ लिया।

****

पहली कयामत

अस्र नाएमा का हाथ पकड़े हुए आगे बढ़ रहा था, नाएमा ने खड़े होकर जैसे ही अस्र का हाथ थामा उसे लगा कि उसकी आखों पर बंधी हुई पट्टी उतर गई, हर तरफ फैली हुई रात सुबह की हलकी रौशनी में बदल गई, नाएमा यह देख कर हैरान रह गई कि यह वही घाटी थी जिसे वह पहले दिन से देखती आई थी, लेकिन इस बार वह इस घाटी में नीचे खड़ी होने के बजाए उसके चारो तरफ जो पहाड़ थे उनमे से सबसे ऊँचे पहाड़ पर खड़ी थी, नाएमा अस्र के साथ उसी पहाड़ पर बढ़े जा रही थी, मगर जैसे जैसे वह आगे बढ़ती उसके आस पास का हर मंजर (दृश्य) बहुत तेज़ी से बदल रहा था, उसके देखने की सलाहियत (क्षमता) इतनी ज़्यादा बढ़ चुकी थी कि वह बहुत दूर तक देख सकती थी, उसने देखा कि पहाड़ के नीचे दोनों तरफ दिन और रात तेज़ी से बदल रहे हैं मौसम और आसपास की चीज़ों के रंग भी तेजी से बदल रहे थे, बस्तियां कसबे शहर एक के बाद एक आते जा रहे थे यूँ लग रहा था कि वह तो पहाड़ पर एक एक कदम चल रही है लेकिन नीचे ज़माने और सदियों का सफ़र पलों में तय हो रहा हो, मगर उसे अस्र के साथ ख़ामोशी से चलते रहना अच्छा लग रहा था, इसलिए वह कोई सवाल किये बिना उसके साथ चलती रही।

समय में चलते चलते वो एक पहाड़ से नीचे मैदानी इलाक़े (क्षेत्र) में पहुंचे, यहाँ पहुँच कर अस्र रुक गया और नाएमा से कहा:

"हम हज़रत नुह (अ) के ज़माने में आ चुके हैं और इस वक़्त हम प्राचीन इराक़ में हैं।"

नाएमा यह सुन कर दंग रह गई, उसने हैरत (आश्चर्य) से सवाल किया:

"यह कैसे मुमकिन है?"

"मेरे साथ सब कुछ मुमकिन है, मैं वक़्त का बेटा हूँ, वक़्त की हर गली मेरे लिए जानी पहचानी और इसका हर बंद दरवाज़ा मेरे लिए खुला है, मैं कहीं भी जा सकता हूँ, यहीं तुम्हारे तीसरे सवाल का जवाब है, यहाँ तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किस तरह खुदा हर दौर में अपनी सच्चाई और अपने होने का सुबूत देता रहा है। ऐसा सुबूत जिसके बाद शक के लिए कोई बहाना नहीं रहता।"

नाएमा बोली:

"मगर हमें यहाँ के लोग देखेंगे तो क्या होगा।"

"बेफिक्र रहो हमें कोई नहीं देख सकेगा लेकिन हम सब को देख सकेंगे, जहाँ चाहेंगे जाएंगे, मगर हम किसी भी इंसान के किसी काम में छेड़ छाड़ नहीं कर सकते।"

यह कह कर अस्र आगे बढ़ा और उसे लेकर कुछ कदम चला, गिनती के इन कुछ कदम चलने में ही एक लम्बा फासला तय हो गया और वो दोनों एक इंसानों की आबादी में आ गए, यह एक बड़ा शहर था, बड़ा नाएमा के लिए नहीं था क्यों कि नाएमा तो लाखों करोड़ों आबादी के शहरों की रहने वाली थी, लेकिन अपने ज़माने के हिसाब से यह एक बड़ा और रौनक वाला शहर था। इस दिन शहर में कोई जश्न था, हर तरफ चहल पहल और जोश का माहोल था, लोग खुश नज़र आ रहे थे और अच्छे अच्छे कपड़े पहन कर अपने घरों से निकल कर सब शहर के बीच में जमा हो रहे थे जहाँ एक पूजा स्थल था जिसकी बाउंड्री बहुत दूर तक फैली हुई थी, उसके बाहर एक बड़ा बाज़ार था, यहाँ दुकानों पर रौनक थी और लोगों की एक बड़ी भीड़ बाज़ार से गुज़र कर पूजा स्थल की बाउंड्री में दाखिल (प्रवेश) हो रही थी।

"नाएमा! यह हज़रत नुह (अ) की कौम है, इंसानियत ने अपना सफ़र हज़रत आदम (अ) से शुरू किया था, वह खुद एक नबी (Prophet) थे और अपनी औलाद को एक ईश्वर की इबादत करने की शिक्षा दे कर गए थे। उनके दौर को गुज़रे हुए बहुत समय हो चुका है और धीरे धीरे उनकी औलाद उनके पैगाम को भूल गई है, तहज़ीब (संस्कृति) ने जैसे जैसे तरक्की की तो शिर्क (अल्लाह के साझी ठहराना) तेज़ी से लोगों में फैलता गया, अब कोई नहीं जो एक अल्लाह का नाम लेवा बाकी रहा हो, ऐसे में अल्लाह ने हज़रत नुह (अ) को उठाया और उन्होंने अपनी कौम को तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत देना शुरू की।"

नाएमा ने आसपास के माहौल का जाएज़ा लेते हुए कहा:

"लगता है उनकी दावत ज़्यादा कुबूल नहीं की गई।"

"हाँ बहुत कम लोग उन पर ईमान लाए, गिनती के चंद लोग, यहाँ तक कि उनके अपने खानदान में उनकी बीवी और उनका अपना बेटा 'कनआन' भी ईमान नहीं लाया, और जानती हो उन्हें इन लोगों को समझते समझाते कितना अरसा हो चुका है?"

नाएमा ने सवालिया नज़रों से अस्र की तरफ देखा तो उसने बताया:

"साढ़े नौ सौ साल।"

"साढ़े नौ सौ साल?"

नाएमा ने हैरत से अस्र की बात दोहराई।

"हाँ! और यह नतीजा है साढ़े नौ सौ बरस की महनत का।"

वो यह बातें कर ही रहे थे कि इतने में शोर शराबा शुरू हो गया, नाएमा ने देखा कि पूजा स्थल से पुरोहित एक एक करके कतार में बाहर आ रहे हैं, उनके पीछे कुछ लोग तख्तों को अपने कन्धों पर उठाए बाहर आ रहे हैं, उन तख्तों पर अलग अलग शक्ल के बुत रखे हुए थे, नाएमा ने गिने तो वे पांच बुत थे, उन्हें देख कर भीड़ ख़ुशी से बेकाबू हो गई और ज़ोर ज़ोर से नारे लगाने लगी।

अस्र ने उन बुतों के बारे में बताते हुए नाएमा से कहा:

यह इन लोगों के पांच बुज़ुर्गों के बुत हैं, वद्द, सुवाअ, यगूस, यऊक़ और नसरा, यह इनकी पूजा करते हैं, हर मुश्किल में इनसे मदद मांगते हैं और मुराद पूरी होने पर उन्हें नज़राना चढ़ाते हैं, आज इनके त्योहार का दिन है, जिसमे यह बुत आम लोगों के सामने लाए जाते हैं और सब मिलकर इनकी पूजा करते हैं।"

नाएमा हैरत से उन्हें देखती रही, उन बुतों को एक साथ ला कर रख दिया गया, इसके बाद एक बड़ा पुरोहित आगे आया और लोगों को खामोश होने के लिए कहा, नाएमा को अंदाज़ा हुआ कि अब इनका समारोह शुरू होने वाला है, लेकिन तभी एक बुज़ुर्ग भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़े और उस पुरोहित के सामने जा कर खड़े हो गए, इससे पहले पुरोहित कुछ कहता उन्होंने लोगों से मुख़ातिब (संबोधित) हो कर कहना शुरू किया।

"ऐ लोगों! एक अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई पूजने के लायक नहीं, अगर ऐसा नहीं करोगे तो मुझे तुम पर एक दर्द नाक अज़ाब (प्रकोप) का खतरा मंडराता हुआ नज़र आ रहा है।"

पुरोहित को उनका हस्तक्षेप बहुत बुरा लगा, उसने गुस्से में कहा:

''लोगों! यह एक गुमराह आदमी है, इसकी बातों में ना आओ, यह तुम्हे तुम्हारे बाप दादा के धर्म से फेरना चाहता है।''

''मैं बिलकुल गुमराह नहीं हूँ बल्कि पूरी काएनात के रब का भेजा हुआ रसूल हूँ, तुम्हे तुम्हारे रब का संदेश पहुंचा रहा हूँ, मैं तुम्हारा हमदर्द हूँ और वो जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। तुम्हे यह बात क्यों अजीब लगती है कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब का पैगाम तुम्हारे ही अन्दर के एक आदमी के ज़रिये से आ चुका है। जो मैं कह रहा हूँ वह सच है इसे मानलो तो आने वाले अज़ाब से बच जाओगे और अल्लाह तुम पर रहम करेगा, और देखो मैं इतने अरसे से तुम्हे समझा रहा हूँ, सोचो भला मेरा इसमें क्या फाएदा है, मैं तुमसे इसके बदले में कुछ नहीं चाहता मेरा इनाम तो मेरा रब मुझे देगा।''

नाएमा समझ चुकी थी कि यह बुज़ुर्ग हज़रत नूह (अ) हैं, इतने में उसने देखा कि कौम का एक बड़ा सरदार भी पुरोहित की मदद के लिए उसके पास आ गया और चिल्ला कर कहा:

''इस बूढ़े के साथ सिर्फ नीच और घटया लोग हैं, इसकी बात सच्ची होती तो हमारे जैसे सरदार और बड़े लोग इसे ज़रूर मान लेते, अब बहुत हो चुका, हमने इसके बुढ़ापे का बहुत लिहाज़ कर लिया, अब यह बाज़ नहीं आया तो हम इसे पत्थर मार मार कर मौत के घाट उतार देंगे।''

सरदार की इस बात के समर्थन में लोग नारे लगाने लगे, नारों का एक अजीब सा तूफान खड़ा कर दिया गया।

हज़रत नूह (अ) ने आगे बढ़ कर कहा:

''ऐ मेरी कौम के लोगों! अगर तुम्हारे बीच मेरा रहना और एक रब की बात करना तुम्हे बुरा लगता है तो मैंने तो अपने रब पर भरोसा कर लिया है, तुम अपना मशवरा कर लो, अपनी फ़ौज भी ले आओ, अपने इन बुतों को भी अपनी मदद के लिए बुला लो और एक फैसला लो, फिर बिना किसी देर के मेरे बारे में जो करना चाहते हो कर डालो और मुझे ज़रा भी मौहलत ना दो, मैंने अपने रब का हुक्म माना है, तुम नहीं मानते तो ना मानों मगर मैं तो रब ही का फर्माबरदार (आज्ञाकारी) हूँ।''

हज़रत नूह (अ) की इस बात से लोगों में सन्नाटा छा गया, एक आदमी भी आगे नहीं बढ़ा, किसी में हिम्मत नहीं हुई कि सरदार की धमकी को पूरा करने के लिए आगे बढ़ता, हज़रत नूह (अ)

इत्मिनान से नीचे उतरे, लोगों ने उनके जाने के लिए रास्ता दिया और वह कहीं एक ओर चले गए।

उनके जाने के बाद पुरोहित की जान में जान आई और उसने कहा:

"अच्छा हुआ वह गुमराह बूढ़ा चला गया, आओ हम अपने पांच महान बुजुर्गों की पूजा करें यही हमारे अन्न दाता हैं।"

.....

हज़रत नूह (अ) के जाने के बाद जो खुराफात शुरू हुईं, उन्हें देख कर नाएमा का दम घुटने लगा, वह अस्र से बोली:

"कैसे लोग हैं यह?"

"यही सब कुछ इंसान हर दौर में करते आए हैं, आज भी इंसानों की ज्यादा आबादी यही कुछ कर रही है। आधे अल्लाह को छोड़ कर दूसरों से प्यार कर बैठे हैं और आधे दुनिया की ज़िन्दगी ही को सब कुछ समझ कर अपनी ज़िन्दगी का मकसद बना बैठे हैं, सच्चे खुदा ही इबादत करने वाले तो हमेशा थोड़े लोग ही रहे हैं।"

"हाँ मगर इस दौर में ईमान लाना तो बहुत मुश्किल था, क्या मैं किसी ऐसे आदमी को देख सकती हूँ जो ईमान लाया?"

"हाँ क्यों नहीं, मैं तुम्हे ऐसे ही एक परिवार के पास ले चलता हूँ, तुम देखोगी कि सच्चे ईमान वाले कितने मुश्किल हालात में भी सच्चाई पर जमे रहते हैं और कोई शिकायत नहीं करते।"

यह कह कर अस्र ने नाएमा का हाथ पकड़ा और एक तरफ चल पड़ा, थोड़ी देर में नाएमा और अस्र एक ऐसे घराने में मौजूद थे जो ज़िन्दगी की सबसे बड़ी मुश्किल देख रहा था, यह घराना 'जराहम' का था।

.....

जराहम एक गरीब किसान था। वह और उसकी बीवी मिल कर थोड़ी बहुत खेती बाड़ी करते और मुश्किल से ज़िन्दगी गुज़ारते थे। ज़िन्दगी पहले ही उन पर आसान नहीं थी मगर अब तो हालात और मुश्किल हो चुके थे। वो खुदा के पैगम्बर हज़रत नूह (अ) पर ईमान ले आए तो सारा शहर ही उनका दुश्मन हो गया।

हर तरफ से धिक्कारे जा रहे थे, बुरा भला कहा जा रहा था, मज़ाक उड़ाया जा रहा था, अपने पूर्वजों से बगावत करने और अपने कौमी धर्म को छोड़ने के इलज़ाम लग रहे थे। वो बुत जो इनके यहाँ पुराने बुजुर्गों की यादगार की निशानी से शुरू हुए थे और फीर आगे बढ़ कर अब खुद खुदा की जगह ले चुके थे, उन्हें छोड़ कर सिर्फ एक अल्लाह की इबादत का फैसला उनको बहुत महंगा पड़ रहा था। मगर वो डटे हुए थे।

जराहम 'साम' के बचपन का दोस्त था। नूह (अ) ने ईमान की दावत का काम शुरू किया तो उनके बेटे साम भी उनपर ईमान लाए, जराहम अपने दोस्त से मिलने उनके घर जाता ही था तो नूह (अ) की बात भी सुनता था। उसे महसूस हुआ कि अपने बुजुर्गों के बुतों को छोड़ कर एक अल्लाह की इबादत करना ज़्यादा सही बात है। जिनके बुत हम खुद बनाते हैं और जो पैदा हुए थे फिर मर गए थे वो हमारे खुदा कैसे हो सकते हैं। जिन बुजुर्गो को कब्र में दफन हुए बरसों हो गए हैं वो हमारी देख रेख कैसे कर सकते हैं, वो तो सिर्फ एक अल्लाह ही है जिसने यह सारी काएनात बनाई हमारी ज़रूरत की सारी चीज़े हमें देता है। इस लिए मुहब्बत, अकीदत (आस्था), शुक्र गुज़ारी, और इबादत भी सिर्फ एक अल्लाह ही की होनी चाहिए।

नूह (अ) की यह बातें जराहम के दिल को लगती थीं। आखिर कार वह और उसकी बीवी नूह (अ) पर ईमान ले आए। मगर इसके बाद उनकी ज़िन्दगी मुश्किल हो गई। नूह (अ) उन्हें सब्र करने की नसीहत करते और खुदा के वादे पर भरोसा करने कि नसीहत करते। नूह (अ) उन्हें बताते कि यह काफ़िर अब ख़त्म होने वाले हैं और नूह (अ) के साथी ज़मीन के मालिक होंगे। जराहम और उन की बीवी वादे पर मुतमइन (संतुष्ट) थे और हर मुश्किल का मुकाबला कर रहे थे, मगर अब जो कयामत उनपर टूटी थी उसने उन्हें हिला कर रख दिया था। उनकी एक लोती बेटी 'अमूराह' जिसकी उम्र 15 साल थी बीमार पड़ गई थी। यह दो चार दिन की बीमारी नहीं थी बल्कि कोई बड़ी बीमारी थी जो उनकी बेटी को लगी थी, हर गुज़रते दिन के साथ अमूराह कमज़ोर होती जा रही थी और कोई दवा काम नहीं आ राही थी। अब तो साफ़ नज़र आ रहा था

कि अमूराह अब दो चार दिन की महमान है। जराहम और उसकी बीवी इसी चिंता में अमूराह के पास बैठे थे कि दरवाज़े पर दस्तक की आवाज़ आई:

"मैं साम हूँ जराहम! दरवाज़ा खोलो।"

जराहम ने धीरे से उठ कर दरवाज़ा खोल दिया, वो साम से कुछ कहे बिना ख़ामोशी से वापस अमूराह के पास आकर बैठ गया। साम उसके पीछे चलता हुआ आया और अमूराह के सर पर हाथ रख कर कहा:

"बेटी खुदा की रहमतें तुम्हारे परिवार पर हैं।"

"यह कैसी रहमत है भाई साम?" जराहम की बीवी उदासी के साथ बोली:

"हम तो यह उम्मीद लगाए बैठे थे कि तुम्हारे छोटे भाई 'कनआन' से अमूराह की शादी कर देंगे और यह नूह (अ) के परिवार का हिस्सा बनेगी, मगर हमें ईमान लाने की ऐसी सज़ा भी मिलेगी यह हमने कभी नहीं सोचा था।"

"खामोश हो जाओ।"

उसकी बात सुनकर जराहम गुस्से से झुंझला उठा।

"अपने गम में खुदा की ना फ़रमानी की बातें मत करो।"

"यह सज़ा नहीं है आज़माइश है, तुम नहीं जानती बहन अमूराह की इस बीमारी में खुदा की क्या मर्ज़ी छुपी हुई ह। हम खुदा नहीं हैं इंसान हैं, खुदा ही जानता है हमारे लिए क्या बहतर है।" साम ने उसे समझाते हुए कहा।

"हमारे लिए क्या यह बहतर नहीं था कि हमारी बच्ची बीमार ना होती, वो तुम्हारे परिवार की बहु बनती और हम उसके बच्चो को देख कर खुश होते?"

"शायद इसी में खुदा की बहतरी है, मुझे कनआन का रवय्या अच्छा नहीं लग रहा है, हम भाइयों में से वही है जो खुदा पर ईमान नहीं लाया, और शायद लाएगा भी नहीं। जब अल्लाह का अज़ाब आएगा तो वो भी उसी में मारा जाएगा और अगर अमूराह की शादी उससे हो जाती तो....."

''नहीं नहीं, आगे कुछ ना कहना साम....''

जराहम उसकी बात काटते हुए बोला।

''मेरी बेटी बिमारी से मर जाए यह बहतर है, बजाए इसके कि वह अल्लाह के अज़ाब में मरे।''

''मैंने अब्बा जान से बात की थी उन्होंने तुम्हारे लिए अल्लाह का एक पैगाम (संदेश) भेजा है, पैगाम यह है कि अगर तुम दोनों सब्र करोगे तो तुम्हारा रब इसकी शादी आखरी रसूल के किसी बड़े उम्मती (अनुयायी) के घराने में करा देगा।''

''मगर यह कब होगा साम?''

''बहन यह अगली दुनिया में होगा, वो दुनिया जो कयामत के बाद होगी और कभी ख़त्म ना होगी, उस दुनिया में ना कोई मौत होगी और ना कोई जुदाई।'' साम ने जवाब दिया।

''हम सब्र (धैर्य) करेंगे, हमें खुदा के वादे पर यकीन है।'' जराहम ने आँख बंद करके कहा।

''अब्बू।''

एक हलकी सी आवाज़ आई, यह अमूराह की आवाज़ थी, उसकी हालत बिगड़ रही थी, उसके हाथ पैर ठन्डे पड़ने लगे और उसकी सांस धीमी होने लगी। वो सब घबरा कर उसके पास जमा हो गए, जराहम और उसकी बीवी अमूराह के हाथ पैर सहलाने लगे, वो बेचारे इसके सिवा कर भी क्या सकते थे। एक हिचकी की आवाज़ आई और अमूराह का सर एक तरफ ढलक गया। जराहम की बीवी चींख कर उसके सीने से लिपट गई, जराहम की आखों से आसुओं की लड़ियाँ बहने लगी, साम ने बे बसी से अपनी गर्दन झुका दी।

.....

नाएमा बेबसी और ख़ामोशी से यह सब कुछ देख रही थी। उसने गर्दन घुमा कर अस्र की तरफ देखा, उसकी ख़ामोशी का मतलब साफ़ था कि वह और यहाँ ठहरना नहीं चाहती। अस्र उसका हाथ पकड़े हुए उसे बाहर ले आया, बाहर आकर नाएमा ने उदास हो कर पूछा:

''यह कैसी ज़िन्दगी है?''

''यह ज़िन्दगी नहीं इम्तिहान है, ज़िन्दगी तो बाद में शुरू होगी, और जब ज़िन्दगी शुरू होगी तो नाएमा तुम अपनी आखों से देखोगी कि आज जो लोग आसूं बहा रहे हैं कल क़यामत के दिन वो सबसे ज्यादा खुश होंगे।''

''मगर कयामत तो बहुत दूर है।'' नाएमा अभी भी उदास थी।

''नहीं बिलकुल दूर नहीं है, कयामत सर पर खड़ी है, तुमने मेरे साथ सफ़र करते हुए नहीं देखा कि हजारों बरस का सफ़र हम कितने कम समय में कर लेते हैं, अल्लाह भी चीज़ों को ऐसे ही देखता है।''

''मगर हम अल्लाह की नज़र से तो चीजों को नहीं देख सकते ना।'' नाएमा ने सवालिया अंदाज़ में कहा।

''इंसान की नज़र से तो देख सकते हो, इसमें क्या रुकावट है? इंसान तो इसका माहिर (विशेषज्ञ) है कि पिछले तजुरबे से आगे का अंदाज़ा लगा लेता है।''

''बिलकुल लगा लेता है, इंसानों की सारी तरक्की ही उनकी इस सलाहियत (क्षमता) पर टिकी है कि वे चीज़ों को देख कर उन्हें समझ कर उस तजुरबे की बुन्याद पर आगे की बात का सही अंदाज़ा लगा लेता है। इसी उसूल पर डॉक्टर हर मरीज़ का इलाज़ करते हैं, एक दवा जो एक इंसान पर असर करती है बाकि इंसानों को भी वही दवाई दी जाती है, एक जहाज़ जिस उसूल पर उढ़ता है सारे जहाज़ उसी उसूल पर बनाए और उड़ाए जाते हैं।'' नाएमा ने अस्र ही की बात की तफसील कर दी।

''हाँ तो इस उसूल को याद रखना यह बहुत ज़रूरी है और अब इसी उसूल पर देखो कि क्या होता है। तुम्हे याद है ना नूह (अ) ने यह कहा था कि उनकी बात ना मानने वालों पर अज़ाब आएगा। अब देखो ठीक यही होगा, थोड़ी देर में यह सब तुम अपने आखों से देखोगी। इसके बाद उस बात को ना मानने की क्या वजह रह जाएगी कि आखिरत (कयामत के बाद) की दुनिया के बारे में भी पैगम्बर जो कहते हैं वो पूरा नहीं होगा।''

''बिलकुल! ना मानने की कोई वजह नहीं है।''

"चलो फिर चल कर इंसानियत की पहली कयामत देखते हैं। हज़रत नूह (अ) को कश्ती बनाने का हुक्म मिला गया है, इस का मतलब यह है कि इस कौम की क़यामत आ रही है, अल्लाह की अदालत लग चुकी है। इस अदालत में हर मुजरिम अज़ाब का शिकार होगा और सिर्फ मानने वाले बचा लिए जाएंगे, और इन्हें ही सरदार बना दिया जाएगा, इस दुनिया में भी और अगली दुनिया में भी।"

.....

अस्र एक बार फिर नाएमा को साथ लिये जा रहा था, वह उसे अमूराह की मौत के कई दिन बाद के वक़्त में ले गया था। यह शहर से बाहर एक खुला मैदान था, नाएमा को दूर से नज़र आया कि इस मैदान में एक बहुत बड़ी कश्ती (नाव) खड़ी हुई है, कुछ करीब पहुँचने पर उसे अंदाज़ा हुआ कि यह कोई मामूली कश्ती नहीं यह तो पूरा बड़ा पानी का जहाज़ था। यह जहाज़ लकड़ी के उन तख्तों से बनाया गया था जो आस पास के जंगल के पेड़ों को काट कर बनाए गए थे। मज़बूत रस्सियों और कीलों से उन सब को जोड़ कर यह अजूबा बनाया गया था।

यह जहाज़ दो वजह से बहुत अजीब था एक तो इसकी बनावट बहुत ज़बदस्त थी और दूसरी अजीब बात यह थी कि यह जहाज़ बिलकुल सूखे मैदान में खड़ा था। दूर दूर तक कोई समुन्द्र या कोई नदी नहीं थी, इस बात का भी कोई चांस नहीं था कि इस ज़माने में इंसान इसे घसीट कर किसी समुन्द्र तक ले जा सकेंगे। नाएमा को इस दोनों बातों पर हैरत (आश्चर्य) हो रही थी, चलते चलते अस्र ने उसकी यह हैरत दूर करदी।

"यह कश्ती अल्लाह की खास निगरानी में बनाई गई है। इसमें हज़रत नूह (अ) के साथियों के लिए रहने की जगह के साथ साथ जानवरों को रखने के लिए भी अलग जगह है, इसमें काफी दिनों का खान और पानी रखने की भी गुंजाइश है। और सबसे बड़ी बात यह है कि इसको ऐसे बनाया गया है कि तेज़ बारिश का पानी इससे अपने आप बाहर निकल जाएगा।

करीब पहुँचने पर नाएमा ने देखा यहाँ का माहोल ही अजीब बद तमीज़ी का हो रहा था। शहर के बहुत सारे लोग यहाँ खड़े हुए तमाशा देख रहे थे, इनमे सरदार और पुरोहित भी शामिल थे, वो सब मिलकर हज़रत नूह (अ) की मज़ाक उड़ा रहे थे। हज़रत नूह (अ) यहाँ अपनी देख रेख में

कश्ती बनवा रहे थे। नाएमा ने देखा कि वही सरदार जिसने उनको क़त्ल करने धमकी दी थी, लोगों से कह रहा है:

"मैंने कहा था ना कि यह बड़े मियां गुमराह हो चुके हैं अब तो बुढ़ापे में इनका दिमाग भी ख़राब हो गया है, देखो तो सही यहाँ सूखे मैदान में कश्ती बना रहे हैं।"

साथ खड़े पुरोहित ने भी उनको मुख़ातिब (संबोधित) करते हुए कहा:

"नूह यह तो बताओ यह इतनी बड़ी कश्ती पानी तक कैसे ले जाओगे।" पुरोहित की बात सुन कर सब ज़ोर ज़ोर से हंसने लगे।

हज़रत नूह (अ) ने जवाब दिया:

"जिस तरह तुम हमारा मज़ाक उड़ा रहे हो जल्दी ही हम भी तुम्हारा मज़ाक उड़ाएंगे।"

उनके पास खड़े हुए साम ने पुरोहित से कहा:

"तुम खुद भी बर्बाद होगे और अपनी कौम को भी बर्बाद करोगे।"

पुरोहित को इस बात पर गुस्सा आ गया और वो बोला:

"साम तुम तो चुप ही रहो! तुम्हारे बाप का दिमाग तो ख़राब था ही अब तुम्हारी भी अक्ल मारी गई है। तुम लोगों ने बहुत कुछ कह दिया अब ऐसा करो कि अज़ाब ले कर आ ही जाओ।"

सरदार ने सब को मुख़ातिब (संबोधित) करते हुए कहा:

"इन पागलों के मुह लगने से कोई फाएदा नहीं, यह पहले तो पागलों की सी बातें ही करते थे अब काम भी पागलों की तरह के करने लगे। चलों अपने घरों को चलो और इनको इनके हाल पर छोड़ दो।"

यह कह का वह शहर की तरफ रवाना हो गया और उनके लोग भी उसके पीछे पीछे हो लिये।

उनके जाने के बाद साम ने हज़रत नूह (अ) से कहा:

"अब्बा जान अब क्या हुक्म है? कश्ती तो लगभग तैयार हो चुकी है।"

''घर वालों से और सारे ईमान वालों से कह दो कि अपने घर का सामान, अपने सारे ज़रूरी जानवरों के जोड़े और सारा जमा किया हुआ खाने पीने का सामान ले कर यहाँ आजाएं और फ़ौरन कश्ती पर सवार हो जाएँ। अल्लाह के नाम ही से इसका चलना होगा और उसी के नाम से यह तैरेगी और उसी के हुक्म से यह रुकेगी। मेरा रब बहुत बख्शने वाला बहुत रहम करने वाला है।''

सब को मालूम हो गया कि अब वो यहाँ से रवाना होने वाले हैं, इसलिए सारे ईमान लाने वाले लोग जल्दी जल्दी तैयारी करने में जुट गए, एक ने भी यह तक नहीं पुछा की हम कहाँ और और क्यों जा रहे हैं।

नाएमा ने देखा कि उन लोगों में जराहम और उसकी बीवी भी थी, उस दौर में लोगों का सामान ही क्या था बस खाना और जानवर। सामान जैसे ही कश्ती पर पहुँचाया गया सब लोगों को हुक्म हुआ कि कश्ती पर सवार हो जाएं, कश्ती काफी ऊंची थी इसलिए सब लोग सीढ़ी लगा कर उस के ऊपर के हिस्से में जा रहे थे। अस्र ने नाएमा का हाथ पकड़ा और वो दोनों भी कश्ती पर पहुँच गए। नाएमा ने देखा कि इस जहाज़ में अन्दर काफी जगह थी, लोगों के रहने के लिए कमरे बने हुए थे और हर तरफ से बंद थे। निचले हिस्से में उनके जानवरों की जगह थी, जहाज़ के उपरी हिस्से पर छत भी थी वे दोनों वहीं चले गए।

नाएमा ने देखा कि एक जगह हज़रत नूह (अ) सजदे में गिरे हुए दुआ कर रहे हैं, नाएमा बाहर की तरफ देखने लगी, कश्ती क्यों कि काफी ऊंची थी इस लिए दूर दूर का मंज़र (दृश्य) साफ नज़र आ रहा था। चारों तरफ का मंज़र वाकई दिल को लुभाने वाला बहुत खूबसूरत था, एक तरफ हरे भरे जंगल थे तो दूसरी तरफ शहर की आबादी थी, शहर के चारों तरफ ऊँचे ऊँचे हरे पहाड़ थे, लगता था अल्लाह ने इस जगह को खास तौर से खूबसूरत बनाया था।

तभी नाएमा ने पीछे से हज़रत नूह (अ) की आवाज़ सुनी, वह सजदे से उठ कर ज़ोर से कह रहे थे:

''अल्लाह का फैसला आ गया है, अल्लाह का शुक्र है उसने हमें जालिमों से छुटकारा दे दिया है, अब आखरी बार लोगों को आवाज़ दे दो, आखरी बार उन्हें अल्लाह से माफ़ी मांगने और उसकी तरफ पलटने को कह दो, अगर लोग ना आएं तो सीढ़ियाँ उठा लो।''

उनके साथियों ने ऐसा ही किया मगर ना और किसी को आना था ना कोई आया।

तभी नाएमा ने देखा कि चारों तरफ अँधेरा छाने लगा है, गहरे काले बादल तेज़ी के साथ उमड़ते हुए चले आ रहे हैं, दिन में ही रात जैसा अँधेरा होने लगा था, नाएमा को इस अँधेरे से डर सा महसूस हो रहा था। आस पास का जो मंज़र थोड़ी देर पहले दिल को लुभा रहा था अब खौफ़नाक हो चुका था। तभी नाएमा ने हज़रत नूह (अ) की आवाज़ सुनी:

"ज़ोर की आवाज़ से सब अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) बयान करो, उसका शुक्रिया अदा करो।"

लोगों ने ज़ोर ज़ोर से अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) और शुक्रिया करना शुरू कर दिया, इसके साथ ही बारिश की बूंदे पड़नी शुरू हो गई, अचानक ज़ोरदार बिजली की कड़क की आवाज़ आई, नाएमा ने अपनी पूरी ज़िन्दगी में ऐसी बिजली की कड़क की आवाज़ नहीं सुनी थी, उसने डर के मारे अस्र को पकड़ लिया। इसके बाद लगातार गरज और चमक के साथ तूफानी बारिश शुरू हो गई।

अस्र ने उसे हौंसला देते हुए कहा:

"डरो नहीं! इस बारिश, गरज और चमक से नाव के अन्दर के लोगों को कुछ नहीं होगा।"

नाएमा चारो तरफ डरी हुई नज़रों से देख कर बोली:

"मगर अस्र! यह मंज़र (दृश्य) बहुत डरावना है।"

बहुत तेज़ तूफानी बारिश हो रही थी, हर तरफ गहरा अँधेरा छा चुका था, मगर बार बार चमकने वाली बिजली से हर तरफ की चीज़ें थोड़ी थोड़ी देर में नज़र भी आ रही थी। इसी रौशनी में नाएमा ने देखा कि कश्ती के चारों तरफ तेज़ी से पानी जमा होना शुरू हो गया है, एक तरफ तो इस तेज़ बारिश का पानी नीचे जमा हो रहा था और दूसरी तरफ पहाड़ों पर होने वाली बारिश का पानी भी बह बह कर मैदान की तरफ आ रहा था, मतलब आस पास की सारी बारिश का टारगेट जैसे यही इलाक़ा था।

"तुम्हे अंदाज़ा नहीं इस वक़्त शहर में क्या कुछ हो चूका है, वह शहर पहाड़ के नीचे है इस लिए वहां बहुत ज्यादा पानी आ चुका है, सारे मकान डूब चुके हैं और लोग जान बचाने के लिए ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ना शुरू हो रहे हैं।"

फिर अस्र ने नीचे इशारा करते हुए कहा:

"देखो लोग नीचे भी मदद मांगने के लिए आ चुके हैं।"

नाएमा ने एक पल के लिए चमकने वाली बिजली की रौशनी में देखा कि बहुत से लोग जहाज़ के पास खड़े चिल्ला रहे हैं, बारिश के शोर में उनकी आवाज़ पूरी तरह ऊपर नहीं आ रही थी, मगर साफ़ ज़ाहिर था उन मज़ाक उड़ाने वालों को अब आकर अंदाज़ा हो गया था कि इस कश्ती को पानी में घसीट कर नहीं लेजाना था बल्कि खुद पानी को ही यहाँ आना था। वह पानी अब आ चुका है और सिवाए इस कश्ती के कोई बचने की जगह नहीं।

नाएमा ने अस्र से कहा:

"हमें इन लोगों की मदद करनी चाहिए, तुम हज़रत नुह (अ) से दरखास्त (निवेदन) करो कि वह सीढ़ियाँ वापस नीचे लगवादें। इस तरह कुछ लोगों की जान बच जाएगी।"

"तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया, तुम अल्लाह के मुजरिमों की मदद करने का मशवरा दे रही हो, इस मौसम से तुम्हे अल्लाह के गज़ब का अंदाज़ा नहीं हो रहा?"

अस्र ने इतने गुस्से से कहा कि नाएमा डर गई, अस्र गुस्से में बोलता रहा:

"इन लोगों ने सिर्फ शिर्क (अल्लाह के साझी ठहराना) ही नहीं किया है इनका असल जुर्म सरकशी (ललकारना) है। साढ़े नो सौ बरस तक इन्हें समझाया गया कि जिस मालिक ने सारी नेमतें दी हैं उसी की बंदगी करो उसके अलावा किसी से दुआ ना मांगों, किसी के आगे सर ना झुकाओ, अपने महरबान कद्र करने वाले रब को भूल कर पत्थरों और बुजुर्गों के बुतों की पूजा ना करो, तुम्हे जिस मकसद के लिए ज़मीन पर पैदा किया गया है उसे याद रखो। मगर यह लोग अपने तास्सुब (पूर्वाग्रह) में अंधे हो चुके थे, इनकी गलती का बिलकुल साफ़ अहसास इन्हें हज़रत नूह (अ) ने बार बार कराया मगर अपनी गुमराही पर ढीट हो जाने की वजह से इन्होने सच को मानने से इन्कार कर दिया। यह अल्लाह के रसूल को ही धमकियाँ देने पर उतर आए, इनका बस नहीं चला वरना इरादा तो इनका यही था कि अल्लाह के भेजे हुए रसूल को पत्थरों से मार डालें। नाएमा जी! यह ऐसा जुर्म नहीं है जिसको माफ़ किया जाए, अल्लाह की निगाह में सच को झुटलाने उसे दबाने उसका विरोध करने से बड़ा कोई जुर्म नहीं है, इसके साथ जब अल्लाह से सरकशी (ललकारना) भी जमा हो जाए तो फिर इसकी सज़ा लाज़िम भुगतनी पड़ती है।"

नाएमा शर्मिन्दा शर्मिंदा सी खड़ी थी, अस्र ने अपना लहज़ा नर्म करते हुए कहा:

"देखो पैगम्बरों की नाफरमानी करने वाले सिर्फ अल्लाह के हक़ को ही पैरों तले नहीं रोंदते बल्कि यह लोगों के हक़ भी मारते हैं, उन्हें सच्चाई से मुह मोड़ने पर मजबूर करते हैं, और तुम्हे तो पता ही नहीं यह लोग दूसरे इंसानों के साथ क्या किया करते थे। याद रखना जो लोग अपने रब के वफादार नहीं होते वो दूसरे इंसानों के साथ भी हमेशा बुरा करते हैं, यह काफ़िर अल्लाह का तो कुछ नहीं बिगाड़ सकते मगर इंसानों का जीना मुश्किल कर देते हैं और ज़मीन ज़ुल्म और फ़साद से भर देते हैं। इस लिए अल्लाह तआला रसूल के ज़रिये से मानो एक ऑपरेशन भी करते हैं, वो समाज के इस नासूर को काट कर ज़मीन से मिटा देते हैं और फिर नए सिरे से नेक लोग धरती को आबाद करते हैं, यह सिलसिला अब आने वाले हजारों साल तक जारी रहेगा, जिसके बाद कयामत आएगी और ऐसे नासूरों को जहन्नम में बंद करके इस ज़मीन पर अल्लाह के नेक बन्दों को हमेशा हमेशा के लिए बसा दिया जाएगा।"

"अस्र तुम्हारी बात से इन्कार नहीं किया जा सकता, मगर....."

नाएमा ने एक पल के लिए रुक कर अस्र के चहरे के हाव भाव देखे कि कहीं वह नराज़ तो नहीं, उसके चहरे पर ऐसी कोई बात ना पाकर नाएमा की ज़ुबान पर वह बात आ ही गई जिसने उसे इन लोगों की मदद करने के लिए उभारा था।

"अस्र मुझे तुम्हारी बातों से इन्कार नहीं मगर परेशानी यह है कि नीचे जो लोग खड़े हैं उनके मासूम बच्चे भी हैं, उन मासूम बच्चो का क्या कुसूर है, उन्हें क्यों खत्म किया जा रहा है? यह बात तो अल्लाह की रहमत के खिलाफ है कि वो इन बच्चों को भी मिटादे।"

"अच्छा तो असल बात यह थी.... देखो यह सेलाब इनके बच्चों के लिए अल्लाह की रहमत की ही एक शल्क है, यह उनके लिए अज़ाब नहीं निजात (मोक्ष) है, मगर तुम इस बात को नहीं समझ सकती, दरअसल तुमने इस कौम की ज़िन्दगी के कुछ मंज़र ही देखे हैं, यह दो दिन का किस्सा नहीं सदयों की दास्तान है। हज़रत नूह (अ) साढ़े नौ सौ साल से इन लोगों के बीच हैं, इन्हें समझा रहे हैं। आओ मैं तुम्हे उन्ही की ज़ुबानी सुनवाता हूँ कि उन साढ़े नौ सौ साल में क्या हुआ है और क्यों यह अज़ाब इन बच्चों के लिए अज़ाब नहीं बल्कि निजात (मोक्ष) है।"

यह कह कर अस्र ने नाएमा का हाथ पकड़ा और दो चार कदम ही बढ़ाए, उसका यह सफ़र समय में पीछे की ओर था, नाएमा ने महसूस किया कि वह काली अँधेरी रात में चल रही है। महीने की आखिरी तारीखों में चाँद के ना होने से कहीं कोई रोशनी नहीं थीं, सिर्फ तारों से सजा साफ़ आसमान था इतना साफ़ आसमान देख कर नाएमा को बड़ी हैरत (आश्चर्य) हुई क्यों कि उसके ज़माने में धुवें और प्रदूषण की वजह से आसमान ऐसा साफ़ नहीं रहा था जैसा उसे यहाँ दिख रहा था, मगर अस्र उसे यहाँ साफ आसमान दिखने नहीं लाया था, उसने अपनी मंजिल का पता उसको बताते हुए कहा:

"हम हज़रत नूह (अ) के घर जा रहें हैं, अज़ाब आने से एक रात पहले का यह मंज़र (दृश्य) मैं तुम्हे दिखाना चाहता हूँ, आओ देखो कि इस वक़्त क्या हो रहा है।"

यह कह कर अस्र नाएमा को साथ लिए हुए हज़रत नूह (अ) के घर के अन्दर चला गया।

.....

आधी रात का वक़्त था जब दुनिया सुकून से सो रही थी इंसानों का यह सरदार और खुदा का प्यारा रसूल नूह (अ) अल्लाह के हुज़ूर में पेश था। यह अज़ीम (महान) मरतबे का रसूल दिन भर दावत (लोगों को उनके रब की तरफ बुलाना) की महनत और मुश्किलें झेलने के बाद आराम नहीं कर रहा था बल्कि अल्लाह के सामने सजदे में गिर कर गिड़गिड़ा रहा था।

वह रो रहे थे तड़प तड़प कर अल्लाह के हुज़ूर अपनी फरयाद रख रहे थे। यह दुआ क्या थी उनके दिल की तड़प और उनके नौ सौ साल की महनत की दास्तान थी जो शब्दों में सिमट गई थी, वह बोल रहे थे और उनकी ज़ुबान से निकलने वाला एक एक शब्द नाएमा के दिल में उतरता जा रहा था। वह रो रहे थे और कह रहे थे:

"मेरे मालिक मैंने इस कौम को रात दिन पुकारा लेकिन मेरी पुकार से यह और ज्यादा भागते ही रहे। मैंने जब भी इन्हें बुलाया इसलिए कि इनके वापस आने पर तू इन्हें माफ़ करदे तो इन्होने अपनी उँगलियों से अपने कान बंद कर लिये और अपनी चादरें लपेट लीं और अपनी ज़िद पर अड़ गए और बड़ा गुरुर दिखाया। फिर मैं ज़ोर ज़ोर से चींख कर इनको बुलाया और चुपके चुपके भी समझाया। मैंने कहा अपने रब से माफ़ी मांगलो वो माफ़ करने वाला है तुम्हे भी माफ़ कर

देगा और तुम्हारे लिए अपनी नेमतों के दरवाज़े भी और ज़्यादा खोल देगा वो तुम्हारी खेतियों के लिए बारिस बरसाएगा तुम्हे औलाद और माल में भी बरकत देगा।

मगर मेरे मौला इन्होंने मेरी बात नहीं मानी और अपने उन्ही रहनुमाओं के पीछे चले जिन्होंने अपने माल और इज्ज़त कमाने के लिए इन्हें गुमराह ही किया है, इसके लिए उन्होंने बड़ी बड़ी चालें चलीं और कहा कि अपने इन खुदाओं को कभी मत छोड़ना और वद्द को छोड़ो ना सुवाअ और यगूस और यऊक़ और ना नसरा को छोड़ो, और इस तरह बहुत लोगों को गुमराह कर डाला। मगर मेरे रब अब तू भी इन जालिमों की गुमराही बढ़ा दे और ऐ मेरे मालिक इन जालिमों में से तू अब किसी को ज़मीन पर ना छोड़, इसलिए कि तूने इन्हें छोड़ दिया तो यह तेरे बन्दों को ज़रूर बहकाएंगे और अगर यह पैदा करेंगे तो तेरे ना नाफरमान और काफ़िर ही पैदा करेंगे, मेरे मालिक तू मुझे माफ़ करदे मेरे माँ बाब को माफ़ करदे उन सब को माफ़ करदे जो तेरे फरमाबरदार (आज्ञाकारी) हो कर मेरे घर में पनाह लेलें। सब फरमाबरदार मर्द औरतों को माफ़ करदे, और इन जालिमों के लिए इनकी बर्बादी के सिवा कुछ ना बढ़ा।''

इस दुआ में इतना दर्द था कि नाएमा इन शब्दों का असर अपने ऊपर भी महसूस कर रही थी, नौ सौ साल की महनत के बाद एक इंसान इतना मायूस हो चुका था कि उसे इस कौम की सही राह पर आने की कई उम्मीद नहीं रही थी, यहाँ तक कि एक के बाद एक नस्ल के तजुरबे देखने के बाद उसे यकीन हो चुका था कि इनकी अगली नसलें पैदा भी होंगी तो नाफरमान ही हो जाएंगी, नाएमा ने सोचा:

''जो बात मेरे दिल पर इतना असर डाल गई वो अल्लाह के हुज़ूर कैसे नहीं क़ुबूल होगी।''

.....

यह दोनों एक बार फिर कश्ती पर उसी जगह और वक़्त में लौट आए थे, अस्र ने नाएमा से पूछा:

''तुम्हे अब समझ आ गया कि बच्चों के लिए यह सैलाब निजात (मोक्ष) कैसे बन गया?''

फिर वह अपने सवाल का खुद ही जवाब देते हुए बोला:

"इस लिए कि इनकी सरकशी बहुत बढ़ चुकी थी और इनका पूरा माहौल हक़ से दुश्मनी निभाने का बन चुका था। इस समाज की रगों में झूटे खुदाओं को पूजना उनपर फख्र करना उन्ही से मुहब्बत करना इस तरह रच बस गया था कि कोई बच्चा भी बिना भेदभाव के सोचने के काबिल ही ना रहा था, यह बच्चो को यही सब सिखाते थे।"

नाएमा ने हाँ में सर हिलाते हुए कहा:

"इसको हमारे दौर में ब्रेन वाशिंग कहते हैं, मगर फिर भी बच्चों ने अभी तो कोई कसूर नहीं किया था, जो बच्चे इस वक़्त मौजूद हैं वो तो बेगुनाह हैं।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ कि यह सज़ा नहीं निजात (मोक्ष) है, यह ऐसे ही मर रहे हैं जैसे दुनिया में रोज़ हजारों लोग मरते ही हैं इसी मौत और जन्म के उसूल पर तो यह दुनिया बनी है और चल रही है। मौत को तुम सज़ा क्यों समझ रही हो हर मौत का मतलब सज़ा नहीं होता, सज़ा कौम को दी जा रही है, बच्चों पर तो सिर्फ मौत का वह कानून लागु हो रहा है जो एक दिन सब पर लागु होना ही है। लोग दुनिया में हज़ार तरीकों से मरते हैं, उनमे बच्चे भी होते हैं, तुमने देखा नहीं था जराहम की बेटी अमूराह भी मरी थी।"

"हाँ देखा था।"

"तो बस ऐसा ही मामला इन बच्चों का है, इनकी उम्र ही इतनी तय कर दी गई थी, इन पर ना अज़ाब के फ़रिश्ते आएँगे और ना आखिरत में इन्हें कोई सज़ा मिलेगी, सज़ा सिर्फ सोच समझ रखने वाले लोगों के लिए है, और जैसा कि मैं कह चुका हूँ और खुद तुम हज़रत नूह (अ) की ज़ुबान से सुन चुकी हो, यह सरकश और संग दिल लोगों को सज़ा दी जा रही है। ऐसे अज़ाब सिर्फ और सिर्फ रसूलों की कौम पर आते हैं, जिनको बात इस तरह समझा दी जाती है कि कोई गलत फहमी उनके अन्दर नहीं रहती। वो किसी गलती की वजह से सच का इन्कार नहीं करते बल्कि पूरे इरादे और जान बूझ कर अल्लाह के रसूल के सामने बगावत कर देते हैं, यह इसी की सज़ा है।"

"इसका मतलब है कि यही मामला यहाँ मौजूद जानवरों का है जो इस सेलाब में मारे जाएँगे उन्हें भी अज़ाब नहीं हो रहा है बल्कि और अपनी आने वाली मौत मर रहे हैं जो अपने वक़्त पर

आनी ही थी।" नाएमा ने दिमाग के किसी कौने में उठते हुए एक सवाल को सामने लाते हुए कहा।

अस्र ने हाँ में सर हिलाते हुए कहा:

"तुमने बिलकुल ठीक समझा।"

अस्र अभी यह कह ही रहा था कि अचानक कश्ती को एक झटका लगा, पानी की एक ज़ोर दार लहर आई और कश्ती अपनी जगह से हिलना शुरू हो गई, नाएमा ने नीचे देखा, नीचे खड़े हो कर मदद के लिए चिल्लाने वाले लोग इस लहर की चपेट में आ गए। फिर उसने शहर की ओर देखा बिजली की चमक में एक पल में उसे दिखा कि शहर पूरा डूब चुका है, हर तरफ पानी फैल गया है और उस पानी में धीरे धीरे कश्ती ने अपना सफ़र शुरू कर दिया है, कश्ती में भी काफी पानी भर गया था हालांकि उसमे बने सुराखों से पानी बहार भी निकल रहा था लेकिन बारिश इतनी तेज़ थी कि पानी यहाँ भी धीरे धीरे बढ़ने लगा था, नाएमा ने बाहर देखते हुए कहा:

"शहर तो डूब गया चुका है।"

"हाँ! मगर सब लोग अभी नहीं मरे, यह लोग बड़े ताकतवर हैं इनकी एक बड़ी तादाद (संख्या) पहाड़ों पर चढ़ चुकी है, इनका सोचना है कि बारिश थोड़ी देर में रुक जाएगी, पानी पहाड़ियों की चोटियों तक नहीं पहुंचेगा और यह लोग बच जाएंगे।"

अस्र ने जवाब दिया तो नाएमा ने अस्र की बात पर कोई तबसिरा (टिप्पणी) नहीं किया, इस बीच बादलों की स्याही कुछ छट चुकी थी, बारिश की तेज़ी भी कुछ कम हुई थी मगर थोड़ी ही देर में नाएमा को अंदाज़ा हो गया कि यह कमी सिर्फ इस लिए थी कि कश्ती में ज्यादा पानी ना भर पाए, वरना बाहर के हिसाब से अभी भी ऊपर बहुत पानी बरस रहा था और नीचे से भी लग रहा था कि ज़मीन अपना सारा पानी आज ही उगलने का फैसला कर चुकी है।

पानी एक दम से भरने की कई वजह थीं, एक तो बहुत तेज़ बारिश दूसरे पहाड़ों से आता हुआ पानी का रेला जो हर चीज़ को बहा कर ला रहा था, तीसरे मैदानी ज़मीन जितना पानी पी सकती थी उससे कहीं ज़्यादा पानी बरस रहा था इसलिए ज़मीन की पानी पीने की ताक़त भी खत्म हो गई थी।

फिर जैसे जैसे पानी की सतेह और उस पर कश्ती ऊंची होती जा रही थी नाएमा को महसूस हो रहा था कि बारिश किसी छोटे इलाके में नहीं हो रही बल्कि दूर दूर तक ऐसी ही या इससे भी तेज़ बारिश हो रही है।

स्याही कम होने से रौशनी थोड़ी बढ़ गई थी, नाएमा ने देखा जंगल पानी से ढक चुका था, पानी का सैलाब शहर को भी निगल चुका था हर तरफ पानी ही पानी और ऊंची लहरें नज़र आ रही थीं, उनके बीच कश्ती ऊपर नीचे होते हुए तेजी से आगे बढ़ रही थी। इस कश्ती के अलावा कुछ पहाड़ अभी तक पानी की इस यलगार के मुकाबले में डटे हुए थे, नाएमा ने देखा कि इन्ही पहाड़ों में से एक पर कुछ लोग बैठे हैं, वो शायद पहाड़ पर चढ़ कर बारिश के बंद होने का इंतजार कर रहे थे। रौशनी के बढ़ने और बारिश के कुछ कम होने से उन्हें उम्मीद हो रही थी कि अब बारिश रुक जाएगी, इन्ही लोगों के बीच एक नौजवान बैठा था, उसे देख कर अस्र ने कहा:

''यह हज़रत नूह (अ) का बेटा कनआन है, यह काफ़िर ही रहा और आखरी समय तक कश्ती में नहीं बैठा।''

तभी उसे हज़रत नूह (अ) ने भी देख लिया, उसे देख कर वह चिल्ला कर बोले:

''ऐ मेरे बेटे! हमारे साथ सवार हो जा और उन काफिरों का साथ न दे।''

वह बोला:

''मैं पहाड़ की पनाह ले लूँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा।''

हज़रत नूह (अ) ने कहा:

''आज अल्लाह के कहर से बचाने वाला कोई नहीं सिवाए उसके जिस पर अल्लाह ही रहम करे।''

उनके इन शब्दों के साथ ही एक तेज़ और बड़ी लहर उन के बीच आ गई, लहर हटी तो नाएमा ने देखा कि वह लहर अपने साथ पहाड़ पर पनाह लेने वाले सब लोगों को बहा कर ले गई, यह मंज़र (दृश्य) देख कर हज़रत नूह (अ) घबरा कर सजदे में गिर गए, नाएमा को नहीं मालूम था कि वह अल्लाह से क्या दुआ कर रहे थे।

अस्र इस सबक सिखाने वाले मंज़र (दृश्य) को देख कर बोला:

''तुमने देखा अल्लाह का इन्साफ कितना बेलाग (निष्पक्ष) है, अगर पैगम्बर का अपना बेटा भी मुजरिम है तो उसको भी नहीं छोड़ा जाता, और किसी की क्या हेस्यत है।''

''बे शक़।''

नाएमा ने एक ही शब्द में जवाब दिया, उस पर इस माहोल और इन घटनाओं का खौफ इस तरह छाया हुआ था कि उसके मुह से कुछ और नहीं निकल सका। ज़्यादा देर नहीं गुज़री थी कि पानी ने पहाड़ों को भी ढक लिया था, अब सिर्फ कश्ती थी या दूर दूर तक फैला हुआ पानी का समुन्द्र, यह समुन्द्र था कि जिस का कोई किनारा नज़र नहीं आ रहा था।

नाएमा यह सब देख रही थी और एक अजीब हालत का शिकार थी, उसने मौत, अज़ाब, तूफ़ान जैसी चीज़ों का नाम सुना था, मगर आज इन चीज़ों को एक साथ देख कर उसकी हालत खराब थी। हज़रत नूह (अ) की यह कश्ती मौत और अज़ाब के समुन्द्र से गुज़रती हुई और तूफ़ान की हर सख्ती को झेलती हुई आगे बढ़ती चली जा रही थी।

****

लम्बे इन्सान और आंधी

अस्र और नाएमा दोनों ख़ामोशी से खड़े हुए थे, अस्र नाएमा के चहरे को देख रहा था जिस पर गहरी उदासी छाई हुई थी, उसे इन घटनाओं ने हिला कर रख दिया था। अस्र को महसूस हुआ कि नाएमा का ध्यान दूसरी सच्चाइयों की तरफ दिलाना ज़रूरी है।

"नाएमा! तुमने छोटी कयामत देख ली, यह देख लिया कि अल्लाह तआला बड़े बड़े मुजरिमों को कैसे अज़ाब से मौत देते हैं और किस तरह फरमाबरदारों को अपने अज़ाब से बचा लेते हैं, अब यह देखलो कि किस तरह वो उन्हें ज़मीन पर सत्ता दे कर लीडर बना देते हैं।"

यह कह कर अस्र ने नाएमा का हाथ पकड़ा और कश्ती पर चलने लगा, एक बार फिर दिन रात तेज़ी से बदलने लगे, कुछ कदम चल कर वो रुका तो नाएमा ने देखा वो दोनों अभी तक कश्ती पर ही खड़े हैं, मगर यह कश्ती एक पहाड़ पर खड़ी है और पानी उतर चुका है।

अस्र ने एक तरफ इशारा करते हुए कहा:

"देखो वो रही इंसानों की नई बस्ती, यही इंसान अब और बस्तियां बनाएँगे, हज़रत नूह (अ) के तीन बेटे यानि हाम साम और याफिस जो ईमान लाए और उनके साथ कश्ती में सवार हुए थे इन से इंसानों की बड़ी नस्लें बनेंगी, यह तीनों नई नस्लों के सरदार होंगे इस दुनिया में भी और आने वाली दुनिया में भी यह ज़मीन के राजा बनाए जाएँगे।

"और जराहम और उसकी बीवी?"

"जराहम की बीवी फिर उम्मीद से है, इस बार उनके यहाँ लड़का पैदा होगा जिससे एक बड़ा क़बीला बनेगा, जराहम भी अपने कबीले का सरदार होगा, यह कमज़ोर और गरीब ईमान वाले जिन्हें उनके शहर के लोग घटया और नीच समझते थे अब बड़े खुशहाल और ताक़तवर क़बीलों के सरदार बनेंगे, यही नहीं इनकी कुर्बानी, नेकी और ईमान का फल इनकी आने वाली औलादें भी खाएंगी। हाम की नस्ल आगे चल कर अफ्रीका को आबाद करेगी, उनसे बड़ी बड़ी सभ्यता और सल्तनतें बनेगीं। फिर सामी नस्ल दुनिया पर हुकूमत करेंगीं, यह मिडिल ईस्ट में आबाद होंगी,

इनमे भी बड़ी बड़ी सभ्यता और पैगम्बर होंगे। फिर ज़माने में याफिस की नस्लें दुनिया की सुपर पावर होंगी। इसके बाद असल कयामत आएगी जिसमें फैसला कौमों की तर्ज ही पर नहीं बल्कि एक एक इन्सान का अलग अलग भी होगा और नेक लोगों को आने वाली दुनिया की बादशाही हमेशा के लिए देदी जाएंगी।''

''यह कितनी अजीब बात है, कितनी ना काबिले यकीन (अविश्वसनीय) यह दास्तान, कल तक जो लोग पिस रहे थे आज के बादशाह होंगे, यह तो देखते ही देखते चमत्कार हो गया।''

नाएमा ने ताज्जुब से कहा तो अस्र ने जवाब दिया:

''तुम्हारे लिए देखते ही देखते हुआ है, मगर हज़रत नूह (अ) से पूछो जो नौ सौ साल से ज्यादा लोगों को उनके असल रब की तरफ रात दिन बिना थके बुलाते रहे हैं।''

''हाँ लेकिन यह साल भी तो गुज़र ही गए, यह सोच कर कि कुछ नहीं होगा कितने धोके में रहे वे लोग जिन्होंने सच्चाई का इन्कार कर दिया।''

''चलो अच्छा हुआ हमारी नाएमा अब वह ज़ुबान बोलने लगी जो उसके रब को पसंद है, अल्लाह तआला भी तो यही कहते हैं कि यह दुनिया धोके के सिवा कुछ नहीं है।''

नाएमा ने हाँ में सर हिलाते हुए कहा:

''हाँ अब यह मेरी समझ में आने लगा है।''

''तो अब यह भी समझ लो कि यह चमत्कार कयामत के आने और खुदा के होने का सबसे बड़ा सुबूत है, खुदा अपने रसूल की ज़ुबान से ना सिर्फ सच सामने लाता है बल्कि उस सच्चाई का ऐसा सुबूत पेश कर देता है जिसका इन्कार करना मुमकिन नहीं रहता, रसूल के ना मानने वालों को दुनिया ही में सज़ा देकर और मानने वालों को बचा कर खुदा यह दिखा देता है कि काएनात में उसी का हुक्म चलता है और वो यह बता देता है कि वह दुनिया बना कर कहीं चला नहीं गया ना उसने अपनी सत्ता दूसरों को बांटी है, वो जिन्दा है, तुम्हारी खबर रखता है तुमसे बेखबर नहीं है।

फिर यह काफिरों को सज़ा और यह फरमाबरदारों को नेमतें देना इस बात का सुबूत बन जाती है कि पैगम्बर की बात अगर इस दुनिया में सच साबित हुई है तो कयामत के बारे में भी वह सच

ही कह रहा है। दुनिया में सज़ा और इनाम का मामला हुआ है तो आखिरत में भी ज़रूर होगा। अपनी बात की सच्चाई पर यह भरोसा पैगम्बर को पहले दिन से होता है, इसी विश्वास के सहारे वे अकेले पूरी दुनिया से टकरा जाते हैं। उन्हें यकीन होता है कि इस काएनात का मालिक उन्हें बचा लेगा।"

अस्र बोल रहा था और नाएमा ध्यान से उसकी बात सुन रही थी।

"तुमने देखा कि हज़रत नूह (अ) ने अकेले होने पर भी पूजा स्थल के बाहर किस तरह सारे काफिरों को चैलेंज किया था। हर रसूल इस चैलेंज के साथ आता है, सारी ज़िन्दगी वो चैलेंज देता रहता है, अज़ाब की धमकी देता है, मगर काफ़िर उसका बाल भी बीका नहीं कर पाते। तुम हज़रत नूह (अ) की दुआ में सुन चुकी हो कि उन लोगों ने उनके खिलाफ तरह तरह की चालें चलीं मगर वो अपने इरादे में इस लिए कामयाब नहीं हो सके क्यों कि रसूल के साथ अल्लाह तआला खड़े होते हैं। याद रखो जिस वक़्त रसूल आता है वो वक़्त इंसानी इतिहास का बहुत अहम वक़्त होता है, आसमान से ज़मीन तक खास फ़रिश्ते तैनात होते हैं, वो फ़रिश्ते व्ही (ईश्वाणी) की भी हिफाज़त करते हैं और रसूल की भी।"

"और वो वक़्त तुम्ही हो, यानि अस्र, जिसकी कसम कुरआन में खाई गई है, कसम उस वक़्त की ?"

"हाँ मैं वही अस्र हूँ, मैं ही वह वक़्त हूँ जिसकी कसम खाई गई है, और अब शायद तुम्हे सुरेह अस्र का मतलब समझ में आ गया होगा कि क्यों अल्लाह मेरी यानि रसूलों के ज़माने की कसम खा कर कहते हैं कि इंसान घाटे में हैं। तुमने देख लिया कि हज़रत नूह (अ) की कौम के सरदार घाटे में पड़ कर रहे, सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए नेक काम करते रहे, सच पर जम जाने और उसमे आने वाली मुसीबत पर सब्र करने की नसीहत करते रहे। हाम, साम, याफिस, जराहम और उनकी बीवियों की तरह।"

नाएमा को ऐसा लगा जैसे आसमान से ज़मीन तक नूर फैल गया है, कुरआन मजीद की सच्चाई इस तरह उसके सामने आई थी कि वह सोच भी नहीं सकती थी। वह भावुक हो कर सजदे में गिर गई, फिर वह उठी उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे, वह बोली:

''कितना सच्चा है रब का कलाम, काश कोई मुझे पहले इस तरह समझा देता तो मैं कभी की ईमान ला चुकी होती।''

''चलो अब तो समझ में आ गया।''

''हाँ ना सिर्फ यह कि समझ में आ गया बल्कि यह भी मालूम हो गया कि रसूलों का ज़माना खुदा के होने और क़यामत का सब से बड़ा सुबूत है, वह सुबूत इस वक़्त मेरे सामने है।''

नाएमा ने नीचे मौजूद बस्ती की तरफ देखते हुए कहा जहाँ नूह (अ) की कौम के गरीब लोग अब सरदारों की हेस्यत में मौजूद थे, लहलहाती हुई फसलें उनपर खुदा की रहमत और बरकत का सुबूत थीं, उनकी बीवी बच्चे उनके दिल का सुकून बन कर उनके सामने मौजूद थे।

नाएमा की बात सुन कर अस्र ने कहा:

''मगर नाएमा.....''

अस्र ने अपनी बात पूरी नहीं कि बल्कि एक अफ़सोस से भरी मुस्कुराहट के साथ चुप हो गया।

''मगर क्या?'' नाएमा ने पूछा।

''मगर यह कि एक बार फिर यह इंसान नेमतें पा कर रब को भूल जाएंगे, इनकी नस्लें खुदा की सज़ा और इनाम की इस ऐतिहासिक घटना को भूल जाएंगीं। वक़्त के साथ साथ यह छोटी क़यामत इतिहास का हिस्सा बन जाएगी, लोग इसे बस एक तूफान के तौर पर याद रखेंगे और भूल जाएंगे कि असल में क्या हुआ था और क्यों हुआ था। शैतान उन्हें गुमराह कर देगा, यह भी रब के साथ साझी बनाएँगे बुतों की पूजा करेंगे, ज़ुल्म करेंगे फसाद करेंगे। अल्लाह एक बार फिर अपने पैगम्बर भेजेगा, पैगम्बरों को फिर झुटलाया जाएगा, फिर ऐसी ही छोटी क़यामत उनके लिए भी भेजी जाएगी।''

''वह कौन सी कौम होगी?''

''अनगिनत कौमें हैं जहाँ रसूल आए और फिर सज़ा और इनाम की छोटी क़यामत भेजी गई, तुम अपने ज़माने में भी दुनिया में ऐसी बहुत सी पुरानी बस्तियां पुराने शहर देखोगी जिन्हें खोज लिया जाएगा लेकिन उनके बारे में यह पता लगाना मुश्किल होगा कि यहाँ के लोग अचानक

क्यों और कहाँ चले गए थे। मगर क्यों कि तुम मुसलमान हो इस लिए मैं सिर्फ उन कौमों के दौर में तुम्हे ले चलता हूँ जिनका ज़िक्र कुरआन मजीद में मौजूद है।"

"तो पहले हम कहाँ जाएंगे?"

"हम तुम्हारे ज़माने के सऊदी अरब के दक्षिणी इलाके की तरफ जाएंगे, वहां अब तो एक वीरान और डरावने रेगिस्तान के सिवा कुछ नहीं। हज़रत आद (अ) की कौम के ज़माने में वह एक हरा भरा इलाका था।"

नाएमा अपनी स्टडी की बिना पर इतिहास और भूगोल का भी अच्छा इल्म (ज्ञान) रखती थी इस लिए उसने हैरत से कहा:

"अच्छा! मैंने तो पढ़ा था कि यह कौम बड़ी ताक़त वर थी।"

"हाँ और अब तुम अपनी आँखों से देखोगी कि उन ताकतवरों के साथ क्या हुआ।"

नाएमा ने अपनी ज़िन्दगी में इतना ताकतवर लम्बा चौड़ा आदमी नहीं देखा था, वह आदमी खड़ा हुआ अपने हाथों से ही एक पेड़ से फल तोड़ रहा था, नाएमा अगर अपने ज़माने में पाए जाने वाले इक्का दुक्का लम्बे आदमियों को ना देख चुकी होती तो कभी इस बात पर यकीन ना करती कि लोग इतने लम्बे भी हो सकते हैं।

नाएमा इस वक़्त अस्र के साथ आद (अ) के इलाक़े में खड़ी थी, आज के सऊदी अरब के बेहद डरावने और वीरान रेगिस्तान के मुकाबले में यह एक हरा भरा इलाक़ा था, यह दोनों इस इलाक़े की बीच की बस्ती से बाहर एक बाग़ में खड़े थे, अस्र ने उसे सीधा बस्ती में ले जाने के बजाए बस्ती से बाहर रखा था। यहाँ बागों का एक लम्बा सिलसिला तथा, जगह जगह झरने फूट रहे थे और नदियाँ बह रही थीं, ज़्यादा पानी की वजह से ही यह इलाक़ा इतना हरा भरा था। नाएमा यह रौनक और हरियाली देखती जा रही थी और अस्र उसे तफसील से आद (अ) की कौम का बैकग्राउंड बता रहा था।

अस्र ने उसे बताया कि आद (अ) की यह कौम बल्कि अरब की लगभग सारी कौमें ही हज़रत नूह (अ) के बेटे साम की औलाद में से थे, इसी लिए इनको सामी कौमें कहा जाता है। आद (अ) की कौम साम के बेटे 'आरम' की औलाद में से थे जो धीरे धीरे एक बहुत बड़ी ताकतवर कौम

बन चुके थे। ताक़त और खुशहाली आने के बाद उन्हें अपने रब का ज़्यादा शुक्र करने वाला बनना चाहिए था मगर इस के बजाए यह सरकश और ज़ालिम बन गए। एक तरफ शिर्क (अल्लाह के साझी ठहराना) और बुत परस्ती इनके यहाँ तरक्की पर पहुँच गई तो दूसरी तरफ ज़ुल्म सरकशी और कमजोरों से ज़्यादती इनकी आदत थी। ज़्यादा माल और दौलत और जिस्मानी ताक़त की बिना पर इनका शौंक यह बन गया कि ऊंची ऊंची इमारतें बनाते थे।

अस्र की बात सुन कर नाएमा ने कहा।

"मैंने कहीं पढ़ा था कि इमारतों में पिलर का इस्तिमाल सबसे पहले इन्होंने ही किया था।"

अस्र ने हाँ में सर हिलाते हुए कहा:

"हाँ, तुमने ठीक कहा, दुनिया में पिलर से ऊंची ऊंची इमारतें बनाने के हुनर का आविष्कार इन्होंने ही किया था, जिसकी मदद यह से ऊंची जगहों पर अपने हुनर की निशानी के तौर पर शानदार इमारतें और अपने लिए आलीशान महल बना कर रहा करते थे। सेहत और ताक़त की बिना पर बिमारियां भी कम थीं इस लिए आबादी भी खूब फल फूल रही थी।"

यह बातें करते हुए अस्र और नाएमा उस बाग़ के पास पहुंचे जहाँ वह आदमी बड़े आराम से हाथों ही से फल तोड़ रहा था। लगता था कि वह बहुत भूका है इस लिए जल्दी जल्दी फल तोड़ कर साथ साथ तेज़ी से उन्हें खा भी रहा था, मगर इसकी जल्दी की एक और वजह भी थी जो थोड़ी ही देर में नाएमा को मालूम हो गई, यह बाग़ इस आदमी का नहीं था बल्कि बाग़ का मालिक कोई और था और यह आदमी फल चुरा कर खा रहा था।

यह बात नाएमा को ऐसे मालूम हुई कि अचानक इस बाग़ में ऐसे ही लम्बे चौड़े दो तीन आदमी निकले और तेज़ी से उस आदमी के पीछे दौड़े, उसने भागने की कोशिश की मगर पकड़ा गया, जिसके बाद उन लोगों ने उसे बहुत बेरहमी से मारना शुरू कर दिया। वह आदमी चींख रहा था रहम की भीक मांग रहा था, मगर मारने वाले रहम के जज़्बे से बिलकुल खाली थे। वह आदमी बुरी तरह ज़ख़्मी हो कर ज़मीन पर गिर चुका था और थोड़ी देर में उसमे चीखने की ताक़त भी नहीं रही थी, मगर बाग़ वालों का गुस्सा कम नहीं हुआ, वो इसके बाद भी उसे मारते रहे, यहाँ तक कि वह बिलकुल बे हिस हो गया। नाएमा समझ गई कि वह बेहोश हो चुका है इसलिए अब वो लोग इसे छोड़ देंगे, क्यों कि अब वे तीनों उसे छोड़ कर पीछे हट चुके थे, मगर फिर नाएमा ने

वह मंज़र (दृश्य) देखा जिसने उसको हिला कर रख दिया, उन तीनों में से एक आदमी ने पास पड़ा एक बहुत भारी पत्थर उठाया और उससे फल तोड़ने वाले का सर कुचल डाला।

यह मंज़र देख कर नाएमा कांप गई और जल्दी से वहां से मुह फेर कर खड़ी हो गई, फिर कांपती हुई आवाज़ के साथ अस्र से बोली:

"यहाँ से फ़ौरन चलो।"

अस्र ने उस का हाथ पकड़ा और आगे बढ़ गया, नाएमा का चेहरा गुस्से से सुर्ख हो रहा था, उसकी सिसकियाँ बंधी हुई थी और ऐसा लगता था कि वह अभी चींख चींख कर रोना शुरू कर देगी। उसने सोचा भी नहीं था कि सिर्फ फल तोड़ने के जुर्म में किसी को इस बेरहमी से क़त्ल किया जा सकता है, उससे बर्दाश्त नहीं हो रहा था और वह एक जगह बैठ कर वाकई रोने लगी। अस्र भी उसके साथ बैठ गया, थोड़ी देर में नाएमा का दिल हल्का हुआ तो वह अस्र से बोली:

"यह इंसान हैं या वहशी, कोई इस तरह भी कर सकता है?"

"यह इंसान ही हैं और अपने ज़माने की बहुत तरक्की करने वाली कौम हैं, मगर यह बहुत ज़ालिम भी हैं। यह जब किसी पर हाथ डालते हैं तो ऐसा ही करते हैं, आस पास के सारे कबीलों को इन्होने कुचल डाला है, अपनी कौम के कमज़ोर लोग भी इनके ज़ुल्म का शिकार हैं।"

"तो क्या कोई इन्हें समझाता नहीं?"

"कौन समझाएगा, एक तरफ लीडर हैं जिन्हें अपनी ऐश से फुर्सत नहीं, समाज की अच्छाई बुराई से उन्हें कोई मतलब नहीं, दूसरी तरफ धर्म गुरु हैं, उन्होंने अख्लाकी तालीम (नैतिक शिक्षा) के बजाए बुत परस्ती को अपना कारोबार बना लिया है। सरदारों से बड़ा बड़ा चढ़ावा ले कर उनके हर ज़ुल्म को जाएज़ साबित करना उनका काम है। यह कुछ भी करलें उसके बाद जाकर अपने बुजुर्गों के बुतों के सामने सर झुका देते हैं, धर्म गुरुओं ने अपनी सेवा को खुदा की सेवा करार दे रखा है, अपनी बात को खुदा की बात की तरह पेश करते हैं, अपने आगे लोगों को झुकाते हैं उनके दिलों में खुदा के बजाए अपना सम्मान इतना ज़्यादा भर देते हैं कि लोग उन्हें भी खुदा से कम नहीं समझते, उन्हें नज़राने देते हैं, इस तरह दिल पर कोई बोझ भी नहीं रहता।"

अस्र ने नाएमा के सामने इस समाज का नक्शा खींचते हुए कहा:

"मगर अब इनमें अल्लाह के एक पैगम्बर हज़रत हूद (अ) आ चुके हैं, अल्लाह ने इस कौम के लिए भी अपनी अदालत अब लगा दी है, उसके इन्साफ का छोटा तराज़ू अब यहाँ भी रखा जा चुका। काएनात के रब का यह महान रसूल अब अपनी कौम में लोगों को अल्लाह की तरफ बुलाने का काम कर रहा है। उनका पहला टारगेट लोगों को उनके असल रब की तरफ बुलाना और धर्म गुरुओं की मानसिक गुलामी से आज़ाद करना है, साथ ही वे कौम के ज़ुल्म और अय्याशी पर भी अल्लाह का डर याद दिला रहे हैं।"

"तो फिर कौम उन को क्या जवाब दे रही है?"

"आओ अपनी आखों से देखलो उन्हें क्या जवाब मिला है।"

यह कह कर अस्र ने नाएमा का हाथ पकड़ा और थोड़ी देर में वे बस्ती के अन्दर पहुँच चुके थे।

.....

हज़रत हूद (अ) एक बहुत खूबसूरत आदमी थे, कद तो उनका अपनी कौम के लोगों ही की तरह लम्बा चौड़ा था लेकिन रंग हल्का गुलाबी था, देखने वाला मुतास्सिर (प्रभावित) हुए बिना ना रहता होगा। वह इस वक़्त एक चोपाल में अपनी कौम के बड़े सरदारों के पास बैठे हुए थे। अस्र नाएमा को बता चुका था कि हूद (अ) खुद भी कौम के सबसे बड़े और इज़्ज़तदार कबीले 'खलूद' से थे, खुद की ज़ाति हेस्यत और खानदानी शान की वजह से कौम में उनका एक सम्मान था, सब उन्हें इज्ज़त की निगाह से देखते थे। लेकिन जैसे ही उन्होंने सच्चाई की तरफ लोगों को बुलाना शुरू किया तो हालात बिल्कुल बदल गए, कौम ने उनका इन्कार कर दिया। यह टकराव काफी समय से चल रहा था, मगर कौम किसी भी दलील से मान ही नहीं रही थी। इसलिए अल्लाह ने अपना अज़ाब देने से पहले उनपर अकाल भेजा। इस साल बिल्कुल बारिश नहीं हुई जिससे पैदावार कुछ कम हुई थी मगर बिलकुल सूखे के हालात नहीं थे क्यों कि इनके झरने नहीं सूखे थे।

अस्र ने उसे बताया कि बाग़ में जो ज़ुल्म उसने देखा उसकी एक वजह यह भी थी कि फसल अब की बार कम हुई थी। यह मुसीबत इसलिए डाली गई थी कि शायद कौम सुधरने के लिए तैयार हो जाए। इस लिए हज़रत हूद (अ) इस वक़्त सरदारों की सभा में एक बार फिर उन्हें

समझाने आए थे। अब नाएमा खुद अपनी आँखों से देख रही थी कि उन्हें क्या जवाब मिल रहा है।

हज़रत हूद (अ) उन्हें तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत दे रहे थे, और उन्हें मरे हुए लोगों के बुतों की पूजा से परहेज़ करने के लिए तैयार करने की कोशिश कर रहे थे। मगर उनकी बातों से कौम के सरदारों के गुस्से का पारा आसमान पर चढ़ा हुआ था, उनमे से एक ने कहा:

"हूद यह पागलपन बंद करो, तुम या तो बेवक़ूफ़ हो या झूटे हो। यह हमारे देवता हैं जिनकी पूजा हमेशा से होती आई है।"

हज़रत हूद (अ) ने बड़ी नरमी से समझाते हुए कहा:

"भाई ऐसा नहीं है, मैं पागल नहीं हूँ बल्कि तुम्हारे रब का पैगम्बर हूँ, मैं तो उसका पैगाम (संदेश) तुम तक पूरी ईमानदारी और हमदर्दी के साथ पहुंचा रहा हूँ, मैं इसकी कोई फीस या चढ़ावा भी तुम से नहीं चाहता। देखो तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम हज़रत नूह (अ) की नस्ल से हो तुम यह भी जानते हो कि उनकी कौम पर अज़ाब इसी लिए आया था कि उन्होंने फर्जी देवता बना लिए थे। इसके बाद तुम्हे अल्लाह ने नेमतें दीं तुम्हे बाग़ दिए ताक़त दी झरने दिए बारिश बरसाई खूब पैदावार हुई, अब होना तो यही चाहिए ना कि तुम उसी रब की इबादत करो जिसके हुक्म से यह सब मिला है।"

इस पर एक दूसरा सरदार बोला:

"मियां रहने दो इन बातों को.... यह हमारे दाताओं और बुतों की बखशिश है, यही हमें सब देते हैं और हमारी हर मुश्किल दूर करते हैं, यही अब हमारी इस मुश्किल को भी टालेंगे, तुम्हे परेशान होने की ज़रूरत नहीं।"

हज़रत हूद (अ) ने जवाब दिया:

"मेरे भाई यह बस कुछ नाम हैं जो तुमने रख लिए हैं, और तुम्हारे धर्म गुरुओं ने इनको बढ़ा चढ़ा कर दाता बना दिया है। अल्लाह जैसा नाम रख लेने से कोई चीज़ अल्लाह नहीं बन जाती, यह नाम तुमने बनाए हैं, अल्लाह ने अपनी चीज़ों का मालिक इनको कब बनाया ? इसका कोई सुबूत है तुम्हारे पास ? या तुमने इन्हें देखा ? या इन्होने तुम्हारे पास कोई रसूल बेजा है या कोई

किताब नाज़िल की है ? नहीं मेरे भाइयों यह नाम तुम्हारे खुद के रखे हुए हैं। देखो मुझे अंदेशा है कि अगर तुमने काएनात के रब की बात नहीं मानी तो तुम पर कोई बड़ा अज़ाब आएगा, तुम्हारे जुर्मों की सज़ा तुम्हे मिल कर रहेगी इस दुनिया में भी और उस दुनिया में भी। इसलिए अपने रब से माफ़ी मांग लो वो बड़ा रहम करने वाला है, फिर वो तुम्हे इससे भी ज़्यादा देगा जो अब तुम्हारे पास है।"

अपने झूठ मूट के खुदाओं के बारे हज़रत हूद (अ) के शब्द सुन कर एक सरदार गुस्से से भर गया और चिल्ला कर बोला:

"बंद करो यह बकवास बातें, यह सारी पहले लोगों की कहावतें हैं हम पर कोई अज़ाब वज़ाब नहीं आएगा, अब तुम अपनी सोचो, हमें तो लगता है कि तुम पर हमारे किसी देवता की लानत (श्राप) है और....."

यह कह कर उसने अपना हाथ अपनी तलवार पर रखा। उसका चहरा बता रहा था कि वो चाहता है कि तलवार म्यान से निकाले और हूद (अ) पर हमला करदे। ना जाने कौन सी ताक़त थी जिसने उसे तलवार म्यान से निकालने से रोक रखा था, मगर उसके अंदाज़ से साफ़ ज़ाहिर (स्पष्ट) था कि वो हज़रत हूद (अ) को कत्ल करना चाहता है। उन्होंने भी यह बात महसूस कर ली थी मगर अल्लाह के रसूल ने बड़े इत्मिनान के साथ बगैर किसी डर के जवाब दिया:

"मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि जैसे तुम अल्लाह का साझी बनाते मैं इस जुर्म से बरी हूँ। अब तुम ऐसा करो कि सब मिल जाओ और मेरे खिलाफ जो कदम उठाना है उठा लो, मुझे ज़रा भी मौका ना दो, मेरा विश्वास अल्लाह पर है जो मेरा और तुम्हारा रब है, तुम देखोगे कि हर चीज़ पर बस उसी का हुक्म चलता है और हर चीज़ उसी के कब्जे में है। अब तुमने साफ़ मानने से इन्कार कर दिया है तो जान लो कि मैंने पैगाम (संदेश) पहुंचा दिया है। अब तुम्हारी जगह दूसरी कौम को सरदारी दी जाएगी और तुम कुछ नहीं कर सकोगे। मेरा रब हर चीज़ देख रहा है, अब मैं भी इंतज़ार करता हूँ और तुम भी इंतजार करो।"

यह कह कर हज़रत हूद (अ) उठे और आराम से चलते हुए बाहर चले गए, उनके साथ दो तीन आदमी और भी उठे और उनके पीछे चले गए। नाएमा ने अस्र से पूछा:

"यह कौन लोग हैं?"

अस्र ने जवाब दिया:

"यह इनके गिनती के कुछ मानने वालों में से हैं, यही वो लोग हैं जिनकी तरफ हज़रत हूद (अ) ने इशारा किया है कि अब दूसरी कौम को सरदारी दे दी जाएगी।

यह इस कौम के साथ हज़रत हूद (अ) की आखिरी बातचीत है, इसमें फैसला कर दिया गया है। हज़रत हूद (अ) ने नसीहत को पूरी तरह खोल कर बयान कर दिया है और उनकी कौम जवाब में उनके क़त्ल की धमकी पर उतर आई है। याद रखो जिस वक़्त कोई कौम अपने रसूल को क़त्ल करने का इरादा कर लेती है अल्लाह तआला उसी वक़्त उस कौम की मोहलत ख़त्म कर देते हैं।"

"तो क्या दुश्मन उन्हें मारने की कोशिश भी करते हैं?"

"हां क्यों नहीं, एक आदमी लगातार अज़ाब की धमकी दे रहा है, उनके बुतों का इन्कार कर रहा है। जवाब में कौम का आखिरी कदम यही होता है कि उनपर हाथ डालने की कोशिश की जाए, मगर अल्लाह के फ़रिश्ते लगातार उनकी हिफाज़त करते रहते हैं।"

"मगर फरिश्तों की यह हिफाज़त कैसी होती है, मैंने फ़रिश्ते नहीं देखे क्या मैं फ़रिश्ते देख सकती हूँ?"

नाएमा ने ज़िद करने के अंदाज़ में पूछा।

"फ़रिश्ते तुम्हे बाद में दिखाऊंगा, पहले यह देखलो कि यहाँ अब क्या होता है।"

.....

सूरज निकल चुका था, आद (अ) की कौम के सब लोग अपनी बस्ती के बीच में मौजूद अपनी पूजा करने की जगह पर पहुँच रहे थे। यह ईमारत एक ऊंची पहाड़ी पर थी और इस कौम के हुनर की शानदार निशानी थी। बड़े बड़े पिलरों पर बनाई गई यह शानदार इमारत हर देखने वाले हो यह अहसास करा रही थी कि इस कौम को कभी नहीं मिटना इस मजबूती को कभी फ़ना नहीं होना।

मगर इस वक़्त कौम के ऊपर जो सूखे का खतरा मंडरा रहा था, उसने इन्हें यहाँ अपने बुतों के सामने गिड़ गिड़ाने पर मजबूर किया था। इस मकसद के लिए इस कौम के सभी बुत जिनमें इनके पुराने बुजुर्गों के बुत भी शामिल थे सामने रखे हुए थे। पुरोहित विशेष पूजा करा रहे थे जिसमे बारिश के लिए खास दुआ भी शामिल थी। यह वक़्त कृषि का था, सबको मालूम था कि पिछले साल बारिश ना होने से फसल कम हुई है, और अगर इस साल भी बारिश ना हुई तो अबकी बार खेती नहीं होगी और सारा पानी सूख जाएगा। इसी से बचने के लिए वो अपने देवताओं को अपने मरे हुए की आत्माओं को पुकार रहे थे।

अस्र और नाएमा भी यहाँ मौजूद थे लेकिन वो इनसे थोड़ा हट कर इमारत की छत पर चढ़े हुए थे। यहाँ से एक तरफ तो सारी पूजा पाठ नज़र आ रही थी और दूसरी तरफ यह इलाक़ा और पूरी बस्ती भी यहाँ से देखी जा सकती थी। इस वक़्त अस्र नाएमा को हूद (अ) की आखिरी नसीहत के बाद की बातें बता रहा था जो नाएमा ने नहीं देखी थी।

उसने बताया कि इनके साथ हूद (अ) की आखिरी सभा के बाद इस कौम के सरदारों ने फैसला कर लिया था कि बस अब बहुत हो चुका, जो चैलेंज हज़रत हूद (अ) भरी महफ़िल में उन्हें दे कर गए थे, उसके बाद यह इनकी इज्ज़त का मसला था कि हज़रत हूद (अ) को ख़त्म कर दिया जाए। इस लिए उस काम के लिए उसी रात फैसला कर किया गया, मगर इन बेवकूफों को मालूम नहीं था कि असल फैसला इनको ख़त्म करने का हो चुका है। इसलिए अल्लाह ने अज़ाब के भेजने से पहले हज़रत हूद (अ) को वहां से चले जाने का हुक्म दे दिया, वह सूरज डूबते ही अपने साथियों के साथ जो ईमान ले आए थे बस्ती से निकल गए। कौम के सरदार जब उनके घर पहुंचे तो वहां किसी को नहीं पाया, इसलिए वो हाथ मलते हुए अपने घरों को लौट आए। मगर वो इस बात से बे खबर थे कि अब उनके लिए क्या क़यामत आने वाली है। जबकि इस कयामत से पहले ही हूद (अ) और उनके साथी यहाँ से बहुत दूर जा चुके थे।

अस्र और नाएमा ऐसी जगह खड़े थे जहाँ से दूर दूर तक सब साफ़ नज़र आ रहा था। आसमान साफ़ था और सूरज की रौशनी में सब साफ़ नज़र आ रहा था। इस ऊंचाई से नाएमा को अंदाज़ा हुआ कि वाकई इस कौम के घर बड़े ऊँचे ऊँचे थे, हलाकि घरों का डिज़ाइन नाएमा के ज़माने जैसा तो नहीं था लेकिन अपने दौर के हिसाब से बहुत एडवांस था। नाएमा सोच रही थी कि

इतनी मज़बूत इमारतों की यह बस्ती किस तरह तबाह होगी। क्या तूफ़ान आएगा या ज़लज़ला या कुछ और होगा, इसका नाएमा को अंदाज़ा नहीं था।

उसने अस्र से सवाल किया:

"यह कौम किस तरह तबाह होगी?"

अस्र ने जवाब दिया:

"जल्दी क्या है, जो भी होगा अभी तुम्हारे सामने ही होगा। बस तुम देखती जाओ।"

अभी ज़्यादा देर ना गुजरी थी कि अस्र ने एक तरफ इशारा किया, दूर आसमान पर बादल नज़र आ रहे थे जो धीरे धीरे करीब आने लगे। इबादत में मसरूफ (व्यस्त) लोगों में से भी किसी ने नज़र उठा कर यह बादल देख लिये थे, थोड़ी ही देर में शोर मच गया।

यह देख कर अस्र ने कहा:

"ये बेवक़ूफ़ समझ रहे हैं कि इन की दुआ कुबूल हो चुकी है, इनके बुतों ने इन पर बारिश लाने वाले बादल भेज दिये हैं, मगर इनको नहीं मालूम कि इन बादलों में बारिश नहीं है बल्कि अल्लाह का अज़ाब है।"

नाएमा ने अस्र की बात सुन कर भीड़ को गौर से देखा, सब लोग ख़ुशी से चिल्ला रहे थे। वे अपने बुतों की हम्द (प्रशंसा) के नारे लगा रहे थे। बहुत से लोग ख़ुशी में मैदानों और अपने घरों की और लौट रहे थे। पुरोहित हाथ हिला हिला कर अपनी सच्चाई और खुद को देवताओं के करीबी होने का यकीन दिला रहे थे। कुछ लोग बुतों के क़दमों में गिर कर उनका शुक्रिया (धन्यवाद) अदा कर रहे थे।

एक तरफ यह हंगामा था तो दूसरी तरफ बादल बहुत तेज़ी से बस्ती की तरफ आ रहे थे। फिर मौसम अचानक बदलने लगा, सूरज बादलों में छुप चुका था, धीरे धीरे हवा भी अब तेज़ हो रही थी। अस्र ने नाएमा का हाथ पकड़ कर कहा:

"मेरा हाथ मत छोड़ना, अब वह आँधी शुरू हो रही है जो आठ दिन और सात रातों तक लगातार चलती रहेगी। यह इतनी तेज़ होगी कि तुम सोच भी नहीं सकती।"

नाएमा यह सुन कर हैरान रह गई, उसने हैरत से पूछा:

"इतने दिनों तक आँधी कैसे चलेगी?"

अस्र ने आसमान की तरफ सर उठा कर देखा और कहा:

"इस काएनात के रब की अज़मत (महानता) के सामने तो यह बहुत मामूली चीज़ है। उसकी बनाई हुई काएनात में तो ऐसी आंधियां बरसों चलती रहती हैं। मगर उसने इंसानों पर यह अहसान कर रखा है कि हवा और गैसों के तूफ़ानों को अपने करम से लगाम दे रखी है। इंसान इस हवा से सुकून और ख़ुशी महसूस करता है, मगर जब ऐसे मुजरिमों के लिए अल्लाह की अदालत ज़मीन पर लगती है तो फिर काएनात की यही ताकतें इंसानों की बर्बादी की वजह बन जाती हैं। इस मुजरिम कौम के लिए जिसे अपने बड़े जिस्म और ताक़त पर बड़ा घमण्ड था हवा की लगाम छोड़ दी गई है। तुम देखना यह बड़े जानदार लोग हैं घरों में जा छिपेंगे, अपनी इमारतों में पनाह ढूँढेंगे, मगर यह हवा उन्हें कहीं नहीं छोड़ेगी। इंसान कब तक भूका प्यासा रह सकता है, एक पल के लिए जो भी अपने बिलों से निकलेगा तो हवा उसे अपने साथ उड़ा कर ले जाएगी और ज़मीन या पत्थरों पर दे मारेगी। यह लोग इसी तरह बेबसी ज़िल्लत और मुसीबत के साथ मारे जाएँगे।"

हवा में तेज़ी बढ़ती जा रही थी, बस्ती वालों को भी अब अंदाज़ा होने लगा था कि यह बुतों की रहमत नहीं अल्लाह का अज़ाब आ चुका है। हज़रत हूद (अ) जिस अज़ाब से डरा रहे थे वो आ चुका है। इसलिए बहुत हलचल मच गई, यह ताकतवर लोग थे लम्बे चौड़े थे कुछ क़दमों में ही लम्बा फासला तय कर लेते थे। इनका दावा यह था कि दुनिया में इन जैसा ताकतवर कोई नहीं। अब उन्हें पता चला कि असल ताकतवर कौन है। मगर अब बहुत देर हो चुकी थी, यह लोग छुपने की जगह की तलाश में भागने गले। अभी आँधी ने ज़ोर भी नहीं पकड़ा था मगर इन्हें भागने में दिक्कत हो रही थी, ऐसा लग रहा थी कि उनके सामने कोई दीवार है जो लोगों को आगे बढ़ने से रोक रही है। जिसका रुख जिस तरफ हो जाता वह उसी तरफ दौड़ने लगता था। लोग अपने दोस्तों अपने परिवारों को भूल गए थे हर आदमी को अपनी पड़ी थी। हर कोई अपने लिए पनाह ढूंड रहा था मगर अब पनाह मिलने का वक़्त बीत चुका था।

नाएमा अस्र के सहारे खड़ी थी, उसे आँधी से कोई परेशानी नहीं हो रही थी। वह साफ देख सकती थी कि हवा तूफानी रफ़्तार से चल रही थी और लोगों को उठा उठा कर पटक रही थी। हवा के साथ मिटटी भी उड़ रही थी मगर शायद यह अस्र के साथ का असर थी कि नाएमा धूल के बावजूद सब साफ साफ देख सकती थी। ऐसा खौफनाक मंज़र (दृश्य) तो उसने नूह (अ) के तूफ़ान में भी नहीं देखा था। वहां वह कश्ती में सवार थी और उसने वहां एक एक को मरते हुए भी नहीं देखा था। मगर यहाँ एक एक आदमी के बेबसी से मरने का मंज़र उसके सामने था। यह नज़ारा इतना डरावना थी कि नाएमा कि आँखें फटी हुई थी, वह अन्दर ही अन्दर काँप रही थी। उसने अल्लाह के कहर का ऐसा मंज़र कभी नहीं देखा था। तभी उसे बाग़ का वह आदमी याद आया जिसे बुरी तरह बेरहमी से मारा गया था। उसने धीरे से कहा:

"अल्लाह के यहाँ देर है अंधेर नहीं।"

तभी अस्र ने एक तरफ इशारा किया, दर असल कुछ लोग बागों में जा छुपे थे। अस्र ने वही मंज़र नाएमा को दिखाया। इस वक़्त बे लगाम आँधी ने पेड़ों को जड़ से उखाड़ कर फेकना शुरू कर दिया था। फिर कैसे मुमकिन था कि उनके नीचे छुपे इंसान बच जाते। एक तरफ तो पेड़ों के तने लुड़कते फिर रहे थे तो दूसरी तरफ पेड़ों जैसे ही कौम के लोगों की लाशें लुड़कती फिर रही थीं। कुदरत से ऐसी खौफनाक मौत.... नाएमा ने अपने दोनों हाथ अपने चहरे पर रख लिए।

.....

जैसा कि अस्र ने कहा था, आँधी आठ दिन और सात रातों तक ऐसे ही चलती रही। ज़्यादा तर लोग तो पहले ही हवा में उड़ कर मर गए थे, जो छुप गए थे वो मुश्किल से बचे मगर वो कब तक अपनी जगह पर बैठे रहते, जो जैसे ही अपनी जगह से उठा आँधी की चपेट में आ कर मारा गया। कुछ लोगों ने इरादा कर लिया था कि भूक प्यास बर्दाश्त कर लेंगे लेकिन अपनी जगह से नहीं हिलेंगे, मगर आँधी अपने साथ मिटटी भी ला रही थी, इमारतों के अन्दर तक और उनके ऊपर भी रेत भरने लगी, इस मुसीबत का कोई इलाज उनके पास नहीं था, अपनी जगह से हिलेंगे तो आँधी उड़ा ले जाएगी और अगर नहीं हिलेंगे तो रेत में दब कर मरेंगे। फिर ऐसा ही हुआ, उनके घर रेत के नीचे दबने लगे तो उनमे मौजूद लोग कैसे बचते, वे भी एक एक करके मरते गए।

एक हफ्ते बाद यह आँधी रुकी, मगर अब यह पूरा इलाक़ा जो अज़ाब से पहले हरा भरा मैदानी इलाक़ा था रेत और मिटटी के टीलों में बदल चुका था। यह टीलें पहाड़ों जैसे ऊँचे थे, नाएमा अस्र के साथ एक ऐसे ही ऊँचे टीले पर खड़ी थी। जहाँ तक नज़र जाती थी वहां तक सिवाए टीलों के कुछ नही थी। नाएमा दिल ही दिल में सोच रही थी कि जिस आदमी ने यह इलाक़ा पहले देखा था वह सपने में भी नहीं सोच सकता था कि कुछ दिन में ही इसकी यह हालात हो जाएगी, वह अस्र से बोली:

''अस्र यह लोग तो बड़े भयानक तरीके से मारे गए।''

''नाएमा! यह तो कुछ भी नहीं, जो कुछ क़यामत के बाद शुरू होने वाली दुनिया में इनके साथ होगा उसका तो तुम अभी सोच भी नहीं सकती, वहां यह लोग ना जी सकेंगे और ना मरेंगे, यह मुजरिम मौत मांगेंगे और मौत हर तरफ से आएगी मगर ये मर न सकेंगे।''

यह बात सुन कर नाएमा ख़ामोश हो गई, अस्र ने महसूस कर लिया था कि नाएमा कुछ पूछना चाह रही है मगर किसी वजह से पूछ नहीं पा रही, उसने नाएमा को हौसला देते हुए कहा:

''जो पूछना है पूछ लो यही समय है हर सवाल के जवाब जानने का।''

''अस्र देखो मैं अल्लाह पर ऐतराज़ नहीं कर रही, मगर.....''

नाएमा ने अपना सवाल रखना शुरू किया, मगर जो कुछ वह देख चुकी थी उसके बाद वह बहुत सावधानी बरत रही थी, कि कहीं अल्लाह तआला की शान में उससे कोई गुस्ताखी ना हो जाए, इसलिए उसने नपे तुले शब्दों में अपना सवाल किया।

''हमारी दुनिया का उसूल है कि सज़ा जुर्म के हिसाब से बराबर होनी चाहिए, हम कहते हैं कि 'Punishment must be fit the crime' यानि सज़ा जुर्म के हिसाब से इतनी ही मिलनी चाहिये। मगर एक रसूल की नाफ़रमानी के जुर्म में पूरी कौम को बर्बाद किया जाना वो भी इतनी बेदर्दी के साथ.....''

नाएमा यह बात कह रही थी और उसके चहरे का रंग बदल रहा था, उसके दिमाग में उस भयानक आँधी से मारे जाने वाले एक एक आदमी की शक्ल घूम रही थी। एक पल को वह रुकी और फिर बोलना शुरू किया।

"फिर अब तुम कह रहे हो कि जहन्नम में इससे कहीं ज़्यादा अज़ाब इनको दिया जाएगा, वो भी हमेशा के लिए, कभी खत्म भी नहीं होगा, मौत भी नहीं आएगी। इस तरह तो जुर्म और सज़ा में कोई बराबरी ही नहीं रहती, सौ पचास बरस की ज़िन्दगी के गुनाहों की ऐसी सज़ा जो कभी ख़त्म ही ना हो.....वो भी इतनी तकलीफ़ के साथ, यह बात कुछ समझ में नहीं आती।"

अस्र नाएमा की बात सुन कर मुस्कुराया और बोला:

"मुझे अब अंदाज़ा हो रहा है कि अल्लाह तआला ने इस सफ़र के लिए तुम्हे क्यों चुना है, तुम बहुत समझदार हो, चीज़ों को बहुत घहराई में जा कर देख सकती हो, मगर ज़ाहिर है तुम सब कुछ नहीं जानती, इसलिए क्यों कि आखिर कार तुम एक इन्सान ही तो हो, हर चीज़ अपने इल्म (ज्ञान) से नहीं समझ सकती।"

अस्र के हिम्मत बढ़ाने से नाएमा के चहरे पर एक मुस्कुराहट फैल गई। वह ध्यान से अस्र की बात सुनने लगी, अस्र ने अपनी बात एक सवाल से शुरू की।

"अगर एक लड़का किसी लड़की से ज़िना (व्यभिचार) करे तो यह कैसी चीज़ है?"

"बहुत बुरी चीज़ है, बड़ी बेशर्मी का काम है, बल्कि एक जुर्म है।" नाएमा ने फ़ौरन जवाब दिया।

मगर फिर कुछ सोच कर बोली:

"हमारे ज़माने में बहुत से देश ऐसे हैं जिनमें यह चीज़ ना कोई बुराई मानी जाती है और ना जुर्म।"

फलसफी नाएमा ने एक बार फिर अपने ही जवाब में एक बात और बढ़ा दी थी।

नाएमा की बात सुनकर अस्र ने अपना सवाल बदलते हुए कहा:

"यह बताओ किसी शादी शुदा औरत के साथ ना जायज़ सम्बन्ध बनाना कैसा है?"

"यह भी बुरा है इसे तो हर जगह के लोग बुरा ही समझते हैं।"

इस बार नाएमा ने सीधा जवाब दिया।

"एक कुवारी लड़की के मुकाबले एक शादी शुदा औरत से सम्बन्ध बनाना ज्यादा बुरा है, बल्कि इसे पश्चिमी देशों में भी बुरा ही समझते हैं।"

"अच्छा अब यह बताओ कोई आदमी अगर अपनी ही माँ के साथ.....?"

नाएमा के चहरे पर नफरत और गुस्से के रंग बिखर गए और उसने अस्र की बात बीच में काटते हुए कहा:

"यह तो घिनोने पन की हद है।"

"अब यह बताओ नाएमा कि यह जो तीन तरह के ना जाएज़ सम्बन्ध बनाना है, अपनी असल में है तो एक ही तरह का जुर्म। यानि एक लड़की से ज़िना, किसी शादी शुदा औरत से ज़िना और अपनी माँ से ज़िना, यह तीनों एक ही तरह के जुर्म हैं, तो अब तुम्हारे अपने उसूल के मुताबिक़ (अनुसार) जो तुमने अभी बताया है कि सज़ा जुर्म के हिसाब से इतनी ही मिलनी चाहिए, इस उसूल की रौशनी में तीनों केस में जुर्म एक ही है इसलिए इसकी सज़ा तीनों केस में एक ही जैसी होनी चाहिए।"

"नहीं।"

नाएमा ने फ़ौरन अस्र की बात को नाकारा।

"यह तो कॉमन सेंस की बात है कि तीनों केस में सज़ा अलग अलग होनी चाहिए।"

नाएमा यही वो बात है जो तुम नहीं समझ पा रही थी, जुर्म की सज़ा अगर इस पर निर्भर होती है कि जुर्म क्या किया गया है तो इस पर भी निर्भर होती है कि जुर्म किसके खिलाफ किया गया है। जैसा कि इस मिसाल से ज़ाहिर है कि एक आम औरत से ज़िना से बड़ा जुर्म अपनी माँ से ज़िना है। अब समझ लो कि रसूल की कौम को अगर ज़मीन से मिटा दिया जाता है तो तुम्हे बहुत बड़ी सज़ा लगती है या जहन्नम (नर्क) कि सज़ा जो तुम्हारे ख्याल से ज़्यादा सज़ा है यह दर असल अल्लाह तआला के खिलाफ बगावत और उसको ललकारने का अंजाम है।"

अस्र की बात सुन कर नाएमा सर हिलाते हुए बोली:

"चलो दर्द नाक़ सज़ा वाली बात मैं मान भी लूँ मगर किसी जुर्म का बदला हमेशा की सज़ा के तौर पर देने वाली बात समझ में नहीं आती।"

"यही तुम्हारा मसला है नाएमा! हमेशा की जहन्नम किसी जुर्म का बदला नहीं है।"

अस्र ने "किसी जुर्म" के शब्दों पर ज़ोर देते हुए अपनी बात जारी रखी।

"हमेशा की जहन्नम एक असीमित कुदरत रखने वाले और इस पूरी काएनात (ब्रह्मांड) के मालिक के खिलाफ जान बूझ कर बगावत करने और यह बताए जाने के बावजूद कि ऐसा करोगे तो हमेशा की जहन्नम में जाना पड़ेगा फिर भी उसे ललकारने का नतीजा है। उनकी सब गलतियाँ रसूल खुद उन पर वाज़ेह (स्पष्ट) करते हैं और साफ़ हो जाने के बाद भी वह अपनी गलती पर ही जम जाने का फैसला कर लेते हैं यह उसका नतीजा है। यह किसी इंसान या रिश्ते दार के खिलाफ होने वाला जुर्म नहीं बल्कि उस अज़ीम (महान) हस्ती के खिलाफ बगावत का बदला है जो सारी ताकतों का मालिक और इंसानों के लिए सब कुछ इन्तिज़ाम करने वाला है। ज़रा सोचो काएनात का ज़र्रा ज़र्रा उसे जानता और मानता है उसके दुश्मन को जहन्नम के सिवा कौन पनाह देगा।"

"तुम्हारी बात समझ में आती है अस्र, लेकिन इस मंतिक का क्या करूँ जो कहती है कि एक सीमित उम्र में किये गए जुर्म की सज़ा असीमित समय तक नहीं होनी चाहिए।"

नाएमा ने सर पर हाथ मार कर कहा तो अस्र मुस्कुराने लगा।

"तो तुम मंतिक पढ़ना चाह रही हो, ठीक है तो सुनो! अगर मंतिक यह कहती है कि सीमित समय में किये गए जुर्म की सज़ा असीमित नहीं होनी चाहिए तो यही मंतिक यह भी कहती है कि असीमित हस्ती के खिलाफ़ किये गए जुर्म की सज़ा भी असीमित होनी चाहिए, क्यों कि एक असीमित हस्ती के खिलाफ किया गया जुर्म सीमित नहीं होगा।"

"हाँ हम इंसान भी कुछ मिनटों में की गई चोरी की सज़ा कई साल तक देते हैं।"

"एक यह भी पहलु सज़ा और इनाम के फलसफे का है कि सज़ा जुर्म का असर कहाँ तक पहुंचा है इसके हिसाब से दी जाती है, ना कि यह देख कर कि जुर्म कितने टाइम में किया गया है। मगर मैं तुम्हारा ध्यान दूसरे और ज़्यादा अहम (महत्वपूर्ण) पहलु की तरफ दिलाना चाहता हूँ, वह

यह कि जुर्म जिस वक़्त अल्लाह तआला के खिलाफ़ कर दिया जाए तो जुर्म बेहद संगीन और असीमित हो जाता है।''

अस्र ने अपनी बात को समझाने के लिए सूरज की तरफ इशारा करते हुए कहा:

''तुम्हे पता है सूरज में जो आग दहक रही है उसका टेम्प्रेचर कितना है?''

''उसकी तपिश तो करोड़ो डिग्री तक है।''

''और यह बताओ कि तुम्हारी इस धरती पर तापमान कितना रहता है?''

''ज़्यादा से ज़्यादा 50 रहता है इससे ज़्यादा पर इंसान की ज़िन्दगी मुश्किल हो जाती है।''

नाएमा कि बात पर अस्र ने मुस्कुरा कर कहा:

''यह तो सिर्फ एक ही मिसाल है, नहीं तो यह पूरा ब्रह्मांड इतना ही गर्म है या फिर बहुत ज़्यादा ठण्डा, मगर देखो अल्लाह ने किस तरह बैलेंस बना रखा है। इंसानों का वुजूद (अस्तित्व) उनका जिन्दा रहना, इसी तरह की अल्लाह की करोड़ों नेमतें मिलने पर निर्भर है। होना तो यही चाहिए था कि इंसान उस रब का बहुत एहसान मंद हो कर रहता जिसने उसे यह बस नेमतें दी हैं, लेकिन इसके बजाए अगर कोई इंसान वह काम करे जो उसे सबसे ना पसंद है, उसकी तरफ झूठ घड़ कर बयान करे, उसकी बनाई हुई चीज़ों का मालिक किसी और को बनाए, उसके खिलाफ बगावत करे, सच ज़ाहिर (स्पष्ट) हो जाने के बाद भी अपनी बनाई हुई बेबुन्याद झूटी बातों को अल्लाह की बात बताए, हकीक़त के मुकाबले में जानबूझ कर बनाई हुई अपने दिमाग की कल्पनाओं को ज़्यादा अहमयत दे और फिर इन्ही जुर्मों पर जम जाए तो तुम ही बताओ उसकी सज़ा क्या होनी चाहिए?''

वह नाएमा के जवाब का इंतजार किये बिना ही बोला:

''वैसे यह बताओ कि अल्लाह तआला के अहसानों के बदले में तुम लोग क्या देते हो?''

''हम तो सिवाए नमक हरामी और अहसान फरामोशी के अल्लाह को कुछ नहीं देते।''

''नाएमा ने सर झुका कर जवाब दिया, उसके सामने उसकी ज़िन्दगी की वो बातें घूम रही थी जो उसने खुदा के खिलाफ कही थीं, मगर साथ ही उनके दिमाग में नास्तिकों का एक सवाल भी उठा जो उसने बोल दिया:

''लोग कहते हैं हमने तो यह सब अल्लाह से नहीं माँगा, तो वह हम से इन नेमतों का बदला क्यों मांग रहा है?''

''अल्लाह किसी नेमत का बदला नहीं मांग रहा, वो तो अपनी नेमतें तुम पर और ज़्यादा बढ़ाना चाहता है वो बस यह कहता है कि एहसान को भूलो मत। और मैडम यह किसने कहा कि इंसान ने यह सब कुछ नहीं माँगा, इंसान ने यह सब कुछ खुद माँगा है, उसने इस इम्तिहान में उतरने की खुद फरमाइश की थी।''

यह शायद कुरआन में लिखा होगा मगर कोई नास्तिक तो कुरआन की बात नहीं मानेगा।''

''बेशक यह कुरआन में लिखा हुआ है, और यह भी ठीक है कि कोई नास्तिक कुरआन की बात नहीं मानेगा, मगर ऐसा करो कि अब जब कोई नास्तिक तुमसे यह बात कहे तो उससे जवाब में कहना कि अगर तुमने यह सब नहीं माँगा और इसकी ज़रूरत नहीं है तो खुदा के एहसान तले दबने की कोई ज़रूरत नहीं, उसके सारे एहसान फ़ौरन वापस करदो, हाथ पैर काट कर फेंक दो अपनी आँखें निकाल फेंको कानों में तेज़ाब डाल दो, ज़ुबान को छुरी से काट दो बल्कि ज़िन्दगी ही वापस कर दो।''

नाएमा अस्र की बात सुन कर हँसते हुए बोली:

''ऐसा कुछ कोई भी नहीं करेगा, मगर अस्र! ना मानने वाले बहुत ढीट होते हैं, वो कहेंगे कि यह सब अपने आप हो गया है, यह अंधे माद्दे (मेकिनिज्म) का किया हुवा है जो अरबों साल के विकास से गुज़र कर इस जगह पहुंचा है।''

''नाएमा यह उन्नीसवी सदी की साइंसी सोच का नतीजा था, बीसवी सदी की साइंसी खोजों ने माद्दे और ब्रह्मांड के हमेशा से होने की सारी थ्योरी को गलत साबित कर दिया है, ब्रह्मांड ना हमेशा से है और ना ही माद्दा इसकी एक मात्र हकीक़त, मगर इस बहस को छोड़ कर यह बताओ कि इत्तिफ़ाक (संयोग) एक दो घटनाओं को कहते हैं जबकि यहाँ हर चीज़ की बनावट इंसान के वजूद (अस्तित्व) से लेकर धरती पर मौजूद ज़िन्दगी को बरकरार रखने वाले हालात यानि (Life

Supporting System) तक इत्तिफ़ाक (संयोग) से नहीं बल्कि साफ़ तौर (स्पष्ट) से किसी प्लान करने वाले की निशानी (संकेत) है, यहाँ हर जगह हर चीज़ में बनाने वाले का इरादा साफ़ नज़र आता है, जो चीज़ प्लान करके और इरादे से की जाए क्या उसे इत्तिफ़ाक कहा जा सकता है?"

फिर अस्र ने एक मिसाल से बात को बहुत आसान कर के पूछा।

"अच्छा यह बताओ, अगर दुनिया में सिर्फ लड़कियां पैदा होना शुरू हो जाएं या सिर्फ लड़के ही पैदा होने लगें तो क्या होगा?"

नाएमा ने फ़ौरन जवाब दिया:

"कुछ अरसे में ही इंसान ख़त्म होने लगेंगे।"

अस्र ने पूछा:

"यह बताओ दुनिया में मर्द औरत का अनुपात कितना है?"

नाएमा ने जो खुद एक इनसाइक्लो पीडया से कम नहीं थी बड़े विश्वास के साथ जवाब दिया:

"थोड़े से फर्क के साथ फिफ्टी फिफ्टी है।"

"अब यह बताओ कि यह कैसा इत्तिफाक (संयोग) है कि हर दौर में और हर नस्ल बल्कि हजारों साल से लगातार ज़ारी है कि मर्द औरत हर तरह के हालात में लगभग बराबर बराबर पैदा होते रहे हैं और इसी वजह से इंसानियत लगातार आगे बढ़ रही है, हालांकि अरबों साल के विकास के बाद सिर्फ एक इत्तिफाक (संयोग) से (LifeSupportingSystem) वाली धरती और सबसे बढ़ कर इंसान जैसी सोचने समझने वाली हस्ती का बनना भी बहुत फ़िज़ूल सी बात है लेकिन सवाल यह है कि हर दिन पैदा होने वाले बच्चों का अनुपात कौन सा विकास कंट्रोल करता है जिससे उनकी आबादी का अनुपात बिगड़ने नहीं पाता, इसके लिए तो बहुत ज़रूरी है कि कोई मर्द औरत के अनुपात को कंट्रोल करे। देखो रोज़ हजारों औरतें प्रेग्नेंट होती हैं, गर्भावस्था में बच्चे का लिंग अगर इत्तिफाक से तय होता तो इस दुनिया में मर्द औरत का अनुपात इतना सही नहीं होता जितना हमें नज़र आता है, इसे ना तो कोई विकास कंट्रोल करता है और ना ही इत्तिफ़ाक और ना ही माँ बाप, यह सरासर बनाने वाले का फैसला है जो हर बारीक से बारीक चीज़ को जानता है।"

"अस्र तुम्हारी बात सौ फीसद ठीक है, यह ना मानने वालों के लिए काफी दलील है, मैं हर चीज़ के जानने वाले रब पर ईमान भी ले आई हूँ, मगर अस्र मैं ऐसी लोगों के साथ बहुत रही हूँ, जिन्हें नहीं मानना होता वो कभी नहीं मानते।"

"ऐसे लोगों को समझाना अल्लाह चाहता भी नहीं है। इत्मिनान रखो जहन्नम ऐसे लोगों का बदला है, जो अल्लाह के किसी एहसान को नहीं पहचानते थे, जो अक्ल की कोई बात नहीं मानते थे। तुम गौर करो कि इस काएनात में इंसान अल्लाह के अरबों खरबों ऐसे ही एहसानों में जी रहा है, मगर उसकी पूजा के बजाए दूसरों की पूजा करे, उसकी बात मानने की बजाए अपने बड़ों के बुतों और दुसरे इंसानों को हद से ज़्यादा महान मान कर उनके सामने झुके, उसको मानने से इन्कार करदे। फिर कोई इंसान समझाना शुरू करे और बरसों तक समझाता रहे, हर तरह समझाए तब भी वो ना समझे ज़िद और दुश्मनी पर उतर आए। अपने फाएदे अपनी इच्छाओं अपने तास्सुब (पूर्वाग्रह) का गुलाम हो जाए, यहाँ तक कि उसे मालूम भी हो जाए कि सामने वाला कोई आम आदमी नहीं बल्कि अल्लाह का भेजा हुआ रसूल है तब भी वह ना माने और आखिर कार अल्लाह के रसूल को हो क़त्ल करने के मंसूबे बनाने लगे तो फिर बताओ अल्लाह को क्या करना चाहिए?"

"सख्त से सख्त सज़ा देनी चाहिए, जहन्नम की सज़ा देनी चाहिए, हमेशा के लिए लानत भेज देनी चाहिए।"

नाएमा ने बिना रुके कहा, अब वह खुदा की अज़मत (महानता) के अहसास से भरी हुई थी, इसलिए खुदा के हर बागी के लिए उसने उसी सज़ा का मशवरा दिया जो थोड़ी देर पहले अस्र बयान कर रहा था, क्यों कि अल्लाह की अजमत का अंदाज़ा कर लेने के बाद आसानी से यह भी अंदाज़ा हो जाता है कि उसके खिलाफ किया गया जुर्म असल में कितना संगीन होता है।

"हाँ जहन्नम इसी बगावत का नतीजा है, मगर याद रखो अल्लाह तआला असल में बहुत रहम और करम करने वाले हैं वो हर छोटे मोटे गुनाह के बदले जहन्नम में नहीं फेकेंगे और ना हर गुनाह गार की सज़ा जहन्नम होगी। बहुत से गुनाहों का बदला दुनिया की परेशानियाँ बन जाती हैं, बहुत से लोग क़यामत के दिन फैसले के मैदान में परेशानियाँ उठाएंगे और यही उनके गुनाहों का बदला बन जाएगा, और बहुत से लोग ऐसे भी होंगे जिन्हें बहुत थोड़े समय के लिए जहन्नम में भेजा जाएगा। रहे जहन्नम के बड़े अज़ाब तो यह सिर्फ आद (अ) की कौम जैसे लोगों का

बदला है जिन्होंने अल्लाह को ललकारा और उससे बदावत की। जबकि उसके वफ़ादार क़यामत के दिन हमेशा के लिए नेमत और इनाम की जगह यानि जन्नत में चले जाएंगे।"

अस्र ने एक बार फिर सज़ा और इनाम के तसव्वुर (सिद्धांत) को सही तरीके से बयान करना ज़रूरी समझा।

"काश लोग उस दिन पर यकीन करलें।"

अपने आप नाएमा के मुह से यह शब्द निकले, अस्र ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा।

"यह काम अब तुम्हे करना है, तुमने तो अपनी आँखों से यह छोटी क़यामत देख ली है, यही आने वाली बड़ी क़यामत का सुबूत है, यह रसूलों की सच्चाई की सबसे बड़ी दलील भी है और अल्लाह की अज़मत (महानता) का परिचय भी।"

अस्र कुछ देर को रुक गया, नाएमा ने महसूस किया कि वह कुछ सुनने की कोशिश कर रहा है, नाएमा ने आस पास देखा दूर दूर तक ऊँचे और बढ़े टीले नज़र आ रहे थे। हलकी नर्म हवा चल रही थी, अपनी तपिश बरसा कर शाम का सूरज अब अपने रब के क़दमों में सजदे में जाता हुआ महसूस हो रहा था। दूर तक फैला आसमान शाम की धूप से लाल हो रहा था। ढलती हुई शाम में कुदरत के यह हसीन मंज़र सुहानी हवा और घर लौटते परिंदों की लय पर अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के वे नगमे गुनगुना रहे थे जिन्हें सुनने के लिए अस्र रुक गया था, यह नगमे अब नाएमा के लिए भी अजनबी नहीं रहे थे। हवा पर तैरता यह नगमा नाएमा के कानों के रस्ते उसके दिल की बस्ती में जाने की इजाज़त चाह रहा था, आखिर कार यह इजाज़त मिल गई, दिल के तार छेड़े और नाएमा की खूबसूरत आँखों में अल्लाह की मुहब्बत के वह झरने फूटने लगे जिन्हें हूद (अ) की कौम ने हमेशा के लिए गवा दिया था।

अस्र ने नाएमा को देखा, वह इंसान नहीं था, अगर होता तो उसके लिए यह फैसला करना मुश्किल होता कि नीले आसमान पर शाम के सूरज की लाली ज़्यादा खूबसूरत है या नाएमा के चहरे कि गुलाबी। उसकी नज़र तो सिर्फ उन आंसुओं पर पड़ी जो आँखों से निकल कर अब नाएमा के गालों को छू रहे थे, उसे मालूम हो चुका था कि इस लड़की को इसके रब ने कुबूल कर लिया है, उसने अपनी बात आगे कही:

''यह टीले क़यामत तक इस बात के गवाह रहेंगे कि अल्लाह दुनिया बना कर तमाशा नहीं देख रहा, वह मुजरिमों को सज़ा देने की पूरी कुदरत रखता है। हूद (अ) की कौम को नूह (अ) की कौम की तरह सज़ा मिल गई है, और बाकियों को क़यामत के दिन मिलेगी। यह टीले इस बात के गवाह हैं, अब यह गवाही तुम दोगी नाएमा, यह गवाही अब तुम दोगी।''

अस्र खामोश हो गया, इस बार नाएमा भी बोली:

''हाँ अस्र, मैं गवाही दूँगी, ज़रूर दूँगी, और वक़्त भी गवाही देगा बेशक इंसान बड़े घाटे में पड़ कर रहेंगे, सिवाए उन के जो ईमान लाए नेक अमल (कर्म) करते रहे, और जो एक दुसरे को सच्चाई पर जम जाने और उसमे सब्र करने की नसीहत करते रहे।''

****

पहला क़त्ल

कुछ देर नाएमा इसी हालत में रही, फिर कुछ सोचते हुए वह अस्र से बोली:

"मगर जब मैं लोगों में गवाही देने खड़ी होउंगी तो उनके भी बहुत से सवाल होंगे, जैसे मेरे थे, क्यों कि वे तो रसूलों के ज़माने में नहीं खड़े होंगे।"

नाएमा को याद आ चुका था कि उसके शुरू के दो सवालों के जवाब अभी बाकी हैं, यही सोच कर उसने यह बात कही थी।

अस्र ने कहा:

"हमारा यह सफर अभी ख़त्म नहीं हुआ है।"

लेकिन लगता है तुम्हे इस सफ़र में आगे बढ़ने से पहले अपने शुरू के दो सवालों के जवाब अभी चाहियें, रसूलों की ज़िन्दगी के कई ज़रूरी चैप्टर अभी बाकी हैं, इस सफ़र के आखरी चैप्टर तक पहुँचते पहुँचते तुम्हारे शुरू के दो सवालों के जवाब तुम्हे अपने आप ही समझ आ जाते, लेकिन अगर अब तुम यही चाहती हो तो चलो पहले इन सवालों के जवाब हो जाएं, इस सफ़र को हम दोबारा यहीं से शुरू कर लेंगे। हाँ तो तुम्हारे सवाल क्या थे?"

"मेरे पहला सवाल था कि खुदा किसी पर ज़ुल्म होने पर भी खामोश क्यों रहता है? इस दुनिया में अल्लाह ने ज़ुल्म और ना इंसाफी की इजाज़त क्यों क्यों दी है? हम यह क्यों ना मानलें कि खुदा है ही नहीं, और यह सब बस यूँ ही अपने आप बे मकसद है। और दूसरा सवाल यह था....."

"दुसरे को अभी रहने दो, क्यों कि पहले सवाल के जवाब में हमें वापस वक़्त में पीछे जाना होगा, मुझे तुम्हे यह समझाना होगा कि आम इंसानों के मामलों में अल्लाह बे शक़ बीच में नहीं आता मगर ऐसा नहीं कि उसे पता नहीं होता, मुझे अब यह दिखाना होगा कि उसकी हिकमत और कुदरत कैसे दोनों साथ साथ चलती हैं, और हाँ....."

अस्र को कुछ याद आया।

"तुम्हें फरिश्तों को भी देखने का शौंक था, चलो एक ऐसी जगह चलते हैं जहाँ तुम्हारे सवाल का जवाब भी है और फरिश्तों के काम करने को भी तुम अपनी आँखों से देख लोगी।"

यह कह कर अस्र ने नाएमा का हाथ पकड़ा और उनका सफ़र एक बार फिर शुरू हो गया। यह सफ़र एक पहाड़ की चोटी पर जा कर ख़त्म हुआ, यहाँ दूर दूर तक हरा भरा मैदानी इलाक़ा नज़र आ रहा था, मगर कोई इंसानी बस्ती दिखाई नहीं दे रही थी, यहाँ पहुँच कर अस्र नाएमा से बोला:

"हम तुम्हारे बाप के ज़माने में आ गए हैं।"

"क्या मेरे अब्बू शाहज़ाद साहब के ज़माने में?"

"नहीं इंसानियत के अब्बू हज़रत आदम (अ) के ज़माने में।"

फिर अस्र ने एक तरफ इशारा करते हुए कहा:

"ज़रा सामने देखो।"

उसके कहने पर नाएमा ने उस तरफ देखा, अस्र के साथ होने की वजह से उसकी आखों में ऐसी ताक़त आ गई थी कि वह बहुत दूर की चीज़ें भी आसानी से देख रही थी जैसे वह खुद वहां हो।

कुछ मर्द और औरतें एक साथ खड़े थे, उनमे से एक नौजवान आगे बढ़ा, उसके पास एक जवान मोटा ताज़ा भेड़ था, उसने उसे लेटा कर कुर्बान किया और उसका मास कुछ दूर उंचाई पर जा कर रख दिया, एक दूसरा जवान आदमी भी आगे बढ़ा और उसने मास से कुछ दूरी पर थोड़ा सा अनाज रख दिया, इसके बाद सब लोग आसमान की तरफ देखने लगे, अचानक आसमान से एक आग सी ज़ाहिर हुई और तेज़ी के साथ ज़मीन कि तरफ आई, वह आग उन लोगों की तरफ ही बढ़ रही थी, नाएमा को आशंका हुई कि वह आग उन लोगों पर गिर जाएगी, मगर यह आग इंसानों और अनाज को छोड़ कर भेड़ के मास पर जा गिरी। सब लोग ख़ुशी में चिल्लाने लगे और लपक कर उसी नौजवान को मुबारक बाद देने लगे जिसने वह मास वहां रखा था। यह नौजवान बहुत खुश हुआ लेकिन नाएमा ने देखा कि दूसरा आदमी अलग खड़ा हुआ है, उसी पल नाएमा यह देख कर चोंक गई कि एक बहुत मोटा और तेज़ रफ़्तार वाला सांप उस आदमी की तरफ बढ़ रहा है जो अलग खड़ा था।

वह घबरा कर अस्र से बोली:

''यह तो बहुत बड़ा सांप है, इस नौजवान को काट लेगा।''

''हाँ यह उसे काट लेगा।'' अस्र ने इत्मिनान से जवाब दिया।

तभी सांप ने नौजवान को काट लिया, नाएमा के मुह से हलकी सी चींख निकली मगर यह देख कर वह हैरान रह गई कि सांप के काटने से नौजवान को कुछ नहीं हुआ, हाँ उसके चहरे पर गुस्से के आसार नज़र आ रहे थे, वह बड़बड़ा रहा था नाएमा ने उसकी आवाज़ सुनी वह कह रहा था:

''मैं इसे छोड़ूंगा नहीं।''

सांप धीरे धीरे दूर चला गया और उसके बाद वह नौजवान भी गुस्से से पैर पटकता हुआ वहां से चला गया।

नाएमा की समझ में कुछ नहीं आया कि यह क्या हुआ है, उसने सवालिया नज़रों से अस्र की तरफ देखा तो अस्र उसका हाथ पकड़ पहाड़ से नीचे उतरना शुरू हो गया, रास्ते में वह उसे समझाते हुए बोला:

''देखो नाएमा यह लोग इसलिए यहाँ जमा हुए थे कि आदम (अ) के दो बेटों हाबील और काबील के बीच एक मसले का हल तलाश करें, इन दोनों की शादी दो लड़कियों से होनी है, मगर जिस लड़की की शादी कानून के मुताबिक (अनुसार) हाबील से होनी चाहिए काबील भी उसी से शादी करना चाहता है।''

''तो फिर यह मसला कैसे हल हुआ?''

''झगड़ा बढ़ा तो हज़रत आदम (अ) ने फैसला दिया कि दोनों अपनी भेंट अल्लाह तआला के हुज़ूर में पेश करें। वे जिसकी कुर्बानी क़ुबूल करेंगे आसमान से आग उतर कर उसी के चढ़ावे को भस्म कर देगी। तुमने अभी यही मंज़र (दृश्य) देखा है, आग हबील की कुर्बानी पर गिरी, अल्लाह की मर्ज़ी पता चल गई।''

''और वह सांप कैसा था।''

वह तुम लोगों का सबसे बड़ा दुश्मन इब्लीस था, तुमने उसे तमसील (प्रतीकात्मक,symbolic) की शक्ल में देखा है, जब कोई बुरा ख्याल दिमाग में आता है तो यही सांप और इसकी औलाद में से कोई शैतान इंसान को काटता है, इस सांप ने काबील को काट लिया और अपना ज़हर काबील के अन्दर छोड़ दिया, यह ज़हर गुस्से और नफरत की शक्ल में इस के अन्दर फैल गया है।"

"अच्छा।" नाएमा ने हैरत से कहा।

"इतनी हैरान में ना हो, यह सांप तुम लोगों को भी आए दिन काटता रहता है, तुम इंसानों के दिल में जितने गलत जज़्बात होते हैं वो सब इसी सांप और इसकी औलाद के डसने से बढ़ते हैं।"

नाएमा के पास अस्र की बात पर कहने के लिए कुछ नहीं था, वह ख़ामोशी से अस्र के साथ आगे बढ़ती रही। उनके चलते समय दिन और रात कुछ हलकी रफ़्तार से बदलते रहे, थोड़ी देर में वो नीचे उतर गए तो अस्र ने कहा:

"आओ पहले काबील के घर चलते हैं।"

यह कहते हुए वह एक झोपड़ी की तरफ बढ़ा और नाएमा का हाथ पकड़े हुए झोपड़ी के अन्दर चला गया।

.....

काबील की बीवी 'अदराह' अपनी कलाई आँखों पर रखे हुए ख़ामोशी से लेटी हुई थी, यह अंदाज़ा करना मुश्किल था कि वह सो रही है या अपने पति के गुस्से से बचने के लिए सोने का बहाना कर रही है जो उसके पास ही ज़मीन पर पैर पटखता टहल रहा था। यह हज़रत हव्वा (अ) के पेट से जन्मा हज़रत आदम (अ) का बेटा था, गुस्से से इसकी शक्ल बिगड़ी हुई थी। इसके अन्दर गुस्से और नफरत के तूफान उठ रहे थे, वह हल्के हल्के बड़बड़ा रहा था।

"इस चरवाहे को यह इज्ज़त भी मिलनी थी, बड़ा मैं हूँ मुझे ज़्यादा मिलना चाहिए, लेकिन अब्बा के बाद अब अल्लाह भी उसी की तरफ हो गया है। मेरे सामने वह है क्या? जानवरों के पीछे भागने वाला एक मामूली चरवाहा, यह अल्लाह का कोई इन्साफ नहीं है कि उसे अच्छी बीवी दी और मुझे.....हुन्न।"

यह आखरी शब्द कहते हुए काबील ने आँखें बंद किये हुए लेटी हुई अदराह की तरफ देखा। अदराह जो बहुत देर से चुप चाप सब कुछ सुन रही थी इन शब्दों पर चुप ना रह सकी, हाथ अपनी आखों से हटा कर उसने काबील की तरह देखते हुए धीरे से कहा:

"अल्लाह को दोष क्यों देते हो? गौर करो कि कुर्बानी के मौक़े पर तुम क्या लाए थे? हाबील ने अल्लाह के हुज़ूर में पेश करने के लिए अपना सबसे अच्छा जानवर कुर्बान किया, और यूँ चढ़ावा क़ुबूल होगा या नहीं इसकी परवाह किये बगैर अपना नुक्सान कर लिया। और फिर उसका सारा मास पेश कर दिया..... और तुम बहुत होश्यार बन रहे थे कि कुर्बानी पेश करने के बजाए ज़रा सा अनाज रख दिया, आग ने जला दिया तो खूबसूरत बीवी मिलेगी नहीं तो तुम्हारा अनाज तो जलने से बच ही जाएगा।"

अदराह ने बढ़ी ही समझदारी से काबील की नीयत की पोल खोल दी। काबील से यह सच्चाई बर्दाश्त नहीं हुई वह गुस्से से चिल्लाया:

"तो क्या सारा अनाज ले जाता? आग ने आसमान से उतर कर जला ही देना था, सुन रही है ऐ बेवक़ूफ़ औरत! जो कुछ भी मैं ले कर जाता, चाहे सारा अनाज ले जाता, आग ने आसमान से उतर कर उसे जला ही देना था, यही कहा था अब्बा ने और हुआ भी ऐसा ही।"

फिर वह दांत पीसता हुआ बोला:

"मैं बड़ा हूँ मेरी कुर्बानी क़ुबूल होनी चाहिए थी, मगर आग ने उनकी कुर्बानी को जलाया, काश यह आग कुर्बानी के बजाए हाबील को जला देती तो असदाह मेरी होती, मगर अब तो तुम्हारे जैसी बुरी शक्ल और भद्दी औरत मेरा मुकद्दर है।"

"मैं बुरी शक्ल हूँ ना भद्दी हूँ, नगर बात यह है कि तुम्हारी आखों पर जलन की पट्टी बंध चुकी है, तुम अपने भाई से मुहब्बत करने की बजाए उससे जलते हो, तुम जानते हो कि वह बहुत नेक हमदर्द और नर्म इंसान है। खुदा की बहुत इबादत करने वाला बंदा है, अगर कानून यह होता कि असदाह की शादी तुम से हो और मेरी हाबील से तो वह ख़ामोशी से फैसला क़ुबूल करके सारी ज़िन्दगी हँसी ख़ुशी गुज़ार देता। मगर खुदा के कानून के मुताबिक (अनुसार) मैं तुम्हारी और असदाह उसकी बीवी बनी। तुम्हे भी कानून को मानना चाहिए, मगर तुम ज़िद पर उतर आए और असदाह से शादी की मांग करने लगे, कुर्बानी देने की ज़रूरत इसी लिए हुई, मगर यहाँ भी

तुम कन्जूस बन गए, बेकार वाला अनाज अल्लाह के हुज़ूर में पेश किया, इसी लिए तुम्हारी कुर्बानी क़ुबूल नहीं हुई, असल मसला दूसरों में नहीं तुम्हारे अन्दर है, खुद को ठीक करो। तुम मुझे, अब्बा और हाबील पर इलज़ाम देते देते अब अल्लाह को भी इलज़ाम देने लगे हो। काबील तुम शैतान के फंदे में फस चुके हो, तुम जानते नहीं उसने अब्बा और अम्मा के साथ क्या किया था? किस तरह उन्हें अल्लाह की फरमाबरदारी (आज्ञाकारिता) से हटाया था? वह तुम्हे भी खुदा का मुजरिम बना कर दम लेगा।''

''बंद करो यह बकवास।''

काबील गुस्से से बे काबू हो कर चिल्लाया, उस पर वाकई शैतान सवार हो चुका था, उस की शक्ल भी शैतानों की तरह हो रही थी।

''मैं अब इस फसाद की जड़ को ख़त्म करके ही दम लूँगा, आग ने हाबील को जला कर नहीं मारा तो क्या हुआ, मैं खुद उसे मार डालूँगा, मैं उसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा, मैं उसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।''

यह कह कर काबील ने एक कौने में पड़ा कुल्हाड़ा उठाया और और अपनी बात दोहराता हुआ घर से बहार निकल गया, अदराह उसे डरे हुए चहरे से देखती रह गई।

.....

अस्र ने नाएमा को साथ लिया और काबील के पीछे पीछे बाहर निकल आया, वह आगे था और यह दोनों उसके पीछे पीछे चल रहे थे। नाएमा मामले की संगीनी को समझ चुकी थी, उसे डर लग रहा था, उसने सहमे हुए लहज़े में अस्र से पूछा:

''यह कहाँ जा रहा है?''

''हबील को क़त्ल करने।'' अस्र ने काबील की तरफ देखते हुए जवाब दिया।

नाएमा ने देखा कि काबील बड़ी तेज़ी से एक पगडण्डी की तरफ मुड़ चुका है और पूरे इरादे से कुल्हाड़ी लहराता हुआ आगे बढ़ रहा है, नाएमा ने घबरा कर अस्र से कहा:

''आप इसे रोकते क्यों नहीं?''

अस्र ने मुस्कुरा कर कहा:

"यह मेरा काम नहीं है, मैं सिर्फ गवाह हूँ किसी चीज़ में दखल नहीं दे सकता, यह अल्लाह का फैसला है और हम उसके हुक्म से मुह फेरने की मजाल नहीं रखते, यह कारनामा सिर्फ तुम इंसान ही कर सकते हो।"

नाएमा इतनी डरी हुई थी कि वह अस्र की आखरी बात की चुभन महसूस नहीं कर सकी, वह दोनों काबील के पीछे चले जा रहे थे, नाएमा ज़रा पीछे थी और अस्र आगे यह देख कर अस्र ने हाथ पीछे करके नाएमा का हाथ अपने हाथ में लिया और उसे अपने बराबर कर लिया, अस्र ने जैसे ही उसका हाथ पकड़ा नाएमा के दिमाग के परदे खुल गए, वह यह देख कर हैरान रह गई कि काबील अकेला नहीं चल रहा था बल्कि उसके साथ वेसे ही दो हयूले चल रहे हैं जिस तरह उसने शुरू में अस्र को देखा था।

अस्र ने यही दिखने के लिए नाएमा का हाथ पकड़ा था, उसने खुद तफसील से बताते हुए कहा:

"यह दो फ़रिश्ते हैं जो काबील के साथ रहते हैं, ज़ाहिर है वह उन्हें देख नहीं सकता। इस वक़्त अल्लाह की मंशा नहीं है कि हाबील को क़त्ल ना किया जाए, अल्लाह तआला काबील को सोचने का एक मौका और देना चाहते हैं, इसलिए देखो अब क्या होता है।"

चलते चलते काबील एक छोटी सी पहाड़ी के नीचे पहुंचा, नाएमा ने देखा कि उस जगह पहुँचते ही काबील के साथ चलने वाले एक हयूले ने ऊपर की तरफ इशारा किया, उसके साथ ही पहाड़ी से एक पत्थर लुड़का और काबील पर आ गिरा, यह इतनी जल्दी में हुआ कि काबील को संभलने का मौका ही नहीं मिला और वह ज़ख़्मी हो गया, उसके मुह से बुरी बुरी बाते निकालने लगी वह हाबील को गलियां दे रहा था। नाएमा ने देखा कि बाएँ तरफ के हयूले ने कुछ लिखना शुरू कर दिया है, अस्र ने नाएमा को समझाते हुए कहा:

"तुमने देखा अल्लाह जो चाहे कर सकता है, अल्लाह चाहे तो काबील कभी अपने भाई को क़त्ल नहीं कर सकता, वह हज़ार तरीकों उसे रोक सकता है।"

"यह हयूला क्या लिख रहा है?"

"यह बाएँ हाथ का फ़रिश्ता था जो उसकी ज़ुबान से निकला वह एक एक शब्द लिख रहा था, जो कुछ भी काबील ने अपनी ज़ुबान से कहा वो सब सेव किया जा रहा है, क़यामत के दिन यह सब कुछ पेश किया जाएगा।" तभी काबील उठा और मुश्किल से खुद को संभालता हुआ वापस घर की तरफ चलने लगा।

अस्र ने कहा:

"यह बाज़ नहीं आएगा आओ मैं तुम्हे दिखाऊं कि यह अपने भाई को कैसे मारेगा।"

यह कह कर अस्र नाएमा का हाथ पकड़े हुए तेज़ी से आगे बढ़ने लगा, उसके साथ साथ दिन भी तेज़ी से बदलने लगे, आखिर कार वह एक और खूबसूरत जगह पहुंचे, नाएमा ने दूर से देख लिया एक मर्द और औरत साथ साथ बैठे हुए हैं, अस्र ने बताया:

"हम कई दिन बाद का मंज़र (दृश्य) देख रहे हैं, यह हाबील और उसकी बीवी हैं, और वो देखो दूर से काबील आ रहा है।"

नाएमा ने देखा बहुत दूर से काबील आ रहा है जबकि हाबील और उसकी बीवी असदाह काबील के आने से बे खबर थे।

.....

वो दोनों एक पेड़ के तने से टेक लगाए बैठे थे, चारो तरफ फैले घास के मैदान में उनके जानवर चर रहे थे, मगर हाबील का ध्यान अपने जानवरों पर नहीं असदाह की तरफ था, वह उसे मुहब्बत से देख रहा था।

"तुम मुझे देखना छोड़ो और अपने जानवरों की फ़िक्र करो, कहीं कोई भेड़या उन्हें मार ना खाए।"

असदाह एक पल को रुकी और अफ़सोस के लहज़े में बोली:

"भेड़ये से ज़्यादा मुझे काबील का डर है, उसने कुर्बानी के बाद क्या कहा था कि वह तुम्हे मार डालेगा।"

यह बात कहते हुए असदाह की आँखों में अंदेशो के साए तैरने लगे।

''तुम फ़िक्र (चिन्ता) ना करो, काबील मेरा भाई है, वह नाराज़ है लेकिन थोड़े दिनों में ठीक हो जाएगा।''

''नहीं वह ठीक नहीं होगा, अदराह मुझे बता रही थी कि उसके इरादे अच्छे नहीं हैं, तुम अपनी हिफाज़त का कोई इन्तिज़ाम करो हाबील।''

''मैं क्या करूँ? वह अगर मुझे मारने का प्लान बना रहा है तो क्या मैं भी उसे मारने का प्लान बनाऊं? वह अगर मुझे मारेगा तो इस गुनाह का बोझ वह खुद उठाएगा, और साथ ही क़यामत तक होने वाले सारे क़त्ल का गुनाह भी उसे मिलेगा।''

''तुम मरने की बातें ना करो, मुझे बहुत डर लग रहा है, मगर....''

''मुझे कुछ नहीं होगा।'' हाबील ने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा।

''हम हमेशा साथ रहेंगे।''

''अच्छा यह बताओ फिलहाल जीने के लिए कुछ खाने को लाई हो?''

''अरे हाँ याद आया अम्मा ने कहा था कि आज खाना वे देंगी, तुम यहीं ठहरो मैं अम्मा से खाना लेकर आती हूँ।''

असदाह यह कह कर तेज़ी से खड़ी हो गई।

''जल्दी से आ जाना! मैं तुम्हारा इंतिज़ार कर रहा हूँ।''

यह कहते हुए हाबील उसे जाता हुआ देख रहा था, जब वह चली गई तो हाबील को अपने जानवरों की फ़िक्र याद आई। वह खड़ा ही हुआ था कि अचानक किसी ने उसे ज़ोर से धक्का दिया, वह लड़ खड़ा कर गिर पड़ा, हमला करने वाले ने ज़ोर से एक लात उसके पेट पर मारी, वह दर्द से तड़पने लगा, उसने धुंदली आँखों से देखा, मारने वाला कोई और नहीं उसका अपना भाई काबील था।

काबील के हाथ में एक कुल्हाड़ा था, उसके मुह से निकला:

''भाई।''

जवाब मिला:

"भाई नहीं दुश्मन, जान का दुश्मन, मैं तुझे मार कर अपनी बेईज्ज़ती का बदला लूँगा।"

"मुझे मार कर तुम बच नहीं सकोगे।"

"मैं यहाँ से भाग जाऊँगा।"

"क्या खुदा से भी भाग कर कहीं जा सकते हो।"

"मैं खुदा का नाम भी नहीं सुनना चाहता, उसने तुम को मुझ पर तरजीह (प्राथमिकता) दी है।"

"नहीं ऐसा नहीं है, बल्कि तुमने खुद अपने आप को अपनी खुवाहिश (इच्छाओं) को और शैतान को खुदा पर तरजीह (प्राथमिकता) दी है, अल्लाह से डरो और रुक जाओ, वरना इस दुनिया में तुम भाग भी जाओ तब भी क़यामत के दिन अल्लाह की पकड़ से नहीं बच सकते।"

"कोई क़यामत नहीं आएगी, कोई हिसाब नहीं होगा, ज़िन्दगी इसी दुनिया की है और इस दुनिया में अब तुझे मेरे हाथों से कोई नहीं बचा सकता।"

यह कहते हुए काबील ने पूरी ताक़त से कुल्हाड़ा घुमाया और अगले पल ज़मीन हाबील के खून से लाल हो गई, काबील भागता हुआ दूर चला गया, हाबील की चींख निकली तो दूर जाती हुई असदाह लौट कर भागती हुए वापस आई, उसे खून में लतपत देख कर वह चींख मार मार कर रोने लगी। वह रो रही थी और अल्लाह को इंसाफ की दुहाई दे रही थी, उसका मुह आसमान की तरफ था मगर वहां पूरी तरह ख़ामोशी थी।

.....

यह सारी घटना नाएमा के सामने हुई, नाएमा जानती थी कि वह कुछ भी नहीं कर सकती। उसकी आँखों के सामने इंसानियत का पहला क़त्ल हो चुका था। एक मासूम बे गुनाह इन्सान बे रहमी से मार दिया गया था, वह उसे रोक नहीं सकी और जो रोक सकता था उसने भी नहीं रोका। असदाह की चीखों ने नाएमा को हिला कर रख दिया था, उसे अपनी बेबसी का बहुत अहसास हो रहा था, साथ ही उसमें बहुत गुस्सा भर गया था, उसने अस्र को झिन्जोड़ते हुए कहा:

"तुमने उसे क्यों नहीं रोका, अल्लाह ने उसे क्यों नहीं रोका, यह तो कोई इन्साफ नहीं हुआ, यह तो सरासर ज़ुल्म है।"

"नाएमा जज़्बाती मत बनो, तुम देख चुकी हो कि यहाँ हर तरफ फ़रिश्ते मौजूद हैं, वे जब चाहें अल्लाह के हुक्म पर कुछ भी होने से रोक सकते हैं, मगर वे यूँ बीच में पड़ते रहेंगे तो इंसानों की आज़ादी ख़त्म हो जाएगी। फिर किसी मुजरिम को ना सज़ा मिलेगी ना किसी के सब्र के बदले में जन्नत मिलेगी। अल्लाह की ख़ामोशी का मतलब उसकी बेबसी और कमज़ोरी नहीं, यह इम्तिहान है इसमें ऐसा ही होगा, मगर यहाँ और भी बहुत कुछ होता है लेकिन वो तुम्हारी नज़रों से ओझल रहता है, अब में तुम्हे वो दिखाता हूँ।"

अस्र ने नाएमा के जवाब का इंतजार किये बगैर उसका हाथ पकड़ा और आगे बढ़ गया, फिर से दिन रात और आस पास की चीज़े तेज़ी से बदल रही थी। एक जगह जा कर अस्र रुक गया और वक़्त भी ठहर गया। नाएमा ने देखा कि एक बहुत छोटी सी बस्ती थी जिसमे गिनती के कुछ कच्चे घर बने हुए थे। एक घर में अस्र नाएमा को लेकर चला गया, यहाँ एक चारपाई पर बहुत बूढ़ा आदमी अपनी ज़िन्दगी की आखरी साँसे गिन रहा था, उसके आस पास कुछ लोग खड़े थे। नाएमा ने अस्र की तरफ देखा तो उसने जवाब दिया:

"यह काबील है, मौत के दरवाज़े पर बेबसी से पड़ा हुआ काबील। तुमने कहा था कि यहाँ इंसाफ नहीं होता, यह देखो अल्लाह का इन्साफ अब शुरू हो रहा है, अल्लाह तआला किसी मुजरिम को पकड़ने में जल्दी नहीं करते, उनका हर मुजरिम वक़्त के साथ बहता हुआ खुद उनकी अदालत में आ जाता है। अब मौत के साथ ही काबील की सज़ा शुरू होगी, इस तरह कि क़यामत के दिन तक जो भी क़त्ल होगा उसके गुनाह का एक हिस्सा काबील के नाम लिखा जाएगा, जबकि हाबील के क़त्ल करने का जुर्म अलग है, इसे बहुत बुरा अज़ाब दिया जाएगा, ज़रा गौर से देखो क्या हो रहा है मगर दिल ज़रा मजबूत रखना।"

इसके साथ नाएमा की आखों ने वह देखना शुरू कर दिया जो किसी और को नज़र नहीं आरहा था। उस झोपड़ी में अज़ाब के बहुत डरावने फ़रिश्ते मौजूद थे, नाएमा ने कभी सपने में भी इतने डरावने लोग नहीं सोचे थे, उनको देखने के साथ ही नाएमा थर थर कांपने लगी।

अज़ाब के फ़रिश्ते मौत के फ़रिश्ते के इंतजार में थे, कुछ ही पलों में मौत का फ़रिश्ता भी आ गया, उसके चहरे पर इतना गुस्सा था कि नाएमा की ख़राब हालत और ख़राब हो गई, अस्र ने उसे सहारा दिया और बाहर ले आया।

****

पत्थर तराशने वाले और पत्थर दिल

थोड़ी देर में नाएमा की हालत कुछ संभल गई, अस्र ने मुस्कुराते हुए पूछा:

"अब क्या ख्याल है तुम्हारा? इंसानों को अल्लाह तआला ने इम्तिहान की वजह से ज़ुल्म की इजाज़त तो दे रखी है, मगर इजाज़त का यह मतलब बिलकुल नहीं कि मुजरिम उसकी पकड़ से बच गया है, सज़ा और इनाम हर हाल में मिलता है।"

"हाँ मैंने देख लिया मगर...."

नाएमा आखिर कार एक फलसफी (दार्शनिक) थी ऐतराज़ किये बिना न रह सकी।

"कितने इंसान अपनी आँखों से यह सब कुछ देख सकते हैं?"

"कोई नहीं देख सकता और ना उन्हें देखना चाहिए, वरना फिर यह बताओ कोई गुनाह कैसे कर पाएगा, और फिर तो किसी नेकी का भी कोई इनाम नहीं होना चाहिए। फ़रिश्ते हों, मैं हूँ या कोई और मखलूक (रचना) हम से ज्यादा अल्लाह का कोई वफादार नहीं है, मगर हमारे लिए कोई इनाम नहीं है, इस कि वजह यह है कि हम सब कुछ अपनी आँखों से देखते हैं, हमें हर चीज़ की हकीक़त की समझ होती है। जबकि तुम इंसान सिर्फ भौतिक दुनिया में जीते हो, तुम्हे अपनी अक्ल समझ बूझ का इस्तिमाल करके इशारों और दलीलों से हकीक़त को जान लेना चाहिए। इसके बाद हर तरह की मुश्किल झेल कर तुम्हे नेकी की राह पर चलते रहना चाहिए, जन्नत इसी का इनाम है। लेकिन तुम भौतिक दुनिया ही में रच बस जाते है जिससे ज़ुल्म और ना इंसाफी जन्म लेती हैं, यह ज़ुल्म अल्लाह तआला नहीं बल्कि इंसान करते हैं, इसी का बदला जहन्नम है।"

अस्र बोल रहा था और नाएमा ख़ामोशी से सुन रही थी, फिर उसने नाएमा का हाथ पकड़ते हुए कहा:

"लेकिन ऐसा नहीं है कि दुनिया में सज़ा या इनाम बिलकुल भी नहीं मिलता। तुम्हे याद ही है जो तुमने हज़रत नूह (अ) और हज़रत हूद (अ) की कौमों की सज़ा भी देखी और नेक लोगों को

जो इनाम दिया गया वो भी देखा। रसूलों की कौमों की सज़ा और इनाम से अल्लाह तआला का मकसद यही है कि क़यामत के दिन की सज़ा और इनाम और अल्लाह के होने का एक ऐसा सुबूत इंसानियत के सामने मौजूद रहे जिसे ठुकराना हर ऐसे इंसान के लिए मुमकिन ना हो जो ईमानदारी से सोचता है। मेरी बात फिर ध्यान से सुनो रसूलों की कौमों की सज़ा और इनाम से अल्लाह तआला का मकसद यही है कि क़यामत के दिन की सज़ा और इनाम और अल्लाह के होने का एक ऐसा सुबूत इंसानियत के सामने मौजूद रहे जिसे झुठलाया ना जा सके।"

"हाँ तुम सही कह रहे हो लेकिन अब दुनिया में ना तो नूह (अ) की कौम के निशान ऐसे बचे हैं कि एक आम इंसान आसानी से सही नतीजे पर पहुँच सके और ना ही हूद (अ) की कौम के।" नाएमा ने ऐतराज़ किया तो असर ने जवाब में कहा:

"तुम अगर पहला सवाल बीच में ना उठाती तो मैं तुम्हे ऐसी कौमों में लेकर जाता जिनके के निशान साफ़ तौर पर आज भी बाकि हैं।"

"किन कौमों के?"

"चलो मैं तुम्हे दिखाता हूँ।"

यह कह कर अस्र ने उसका हाथ पकड़ा और कुछ देर में वो वापस उन्ही रेत के टीलों पर खड़े थे जहाँ हूद (अ) की कौम पर अज़ाब आया था।

समय की डोली में बैठ कर माज़ी (भूतकाल) और मुस्तकबिल (भविष्य) का सफ़र इतनी तेज़ी के साथ तय करना वाकई हैरत से भरा था। नाएमा ने अस्र से कहा:

"यह तो हम फिर वहीं आ गए जहाँ हूद (अ) की कौम पर अज़ाब आया था, लेकिन अब यहाँ से हमारी अगली मंजिल क्या है?"

अस्र ने जवाब दिया:

"हूद (अ) के साथ जो लोग बचे थे, वे अरब के दक्षिण से निकल कर उत्तर की तरफ गए हैं। तुमने इस कौम कि सज़ा तो देखली थी मगर यह नहीं देखा था कि हूद (अ) पर ईमान लाने वालों के साथ क्या हुआ। चलो मैं तुमको उनसे भी मिलवा दूं, ताकि तुम फिर से अपनी आँखों से

यह भी देख लो कि अल्लाह तआला किस तरह ईमान लाने वालों को अज़ाब से अलग कर के ज़मीन का मालिक बना देते हैं और उन्हें तरक्की देते हैं।"

यह कह कर अस्र ने नाएमा को साथ लिया और कुछ कदम बढ़ाए, कुछ ही देर में वे एक कौम के करीब पहुँच गए। यह लोग हूद (अ) की कौम के बचे हुए लोग थे और तेज़ी से आगे बढ़ते जा रहे थे उनको अल्लाह के पैगम्बर हूद (अ) गाइड कर रहे थे। उन सब की ज़ुबानों पर अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) के शब्द थे, उनको बताया जा चुका था कि मुजरिमों के साथ क्या हुआ है।

अस्र उनको दूर तक जाते हुए देखता रहा फिर नाएमा से बोला:

"यही लोग अब अगले सरदार होंगे, जिन्हें बेवकूफ़ समझा गया, जो समाज में कमज़ोर माने जाते थे, जो नीजी फाएदे से ज़्यादा अख्लाकी उसूलों (नैतिक मूल्यों) को अहमयत देते थे, जो अपने बड़ों के बुतों और तास्सुब (पूर्वाग्रह) के बजाए सच्चाई के आगे झुके, जिन्होंने जज़्बात और अपनी ख्वाहिशों (इच्छाओं) के बजाए अक्ल और दलील की बात को क़ुबूल किया, जिन्होंने सच्चाई का साथ उस वक़्त दिया जब उसके साथ कोई नहीं था, जिन्होंने अपने रब के लिए हर विरोध को झेला, हर ताने को बर्दाश्त किया, हर इलज़ाम को गवारा किया। यही लोग अब फले फूलेंगे, उनकी तादाद बढ़ती चली जाएगी और कुछ नस्लों के बाद यह एक महान सभ्यता कि बुन्याद डालेंगे, इनकी कुर्बानियों का फल इनकी आने वाली नस्लें भी चाखेंगी। यह दुनिया में इनका इनाम है जबकि हमेशा रहने वाली जन्नत इनका असल इनाम है जो मरने के बाद इनको मिलेगा।

लेकिन जैसा कि मैंने कहा था सदियों के गुज़र जाने के बाद इनकी नस्ल फिर शैतान को अपना दोस्त बनाएगी, वे भी बे दलील के बहुत से देवता बनाएँगे, फिर यह समूद की कौम कहलाएगी और इनमें हज़रत सालेह (अ) आएँगे।"

अस्र यह बाते बताता जा रहा था और चल भी रहा था सदियों का सफ़र लम्हों में पूरा हो रहा था।

"अब हम समूद की कौम के इलाक़े में जा रहे हैं जहाँ अल्लाह ने हज़रत सालेह (अ) को पैगम्बर बना कर भेजा है। वे अपनी कौम में एक बे मिसाल इंसान समझे जाते थे और कौम उन्हें एक बड़े लीडर की हेस्यत से देख रही थी, मगर पैगम्बरी मिलने के बाद उन्होंने लोगों को एक रब की इबादत की तरफ हर तरह से बुलाया, इन्कार करने पर अज़ाब की खबर भी दी, जवाब में वही

कहा गया जो नूह (अ) की कौम ने कहा था। गिनती के चंद लोगों ने ही उनकी बात को माना है, जबकि बाकि लोगों की बगावत बढ़ती जा रही है और अब उन्होंने एक चमत्कार की मांग की है। अल्लाह तआला ने चमत्कारी तौर पर एक ऊंटनी उनके सामने ज़ाहिर की है, मगर फिर भी उन्होंने ईमान लाने से इन्कार कर दिया। तो अब हुक्म हुआ है कि एक दिन बस्ती के कुवें से अल्लाह की ऊंटनी पानी पीयेगी और एक दिन बाकी बस्ती। यह उनके कुफ्र की एक छोटी सी सज़ा है और साथ में एक धमकी भी। उन्हें बता दिया गया है कि अगर उन्होंने ऊंटनी को कोई नुक्सान पहुँचाने की कोशिश की तो अज़ाब का शिकार हों जाएंगे।"

"मगर यह मोहलत क्यों मिली? फ़ौरन अज़ाब क्यों नहीं आया?" नाएमा ने सवाल किया।

"दरअसल निशानी देखने के बाद इस कौम में एक दिमागी कश्मोकश (असमंजस) पैदा हो गई है, उनके दिल अपने कुफ्र से डगमगा गए हैं, जबकि कौम के नो बड़े सरदार अपने कुफ्र पर कायम हैं और लोगों को ईमान लाने से रोक रहे हैं। इस मोहलत से अल्लाह ने मानो उन आम लोगों को एक मौका और दिया है कि वे उन सरदारों के बजाए सच्चाई का साथ दें। लेकिन अगर यह अब भी कुफ्र पर जमे रहे तो सब मारे जाएंगे।"

यह बातें करते हुए नाएमा और अस्र समूद की कौम के इलाक़े में जा पहुंचे। नाएमा को मालूम था वह एग्री कल्चर के दौर में है, यहाँ तरक्की की निशानी वही थी जो उसके सामने थी, यानि दूर दूर तक खेतों की हरयाली थी, जगह जगह खूबसूरत बाग़ जिनमे कई तरह के फलों के पेड़ लगे हुए थे। बहुत से बाग़ ऐसे थे जिनके अन्दर कियारियों में फसलें उगी हुई थीं, खेतों के बीच में पानी की नदियाँ बह रही थीं, जबकि चारों तरफ खजूर के पेड़ लगे हुए थे। कुल मिला कर यहाँ बहार ही बहार छाई हुई थी।

दूर दूर तक यही मंज़र था, एक मैदानी इलाक़ा था जिसके साथ साथ पहाड़ भी थे, वे दोनों यह रौनक देखते हुए आगे बढ़ रहे थे। नाएमा ने यह सब देख कर अस्र से कहा:

"यह इलाक़ा तो आद (अ) की कौम से भी ज़्यादा हरा भरा है, क्या अभी ऐसा हुआ है या समूद की कौम पर खुदा शुरू से ही ऐसे मेहरबान रहा है?"

"तुम्हे तो मैं अल्लाह का कानून बता चुका हूँ, किसी कौम पर रसूल आने के बाद अज़ाब के साथ अल्लाह का ईमान वालों पर पहला इनाम यह होता है कि उन्हें अज़ाब से अलग करके बचा

लिया जाता है, ठीक ऐसे ही क़यामत में होगा वफादारों को जहन्नम से अलग कर के बचा लिया जाएगा। दूसरा इनाम यह होता है कि उन्हें ज़मीन पर सरदार बनाया जाता है, ठीक ऐसे ही क़यामत में वफादारों को जन्नत की बादशाही दे दी जाएगी।

समूद की कौम ने बचे हुए आद की कौम के ईमान वालों से जन्म लिया, शुरू ही से इन पर अल्लाह का ऐसा करम ऐसे रहा कि इनकी नसल खूब बढ़ी। इनके इलाक़े में सेकड़ों सालों से मौसम पूरी तरह महरबान रहा, बारिश वगैरह इनकी खेतियों के हिसाब से सही समय पर होती रही। बिमारियों से इनके इलाक़े बचे रहे, इस लिए यह खूब फले फूले हैं। तो असल अहसान तो शुरू के ईमान वालों पर था लेकिन उनके सिले में उनकी अगली नस्लों पर भी इनाम किया गया, यह अलग बात है कि नेमतें पा कर इन्होने माल में तो बहुत तरक्की की लेकिन अल्लाह से वफादारी छोड़ बैठे।''

''यह कौन सा इलाक़ा है?''

''यह इलाक़ा मदाइन सालेह कहलाता है और इसके सुबूत तुम्हारे ज़माने तक मौजूद हैं, हालांकि अब यह एक वीरान इलाक़ा बन चुका है। जिस देश को तुम सऊदी अरब कहते हो उस के उत्तरी क्षेत्र में मदीने से जॉर्डन जाते हुए यह इलाक़े आते हैं।''

''थोड़ी देर में बस्ती दिखना शुरू हो गई, बड़े बड़े महल से बने हुए नज़र आ रहे थे।

''उन्हें देख कर नाएमा ने कहा:

यह कौम तो घर बनाने में भी हूद (अ) की कौम से आगे निकल गई।''

''तुमने ठीक कहा, लेकिन इनकी कारीगरी में इनकी महारत का असल सुबूत यह पहाड़ हैं, इन लोगों ने पहाड़ों को तराश तराश कर उनके अन्दर आलीशान घर बना रखे हैं, यह घर सख्त गर्मी में भी बहुत ठन्डे रहते हैं, तुम इन घरों को अन्दर से देखोगी तो हैरान रह जाओगी।''

अस्र की बात पर नाएमा ने पास के एक पहाड़ को गौर से देखा तो हैरान रह गई, यह एक अकेली पहाड़ी सी थी जिसमे दो दरवाज़े बने हुए थे, यह किसी गुफा के मुह जैसे नहीं थे बल्कि इन्हें बकाएदा दरवाज़े की तरह ही बनाया गया था, इस पर कमाल यह कि दरवाज़े के ऊपर और

दोनों तरफ पहाड़ को बराबर कर के बहुत खूबसूरती से अलग अलग डिज़ाइन तराशे गए थे, यह कमाल का हुनर था।

नाएमा ने हैरत से कहा:

"यह लोग तो अपनी कला में बहुत तरक्की पर पहुँच चुके हैं, और वो भी इतने पुराने ज़माने में।"

"इनकी कला का सही अंदाज़ा इन घरों को अन्दर से देख कर होगा, आओ मैं तुम्हे इसी घर में ले चलूँ, यह एक बहुत मालदार औरत अनीज़ाह का घर है जो एक बड़े सरदार की बीवी है। जवानी में यह जिस्म फरोशी का धन्दा करने वाली औरत थी, बस्ती का एक बड़ा सरदार इस के हुस्न पर फ़िदा हो गया और इससे शादी कर ली और इसे यह शानदार घर बना कर दिया। अब इसकी एक बेटी है जो इससे भी कहीं ज़्यादा खूबसूरत है, अनीज़ाह ने इस वक़्त बस्ती के एक ताकतवर सरदार केदार को अपने घर बुला रखा है और उसे हज़रत सालेह (अ) की ऊंटनी को क़त्ल करने पर उकसा रही है, बाकि तुम अन्दर चल कर खुद देखलो कि क्या हो रहा है।"

.....

अनीज़ाह का घर जैसा बाहर से बे मिसाल था ऐसा ही अन्दर से भी शानदार था। अन्दर जाते समय नाएमा सोच रही थी कि यह कोई गुफा की तरह अँधेरा और ऊबड़ खाबड़ दीवारों वाला कोई घर होगा, लेकिन अन्दर जाते ही नाएमा को लगा कि वह एक अच्छे खासे घर में आगई है। मैन गेट एक बरामदे में खुल रहा था जिसकी दीवारे सीधी थीं छत ऊंची थी जबकि तीनों तरफ चार पांच क़दमों की सीढयाँ बनी थी जो ऐसे ही बड़े बड़े कमरों में जा रही थी, सीढयों की हर पैड़ी के दोनों सिरों पर रौशनी के लिए चिराग जल रहे थे, जिससे सब चीज़े साफ़ नज़र आरही थी खास कर दीवारों पर बनी नक्काशी बहुत उभार कर सामने आगई थी।

अस्र उसका हाथ पकड़े हुए उसे बाएँ कमरे की तरह ले गया, यहाँ चोकी पर एक लम्बा चौड़ा नौजवान बैठा हुआ था, यह केदार था, उसके साथ एक अधेड़ उम्र की औरत बैठी हुई थी, जिसे देख कर अंदाज़ा होता था कि वह जवानी में बहुत खूबसूरत रही होगी।

यह दोनों अन्दर आए तो उस वक़्त वह नौजवान उस औरत से कह रहा था:

"अनीज़ाह तुम जानती हो कि मैं बुज़दिल बिलकुल नहीं हूँ, मैं बड़े बड़े बहादुरों को हरा सकता हूँ। पूरी कौम में मेरी ताक़त और हिम्मत की धूम है, मगर उस ऊंटनी की बात अलग है।"

"ऊंटनी की बात अलग नहीं असल बात यह है कि तुम्हारे अन्दर डर बैठ गया है, इस डर ने तुम्हे बुज़दिल बना दिया है।"

अनीज़ाह ने तंजिया (व्यंग्य के) अंदाज़ में कहा तो केदार झल्ला उठा:

"मैंने कहा ना मैं बुज़दिल नहीं हूँ, क्या तुम नहीं जानती कि सालेह एक इज्जतदार और शरीफ आदमी है। कौम में उसकी बहुत इज्ज़त थी, फिर उसने हमारे बुतों को झूठा कहा और एक अल्लाह की इबादत करने को बुलाना शुरू कर दिया। कुछ बेफकूफों को छोड़ कर जिन्होंने उसकी बात मानली हम सब ने उसका भरपूर विरोध किया। फिर हम ने उस से मांग की कि अपनी सच्चाई के सुबूत में कोई करिश्मा दिखाओ, यह ऊंटनी वही करिश्मा है जो आम जानवरों की तरह नहीं बल्कि चमत्कारी तौर पर पैदा हुई है, और तुम शायद भूल रही हो सालेह ने कहा था कि अगर हमने ऊंटनी को कुछ किया तो पूरी कौम पर ज़रूर अज़ाब आएगा।"

"अरे यह सब बेकार की धमकियाँ हैं।" अनीज़ाह ने तुनक कर कहा।

"उस ऊंटनी ने हमारा नाक में दम कर दिया है, भला बताओ यह कोई बात है कि एक दिन बस्ती का सारा पानी यह ऊंटनी पी जाती है और एक दिन बाकि लोगों के पानी लेने का दिन होता है। यह कितनी बड़ी मुसीबत है तुम्हे इसका कुछ एहसास भी नहीं।"

"मुझे एहसास है मगर....."

"अगर मगर कुछ नहीं, यह ऊंटनी सिर्फ और सिर्फ एक जादू का असर है। सालेह ने जादू सीख लिया है और उसी के ज़ोर से वह तुम्हे डरा रहा है। एक बार यह ऊंटनी मार दी जाएगी तो सब को मालूम हो जाएगा कि यह सिर्फ जादू था, यह किसी एक खुदा की कुदरत नहीं थी।"

"अनीज़ाह बोल रही थी और केदार के चहरे पर उलझन के आसार नज़र आ रहे थे, अनीज़ाह को अंदाज़ा हो गया कि अब तुरुप की चाल चलने का समय आ गया है, उनमे बड़ी चाहत से कहा:

"केदार मैं तुम्हे हमेशा से बहुत पसंद करती हूँ, और चाहती हूँ कि तुम्हारे जैसा ही कोई बहादुर मेरी बेटी से शादी करे। उस जैसी खूबसूरत लड़की पूरी कौम में कोई नहीं।"

अनीज़ाह की बेटी बराबर के कमरे में थी और शायद वह अनीज़ाह के इन्ही शब्दों का इंतिज़ार कर रही थी, अचानक उसी वक़्त वह एक ट्रे में फल लिए हुए कमरे में आई और केदार के सामने रख कर अपनी माँ के बराबर में बैठ गई।

उस जवान लड़की को देख कर केदार की आखों में चमक आ गई, वह पहले ही बहुत खूबसूरत थी मगर आज उसने केदार को अपने हुस्न से हलाल करने के लिए सारे शृंगार कर रखे थे। केदार उसके जाल से निकल ना जाए इस लिए उसने कपड़े भी ऐसे पहने थे जो जिस्म ढकने से ज़्यादा जिस्म दिखाने का काम कर रहे थे।

केदार के लिए अब मुमकिन नहीं रहा था कि वह अनीज़ाह की बात को मना करदे, वह उस लड़की को घूरे जा रहा था जैसे उस पर कोई जादू कर दिया गया हो। अनीज़ाह को अंदाज़ा हो गया था कि तीर निशाने पर लग चुका है, उसने बड़े अजीब अंदाज़ से कहा:

"ऊंटनी को मार दो और मेरी बेटी से शादी कर लो, वरना आइन्दा मुझे अपनी शक्ल भी मत दिखाना, मैं और मेरी बेटी किसी बुज़दिल नामर्द की शक्ल भी नहीं देखना चाहते।"

केदार हलाल तो पहले ही हो चुका था इन आखरी शब्दों ने रही सही कसार भी पूरी कर दी, उस लड़की के सामने बुज़दिली का ताना वह सह ना सका और एक दम से खड़ा हो कर बोला:

"आज और इसी वक़्त उस ऊंटनी का खातमा हो जाएगा, वह मेरे सामने चीज़ ही क्या है।" यह कह कर वह तेज़ तेज़ कदम उठाता बाहर निकल गया।

.....

नाएमा ने अस्र से कहा:

"हमें केदार के पीछे जाना चाहिए।"

"नहीं कोई फाएदा नहीं, वह जाकर ऊंटनी को मार डालेगा। लेकिन इस वक़्त एक और ज़्यादा ज़रूरी बात भी है इसलिए तुम उसे देख लो।"

यह कह कर अस्र उसे ले कर बाहर निकला और एक पास के घर में चला गया जो बहुत हद तक पहले वाले से मिलता जुलता था। इस घर के एक कमरे में कौम के बड़े बड़े सरदार लोग

बैठे हुए थे। नाएमा अस्र के साथ अन्दर गई तो उसने एक सरदार की आवाज़ सुनी, वह बड़े फख्र और ख़ुशी के साथ बता रहा था:

"मेरी बीवी ने कौम के सबसे बहादुर आदमी केदार को ऊंटनी को मारने के लिए तैयार कर लिया है, बस थोड़ी ही देर में उसके क़त्ल की खबर आ जाएगी। यह परेशानी तो अब हमेशा के लिए ख़त्म हो गई।"

उसकी बात पर सब उसे ज़ोर ज़ोर से दाद देने लगे, शोर धमा तो एक और सरदार बोला:

"दोस्तों! तुम गौर करो असल परेशानी अभी भी अपनी जगह पर ऐसे ही खड़ी है। यह सालेह जब तक जिन्दा रहेगा तब तक हमारे बुतों को झूठा साबित करता रहेगा, तुम देख चुके हो कि कौम के कई बेवकूफ जवान उसकी बात मान चुके हैं, जबकि ऊंटनी वाला चमत्कार देखने के बाद हमारा एक सरदार भी उस पर ईमान ले आया। असल परेशानी को अगर हमने जड़ से खतम ना किया तो एक एक कर के सब लोग उसकी बात मानते चले जाएंगे।"

"तुमने बिलकुल ठीक कहा।" अनीज़ाह के पति ने कहा:

"अब समय आ गया है ऊंटनी के साथ ऊंटनी वाले को भी ख़त्म कर दिया जाए।"

इस पर सब लोग ज़ोर ज़ोर से राक्षसी हँसी हँसने लगे, मगर एक सरदार ख़ामोश बैठा रहा। लोगों की हँसी रुकी तो उसने गंभीर अंदाज़ में कहा:

"सालेह को मारना इतना आसन नहीं, उसके मानने वाले भी हैं जो उसके लिए अपनी जान भी दे देंगे, और उसके खानदान के लोग भी उसका बदला लेने के लिए उठ खड़े होंगे, यूँ कौम में एक खून खराबा शुरू हो जाएगा।"

इस पर एक सरदार बोला:

"हम किसी से नहीं डरते अगर वो बदला लेने आएँगे तो हमारी तलवारें उनका स्वागत करेंगीं।"

"नहीं हमें समझदारी से काम लेना चाहिए।" अनीज़ाह का पति बोला:

"तुम जानते हो कबीलों की लड़ाइयाँ सदियों तक ख़त्म नहीं होती। हमें ऐसा काम करना चाहिए कि सांप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे। हम सालेह को सबके सामने नहीं मारेंगे, हम रात

वो छुप कर उसके घर पर हमला करेंगे, चुप चाप उसे और उसके घर वालों को क़त्ल करने के बाद हम सब अपने ठिकानों पर लौट आएँगे। सुबह जब यह बात खुलगी तो हम उसके साथी और खानदान वालों को कसमें खा कर यकीन दिलाएंगे कि इसमें हमारा हाथ नहीं। जब उनके पास कोई सुबूत होगा ना कोई गवाह कि यह काम हमने किया है तो फिर वो ना हमारे खिलाफ कोई कदम उठा सकेंगे और ना कौम में से कोई उनकी हिमायत करेगा, यूँ यह मामला दब जाएगा।"

एक बार फिर हर तरफ से दाद दी जाने लगी, तभी एक नौकर तेज़ी से अन्दर आया और चिल्ला कर बोला:

"केदार ने ऊंटनी को मार डाला, केदार ने ऊंटनी को मार डाला।"

सभा में एक बार फिर जोश पैदा हो गया, लोग खड़े हो कर एक दुसरे को बधाई देने लगे। वह नौकर कुछ और भी कहना चाहता था मगर लोग एक दुसरे को गले लगाने और बधाई देने में मगन थे। आखिर कार वह फिर चिल्ला कर बोला:

"हुज़ूर एक और खबर भी है।"

सब लोग उसकी तरफ देखने लगे।

"ऊंटनी के क़त्ल के बाद सालेह ने यह धमकी दी है कि अब हमारे पास सिर्फ तीन दिन की मौहलत है, तीसरे दिन अज़ाब आएगा और हम सब मारे जाएँगे।"

यह सुन कर सभा में मौजूद सब लोगों के चहरे डर के मारे पीले पड़ गए। यह बात सब जानते थे कि सालेह बहुत शरीफ आदमी हैं वह झूट नहीं बोलते थे, उनकी कोई बात कभी गलत भी नहीं होती थी। इन लोगों की मांग पर उन्होंने एक चमत्कार भी दिखा दिया था, मगर उस ऊंटनी को अब इन लोगों ने मार डाला। इसके बाद जो बात हज़रत सालेह (अ) ने कही थी इन में हर आदमी का दिल कह रहा था कि वह झूट नहीं हो सकती। मगर अब तीर कमान से निकल चुका था।

ऐसे में अनीज़ाह के पति ने सरदारों का हौंसला बढ़ाने के लिए कहा:

''घबराने की ज़रूरत नहीं, आज रात हम सालेह को क़त्ल कर देंगे, ना रहेगा बांस ना बजेगी बांसुरी।''

उस पर एक बार फिर लोग खुश हो कर हंसने लगे, नाएमा ने महसूस किया कि अबकी बार उनकी हँसी बे जान सी थी।

.....

नाएमा और अस्र साथ साथ चल रहे थे, यह एक अँधेरी रात थी। उनके आगे हज़रत सालेह (अ) और उन पर ईमान लाने वाले उनके साथी जो गिनती के बहुत थोड़े लोग थे चल रहे थे। उनकी ज़ुबानों पर अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) के शब्द थे।

यह उसी दिन की रात थी जिस दिन ऊंटनी को क़त्ल करने की घटना हुई थी। हज़रत सालेह (अ) के इस ऐलान के बाद कि तीन दिन बाद अज़ाब आएगा, मौसम में एक बदलाव आते हुए नाएमा ने खुद देखा था, वह यह कि ठंडी हवा काले बादलों को लेकर ना जाने कहाँ से चली आ रही थी। शाम होते होते सूरज बादलों में छुप चुका था, उन्ही बादलों का असर था कि यह रात बहुत अँधेरी थी।

इसी रात सरदारों ने मिल कर हज़रत सालेह (अ) के घर पर हमला कर दिया, मगर उससे पहले ही व्ही (आकाशवाणी) के ज़रिये से उन्हें वहां से चले जाने का हुक्म मिल चुका था। इसलिए हमलावरों के आने से पहले ही हज़रत सालेह (अ) अपने सब साथियों को लेकर अँधेरे का फाएदा उठाते हुए आराम से बस्ती से निकल गए। कौम को इससे कुछ इत्मिनान हुआ कि सालेह ने अज़ाब की बात झूट कही थी और शर्मिंदा होने से बचने के लिए वो अपने ईमान वाले साथियों को लेकर चले गए हैं। उसको अंदाज़ा नहीं था कि अल्लाह तआला ऐसे मुजरिमों को कैसे घेरते हैं। दूसरी तरफ अस्र बस्ती में रुकने के बजाए नाएमा को ले कर हज़रत सालेह (अ) के पीछे आ गया, अब वह नाएमा को आगे की बात बता रहा था:

''नाएमा इस कौम पर तीन दिन बाद अज़ाब आएगा।''

''वह तो मैंने भी सुन लिया था मगर तीन दिन की मौहलत क्यों दी गई, पहली कौमों को तो ऐसी मौहलत नहीं दी गई थी?''

''असल में यह मौहलत नहीं है, इस बार अज़ाब अलग तरीके से आएगा। अल्लाह तआला यह चाहते हैं कि ईमान वाले अज़ाब की पहुँच से दूर निकल जाएं।''

''अब अज़ाब कैसे आगा?''

''अब इस कौम को बहुत घने बादल घेरते चले जाएंगे, मगर उनसे ना बारिश बरसेगी ना आँधी आएगी, बल्कि इस बार यह होगा कि तीसरे दिन की सुबह एक बहुत ज़्यादा ज़ोर की कड़क उठेगी, यह कड़क इतनी ज़बरदस्त आवाज़ पैदा करेगी कि उससे बस्ती की हालत ज़लज़ले की सी हो जाएगी। पहाड़ ऐसे हिल जाएंगे जैसे बहुत तेज़ भूकंप आया हो, जो कड़क पहाड़ों का यह हाल करेगी उसके सामने इंसान की क्या हेस्यत है। इस कौम में जो आदमी जिस हाल में होगा वह वहीं गिर कर मर जाएगा।''

''ओह अच्छा अब मैं समझी, तीन दिन की मौहलत इस लिए दी गई है ताकि हज़रत सालेह (अ) और उनके साथी चलते चलते इस कड़क के दायरे से निकल जाएं। वो इतनी दूर चले जाएं कि कड़क की ज़ोर दार आवाज़ का उन पर असर ना हो।''

''हाँ अब तुमने अल्लाह की हिकमत (Wisdom) को बिलकुल सही समझा।''

''मगर अस्र एक बात समझ में नहीं आई।'' अल्लाह की हिकमत का नाम सुन कर नाएमा के दिमाग में सवाल उभरा:

''यह जो बार बार कौमें हालाक हो रही हैं, अल्लाह तआला को सब पहले से पता था ना, यानि वह जानते थे कौन लोग ईमान लाएंगे और कौन काफ़िर बनेगें तो फिर यह सज़ा और ईनाम बे मकसद सी बात नहीं हो जाएगी? मेरा मतलब यह है कि अल्लाह को सब पता होता है कि आगे क्या होगा तो लोगों को सज़ा और इनाम क्यों मिलता है। ऐसा लगता है कि जैसे अल्लाह तआला ने एक कहानी की स्क्रिप्ट खुद लिख दी, अब लोग वही कर रहे हैं जो उस स्क्रिप्ट में लिखा है। काफ़िर इस लिए कुफ्र कर रहें क्यों कि उन्हें यही रोल दिया गया है, और ईमान वाले इसी लिए ईमान वाले हैं क्यों कि उन्हें यही रोल दिया गया है। तो फिर सज़ा और इनाम की कोई वजह नहीं रहती खास कर सज़ा की।''

नाएमा ने एक उलझन को कई तरह से बोल कर अस्र के सामने कर दिया था।

''नाएमा तुमने एक ऐसे मैदान में कदम रख दिया है जिसे समझना आसान नहीं है, यानि कि तुम अल्लाह तआला कैसे काम करते हैं यह जानना चाहती हो, तुम खुदा की खुदाई को नापना चाहती हो।''

''नहीं मेरा मतलब वो नहीं था, मैं अपना सवाल वापस लेती हूँ।''

''मैंने यह नहीं कि तुम अपना सवाल वापल लो, मैं सिर्फ यह समझाना चाहता हूँ कि अल्लाह तआला किस तरह चीज़ों को करते हैं यह पूरी तरह समझना इंसान की अक्ल की हदों से बाहर है। यह ऐसे ही है जैसे तीन साल का बच्चा अगर यह सवाल करे कि इंसान किस तरह वुजूद (अस्तित्व) में आ जाते हैं, यह बात ऐसी नहीं होती जो समझाई ना जा सके लेकिन बच्चे की समझने की क्षमता अभी इतनी नहीं है जितनी उसे जवाब को समझने के लिए चाहिए। ऐसा ही मामला अल्लाह की हिकमत और इंसानी आमाल (कर्म) का है, इसी लिए कुरआन मजीद ने एक उसूली बात बार बयान हुआ है कि अल्लाह किसी पर राई के दाने के बराबर भी ज़ुल्म नहीं करता।''

''यह तो ठीक है मगर.....''

मगर के आगे कुछ कहने से नाएमा रुक गई और सोचने लगी। वह खुद अल्लाह की कुदरत के नमूने देख चुकी थी, ऐसे में उसे अंदाज़ा था कि उसकी जुबान से हर शब्द सोच समझ कर लिकलना चाहिए। अस्र ने उसे रुकते हुए देख कर खुद ही उसके सवाल का जवाब देना शुरू किया।

''देखो यह तो तुम मानती हो ना कि अल्लाह तआला एक ही वक़्त में जानते हैं कि इस वक़्त पूरब में क्या हो रहा है और पश्चिम में क्या हो रहा है।''

''बिलकुल वो जानते हैं क्यों कि कोई जगह उनके इल्म (ज्ञान) से बहार नहीं हो सकती।''

''बस ठीक इसी तरह कोई वक़्त और ज़माना भी उनके इल्म से बाहर नहीं रह सकता, वो एक ही वक़्त में भूतकाल, वर्तमान, भविष्य को देख रहे होते हैं।''

''यह बात भी समझ में आ गई, वो यह ना जानते तो अल्लाह तआला बन नहीं सकते थे।''

''लेकिन समझने की ज़रूरी बात यह है कि तुम इंसान इस दुनिया में जो कुछ करते हो वो अल्लाह के इल्म की वजह से नहीं करते, बल्कि हकीक़त इससे बिलकुल उलट है यानि जो तुम करते हो वो अपनी मर्ज़ी और अपने इख़्तियार (विकल्प) से करते हो। लेकिन तुम क्या करोगे, अल्लाह अपनी कुदरत से तुम्हारे करने से पहले ही जान लेते हैं।''

''यह मुश्किल बात है, ऐसा समझना और उसका ख्याल लाना ज़रा मुश्किल काम है।''

''चलो मैं तुम्हे मिसाल से समझाता हूँ, देखो इस वक़्त तुम सालेह (अ) के ज़माने में खड़ी हो और फिरोन का ज़माना बहुत आगे आएगा, लेकिन क्यों कि तुम भविष्य से आई हो इस लिए जानती हो कि फिरोन के साथ क्या होगा।''

''हाँ वह तो बहुत मशहूर घटना है, फिरोन हज़रत मूसा (अ) का इन्कार कर देगा और डूब कर मर जाएगा।''

''अब यह बताओ, अगर मैं तुम से यह कहूँ कि फिरोन की पूरी घटना की स्क्रिप्ट तुमने लिखी है और तुम्हारी वजह से फिरोन ने कुफ्र किया और मारा गया तो क्या यह इलज़ाम सही होगा?''

''नहीं बिलकुल नहीं।''

''ठीक इसी तरह अल्लाह को भी अपनी ख़ास क्षमता और अपनी कुदरत की बिना पर हर चीज़ का पहले से ही पता होता है। कौन रसूल की बात मानेगा कौन नहीं मानेगा यह उन्हें पहले ही मालूम होती है, लेकिन लोग अपनी मर्ज़ी से कुफ्र और ईमान को अपनाते हैं अल्लाह के इल्म (ज्ञान) में होने की वजह से नहीं करते।

याद रखो इस दुनिया में इंसान जिस इम्तिहान में है उसमे उसका असल इम्तिहान अच्छाई और बुराई में से अच्छाई को अपनाना है, इसके लिए उसे पूरी छूट है, इसी छूट की बिना पर इंसान सज़ा और इनाम का हक़दार होता है। लेकिन जैसा कि मैंने कहा कि इन्सान अपनी मर्ज़ी से जो कुछ भी आगे की ज़िन्दगी में करेगा अल्लाह को उसका पहले ही इल्म (ज्ञान) हो जाता है।''

नाएमा ने अगला सवाल किया:

''लेकिन इंसान बहुत सी चीज़ों में मजबूर तो है ना।''

"बिलकुल है, जैसे तुम एक खास दौर में पैदा हुई हो, तुम्हारा एक खास चहरा है, रंग है, नस्ल और भाषा है, खानदान है, और इन जैसी और बहुत सी चीज़ें हैं। मगर इनकी बुन्याद पर अल्लाह तआला किसी को सज़ा या इनाम नहीं देते। सज़ा और इनाम हमेशा अख्लाकी (नैतिक) मामलों में दिया जाता है और इसमें इंसान बिलकुल आज़ाद है।"

"मगर कई बार यह होता है कि हम कोई नेकी करना चाहते हैं, मगर कर नहीं पाते और ऐसे ही गुनाह का इरादा कर लेते हैं लेकिन अल्लाह तआला करने नहीं देते।"

"यह बिलकुल ठीक, मगर इसमें भी उसूल यह है कि अगर नेकी और गुनाह का इरादा बिलकुल पक्का हो मगर अल्लाह तआला की हिकमत किसी अच्छाई या बुराई के आड़े आजाए, जैसे तुमने देखा था कि काबील को पहले दिन हाबील के क़त्ल से रोक दिया गया था, मगर उसके इरादे पर अमल करने की कोशिश की वजह से एक गुनाह उसके आमाल नामे में लिख दिया गया था। इसी तरह अगर कोई आदमी नेकी का इरादा करले तो चाहे वो अल्लाह की हिकमत से नेकी ना कर पाए, जैसे कोई आदमी इरादा और कोशिश के बावजूद किसी मजबूरी की वजह से हज ना कर सके तो उसको एक सवाब (पुण्य) ज़रूर मिलेगा।"

नाएमा ने समझने के अंदाज़ में सर हिलाते हुए कहा:

"अच्छा तो इसका मतलब यह है कि जो कुछ इंसान के वश में है इम्तिहान उसी का है और जो चीज़ इंसान के वश से बाहर है उनमे कोई सवाल नहीं होगा।"

"हाँ बिलकुल ऐसा ही है, भौतिक दुनिया क्यों कि इम्तिहान की दुनिया है इसलिए इम्तिहान अल्लाह तआला सामने लाते हैं, लेकिन इम्तिहान के दौरान इंसान का रवय्या कैसा और क्या होगा, यह अल्लाह को तो पता होता है लेकिन इस मामले में वो किसी को मजबूर नहीं करते। अख्लाकी (नैतिक) मामलों में असल इख्तियार इंसान के पास है इसी लिए वह जिम्मेदार है और इसी लिए सज़ा और इनाम मिलेगा।"

"थैंकयू अस्र! तुम कितनी मुश्किल बाते कितनी आसानी से समझा देते हो।"

"चीज़ें मुश्किल नहीं हुआ करती लेकिन जब इंसान कॉमन सेन्स का इस्तिमाल करना छोड़ देते हैं तो हर चीज़ मुश्किल हो जाती है। समझ में आई बात फलसफी नाएमा।"

अस्र ने हँसते हुए कहा तो नाएमा भी हंस पड़ी।

.....

यह तीसरे दिन की सुबह थी, यह लोग चलते चलते कौम समूद के इलाके से बहुत दूर आ चुके थे। इस जगह को भी बादलों ने घेर रखा था लेकिन यहाँ बादल इतने गहरे नहीं थे। अस्र ने नाएमा को बताया था कि इस समय कौम कि बस्ती पर बादल बहुत गहरे हो चुके हैं।

कुछ ही देर में नाएमा ने देखा कि हज़रत सालेह (अ) चलते चलते रुके और अपने साथियों से कहा:

"ईमान वालों! अब अपनी आँखों से देखो कि अल्लाह का कहर उसके मुजरिमों पर कैसे बरसता है।"

उनकी इस बात पर सब लोग बस्ती की तरफ देखने लगे। अचानक बिजली चमकी, यह बिजली इतनी तेज़ थी कि यहाँ सुबह के वक़्त बादलों कि वजह से जो हल्का अँधेरा था दिन की रौशनी में बदल गया। उसके साथ ही हज़रत सालेह (अ) ने अल्लाहुअकबर (अल्लाह सबसे महान है) का नारा लगाया तभी एक ज़ोर दार धमाका हुआ। यह ऐसी डरावनी कड़क थी कि सब लोग हिल कर रह गए, उन्हें महसूस हुआ कि उनके कान के परदे फट जाएँगे। नाएमा को महसूस हुआ कि उसके पैरों के नीचे ज़मीन हिल गई है, यह सोच कर वह चौंक गई कि जिस इलाके में यह धमाका हुआ है वहां लोगों का क्या हाल हुआ होगा।

हज़रत सालेह (अ) ने बहुत अफ़सोस और दुःख से कहा:

"मेरी कौम के लोगों! मैंने तुम्हे बहुत समझाया मगर तुमने मेरी बात न मानी और अब अंजाम भुगत लिया।"

यह कह कर वह मुड़े और आगे बढ़ गए, उनके साथ ही उनके साथी भी चलने लगे। नाएमा हज़रत सालेह (अ) और उनके साथियों को जाता हुआ देखती रही, वह समझ रही थी कि उन्हें उन लोगों के साथ ही जाना होगा ताकि ईमान वालो को फलता फूलता देख सकें। वह अस्र कि तरफ मुड़ी अस्र अभी तक बस्ती की तरफ देख रहा था, नाएमा ने उससे पूछा:

"अस्र क्या देख रहे हो, अब वहां बचा ही क्या है।"

"मैं भविष्य देख रहा हूँ, जल्दी ही पूरी इंसानियत और पूरी दुनिया के साथ यही कुछ होने वाला है। हर तरफ बे परवाही है, बे फिक्री है, क़यामत आ रही है मगर लोगों को दुनिया के धन्दों से फुर्सत नहीं, और तो और तुम मुसलमान कहलाए जाने वालों ने भी कुरआन को भुला दिया है। अब कौन लोगों को यह बताए कि आखिरत (मौत के बाद) की तैयारी करलो, यह बिसात बस अब लपेटी जाने वाली है।"

अस्र यह कह कर खामोश हो गया।

नाएमा ने उसे देखा और पहली बार खुद उसका हाथ पकड़ कर बोली:

"मैं बताउंगी, मैं गवाही दूँगी, यह वक़्त गवाही देगा, बेशक (निसंदेह) इंसान घाटे में पड़ कर रहेंगे।"

बात बीच में रोक कर वह मुड़ी और दूर जाते हज़रत सालेह (अ) और उनके साथियों को देख कर बोली।

"सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए, नेक काम करते रहे, एक दुसरे को सच्चाई पर जम जाने और उसमे सब्र करने की नसीहत करते रहे।"

****

राख़ और धूल

नाएमा उन लोगों को देखती रही जब तक वो निगाहों से ओझल नहीं हो गए, अस्र भी अब इसी तरह देख रहा था। उनके निगाहों से ओझल होने के बाद वह नाएमा का हाथ पकड़ कर धीरे धीरे चलने लगा, साथ साथ दिन और मंज़र (द्दश्य) भी बदल रहे थे और अस्र नाएमा को उनके बारे में जानकारी देता जा रहा था, उसने बताया:

"अब इंसानी इतिहास का सबसे बुरा दौर शुरू हो रहा है, अभी तक हम जिस पुराने ज़माने में थे उसमे छोटी छोटी बस्तियां कबीले और कौमे गुमराही में पड़ कर शिर्क (अल्लाह के साझी बना) कर के सारे दीन (धर्म) का बेड़ा गर्क करते थे। लेकिन अब तहज़ीब (संस्कृति) तरक्की करने लगी हैं, बस्तियां बड़ी बड़ी रियासतों में बदल रही हैं, शिर्क अब रियासतों का दीन (धर्म) बन चुका है। हर तरफ राजा झूटे खुदाओं के नाम पर राज कर रहे हैं, धर्म गुरु उन्हें दलीलें घड़ घड़ कर देते हैं, इन लोगों ने जनता को पाखण्ड और ज़ुल्म की दोहरी जंजीरों में जकड़ लिया है। अख्लाकी (नैतिक) बिगाड़ अपनी चरम सीमा पर पहुँच रहा है।

अल्लाह तआला अपने पैगम्बर अलग अलग इलाकों में भेज रहे हैं, मगर कोई उनकी बात नहीं मान रहा, हर तरफ शिर्क और फसाद फैल चुका है।"

"क्यों अब उनकी बात क्यों नहीं मानी जा रही?" नाएमा ने सवाल किया।

"क्यों कि शिर्क राजाओं का धर्म बन चुका है, और पूरी रियासत उसकी हिफाज़त करती है। इन्साफ और आज़ादी राजाओं के घर की नौकरानी बन चुकी हैं, राजा जिसे चाहे मौत की सज़ा देदे जिससे खुश हो जाए उसे मालामाल करदे, ऐसे में जो भी एक अल्लाह का नाम लेने वाला उठता है उसे फ़ौरन देवताओं की शान में गुस्ताखी के जुर्म में मार दिया जाता है।

लेकिन अब अल्लाह ने ऐसे हालात में लोगों की हिदायत के लिए एक नए तरीके और प्लान को शुरू किया है।"

"वह प्लान क्या है?"

"अब इब्राहीम (अ) ने तौहीद (एकेश्वरवाद) का झंडा उठाया है। उन्होंने पहले अपने देश इराक़ और फिर अपने आप पास की रियासतों में घूम घूम कर लोगों को एक अल्लाह की तरफ बुलाया है, मगर उनकी पुकार को इस तरह ठुकरा दिया गया है कि इतिहास में आज तक किसी पुकार को ऐसे ना ठुकराया गया होगा। उनके हिस्से में उनकी बीवी हज़रत 'सारा' और भतीजे हज़रत 'लूत' (अ) के अलावा कोई नहीं आया। अल्लाह तआला ने फैसला किया है कि लूत (अ) इस दावत के काम को जारी रखेंगे, उन्हें फिलिस्तीन के एक बहुत खुश हाल इलाक़े सदोम की तरफ भेजा गया है, जबकि हज़रत सारा (अ) की औलाद की नस्ल से दुनिया के बीच यानि मिडिल ईस्ट में एक अल्लाह की इबादत करने वालों की एक पूरी कौम बन जाएगी, जो शिर्क के खिलाफ अपनी कोशिशें करेगी।"

"और हज़रत हाजरा (अ) और इस्माइल (अ) ?"

नाएमा ने सवाल किया तो अस्र ने बताया:

"हाँ! हज़रत हाजरा (अ) यानि हज़रत इब्राहीम की दूसरी बीवी और हज़रत इस्माइल (अ) की माँ हैं, यह दोनों नेक हस्तियाँ अरब के बंजर रेगिस्तान में बसा दिए गए हैं क्यों कि क़यामत से पहले तौहीद (एकेश्वरवाद) का आखरी मोर्चा यही होगा। इस्माइल (अ) की औलाद से वह आखरी रसूल और आखरी उम्मत (गिरोह) उठेगी जो क़यामत तक तौहीद (एकेश्वरवाद) का झंडा उठाए रखेगी, जबकि दूसरी कौमों के बीच में यानि फिलिस्तीन में हज़रत इब्राहीम (अ) खुद तौहीद (एकेश्वरवाद) के चिराग को जलाए रखने के लिए तैनात हैं।"

"तो क्या अब कोई रसूल की बात नहीं सुनता? कोई तौहीद (एकेश्वरवाद) पर नहीं रहा?"

"तुम तौहीद की बात कर रही हो लोग तो अब अपनी फिरत की भलाइयों से भी बहुत दूर हो चुके हैं। लूत (अ) की कौम अपनी अख्लाकी (नैतिक) गिरावट में हदें पार कर चुकी है। हज़रत लूत (अ) की उन्हें समझाने की हर कोशिश ना काम हो चुकी है।"

"तो क्या हम हज़रत लूत (अ) के इलाक़े में जाएंगे? मैंने सुना था कि वे जॉर्डन और इसराइल के बीच में डेड-सी के इलाक़े में आबाद थे। उनका इलाक़ा सदोम बहुत हरा भरा था जहाँ दूर दूर तक बाग़ ही बाग़ फैले थे।"

''नहीं मैं वहां तुम्हे नहीं ले जा रहा, तुम उनकी बेशर्मी के मंज़र (दृश्य) को देख नहीं सकोगी। यह लोग इतने गिर चुके हैं कि अपनी सभाओं में सबके सामने मर्द से मर्द ही नाजाएज़ जिस्मानी रिश्ता बनाते हैं। इस लिए मैं तुम्हे वहां नहीं ले जा सकता, इसके बजाए मैं तुम्हे उस समय में ले जा रहा हूँ जब अल्लाह तआला के इस प्लान के लिए कई फैसले सामने आएँगे, या यूँ कहो की कई मत्वपूर्ण कदम उठाए जाएंगे।''

''यह क्या फैसले हैं?''

''हज़रत लूत (अ) की कौम पर अज़ाब भेजने का फैसला हो चुका है, इस मकसद के लिए इब्राहीम (अ) के पास तीन फ़रिश्ते भेजे गए हैं।''

''फ़रिश्ते हज़रत लूत (अ) की कौम पर अज़ाब के लिए भेजे गए हैं तो उन्हें जाना भी वहीं चाहिए इब्राहीम (अ) के पास क्यों आए हैं?''

''वो फ़रिश्ते हज़रत लूत (अ) की कौम को खत्म करने ही आए हैं लेकिन उसके साथ ही एक और चमत्कार की खबर देने भी आए हैं, वो यह कि हज़रत इब्राहीम (अ) को 99 साल की उम्र में उनकी बीवी सारा (अ) से लड़का होगा। यानि पैगम्बर इसहाक (अ) के पैदा होने की खुश खबरी और बाद में इसहाक (अ) के यहाँ पैगम्बर याकूब (अ) के पैदा होने की खबर देने आएं हैं।

पैगम्बर याकूब (अ) के 12 बेटे होंगे जिनमे पैगम्बर यूसुफ (अ) और उनके 11 भाई शामिल हैं, यह सब अपने पिता के उप नाम इसराइल की वजह से बनी-इस्राइली कहलाएंगे। इनकी नस्ल से एक बहुत बड़ी कौम बनेगी यह कौम जो अगले डेढ़ हज़ार साल तक शिर्क के इस समुद्र में तौहीद (एकेश्वरवाद) की आवाज़ लगाती रहेगी।''

यह बातें करते हुए वो दोनों उस जगह आ गए जहाँ हज़रत इब्राहीम (अ) रह रहे थे।

.....

दो पहर का वक़्त था, तेज़ धूप से हर चीज़ तप रही थी और गर्म हवाएं चल रही थी, ऐसे में ओक के पेड़ों के झुण्ड ही पनाह लेने की जगह थे। गर्म हवा जब पत्तों के लदे हुए पेड़ों से टकराती तो ठंडी पड़ जाती थी यहाँ इन पेड़ों का एक पूरा झुण्ड था जो इस तपते इलाके में बहुत अच्छा लग रहा था।

पास ही एक तम्बू लगा हुआ था, यह तम्बू अपने वक़्त के बेताज़ बादशाह ज़बर्दस्त पैगम्बर अल्लाह के दोस्त हज़रत इब्राहीम (अ) का था। लगभग एक सदी से हज़रत इब्राहीम (अ) तौहीद (एकेश्वरवाद) की जंग अकेले लड़ रहे थे। इराक़ से अरब, मिस्र से शाम तक तरक्की करने वाला कोई हिस्सा ऐसा नहीं था जहाँ हज़रत इब्राहीम (अ) ने आवाज़ ना लगाई हो, मगर कही से कोई जवाब ना मिला।

तम्बू का पर्दा हटा और इब्राहीम (अ) बाहर आए, इधर उधर देखा हर तरफ ख़ामोशी और अकेले पन का राज़ था, बस कभी कभार जानवर या किसी परिंदे की आवाज़ ज़िन्दगी का अहसास करा देती थी। ज़िन्दगी की सबसे बड़ी निशानी यानि बच्चों की आवाज़ से इब्राहीम (अ) का तम्बू खाली ही था, वह अपने एक लोते बेटे इस्माइल (अ) को अल्लाह के हुक्म पर मक्का की बंज़र वादी में बसा चुके थे ताकि तौहीद (एकेश्वरवाद) की निशानी का घर आबाद रहे, चाहे अपना घर वीरान हो जाए। बुढ़ापे की हद को पहुँचने के बाद इस घर के आबाद होने के सारे चांस ख़त्म हो चुके थे.....आसमान ने ऐसी कुर्बानी कहाँ देखी थी।

इब्राहीम (अ) ने सर उठा कर आसमान की तरफ देखा। उनकी आखों में हमेशा की तरह शुक्र और मुहब्बत का पैगाम था, किसी शिकवे का उन आखों में क्या सवाल था। उनकी निगाहें आसमान से वापस लौटी तो देखा सामने झंडे के नीचे तीन अजनबी खड़े हैं।

उन अजनबियों को देख कर इब्राहीम (अ) ख़ुशी से बोले:

"आप का स्वागत है! हम पर हमारे रब का करम हुआ जो महमानों के कदम हमारे घर की तरफ उठे।"

यह कह कर वह आगे बढ़े और अजनबियों के पास पहुंच ही रहे थे कि उन्होंने दूर से ही उन्हें सलाम किया। हज़रत इब्राहीम ने सलाम का जवाब दियाऔर कहा:

"इससे बड़ा अल्लाह का करम मुझ पर क्या हो सकता है कि आज हमारे घर अल्लाह की रहमत हुई है जो आप मेरे घर आएं हैं। मैं आप को आपकी मंजिल की तरफ बिलकुल नहीं जाने दूंगा जब तक आप मेरे साथ खाना ना खालें।"

अजनबियों में से एक ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया:

"हमें भी आप के साथ बैठ कर बहुत ख़ुशी होगी।"

हज़रत इब्राहीम (अ) उन महमानों को साथ लेकर अन्दर आ गए, फिर घर के अन्दर जा कर अपनी बीवी को खाना तैयार कराने को कहा और महमानों से बात कर ने उनके पास चले आए।

नाएमा और अस्र बहुत देर से यहाँ मौजूद थे और सब कुछ देख रहे थे, नाएमा ने अस्र से पुछा:

"यह महमानों के आने पर हज़रत इब्राहीम (अ) इतने खुश क्यों हैं?"

"महमानों की सेवा करना हर दौर में शरीफों का तरीका रहा है, मगर इब्राहीम (अ) इस मामले में कुछ ज़्यादा ही आगे हैं, बल्कि यह हर मामले में अपनी मिसाल आप हैं इन जैसा शरीफ रहम दिल इंसान ज़मीन पर शायद ही कोई और हुआ हो।

बात यह है नाएमा कि दरअसल मैं तुम्हे पैगम्बरों की ज़िन्दगी के आखरी दौर में ले जाता रहा हूँ, क्यों कि असल मकसद सिर्फ यह दिखाना था कि जब रसूलों का इन्कार कर दिया जाता है अल्लाह तआला किस तरह दुनिया में ही छोटी क़यामत लाते हैं और यह दिखा देते हैं पैगम्बरों की बात सच है। लेकिन अगर तुम पैगम्बरों की पूरी ज़िन्दगी और किरदार को देख सकती तो तुम्हे मालूम हो जाता कि यह लोग सबसे बहतरीन इंसान हुआ करते हैं। इन्हें खानदान और समाज में बहुत इज्ज़त हासिल होती है इन जैसा सच्चा, ईमानदार, महनती, नेक, सब के हक़ अदा करने वाला, सबका ख्याल रखने वाला, सबके काम आने वाला, बुरी चीज़ों से दूर रहने वाला और कोई नहीं होता। उनके एक अल्लाह की तरफ बुलाने से पहले समाज उनकी अच्छाइयों की कसमे खाता है। सब मानते हैं कि उन जैसा इंसान कोई नहीं, इस लिए हर पैगम्बर खुद अपनी सच्चाई का सुबूत होता है कि ऐसा इंसान कभी झूट नहीं बोल सकता।"

अभी उनकी यह बात चल ही रही थी कि खाना लगा दिया गया जब खाना लग गया तो हज़रत इब्राहीम (अ) ने महमानों से कहा:

"आईये खाना शुरू कीजये।"

उनकी इस बात पर तीनों महमान खामोश बैठे रहे, हज़रत इब्राहीम ने समझा कि यह लोग शायद खाना लेने में शर्मा रहे हैं इस इस लिए खुद बर्तन में खाना निकाल कर एक एक महमान के सामने पेश करने लगे।

मगर महमान अभी भी टस से मस ना हुए। नाएमा को महसूस हुआ कि हज़रत इब्राहीम (अ) के चहरे पर कुछ परेशानी के आसार नज़र आने लगे, उन्होंने झिजकते हुए कहा:

"आप लोगों का स्वभाव कुछ अजीब है, खाने का वक़्त है, आप मुसाफिर हैं तो कुछ खा क्यों नहीं रहे?"

अब वक़्त आ गया था कि महमान अपनी हकीक़त उनके सामने बता दें, इस लिए उनमे से एक ने कहा:

"इब्राहीम! आप परेशान ना हों, हम इंसान नहीं हैं, आप के रब के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं और एक बड़ी मुहिम पर आए हैं।"

इब्राहीम (अ) को उनकी बात से कुछ अंदेशा हुआ, इसी अंदेशे के साथ वह बोले:

"आप किस मुहिम कि बात कर रहे हैं? मुझे आप की बातों से कुछ डर लग रहा है।"

"आप ना डरये, आप के लिए तो हम एक खुशखबरी लाएं हैं।" एक दुसरे फरिश्ते ने उनके डर को दूर करते हुए कहा तो हज़रत इब्राहीम (अ) ने चोंक कर कहा:

"खुश खबरी?"

इस पर तीसरे फ़रिश्ते ने कहा:

"हम आप को आप की बीवी सारा से एक विद्वान बेटा पैदा होने की खुश खबरी देते हैं, उसका नाम इसहाक होगा।"

99 साल के इब्राहीम (अ) को इस बात पर यकीन नहीं आया, वह हैरत से बोले:

"अब इस बुढ़ापे में आप मुझे औलाद की उम्मीद क्यों दिलाते हैं?"

यह सुन कर फरिश्तों के चहरे पर मुस्कान आ गई, एक फ़रिश्ते ने बाहर नज़र आने वाले आसमान की तरफ नज़र उठा कर देखा और फिर गहरी नज़र से उन्हें देखते हुए बोला:

"इब्राहीम (अ) आप अपने रब की रहमत से मायूस ना हों।"

उन्होंने फ़ौरन जवाब दिया:

"रब की रहमत से मायूस तो सिर्फ गुमराह लोग होते हैं।"

हज़रत सारा जो बाहर खड़ी यह बातें सुन रही थीं, यह खबर सुन कर ख़ुशी के मारे हंसती हुई अन्दर आईं। हज़रत सारा पूरी ज़िन्दगी औलाद को तरसती रहीं और अब इस खबर को सुना भी तो बुढ़ापे में, अब अपने तौर पर वह भी इस खबर को पक्का बनाना चाहती थीं, उन्होंने अन्दर आते ही कहा:

"यह कैसे मुमकिन है, मेरे पति बूढ़े हैं और मैं बाँझ हूँ और बूढ़ी भी हो चुकी हूँ, अब मैं औलाद को क्या जन्म दूँगी?"

हज़रत सारा के अन्दर आने पर तीनों फ़रिश्ते उनके सम्मान में खड़े हो गए, एक फ़रिश्ते ने बहुत अदब से कहा:

"ऐ इब्राहीम की बीवी! आप पर अल्लाह की रहमत और बरकत है, हम सिर्फ पैगम्बर इसहाक (अ) ही की खुश खबरी नहीं दे रहे बल्कि उनकी औलाद में भी पैगम्बर याकूब (अ) के पैदा होने की खुश खबरी आप को दे रहे हैं।"

एक ख़ुशी पर दूसरी ख़ुशी की बात सुन कर दोनों मियां बीवी निहाल हो गए, उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि अल्लाह तआला उन पर ऐसे भी अपनी रहमत बरसाएंगे। मगर इब्राहीम इब्राहीम (अ) ही थे, उन्हें याद आगया कि फ़रिश्ते किसी मुहिम का ज़िक्र कर रहे थे, इसका मतलब यह था कि कही कोई बड़ी घटना होने वाली है, वह समझ सकते थे कि क्या होने वाला है, लेकिन फिर भी उन्होंने फरिश्तों से पूछा:

"आप ने यह नहीं बताया कि आप किस मुहिम पर आए हैं?"

"हम एक मुजरिम कौम को ज़मीन से मिटाने आए हैं..... हज़रत लूत (अ) की कौम को। उनकी शरकशी बहुत बढ़ चुकी है।"

इब्राहीम (अ) का शक़ अब यकीन में बदल गया था, हालांकि वह उस कौम की करतूतों की पूरी खबर रखते थे, मगर साथ ही वह बहुत दर्दमंद इंसान थे। उन्हें यह भी पता था कि अल्लाह का अज़ाब क्या चीज़ होता है, उन्होंने बड़ी एहत्यात (सावधानी) के साथ फरिश्तों से पूछा:

"क्या यह मुमकिन नहीं है कि उस कौम में पचास नेक लोग हों और अल्लाह तआला उन पचास की वजह से उस कौम को माफ़ करदें।"

जवाब मिला:

"इब्राहीम (अ) उस कौम में पचास नेक मिल जाते तो अल्लाह तआला उन्हें छोड़ देते।"

हज़रत इब्राहीम (अ) ने बहुत नरम लहज़े में फिर कहा:

"देखये मैं अपने रब के हुक्म के सामने बात करने की जुर्रत कर रहा हूँ, हालांकि मैं राख हूँ धूल हूँ मेरी कोई हेस्यत नहीं।

पचास ना हों पैंतालिस तो होंगे, क्या सिर्फ पांच कम होने की वजह से सब को मार दिया जाएगा।"

एक बार फिर जवाब आया:

"पैंतालिस भी नहीं हैं।"

इस के बाद एक पूरी बात चीत शुरू हो गई, हज़रत इबराहीम (अ) हर बार पांच पांच कम करके माफ़ी की अपील करते रहे और हर बार जवाब मिलता कि इतने लोग भी नहीं हैं। आखिर में बता दिया गया कि उस कौम में दस लोग भी नेक नहीं हैं, जिसके बाद फ़रिश्ते चले गए, और हज़रत इब्राहीम (अ) भी अपने तम्बू में लौट गए।

नाएमा यह सब देख कर हैरान थी, उसने इससे पहले कौमों पर अज़ाब आते हुए अपनी आँखों से देख लिए थे। उसे अल्लाह तआला कि कुव्वत का किसी ना किसी दर्जे में अंदाज़ा हो चुका था। मगर उसने यह नहीं सोचा था कि कोई पैगम्बर अल्लाह तआला से इस तरह ज़िद कर के कौम की तबाही रोकने की कौशिश कर सकता है, और कौम भी ऐसी जिसमे इंसानियत कि झलक भी बाकि ना बची हो।

अस्र नाएमा के ख्यालों को समझ रहा था उसने कहा:

"तुम जानती हो यह जो बात चीत अभी हुई है इसे अल्लाह तआला ने कुरआन में क्या कहा है।"

"क्या कहा है?" नाएमा की आँखों में अल्लाह की कही बात जानने की चाहत साफ़ झलक रही थी।

"अल्लाह तआला ने कहा है कि इब्राहीम हम से झगड़ा कर रहा था।"

नाएमा का मुह अचम्भे से खुला का खुला रह गया।

"अल्लाह तआला से झगड़ा...."

"हाँ, जब बंदा अपने आप को अपने रब के लिए मिटा देता है तो फिर अल्लाह तआला उसे इज्ज़त और मुहब्बत की ऊचाइयों पर पहुंचा देते हैं। वैसे तुम इंसान इन शब्दों का मतलब कभी नहीं समझ सकते। यह बात या तो हम जैसी मखलूक (रचना) जानती है जो अल्लाह की हजूरी में जीती है या फिर पैग़म्बर जो अल्लाह की अज़मत (महानता) को औरों से ज्यादा जानते हैं। यह हिम्मत अल्लाह का दोस्त ही कर सकता है, और उस दोस्त को भी देखो जिसने इस दोस्त की लाज रख कर इस की ज़िद को प्यार से झगड़ा करार दिया, हालांकि वह अपने आप को राख और धूल कह रहा था।"

अस्र ज़रा ताना देने के अंदाज़ में नाएमा की तरफ देख कर बोला:

"वैसे तुमने यह भी देख लिया कि खुदा का इन्कार करके जिस इंसानियत का झंडा उठाने की बातें तुम करते हो। तुम से हज़ार गुना ज़्यादा इंसानियत का दर्द इन खुदा के पैगम्बरों के दिल में होता है, इनकी सारी ज़िन्दगी और सारी कोशिशें ही लोगों की भलाई के लिए होती हैं।"

अस्र की बात पर नाएमा शर्मिन्दा हो गई, उसने शर्मिंदा अंदाज़ में ही जवाब देना शुरू किया:

"मुझे इस बात का अहसास है कि मैं गलत सोचती थी जब मैं खुदा का इन्कार करती थी और इंसानियत पर भाषण दिया करती थी, मगर खुदा के नाम लेने वाले भी तो ज़्यादातर पैगम्बरों जैसी सीरत (आचरण) से खाली हैं।"

"हाँ असल मुश्किल तो यही है और इसी लिए इस्लाम का नाम लेने वाले दुनिया परस्तों को दोगुना अज़ाब दिया जाएगा.....अपनी गुमराही का भी और दूसरों को भटकाने का भी।"

.....

नाएमा थोड़ी देर तक खामोश रही और फिर बोली:

"हज़रत लूत (अ) की कौम का क्या होगा?"

"उन्हें हकीक़त में राख और धूल बना दिया जाएगा।"

"क्यों ना हम फरिश्तों के साथ चलें, वहां चल कर देखते हैं क्या होगा।" नाएमा के अंदाज़ में कुछ जिज्ञासा और कुछ मिन्नत थी।

मैं पहले तुम्हे यह बता देता हूँ कि वह कौम क्या करेगी, इसके बाद भी तुम उस घिनौनी कौम को देखने में दिलचस्पी रखती हो तो मैं तुम्हें वहाँ ले चलूँगा। यह फ़रिश्ते लड़कों की शक्ल में हज़रत लूत (अ) के घर महमान बन कर जाएँगे, जिसके बाद पूरी कौम के गंदे लोग उनके घराने पर चढ़ाई कर देंगे कि इन लोगों को हमारे हवाले करदो। पूरी बस्ती में एक घराना भी नहीं होगा जो हज़रत लूत (अ) की हिमायत करे। ऐसे में लूत (अ) के लिए अपने महमानों की हिफाज़त करना ना मुमकिन हो जाएगा तब फ़रिश्ते उन्हें बता देंगे कि वो इंसान नहीं अज़ाब के फ़रिश्ते हैं।"

"नहीं नहीं, मैं ऐसे घिनौने चहरे देखना भी नहीं चाहती। मगर इस कौम पर अज़ाब कैसे आएगा?"

"फ़रिश्ते हज़रत लूत (अ) और उनकी बेटियों को रात में वहां से निकाल देंगे और सुबह के वक़्त एक अजीब धमाका होगा जिससे पहाड़ के पत्थर फट कर ज़र्रे ज़र्रे हो जाएंगे और वह कंकर हवा के ज़ोर से बस्ती वालों पर बारिश की तरह बरसेंगे और किसी को नहीं छोड़ेंगे। धमाके से यह बस्ती उलट पलट जाएगी और एक बड़ा हिस्सा मलबे में दब कर हमेशा के लिए दफ़न हो जाएगा।"

"अल्लाहु अकबर, बड़ा सख्त अज़ाब है। लेकिन हमारे ज़माने में तो आज़ादी के नाम पर समलैंगिंग सम्बन्ध के बुरे काम को जायज़ करार दे दिया गया है, हमारे ज़माने के लोगों को यह बात अजीब लगेगी कि एक कौम को इस वजह से इतना सख्त अज़ाब दिया गया।"

"ख़ैर यह अज़ाब इस जुर्म कि वजह से नहीं दिया गया, असल वजह तो यह है कि उनकी कौम में एक रसूल मौजूद था और उसकी दी हुई हिदायत (मार्गदर्शन) के बाद भी सरकशी दिखाई।

लेकिन यह जुर्म भी कुछ कम नहीं, यह अल्लाह के खिलाफ ही नहीं इंसानियत के खिलाफ भी किया जाने वाला एक बड़ा जुर्म है।"

"यह जुर्म कैसे हो गया? हो सकता है ज़्यादा तर लोग इस चीज़ को पसंद ना करें, मगर हमारे ज़माने की मोडर्न सोच का कहना यह है कि अगर दो लोग अपनी मर्ज़ी से ज़िन्दगी गुज़ारना चाहें तो इसमें क्या हर्ज है। दूसरी बात वो यह कहते हैं कि बहुत से लोग कुदरती तौर पर इस तरफ झुकाव रखते हैं उनके लिए यही फितरत है।"

नाएमा ने अपने ज़माने के कुछ विचारकों का मत रख कर अस्र का जवाब जानने के लिए सवाल किय, इस पर अस्र ने थोड़ा सख्ती से कहा:

"किसी ने सही कहा है, समझदारी की एक हद होती है लेकिन बेवकूफी की कोई हद नहीं होती। मुझे बताओ क्या इसी किस्म की भद्दी दलील दे कर तुम किसी एक आदमी या बहुत सारे लोगों को दूसरों पर सख्ती और ज़ुल्म करने की इजाज़त दोगी, कातिल को इस बुन्याद पर क़त्ल करने और चोर को इस बुन्याद पर चोरी करने की इजाज़त होगी कि वे कुदरती तौर पर इस तरफ झुकाव रखते हैं।"

"कभी नहीं, लेकिन समलैंगिंग लोग दूसरों को तो नुक्सान नहीं पहुंचाते।"

नाएमा ने जवाब दिया, वह इतनी आसानी से हार मानने वाली नहीं थी।

"यह किसी एक इंसान के नहीं बल्कि पूरी इंसानियत के खिलाफ एक हरकत है। देखो इंसानियत क्या है, यह कुछ अख्लाकी अक़दार (नैतिक मूल्यों) का नाम है, यह अक़दार ही इंसानों को जानवर से अलग करते हैं। इनमे एक बुनयादी चीज़ खानदान और परिवार है, यह खानदान या परिवार एक मर्द और औरत के जायज़ जिस्मानी रिश्ते से वजूद (अस्तित्व) में आता है। यह परिवार और खानदान ही होते हैं जहाँ बच्चे जन्म लेते हैं और इंसानियत का सफर जारी रहता है, यही खानदान और परिवार नाज़ुक और कमज़ोर बच्चों को जवान होने तक संभालता है, फिर यही जवानी के बाद बुढ़ापे के शिकार कमज़ोर माँ बाप को उस वक़्त अपना सहारा देते हैं जब वो किसी काम के नहीं रहते, इस तरह इंसानियत आगे बढ़ती है।

समलैंगिक संबंध इंसान के पैदा होने, अच्छे संस्कार पाने और आराम करने के घर के तसव्वुर (धारणा) ही को ख़त्म कर देते हैं, फिर यह भी याद रखना चाहिए कि इंसानी फितरत के खिलाफ

जाने की आदत एक बीमारी की तरह फैलती है, लेकिन फितरत के खिलाफ यौन-क्रिया तो महामारी की तरह समाज को जकड़ लेती हैं। इसी लिए हर दौर में पैगम्बर और नेक लोग बल्कि पूरी इंसानियत इनके खिलाग कोशिश करती रही है।"

"लेकिन मैंने पढ़ा है कि कुछ लोगों के अन्दर वाकई ऐसे रुझान होते हैं, वो क्या करें?" नाएमा ने इस मसले का एक और पहलु सामने रखा तो अस्र ने जवाब दिया:

"वो सब्र (धैर्य) करें अपनी तरबियत (प्रशिक्षण) करें, देखो इंसानों का सबसे बड़ा रुझान तो यह होता है जो लगभग हर इंसान खास कर मर्दों को उम्र के किसी भी हिस्से में हो सकता है और अक्सर हो जाता है कि वो किसी दूसरी औरत से ना जायज़ जिस्मानी रिश्ता बनाएँ, मगर इस मसले को सब्र और तरबियत करके ही ठीक किया जाता है ना कि इसे फिरती रुझान करार दे कर उन्हें इस की इजाज़त दे दी जाती है। इसका नतीजा भी खानदान और परिवार की तबाही के सिवा कुछ नहीं।"

"तुम ठीक कहते हो, जुर्म एक इंसान के खिलाफ ही नहीं समाज के खिलाफ भी होता है, परिवार के खिलाफ भी होता है, नैतिक मूल्यों के खिलाफ भी होता है। लेकिन आज़ादी भी तो एक चीज़ होती है ना, कहीं ऐसा तो नहीं कि हम समाज की बात करते करते इंसान की अपनी आज़ादी को कुचल दें। बहुत सी ज़बरदस्ती की हुकूमतों ने समाजी मुश्किलों के नाम पर इंसान के जाति हक़ छीने हैं।"

नाएमा ने अब इंसानी आज़ादी के पहलु से मुकदमा सामने रखा।

"तुम ठीक कहती हो, मगर अल्लाह तआला ने इंसानियत पर यह करम किया है कि तुम्हारी आसानी के लिए इस का फैसला खुद कर दिया है कि कौन सी आज़ादी हमेशा के लिए है कौन सी नहीं। तुम्हारा काम यह है कि दोनों में फर्क करलो। हर चीज़ को अल्लाह की बात बता कर लोगों पर पाबन्दी लगाने का तरीका पैगम्बरों का नहीं है, लेकिन कम से कम समलैंगिक संबंध कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसकी इजाज़त आज़ादी की आड़ में दी जाए। यह समाज का कत्ल करना है, जिस तरह किन्ही दो लोगों को यह इजाज़त नहीं दी जा सकती कि उनमें से एक दुसरे को यह हक़ दे दे कि वो उसकी जान लेले, आज़ादी की आड़ में इंसान की जान की अहमियत को

कम नहीं किया जा सकता, इसी तरह यह सामूहिक रूप में समाज का क़त्ल है इसकी भी इजाज़त नहीं दी जा सकती।"

नाएमा ने हाँ में सर हिलाया, नाएमा के दिमाग से पोस्टमॉडर्निज़्म के फलसफे (दर्शन) की सारी धूल अस्र ने अपनी दलीलों से हटा दी थी।

****

तीन ना इंसाफी

"अब हमें कहाँ जाना है?"

नाएमा ने एक नए सफ़र के बारे में सवाल किया।

"हम अपने सफ़र के आखरी चरण में जा रहे हैं, जिसमें हम कौम बनी-इसराइल (यहूदी) और फिरोन और उनके पैगम्बर मूसा (अ) के ज़माने में जाएंगे।"

"अच्छा तो क्या मैं हज़रत मूसा (अ) से मिलूंगी।"

नाएमा जिसने सारी ज़िन्दगी किसी पैगम्बर को सीर्यसली नहीं लिया था, आज हज़रत मूसा (अ) का नाम सुनकर जोश और ख़ुशी के अंदाज़ में कहा। इसकी एक वजह शायद यह भी थी कि उसके नाना उसे बचपन से हज़रत मूसा (अ) और फिरोन की कहानी सुनाया करते थे।

"नहीं तुम मिलोगी तो किसी से नहीं लेकिन उन्हें देख और सुन ज़रूर लोगी, बिलकुल ऐसे ही जैसे पिछले नबियों को देखा है, यह भी कोई कम नहीं। लेकिन हाँ जन्नत वह जगह है जहाँ तुम हर नबी और रसूल से मिल सकोगी। मगर तुम तो जन्नत और जहन्नम को मानती ही नहीं, बल्कि खुदा को भी नहीं मानती?"

अस्र ने हँसते हुए नाएमा से पूछा, नाएमा थोड़ी देर खामोश रही और फिर बोली:

"अब मैं खुदा को मानने लगी हूँ।"

"उसे मानना काफी नहीं है, उसका बंदा बनना भी ज़रूरी है, मगर बंदगी खेल नहीं है, बंदगी ज़िन्दगी का सौदा है, बिन देखे का सौदा, इस में माल देखे बगैर नकद कीमत देनी पड़ती है और सौदा उधार होता है, तुम यह कर सकती हो?"

"कर लूंगी, अब तो ज़रूर करूँगी।"

"सोच लो! तुम्हारा इम्तिहान बहुत सख्त लिया जा सकता है, इस लिए कि आधी हकीक़त तुम ने रूहानी आँखों से देख ली है।"

नाएमा इस बात के जवाब में खामोश रही, उसने अपने दोनों होंठ सख्ती से भींच रखे थे और उसका चहरा तम तमा रहा था। उसके इरादे शब्दों में तो नहीं ढले थे मगर चहरे के आईने में साफ़ नज़र आ रहा था कि उसके दिल में क्या आग लग चुकी है।

अस्र उसे तौलने वाली नज़रों से देखते हुए बोला:

"मेरा ख्याल है तुम यह सौदा कर लोगी, क्यों कि तुम अच्छे चरित्र की इन्सान हो, अच्छे चरित्र के लोग तो अक्ल कि आँखों से देख कर भी यह सौदा कर लेते हैं और बुरे चरित्र के लोग अपनी असल आँखों से देख कर भी नहीं मानते। इसलिए मुझे उम्मीद है कि तुम यह कर लोगी, हालांकि तुम्हारी अजमाइश बहुत सख्त होगी।"

कुछ देर ख़ामोशी रही फिर नाएमा बोली:

"तुमने कुछ देर पहले यह कहा था कि हमारा सफर ख़त्म हो रहा है, मगर मेरा दूसरा सवाल अभी बाकि है।"

अस्र धीरे से मुस्कुराया और बोला:

"हाँ तुम्हारा दूसरा सवाल यह था कि खुदा किसी को महरूम (वंचित) क्यों रखता है और क्यों नेक लोगों के साथ वह बुरा होने देता है और बुरों के साथ भलाई होने देता है।"

"बिलकुल, यही सवाल था मेरा।"

"वैसे तो आम हालात में यह सब इम्तिहान का हिस्सा होता है लेकिन तुम्हारे इस सवाल का जवाब भी बनी इसराइल और हज़रत मूसा (अ) के ज़माने में मौजूद है, हम वहीं से शुरू करते हैं। पहले तुम्हारे सवाल का जवाब लेंगे और फिर अल्लाह की उस सज़ा और इनाम को देखेंगे जिसके निशान ही नहीं बल्कि जिसका जिन्दा सुबूत बन कर एक कौम तुम्हारे ज़माने में मौजूद है। चलो मैं तुम्हे इस सफ़र के शुरू में खुदा के एक अज़ीम बन्दे से मिलवाता हूँ।"

यह कह कर अस्र ने नाएमा का हाथ पकड़ा और एक बार वही सदियों का सफ़र कुछ क़दमों में पूरा हो गया। जब वो रुके तो नाएमा ने देखा कि वो दोनों दूर तक फैली एक नदी के किनारे पहुँच चुके हैं। नाएमा ने अस्र से पूछा:

''यह कौन सी जगह है?''

''यह नील नदी है।'' अस्र ने जवाब दिया और फिर एक तरफ इशारा करते हुए बोला:

''देखो वहां से नदी का एक और बहाव आ रहा है। जहाँ हम खड़े हैं इस जगह दोनों बहाव मिल कर एक हो जाते हैं।''

नाएमा जो नदी के सिर्फ एक तरफ देख रही थी अस्र के कहने पर उसने दूसरी तरफ भी देखा। यह एक बहुत बड़ी नदी थी इस नदी के अन्दर एक दूसरी नदी बहती हुई आ रही और इसमें आकर मिल रही थी। इस नदी के किनारे एक दो नाव खड़ी हुई थीं, नाव वाले ज़ोर ज़ोर से आवाज़ लगा कर यहाँ आने वाले लोगों को बता रहे थे कि यह नाव कहाँ कहाँ जाएगी। जिसे उन जगहों तक जाना होता वह उसकी नाव में आकर बैठ जाता था। नाव अभी काफी खाली थी लोग भी यहाँ कम ही थे।

नाएमा ने जब आस आप की सारी जगह देख ली तो अस्र ने कहा:

''मूसा (अ) थोड़ी ही देर में यहाँ आने वाले हैं, इस बीच मैं तुम्हे यह बताता हूँ कि तुम्हारे दुसरे सवाल के जवाब में हम यहाँ क्यों आए हैं। यह फिरोन का ज़माना है, वह मिस्र का बहुत ताक़त वर और ज़ालिम राजा है। तुम मिस्र को अपने ज़माने की कोई सूपर पावर ना समझना और ना ही फिरोन को उस सूपर पावर का मालिक, इसकी किसी से कोई तुलना ही नहीं। यह इतना ताक़त वर राजा है कि तुम सोच भी नहीं सकती। हम जिस ज़माने में यहाँ आए हैं यह वो दौर है जब अल्लाह तआला ने मिस्र के वासियों पर करम करते हुए अपने अज़ीम (महान) पैगम्बर हज़रत मूसा (अ) को रसूल बना कर यहाँ भेजा है, यह उनका शुरू का ज़माना है। उन्होंने फिरोन के दरबार में जा कर उसे एक अल्लाह पर ईमान लाने की दावत दी है जिसे उसने ठुकरा दिया है। मूसा (अ) ने उससे यह मांग भी की है कि कौम बनी-इसराइल (यहूदी) को उनके साथ जाने दे।''

''क्या बनी-इसराइल हज़रत इब्राहीम के बेटे इसहाक और उनके बेटे हज़रत याकूब (अ) की नस्ल में से हैं ना?''

नाएमा ने अपनी जानकारी की तस्दीक (पुष्टि) कराने के लिए पूछा।

"हाँ यह मूसा (अ) की कौम हैं, जबकि फिरोन क़ब्तियों में से है जो यहाँ के अधिकांश लोगों का गिरोह है। बनी-इसराइल हज़रत यूसुफ (अ) के ज़माने में यहाँ आए थे, जो हज़रत याकूब (अ) के बेटे थे और मिस्र के लीडर बन गए थे। धीरे धीरे उनकी आबादी इतनी बढ़ी कि वो खुद एक बड़ी कौम बन गए। जिसके बाद क़ब्तियों ने उनसे खतरा महसूस किया और पूरी कौम को गुलाम बना लिया है। वो उनसे महनत मजदूरी कराते हैं और बहुत ज़ुल्म का सुलूक करते हैं।"

"और कोई नहीं जो इस ज़ुल्म को रोके?"

अस्र एक पल खामोश रहा और फिर एक उदास मुस्कुराहट के साथ बोला:

"तुम्हे नहीं मालूम नाएमा कि तुम कहाँ खड़ी हो। कुछ अरसे पहले फिरोन यह हुक्म जारी कर चुका कि बनी इसराइल के घरों में पैदा होने वाले हर लड़के को क़त्ल कर दिया जाए और फ़ीमेल बच्चे को जिन्दा रहने दिया जाए। ऐसा ही हुक्म मूसा (अ) के पैदा होने के समय में दिया गया था।

तुम्हे इसका अंदाज़ा नहीं कि तुम पर अल्लाह ने कितना करम किया है और तुम्हे कितने आसान और इन्साफ वाले दौर में पैदा किया है। तुम्हे मालूम हैं कि अगर तुम इस वक़्त लोगों को नज़र आ रही होती और किसी ताकतवर के साथ ना होती तो तुम्हारे जैसी खूबसूरत लड़की को कोई भी ज़बरदस्ती पकड़ कर अपनी गुलाम बना लेता। फिर उम्र भर तुम्हे एक जगह से दूसरी जगह बेचा जाता और तुम्हारा जीने का मकसद सिर्फ यही होता कि तुम एक गुलाम बन कर अपने आक़ाओं को खुश करती रहो।"

"तो क्या हमेशा से ऐसा होता रहा है?"

"हाँ, जब जब लोगों ने पैगम्बरों की शिक्षाओं को छोड़ कर अल्लाह की ना फ़रमानी की है तो शैतानों ने इंसानों पर राज किया है, जिसके बाद ज़ुल्म और ज़बरदस्ती का दौर शुरू होता रहा है।"

नाएमा एक कपकपी सी ले कर रह गई, अस्र ने अपनी बात जारी रखी।

"मूसा (अ) की कौम ऐसे ही ज़ुल्म और सितम के ज़माने में घिरी हुई है। उनकी कौम के नौजवान भी तुम्हारी तरह सोच रहे हैं कि क्यों अल्लाह फिरोन का हाथ नहीं रोक रहा। वे

नौजवान हज़रत मूसा (अ) से यही सवाल कर रहे हैं जो तुम करती रही हो कि क्यों मासूमों को क़त्ल किया जा रहा है क्यों पिसी हुई कौम बनी-इसराइल को और ज़्यादा दबाया जा रहा है, अल्लाह की इसमें क्या हिकमत (Wisdom) है।''

''तो हज़रत मूसा (अ) ने उन्हें क्या जवाब दिया?''

''उन्होंने अल्लाह तआला से दुआ की कि वह उन्हें जवाब अता करें, इसके लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (अ) को इस सफ़र पर भेजा है। यहाँ उनकी मुलाक़ात अल्लाह तआला ने अपने एक खास बन्दे हज़रत खिज्र (अ) से कराई है, हज़रत मूसा (अ) किसी भी वक़्त यहाँ हज़रत खिज्र के साथ पहुँचने वाले हैं। इस सफ़र में हज़रत खिज्र मूसा (अ) को यह दिखाएँगे कि कई बार ऐसा भी होता है कि जो दिखने में अल्लाह की ना इंसाफी और ज़ुल्म लगता है उस में अल्लाह की कैसी कैसी हिकमत (Wisdom) छुपी होती हैं।''

.....

अस्र अपनी बात कह चुका था नाएमा नाव की तरफ देखने लगी, वह अब सवारी से लगभग भर चुकी थी। नाएमा देख तो नाव को रही थी लेकिन उसके दिमाग में अस्र की बातें घूम रही थीं। वह दिल ही दिल में अल्लाह का शुक्र अदा कर रही थी कि वह एक बहुत आसान दौर में पैदा हुई है। इस दौर में तो लोग दूर दूर का सफ़र भी पैदल ही किया करते थे, सवारियां अगर थीं तो जानवरों की थी जिन पर सफ़र करने में मुश्किल बहुत ज़्यादा होती थी और वो उसके ज़माने की हाई स्पीड गाड़ी, बस, ट्रेन और जहाज़ों के मुकाबले में कोई हेस्यत नहीं रखती थीं।

नाएमा ने आस पास देखा और सोचा कि इस दौर में लोग अस्पतालों और डॉक्टरों के बगैर कैसे जीते होंगे, बहुत तेज़ सर्दी और तेज़ गर्मी के मौसम का मुकाबला कैसे करते होंगे।

फिर उसे समझ आया कि तभी इंसानी आबादी हर दौर में इतनी कम रही थी, यह आबादी कभी कुछ करोड़ से ज़्यादा नहीं रही, जबकि मेरे ज़माने में इंसान अरबों की संख्या में मौजूद हैं।

वह इन्ही ख्यालों में डूबी हुई थी कि अस्र ने दूर से आने वाले दो लोगों कि तरफ उसका ध्यान दिलाते हुए कहा:

''वे आ रहे हैं हमारे मूसा और खिज्र (अ)।''

.....

नाएमा को दूर से दो आदमी आते हुए नज़र आए, अस्र ने उनके बारे में तफसील से बताते हुए कहा:

"यह जो एक बुज़ुर्ग की शक्ल में नज़र आ रहे हैं वह हज़रत खिज्र (अ) हैं, वह इंसान नहीं हैं लेकिन जिस तरह मैं तुम्हारे सामने इंसानी शक्ल में आया हूँ वह भी मूसा (अ) की आसानी के लिए उनके सामने इंसानी शक्ल में आए हैं। जबकि दुसरे जवान उम्र के जो साहब हैं वह मूसा (अ) हैं।"

नाएमा ने गौर से उन दोनों को देखा, हज़रत मूसा (अ) एक अच्छे लम्बे चौड़े जिस्म के जवान थे, जबकि उनके साथ चलने वाले खिज्र (अ) एक बुज़ुर्ग की सूरत में थे, उनके चहरे पर एक खास तरह का नूर था। वो दोनों चलते हुए नाव के पास पहुंचे और उस पर सवार हो गए। अस्र ने नाएमा का हाथ पकड़ा और खुद भी नाव पर उनके पास जा बैठा। उनके बैठते ही नाव वालों ने नाव को खोला और चलाने के लिए अपनी अपनी जगह बैठ गए, थोड़ी देर में नाव अपनी मंजिल की तरफ चल पड़ी।

नाएमा अस्र से कुछ पूछना चाहती थी, मगर वो लोग उन दोनों के इतने करीब थे कि नाएमा को डर लग रहा था कहीं हज़रत मूसा (अ) या हज़रत खिज्र उनकी कोई बात सुन ना लें। वह बीच बीच में कभी उनको देखती और कभी अस्र को, उसकी परेशानी को भांप कर अस्र ने कहा:

"तुम बे फ़िक्र रहो, हमें यहाँ कोई नहीं देख सकता, इसलिए कि हम भूत काल की एक घटना में मौजूद हैं, इसमें कोई ना बदलाव कर सकते हैं और ना हम यहाँ जिस्मानी तौर पर मौजूद हैं। बे फिर्क रहो हमारी बात भी कोई नहीं सुनेगा, तुम यह समझलो कि तुम्हारे ज़माने के हिसाब से यह एक विडियो फिल्म चल रही है मगर हम इस फिल्म को बाहर से देखने की बजाए उसके अन्दर आ चुके हैं और उसके साथ साथ चल रहे हैं।"

इसी बीच हज़रत खिज्र (अ) ने अपने कदमो के नीचे लकड़ी पर हाथ रखा, उनका हाथ रखना था कि नाव के इस हिस्से की लकड़ियाँ निकल गई और नीचे तक छेद हो गया। इस जगह से पानी नाव के अन्दर आने लगा, यह देख कर पूरी नाव में हलचल सी मच गई। नाव चलाने वाले भी

घबरा गए, वो तेज़ी के साथ नाव को किनारे की तरफ ले जाने लगे। नाएमा भी डर गई उसने अस्र के हाथ को ज़ोर से पकड़ लिया, उसे डरा हुआ देख कर अस्र ने कहा:

"तुम फिर भूल गई हम यहाँ हकीक़त में नहीं हैं, हमें कुछ नहीं होगा तुम आराम से रहो।"

"अरे हमें कुछ नहीं होगा मगर बाकि लोग तो डूब जाएंगे, कुछ करो।"

"पागल लड़की यह देखो हम इस वक़्त किसके साथ हैं।"

अस्र के धमकाने पर नाएमा ने मूसा और खिज्र (अ) की तरफ देखा, बाकि लोगों से अलग वो दोनों इत्मिनान से बैठे हुए थे। लेकिन हज़रत मूसा (अ) बार बार नाराज़गी के अंदाज़ में हज़रत खिज्र को देख रहे थे, साफ़ लगता था कि उन्हें हज़रत खिज्र की यह हरकत पसंद नहीं आई है।

नाव में पानी काफी भर गया था, नाव चलाने वाले सर तौड़ कोशिश कर रहे थे कि किसी तरह नाव किनारे पर पहुँच जाए, जबकि कुछ लोग अपने पास मौजूद सामान से उस जगह को भरने की कोशिश कर रहे थे जहाँ से लकड़ी टूटी थी। नाव किनारे से ज़्यादा दूर नहीं थी, इस लिए थोड़ी कोशिशों के बाद ही वो किनारे पर सही सलामत पहुँच ने में कामयाब हो गए।

लोग किनारे पर आने में ख़ुशी का इज़हार करते हुए तेज़ी के साथ नीचे उतरने लगे। आखिर में हज़रत खिज्र और मूसा (अ) भी नीचे उतर गए, यह दोनों भी उनके पीछे ही नीचे उतरे। नीचे उतारते ही हज़रत मूसा (अ) ने हज़रत खिज्र (अ) से कहा:

"आप ने नाव में छेद कर दिया ताकि सब नाव वाले डूब जाएं, यह तो आप ने बड़ी गलत हरकत कर डाली है।"

हज़रत खिज्र ने बड़ी नरमी से जवाब दिया:

"मूसा क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते।"

उन्होंने जवाब दिया:

"मेरी भूल चूक पर आप मुझे ना पकड़ें, मेरे बारे में आप सख्ती से काम ना लीजये।"

यह बात करते हुए वो दोनों आगे बढ़ गए, नाएमा ने पीछे मुड़ कर देखा, नाव के मालिक रो रहे थे। उनकी ना सिर्फ आज की मजदूरी गई बल्कि अगले कई दिन तक जब तक नाव की मरम्मत ना हो जाए उनकी कमाई ख़त्म हो गई थी, वो देखने में ही बहुत गरीब और मजबूर लग रहे थे। यह सब देख कर नाएमा को हज़रत मूसा (अ) की बात बिलकुल सही लगी।

उसने अस्र से कहा:

"हज़रत मूसा का ऐतराज़ (आपत्ति) बिलकुल ठीक था, तुम देखो तो सही कितने लोगों की जान खतरे में पड़ गई थी। वो तो खैर बच गए लेकिन देखो इन गरीबों का क्या होगा, इनका तो रोज़गार गया, किसी ने इन्हें पैसे भी नहीं दिये और नाव की मरम्मत अलग रही।"

"तुमने हज़रत खिज्र का जवाब नहीं सुना।"

"पता नहीं वो क्या कह रहे थे।"

"दरअसल जब उन दोनों की मुलाकात हुई थी तो हज़रत खिज्र ने मूसा (अ) को बता दिया था कि आप मेरे साथ आ तो रहे हैं मगर जो कुछ मैं करूँगा आप उसे सहन नहीं कर सकेंगे, और सहन भी कैसे करेंगे जब आप को उस पूरे मामले की जानकारी नहीं होगी। इस पर उन्होंने कहा कि मैं इंशा अल्लाह सब्र करूँगा और किसी भी हाल में आप की नाफ़रमानी नहीं करूँगा। हज़रत खिज्र ने उस वक़्त यह शर्त रखी थी कि आप मुझ से कोई बात उस वक़्त तक नहीं पूछेंगे जब तक मैं खुद ही उसका ज़िक्र (उल्लेख) ना करदूं।"

अस्र से यह बात जान कर नाएमा बोली:

"अच्छा तो इसी लिए हज़रत मूसा ने कहा था कि आप मेरे बारे में सख्ती ना करें। उन का ऐतराज़ (आपत्ति) तो सही था मगर क्यों कि उन्हें पहले ही खामोश रहने को कहा जा चुका था और इस शर्त को उन्होंने मान भी लिया था तो इसी लिए उन्होंने ऐसा कहा।"

"हाँ तुम ठीक समझी हो।"

.....

जिस बीच नाएमा और अस्र यह बातें कर रहे थे वे दोनों हज़रत काफी दूर जा चुके थे। अस्र ने नाएमा का हाथ पकड़ते हुए कहा:

"चलो हमें उनके पास पहुंचना है, अब एक बहुत बड़ी घटना होने वाली है।"

यह कह कर वह तेज़ी से आगे बढ़ने लगा, नाएमा उसके साथ ही थी। वो दोनों हज़रत नदी के साथ साथ चलते हुए काफी दूर आ गए थे, जल्दी ही नाएमा और अस्र भी उनके पास आ गए। पास आकर उन्होंने देखा कि एक मासूम बच्चा नदी के किनारे खेल रहा था, आस पास कोई भी नहीं था। शायद वह किसी करीब की बस्ती का रहने वाला था। अभी नाएमा यहाँ के हालात पर गौर कर ही रही थी कि हज़रत खिज्र आगे बढ़े और बच्चे को धक्का दे दिया, वह बच्चा नदी में जा गिरा और डूबने लगा। हज़रत मूसा (अ) यह देख कर हक्का बक्का रह गए, यही हाल नाएमा का था। हज़रत मूसा तो ख़ैर पैगम्बर थे और अच्छी तरह जानते थे कि हज़रत खिज्र कौन हैं, मगर नाएमा तो एक आम लड़की थी, वह घबरा कर चींखी और उसने भाग कर बच्चे को बचाने की कोशिश करना चाही मगर तभी अस्र ने उसे हाथ से पकड़ कर अपनी ओर खींच लिया।

"पागल पन मत करो, तुम कुछ नहीं कर सकती सिर्फ देख सकती हो।"

दूसरी तरफ हज़रत मूसा (अ) के चहरे पर भी एक रंग आ रहा था और दूसरा जा रहा था। कर तो वह भी कुछ नहीं सकते थे मगर इंसानी क़त्ल कोई मामूली बात नहीं थी, वो भी एक मासूम बच्चे का क़त्ल, वह तड़प कर हज़रत खिज्र से बोले:

"आप ने एक बे गुनाह की जान लेली हालांकि उसने किसी का खून नहीं किया था, यह काम तो आपने बहुत हो बुरा किया।"

हज़रत खिज्र ने उन्हें फिर वही जवाब दिया।

"मैंने कहा था ना कि आप मेरे साथ सब्र (धैर्य) नहीं कर सकते।"

हज़रत मूसा को अहसास हो गया कि मामला हज़रत खिज्र का नहीं बल्कि अल्लाह का था, इसलिए उन्होंने कहा:

"अगर मैं आप से इसके बाद कुछ पूछूँ तो मुझे साथ ना रखये गा, अब तो मेरी तरफ से आप को एक वजह भी मिल गई है।"

इस बात के बाद वो दोनों आगे बढ़ गए मगर नाएमा की हालत अब तक ख़राब थी। वह अस्र से अपना हाथ छुड़ा कर नदी के किनारे उस जगह आ गई जहाँ वह बच्चा डूबा था, अब वहां कुछ भी बाकि नहीं रहा था। नाएमा बेबसी में वहीं बैठ कर रोने लगी, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह हुआ क्या है। नाव को तोड़ना इसके मुकाबले बहुत छोटी चीज़ थी, उस घटना से भी वह बड़ी परेशान हो गई थी, मगर यहाँ तो एक मासूम बच्चे को बिना किसी वजह के क़त्ल कर दिया गया था, और यह काम किया भी उस हस्ती ने था जिसके बारे में उसे बताया गया था कि यह अल्लाह की तरफ से भेजे हुए हैं।

अस्र उसके साथ ही आ कर बैठ गया, वह खामोश रहा और नाएमा को रोते हुए देखता रहा। थोड़ी देर में नाएमा की सिसकियाँ कुछ कम हो गईं, उसने चहरा उठाया और अस्र की तरफ देखते हुए कहा:

"उस मासूम का क्या कुसूर था?"

"मैं तुम्हारा दुःख समझ सकता हूँ, मगर नाएमा तुम भूल रही हो कि तुम पर काएनात के भेद खोले जा रहे हैं। अपना दिल बड़ा रखो और पैगम्बर की पैरवी करो, यही ठीक रास्ता है। यकीन रखो अल्लाह तआला अपने बन्दों पर राई के दाने के बराबर भी ज़ुल्म नहीं करते।"

नाएमा ने हाँ में सर हिलाया मगर सच्ची बात यह थी कि उसका दिल बिलकुल भी मुतमइन (संतुष्ट) नहीं था, मगर वह क्या कर सकती थी, उसने पूछा:

"अब कहाँ चलना है?"

"बस्ती में, वो दोनों एक बस्ती की तरफ गए हैं, आओ उनके पास चलते हैं।"

.....

हज़रत खिज्र और हज़रत मूसा (अ) चलते चलते एक बस्ती में पहुँच गए, नाएमा और अस्र उनके पीछे पीछे चले आ रहे थे। इस समय दोपहर का समय हो चुका था, बस्ती के बाज़ार से गुज़रते हुए उन्होंने देखा कि लोग दोपहर का खाना खा रहे हैं।

हज़रत खिज्र एक नानबाई के पास गए और उसे बताया कि वो दोनों मुसाफिर हैं, सफ़र का सामान उनके पास नहीं रहा, उन्हें खाना चाहिए, नानबाई ने उन्हें झिड़क दिया। हज़रत मूसा

ख़ामोशी से यह सब देख रहे थे, हज़रत खिज्र और भी कई दुकानों पर गए, हर जगह लोगों ने उन्हें खाना खिलाने से माना कर दिया। बाज़ार से निकल कर कुछ मकान रास्ते में मिले, उन्होंने वहां भी दरवाज़ा खटखटा कर खाना माँगा, मगर लगता था कि इस बस्ती के लोगों में रहम नहीं। इंसानी हमदर्दी, मुसाफिरों का लिहाज़ उनकी मदद का जज़्बा सब ख़तम हो चुका था, एक आदमी ने भी उन्हें खाना नहीं दिया। आखिर कार चलते चलते बस्ती का आखरी हिस्सा आ गया, यहाँ एक पुराना मकान बना हुआ था जिसकी एक दीवार कमज़ोर हो कर इतनी झुकी हुई थी कि कभी भी गिर सकती थी। यहाँ हज़रत खिज्र ने दरवाज़ा खट खटा कर खाना नहीं माँगा बल्कि दीवार पर हाथ रखा, उनके हाथ रखने से वो दीवार धीरे धीरे सीधी हो गई और पहले से कहीं ज़्यादा मज़बूती से खड़ी हो गई।

नाएमा हैरत से यह सब देख रही थी, हज़रत मूसा (अ) भी यहीं खड़े हुए यह सब देख रहे थे। दिवार सीधी होते देख कर उन्होंने हज़रत खिज्र (अ) से कहा:

"आप ने इतने लोगों से खाना माँगा पर किसी ने नहीं दिया, आप चाहते तो इस घर वालों से दीवार सही करने के बदले खाना ही ले लेते।"

यह सुन कर हज़रत खिज्र ने कहा:

"बस मेरा तुम्हारा साथ अब ख़त्म हुआ, अब मैं तुम्हे उन बातों की हकीक़त बताता हूँ जिन पर तुम सब्र ना कर सके। वह नाव जिसका तख्ता मैंने तोड़ा कुछ गरीब लोगों की नाव थी, वो नहीं जानते थे कि आज जिस मंजिल की तरफ वो जा रहे हैं वहां एक राजा अपनी फ़ौज के लिए नाव जमा कर रहा है। यह नाव अगर वहां पहुँचती तो राजा उन गरीबों से उनके कमाने का साधन ही हमेशा के लिए छीन लेता, अब यह लोग एक दो दिन में अपनी नाव ठीक कर लेंगे और अपना काम फिरसे शुरू कर सकेंगे, अगर आज कि घटना ना होती तो वे अपनी नाव ही गवा देते।

रहा वह लड़का तो उसके माँ बाप बहुत नेक और अपने रब के वफादार बन्दे हैं। हमें यह अंदेशा था कि लड़का बड़ा हो कर बहुत बुरा आदमी बनेगा अपने माँ बाप को बहुत तंग करेगा, यह कुफ्र और शिर्क भी करेगा, हर तरह की बुराई उसमे होगी, वो अपने माँ बाप की ज़िन्दगी जहन्नम बना देगा। हमने चाहा कि उनका रब उसके बदले उन्हें एक ऐसी औलाद अता करे जो नेक भी हो और अपने माँ बाप की सेवा करने की उम्मीद भी उससे बहुत हो।

और इस दिवार की हकीक़त यह है कि यह मकान दो यतीम लड़कों की विरासत है जो असल में उनके बाप का था। वह एक बहुत नेक आदमी था, उसके मरने के बाद उसके दोनों बच्चे कहीं और रिश्तेदार के यहाँ रहने के लिए चले गए हैं, उन्हें अभी नहीं पता कि उनके बाप ने उनके लिए इस घर में इस दीवार के नीचे एक खज़ाना छुपा कर रखा है। यह दीवार गिर जाती तो खज़ाना सबके सामने आ जाता और किसी और के हाथ लग जाता। अल्लाह तआला ने यह चाहा कि वे दोनों बच्चे बड़े हो जाएं इस मकान में रहने लगें उसके बाद यह खज़ाना उन्हें मिल जाए।

मैंने जो कुछ आज तुम्हारे सामने किया अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं किया, देखने में जो ना इंसाफी तुमने मेरी तरफ से देखी वो दरअसल तुम्हारे रब की रहमत थी। यह है हकीक़त उन बातों की जिन पर तुम सब्र ना कर सके।"

.....

नाएमा सर पकड़े एक पेड़ के नीचे बैठी हुई थी, अस्र उसके साथ ही था। हज़रत खिज्र (अ) की बात सुनने के बाद उसे चुप लग गई थी। वो दोनों हज़रत उसके बाद अलग हो कर चले गए थे, लेकिन नाएमा वहीं एक पेड़ के नीचे बैठ गई थी, उसे अंदाज़ा हो गया था कि अब उसे उन लोगों के साथ नहीं जाना था। वह काफी देर से खामोश थी, आखिर कार अस्र ही बोला:

"तुम्हे तुम्हारे दुसरे सवाल का जवाब मिल चुका है, इस दुनिया में बहुत बार ऐसा होता है कि नेक लोगों के साथ देखने में कुछ बुराई और बुरों के साथ देखने में कुछ अच्छाई हो रही होती है। कभी इसके पीछे कोई इंसान नहीं होता बल्कि अल्लाह की कुदरत ही से ऐसा हो रहा होता है, इससे लोगों के मन में सवाल ज़रूर पैदा होता है, मगर नाएमा याद रखना! अल्लाह तआला की सारी मुहब्बत नेक लोगों के लिए होती है, वह कमजोरों के साथ होते हैं, इन घटनाओं में तुमने यह देख ही लिया है।

दरअसल अल्लाह तआला ऐसी घटनाओं से लोगों की मदद कर रहे होते हैं, मगर लोग उनसे शिकायत करते हैं, उनपर शक़ करते हैं, उनके होने का ही इन्कार करने लगते हैं, मगर हैरत है अल्लाह तआला के सब्र पर कि इतना कुछ सुनने के बाद भी वो बन्दों के साथ सिर्फ भलाई ही करते रहते हैं।"

''लेकिन क्या यह मुमकिन नहीं कि कोई आसान तरीका अपना लिया जाए, मिसाल के तौर पर नाव को ना तोड़ा जाता या बच्चे को ना मारा जाता बल्कि उसे ही नेक बना दिया जाता।''

''देखो यह तो अल्लाह की हिकमत (Wisdom) का सिर्फ एक पहलु तुम्हारे सामने लाया गया है, इस जैसी ना जाने कितनी हिकमतें और होती हैं जो इंसानों पर कयामत के दिन खुलेंगीं। फिर यह भी याद रखो कि दुनिया इम्तिहान की जगह है यह इम्तिहान कभी कुछ देकर भी लिया जाता है और कुछ ले कर भी लिया जाता है। नाव वाले और बच्चे के माँ बाप दोनों के लिए यह सब्र करने का टास्क है, इस सब्र का जो बदला उन्हें क़यामत के दिन मिलेगा वो तो अभी तुम्हारे ख्याल में भी नहीं आ सकता। देखों इंसान अपनी महनत और इबादत से अल्लाह के यहाँ वह मुकाम हासिल नहीं कर सकता जो सब्र से पा लेता है। इसलिए जब कुदरत की तरफ से कोई मुसीबत आए तो सब्र करना चाहिए, इस यकीन के साथ कि इसमें कुछ अच्छा भी होगा और इस ईमान के साथ कि उसे इसकी बहुत ज़्यादा कीमत मिलेगी।

इसी तरह अल्लाह तआला जब किसी बुरे इंसान के साथ भलाई करते हैं तो असल में वो भलाई अपने नेक बन्दों के साथ ही कर रहे होते हैं, थोड़ी देर के लिए उसका फायदा बुरे लोगों को भी पहुँच जाता है।''

नाएमा बात तो समझ चुकी थी मगर अच्छा मौका जान कर उसने वह सवाल पूछ ही लिया जो बचपन से कांटे की तरह उसके दिल में चुभ रहा था, उसने पूछा:

''मेरे पापा की मौत मेरे बचपन में ही हो गई थी तो इसमें क्या हिकमत थी? मैं बाप के प्यार से महरूम (वंचित) रही, मेरी माँ ने विधवा का जीवन गुज़ारा, हमने गरीबी देखी, इसमें हमारी क्या भलाई थी?''

अस्र कुछ देर खामोश रहा, फिर बोला:

''तुम्हारी भलाई का कुछ हिस्सा बताने की मुझे इजाज़त मिल गई है, वह बता देता हूँ। अल्लाह तआला जिस इंसान को पैदा करते हैं उसे आखिर कार मरना भी होता है। इसी उसूल पर तुम्हारे पापा की मौत हुई, तुम्हे इस घटना से जितना नुक्सान हुआ है उससे कहीं ज़्यादा फायदा हुआ है। तुम्हारे पापा अगर जिन्दा होते तो मुमकिन था कि बहुत दौलत कमाते और गुनाहों में पड़ कर मरते, सबसे बढ़ कर तुम ऐसी नहीं होती जैसी अब हो। ज़्यादा दौलत अक्सर लोगों को सख्त

दिल बना देती है। तुम खूबसूरत भी हो और पढ़ी लिखी भी, बाप की वजह से अमीर भी हो जाती, जिसके बाद तुम पत्थर दिल बन जाती, तुम कभी गरीबों की मदद नहीं करती बल्कि इस बस्ती वालों की तरह भूके को खाना खिलाने के जज़्बे से भी महरूम (वंचित) हो जाती। पत्थर दिल होने के बाद तुम कभी सच्चाई को तलाश करने की कोशिश ना करती, आज तुम मेरे साथ यहाँ ना बैठी होती, यह हकीकतें इस तरह ना देख रही होती। नतीजा बहुत साफ़ था तुम अपने गुनाहों की वजह से जहन्नम की भेंट चढ़ जाती।"

नाएमा ने अस्र की बात के जवाब में कुछ नहीं कहा, वह एक समझदार लड़की थी और अच्छी तरह समझ रही थी जो कुछ अस्र कह रहा है वो बिलकुल ठीक बात है। दुखों का बोझ ना होता तो उसका दिल भी नरम ना होता, अगर गरीबी को ना झेला होता तो गरीब का अहसास भी ना होता। उसने कॉलेज में बहुत सी अमीर लड़कियों का हाल देखा हुआ था, वह इन्ही सोचों में गुम थी कि अस्र की आवाज़ उसके कानों में पड़ी:

"हाँ दुखों के बारे में एक बहुत ज़रूरी बात यह है कि हर दुःख और मुसीबत ज़रूरी नहीं कि अल्लाह की तरफ से हो, कितने ही दुःख हैं जिनके जिम्मेदार तुम इंसान खुद होते हो लेकिन उसे अल्लाह के खाते में डाल देते हो।"

"कोई मिसाल दो?"

"मिसाल यह है कि तुम हर बीमारी को अल्लाह की तरफ से समझते हो, लेकिन गौर करो तो ज़्यादा तर बिमारियाँ तुम्हारे गलत खान पान, गलत रहन सहन, सब काम सही टाइम से ना करने वगैरा का नतीजा होती हैं। अब यह दुनिया इस लिए तो नहीं बनी कि तुम लोग सारे उल्टे सीधे काम करो और अल्लाह तआला तुम्हारी हर गलती और कमी के बावजूद सब चीज़े ठीक करते जाएं, ज़्यादातर वो तुम्हारी जानकारी में लाए बिना ऐसा ही करते हैं मगर कभी कभार तुम्हे होश में लाने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक सतह पर तुमको तुम्हारी गलतियों के नुक्सान के हवाले कर देते हैं।"

"हाँ तुम्हारी बात ठीक है और बहुत कीमती भी है, हम लोग शायद हर चीज़ को अल्लाह तआला के खाते में डालने के आदि हो गए हैं, खुद अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक चीज़ों को ठीक नहीं करते, मगर यह बताओ कि अब कहाँ चलना हैं, फिरोन के पास?"

नाएमा यह बात कहते हुए मुस्कुराई।

"हाँ हम इस सफ़र के आखरी दौर में हैं, यह सफ़र ना तुमसे पहले किसी को कराया गया और ना तुम्हारे बाद किसी को कराया जाएगा। यह काएनात (ब्रह्मांड) की सबसे बड़ी सच्चाई यानि अल्लाह का मौजूद होना क़यामत के आने को दिखाने का सफर है। इस सफ़र में रसूलों की कौम की सज़ा और इनाम से अल्लाह तआला तुम्हे यह हकीक़त दिखा रहे हैं कि खुदा का होना और क़यामत का आना ऐसी सच्चाई हैं जिनका इन्कार करना किसी सच्चे इंसान के लिए मुमकिन नहीं।"

"मगर अस्र! इंसानों के लिए यह पिछले लोगों के किस्से हैं और बस।"

नाएमा ने ज़िक्र किया तो अस्र ने जवाब दिया:

"यह देखने में पिछले लोगों के किस्से हैं लेकिन हकीक़त में एक बड़ी सच्चाई की ख़बरें हैं और उस सच्चाई का खुला सुबूत भी। खबर से सुबूत तक के यह स्टेप कौमों की सच्ची कहानियों में सिलसिलेवार सामने आएँगे, दरअसल अल्लाह तआला ने बड़ी हिकमत (Wisdom) से इन कौमों को चुना है। पहले मैं तुम्हे नूह (अ) की कौम और आद (अ) की कौम के ज़माने में ले गया था, जहाँ तुमने यह देखा कि किस तरह अल्लाह तआला ना मानने वालों को दुनिया में सज़ा देते हैं और मानने वालों को सज़ा से बचा कर इनाम देते हैं।"

नाएमा ने कहा:

"मगर हमारे ज़माने में तो उन कौमों के निशान भी ना के बराबर हैं।"

"हाँ यह ऐतराज़ (आपत्ति) तुमने पहले भी किया था कि वक़्त के साथ इसके सुबूत भी मिट गए हैं, इसी लिए उसके बाद हम समूद की कौम और लूत (अ) की कौम के ज़माने में आए। यह खबर से सुबूत की तरफ दूसरा स्टेप है, इस स्टेप में यह वो दो कौमें थी जिन पर अल्लाह का सज़ा और इनाम देने का कानून भी लागू हुआ और उनकी दास्तानों के साथ उनके इलाक़े और उनके सुबूत भी धरती पर उनके निशान बन कर मौजूद हैं। यह निशान अगर सुनने वाले कान हों तो पुकार पुकार कर यह बताते हैं कि खुदा एक जिन्दा और ताकतवर हस्ती है, जो समय समय पर दुनिया में बिलकुल खुल कर मुदाख्लत (हस्तक्षेप) करता रहा है और अपने होने और क़यामत की सज़ा और इनाम के साफ़ सुबूत इंसानों के सामने रखता रहा है।"

"और अब हम फिरोन के ज़माने में हैं?"

"हाँ, यह खबर से सुबूत की तरफ तीसरा स्टेप है, इस स्टेप में अब हम मूसा (अ) के ज़माने में होने वाली सज़ा और इनाम को देखेंगे। इस कौम की दास्तान और निशान के साथ साथ इस कौम के अवशेष भी तुम्हारे ज़माने में मौजूद हैं, वो कौम भी बाकि है उसके धर्म का इतिहास और किताबें भी तुम्हारे ज़माने में मौजूद हैं, जिस में इस सज़ा और इनाम का पूरा बयान है। मतलब जो चाहे वो पहले खबर देखे फिर उसके निशान देखे और फिर पूरी जिन्दा कौम भी देख सकता है। तुम्हारे ज़माने तक फिरोन की कौम यानि मिसरी लोग भी बाकि हैं, हज़रत मूसा (अ) की कौम यहूद भी बाकि हैं, मिस्रियों के निशान भी हैं और यहूदियों का इतिहास, धर्म ग्रंथ और उनमे लिखी वो घटना भी मौजूद है जो हज़रत मूसा के ज़माने में हुई।"

"और हज़रत शुऐब (अ) की कौम, इसका ज़िक्र भी तो कुरआन में आया है, हम वहां क्यों नहीं गए?" नाएमा ने इस दास्तान के एक और पैगम्बर का नाम लेते हुए पूछा।

"यह इसी दास्तान के दुसरे स्टेप का एक हिस्सा है, यानि कौम समूद और कौम लूत (अ) वाला हिस्सा, यह लोग हज़रत इब्राहीम (अ) की औलाद में से थे, शिर्क के साथ मिलावट और नाप तौल में कमी उनकी आदत बन चुकी थी। हज़रत शुऐब ने उन्हें बहुत समझाया मगर यह बाज़ नहीं आए और अज़ाब से मार दिए गए। मैं इस कौम में तुम्हे लेकर इस लिए नहीं गया क्यों कि शर्क और रसूल की नाफ़रमानी और उस पर अल्लाह की सज़ा तुम देख ही चुकी हो। रही मिलावट और नाप तौल में कमी तो इसमें तुम्हारे ज़माने के लोग वैसे ही बहुत आगे हैं, तुम्हारे यहाँ ना खाने का सामान असली मिलता है और ना दवा, फिर तुम्हे कौम शुऐब को देखने की क्या ज़रूरत है।"

अस्र की इस बात का नाएमा के पास कोई जवाब नहीं था।

"तुम्हारी कौम के हालात उस वक़्त तक नहीं बदलेंगे जब तक तुम मिलावट करना और सौदे में धोका करने से नहीं रुक जाते, यही तुम्हारी कौम का मसला है। ख़ैर हम शुऐब (अ) की कौम के बचे हुए हिस्से की तरफ ही जा रहे हैं, हज़रत शुऐब की कौम पर जब अज़ाब आया तो ईमान वाले बचा लिए गए, लेकिन बाद में वही हुआ जो पहले भी होता रहा है कि बाद में आने वाली

नस्लें अख्लाकी (नैतिक) बिगाड़ का शिकार होती चली गईं। मद्यन में उनका एक क़बीला हज़रत मूसा (अ) के ज़माने में आबाद था, हम वहीं जा रहे हैं।

****

सच्चाई की कीमत

नाएमा और अस्र एक रेगिस्तान के पास खड़े थे। रेगिस्तान में जहाँ पानी का कुआ होता है वहीं हरयाली, पेड़, परिंदे और इंसान सब आबाद हो जाते हैं, यहाँ भी यही हाल था। इस कुएं पर चरवाहों की भीड़ जमा थी, वो आपस में बातें करते जाते और अपने जानवरों के लिए कुएं से पानी निकाल कर उन्हें पिलाते जाते।

कुछ दूर ही दो लड़कियां अपने जानवरों को लिये हुए खड़ी थीं, जानवर प्यास से बिल बिला रहे थे मगर वो दोनों लड़कियां उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थीं। वजह साफ़ थी ना वो मर्दों की तरह ताक़त वर थीं ना उनकी शर्म उन्हें इस बात की इजाज़त देती थी कि मर्दों के इस हुजूम में घुस कर अपनी बकरियों को पानी पिलाएं, और मर्दों में इतनी शराफत नहीं थी कि वो लड़कियों को पहले पानी लेने दें।

"देखा तुमने?" अस्र ने नाएमा से कहा।

"ताक़तवर हर दौर में एक जैसे ही होते हैं।"

अस्र ने एक तरफ इशारा किया तो नाएमा ने देखा कि उधर से एक आदमी चला आ रहा है। उसके सर और दाढ़ी के बाल धूल से अटे हुए थे, चहरे पर सफर की थकान पूरी तरह दिख रही थी, वो हल्का हल्का लंगड़ा कर भी चल रहा था। करीब आने पर नाएमा ने देखा कि इसकी वजह पाओं में पड़ने वाले छाले हैं।

"यह मूसा (अ) हैं।"

अस्र ने कहा तो नाएमा ने गौर से उनके चहरे को देखा, मूसा (अ) को जिस तरह नाएमा ने थोड़ी देर पहले देखा था उसके मुकाबले में इस समय वे बहुत नौजवान लग रहे थे। नाएमा ने उन्हें इस हाल में देखा कर कहा:

"यह इस हाल में कैसे पहुंचे, यह तो शुरू में मिस्र के शहजादे थे।"

"हाँ मगर थोड़ा इंतजार करो इनकी कहानी अभी सुनाता हूँ।"

हज़रत मूसा (अ) सीधा चलते हुए कुएं के पास आए। कुएं पर एक बहुत बड़ा ढोल लटका हुआ था जिसे पूरा भर कर बाहर निकालने के लिए दो तीन आदमियों को ज़ोर लगाना पड़ता था। हज़रत मूसा (अ) को पास आता देख कर यह लोग रुक गए, हज़रत मूसा (अ) ने आराम से ढोल संभाला और अकेले ही पूरा ढोल पानी से भर कर बाहर निकाल लिया। फिर ढोल का पानी उस होज़ में डाला जिससे जानवर पानी पी रहे थे, थोड़ा पानी बचा कर उससे मुह हाथ धोया, पेट भर कर पानी पिया और वापस लोगों के बीच से निकल कर अलग हो गए।

यह लोग उन्हें कुछ हैरानी से देख रहे थे। पहले तो उन्होंने जिस तरह अकेले ही पानी का ढोल भर लिया वो भी कम अजीब बात नहीं थी, फिर मुह हाथ धोंने से उनका चहरा निखर कर सामने आया तो उससे भी और उनके कपड़ों से भी लोग समझ गए यह कोई मिस्री हैं। मिस्र उस ज़माने में सूपर पावर हुआ करता था, इस लिए लोगों पर उनका कुछ रॉब बैठ गया था।

हज़रत मूसा (अ) भीड़ से निकले तो उन्होंने उन लड़कियों और उनके जानवरों को देखा जो बहुत प्यासे थे, वह सीधा उसके पास गए और जा कर उनसे पूछा:

"आप इन मासूम जानवरों को पानी क्यों नहीं पिला रही हैं?"

उनमे से एक लड़की ने जो दूसरी से ज़रा बड़ी थी कुछ अफ़सोस के साथ कहा:

"जब तक यह चरवाहे ना चले जाएं हम अपने जानवरों को पानी नहीं पिला सकते।"

"आप के घर में कोई मर्द नहीं?" मूसा (अ) ने चरवाहों की भीड़ की तरफ देखते हुए पूछा तो इस बार छोटी लड़की ने जवाब दिया:

"हमारे अब्बा जान बहुत बूढ़े हैं और हमारा कोई भाई भी नहीं है।"

हज़रत मूसा (अ) ने उनकी बात सुनकर अपने सफ़र की थकान से निढ़ाल होने के बावजूद ख़ामोशी से उनके जानवर साथ लिए और कुए की तरफ चल दिए। उन्हें देख कर सारे चरवाहे पीछे हट गए। उन्होंने बड़े आराम से जानवरों को पानी पिलाया और वापस लाकर लड़कियों के हवाले कर दिया। लड़कियां ख़ुशी ख़ुशी घर लौट गईं जबकि हज़रत मूसा एक पेड़ की छाया में बैठ गए। नाएमा ने देखा कि उनकी आँखें बंद थी और वह होंठो से कुछ बड़बड़ा रहे थे।

नाएमा ने अस्र से पूछा:

''यह क्या कह रहे हैं?''

''यह अल्लाह से दुआ कर रहे हैं कि ऐ मेरे रब इस वक़्त जो भी भलाई तू मुझ पर भेजे मैं उसका ज़रूरत मंद हूँ।''

फिर वह हँसते हुए एक तरफ इशारा करते हुए बोला:

''आक़ा ने बन्दे की दुआ कितनी जल्दी सुन ली, देखो वो सारी भलाई यानि सफूराह इनके पास खुद चलती हुई आ रही है।''

नाएमा ने देखा कि लड़कियों में से बड़ी लड़की झिजकती शर्माती हुई उनकी तरफ आ रही है। नाएमा को अस्र की बात से मालूम हुआ कि उसका नाम सफूराह है, लेकिन वह उसके बारे में और ज़्यादा जानना चाहती थी इसलिए उसने अस्र से सवाल किया।

''यह सफूराह 'सारी भलाई' कैसे हो गई?''

''खाना, पीना, रहने की जगह और प्यार करने वाली बीवी, अल्लाह तआला यह सारी ज़रूरी नेमतें सफूराह के रूप में मूसा (अ) को देने का फैसला कर चुके हैं।''

''तो क्या इन की शादी हो जाएगी?'' नाएमा ने बड़ी दिलचस्पी से पूछा, उसके अन्दर की लड़की जाग गई थी, उसे अब सफूराह की जगह हज़रत मूसा (अ) की दुल्हन नज़र आ रही थी।

''हाँ यह शर्मीली लड़की अपने ज़माने के महान रसूल और उनकी उम्मत के सरदार की बीवी बनेगी।''

सफूराह हज़रत मूसा (अ) के पास आकर खड़ी हो गई। उनके क़दमों की आहट ने हज़रत मूसा की आँखें खोल दी थी, सफूराह को देख कर उन्होंने नज़रें झुका लीं। सफूराह ने झिजकते हुए उनसे कहा:

''वो मेरे अब्बा जान आप को बुला रहे हैं ताकि आप ने जो हमारे जानवरों को पानी पिलाया है उसका बदला दे सकें।''

हज़रत मूसा (अ) ने एक पल को सोचा, वह चाहते तो उन लड़कियों से उसी वक़्त मदद की अपील कर सकते थे जब उन्होंने उनकी मदद की थी और वो उनकी मदद ज़रूर करतीं, लेकिन

उनकी शराफत ने गवारा नहीं किया कि अहसान कर के बदला मांगे, उन्होंने इंसानों के बजाए उनके रब से माँगा था। मगर अब वह यह बात अच्छी तरह जानते थे कि इस लड़की के ज़रिये अल्लाह तआला उनकी कुछ मदद करना चाहते हैं, इस वक़्त इसे मना करना ना शुक्री होगी, इस लिए वह ख़ामोशी से उठ कर खड़े हो गए।

.....

वो दोनों वहां से चले गए, नाएमा वहां अस्र के साथ खड़ी रह गई, उसने अस्र से पूछा:

"हज़रत मूसा (अ) यहाँ इस हाल में कैसे पहुंचे?"

"यह तो तुम जानती हो कि हज़रत मूसा पैदा हुए तो उस ज़माने के फिरोन ने हुक्म जारी कर दिया था कि कौम बनी-इसराइल (यहूदी) में पैदा होने वाले बच्चों में हर लड़के को क़त्ल कर दिया जाए। जब हज़रत मूसा (अ) पैदा हुए तो उनकी माँ बहुत परेशान थीं मगर अल्लाह तआला ने उनका मार्ग दर्शन किया, जिसके बाद उनकी माँ ने उन्हें एक टोकरी में रख कर नील नदी में बहा दिया। अल्लाह की क़ुदरत से यह टोकरी फिरोन की रानी हज़रत आसिया तक जा पहुँची, उन्होंने इन्हें नदी से निकाल कर अपना बेटा बना लिया।"

"यह तो अल्लाह ने अजीब तरीके से उनकी जान बचाई।" नाएमा ने हैरत (आश्चर्य) से कहा।

"उनकी ज़िन्दगी ही नहीं बचाई बल्कि उनको उनकी माँ के पास भी लौटा दिया।"

"वो कैसे?"

"वो ऐसे कि हज़रत मूसा ने किसी दूध पिलाने वाली दाई से दूध नहीं पिया। हज़रत मूसा (अ) की बड़ी बहन जो टोकरी पर दूर से नज़र रखे हुए थी और वह जानती थी कि उनका भाई रानी के पास है, उन्होंने महल में जाकर रानी से अपनी माँ के बारे में बताया कि वो भी दूध पिलाने का काम करती हैं। इसलिए जब मूसा (अ) को उनकी माँ के पास लाया गया तो उन्होंने बड़े आराम से दूध पी लिया, इस लिए रानी ने मूसा (अ) को पालने के लिए उनकी माँ ही के हवाले कर दिया।"

"फिर उन्होंने मिस्र क्यों छोड़ा?" नाएमा ने पूछा तो अस्र ने पूरी बात बताई।

"हज़रत मूसा (अ) एक ही समय में मिसरी शाहज़ादे भी थे और अपनी माँ के हवाले से कौम बनी-इसराइल (यहूदी) के भी एक हिस्सा थे, और क्यों कि फिरोन की कौम बनी-इसराइल पर बहुत ज़ुल्म करती थी इस लिए वह कौम बनी-इसराइल की मदद करते रहते थे। उनके जवान होने के बाद एक दिन कौम बनी-इसराइल का एक आदमी यानि यहूदी का एक मिसरी से झगड़ा हो गया। वह मिसरी उसे पीटने लगा, तभी हज़रत मूसा वहां से गुज़र रहे थे, उस यहूदी ने हज़रत मूसा (अ) को मदद के लिए पुकारा, हज़रत मूसा उसे बचाने आगे आए तो मिसरी ने उनपर भी हमला कर दिया। हज़रत मूसा ने उसे एक घूसा मारा जिससे वो मिसरी मर ही गया।"

"अच्छा तो इस लिए मिसरी उनके दुश्मन हो गए।" नाएमा ने कहा।

"हाँ मगर उस दिन यह बात छुपी रही और किसी को पता नहीं चला कि इस को किसने मारा है। दूसरी तरफ हज़रत मूसा ने अल्लाह तआला से अपनी गलती की बहुत माफ़ी मांगी। अगले दिन वह उसी जगह से गुज़रे तो देखा कि वही यहूदी एक दुसरे मिसरी ले लड़ रहा था, उन्हें देख कर उसने फिर उन्हें मदद के लिए पुकारा। इस बार हज़रत मूसा समझ चुके थे कि यह खुद ही शरारती आदमी है जो हर दिन किसी ना किसी से लड़ता रहता है, मगर क्यों कि वह आज भी पिट रहा था इस लिए हज़रत मूसा यह कहते हुए उसे बचाने आगे बढ़े कि 'तू बड़ा गुमराह आदमी है'।

यह सुन कर वह यह समझा की आज मूसा मुझे बचाने नहीं बल्कि और मुझे ही पीटने आ रहे हैं। शरारती तो वह था ही, इसलिए चिल्ला कर बोला कि मूसा जैसा तुमने कल एक मिसरी को मारा था आज तुम मुझे भी मारना चाहते हो। इस लिए क़त्ल का राज़ फाश हो गया और मिस्र के दरबार में उनके खिलाफ कदम उठाने के मशवरे होने लगे। महल में उनके एक हमदर्द ने उन्हें इसकी खबर दी और फ़ौरन मिस्र छोड़ देने का मशवरा दिया, जिसके बाद वह अकेले सीना के रेगिस्तान को पार करते हुए मद्यन आ पहुंचे।"

"अब मैं समझी इतना लम्बा सफ़र उन्होंने अकेले क्यों तय किया था।"

"हाँ, और नाएमा अब यह समझलो कि मैं तुम्हे यह सब कुछ क्यों बता रहा हूँ, याद रखना अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों को कभी अकेला नहीं छोड़ते। तुमने हज़रत मूसा (अ) की सीरत (चरित्र) को तो देखा कि किस तरह उन्होंने थकान के बाद भी अजनबी लड़कियों की मदद

की, और उन लड़कियों से ना ज़्यादा फ्री होने की कोशिश की और ना लाख मजबूरी के बावजूद उनसे मदद मांगी। हालांकि उन्हें खाने और आराम वगैरह की बहुत ज़रूरत थी। इसी इंसानी हमदर्दी के उसूल पर उन्होंने उस यहूदी की जान बचाई थी जिसने उनका राज़ खोल कर उन्हें इतनी मुश्किल में डाल दिया, मगर उससे बदला लेने की बजाए वह यहाँ आ गए।"

"कितने अच्छे इंसान हैं।"

"नाएमा इंसान की इन्ही अच्छाइयों को सवारने, निखारने और उनको बढ़ाने वाले इंसानों को तलाश करने के लिए ही खुदा ने यह दुनिया और इसका का पूरा निज़ाम (System) बनाया है। उसने इंसान को अच्छा बुरा करने की आज़ादी और समझ दे कर पैदा किया, फिर खुद इंसान से पर्दे में हो गया। अब एक तरफ इंसान के अपने नीजी फाएदे और ख्वाहिशें (इच्छाएँ) हैं और दूसरी तरफ उसकी अपनी फितरत और ज़मीर की आवाज़ है। कुछ लोग तो इन चरवाहों की तरह हो जाते हैं जो शराफत के जज़्बे से खाली हो जाते हैं। कुछ फिरोन और उसके साथियों की तरह ज़ुल्म करने ही को अपनी आदत बना लेते हैं। ऐसे ही कुछ सफूराह की तरह हया और शर्म को बचा कर रखने वाले होते हैं, और कुछ मूसा (अ) की तरह बुरे से बुरे हालात में भी इंसानियत को अपने हाथ से नहीं जाने देते। यही लोग अल्लाह को पसंद हैं जिन्हें वह जन्नत में हमेशा के लिए अपने करीब जगह देगा, जबकि फिरोन जैसों को जहन्नम के कैद खाने में फेक दिया जाएगा।"

अब नाएमा बोली:

"लेकिन क्या अल्लाह की इस स्कीम में ज़िन्दगी मुश्किल नहीं हो जाती।"

"मगर इसके बगैर अच्छे इंसानों को छांटा भी तो नहीं जा सकता, और ना लोग इसके बिना अपनी अच्छाइयों को बढ़ा सकते हैं। और अगर अल्लाह तआला अपने इल्म (ज्ञान) की बुन्याद पर फैसला करते तो हर जहन्नम में जाने वाला कहता कि मुझे ना हक़ सज़ा दी जा रही है। मगर अब जब क़यामत होगी तो हर जन्नती और हर जहन्नमी मेरिट (योग्यता) पर अपने अपने अंजाम को पहुंचेंगे।"

"मगर अस्र! अल्लाह के इस प्लान का बहुत से लोगों को पता ही नहीं।"

"देखो यह प्लान लोगों को साफ़ पता चल जाए तो बहुत अच्छी बात है इससे बात बिलकुल साफ़ साफ़ समझ में आ जाती है, और मुसलमानों का यह बुनयादी फ़र्ज़ है कि वो हर एक इंसान को मुहब्बत और हमदर्दी के साथ अल्लाह का यह प्लान बतादें। लेकिन अगर किसी को ना भी पता चले तो भी उसके इम्तिहान में कोई फर्क नहीं आता क्यों कि अल्लाह ने हर इंसान के अन्दर इस प्लान का बुन्यादी ढांचा पहले ही रखा है। हर इंसान के अमल (कर्म) इस बुन्याद पर ही होते हैं कि अच्छे का बदला अच्छा है और बुरे का बदला बुरा है, यह बात हर इंसान की फितरत में लिखी है।"

अस्र एक पल को रुका और फिर बोला:

"यह बात बहुत अहम (महत्वपूर्ण) है इसे अच्छी तरह समझ लो, हर इंसान को अल्लाह तआला ने बुयादी रहनुमाई (मार्गदर्शन) के साथ पैदा किया है। इंसान अच्छे और बुरे को अच्छी तरह जानता है, मिसाल के तौर पर हर इंसान जानता है की झूट बुरी और सच अच्छी बात है। इसी तरह सब जानते हैं कि दुसरे की जान माल और इज्ज़त हम पर हराम है, इसी तरह इंसान जानते हैं कि अच्छे और बुरे पर इनाम और सज़ा होनी ज़रूरी है। इसी उसूल पर इंसानों ने जुर्म, अदालत, कानून, मुक़दमे तरह तरह के कम्पटीशन, स्कूल कॉलेज के एग्जाम का सिस्टम और इसी की बुन्याद पर लोगों को सज़ा या इनाम सम्मान देने का पूरा सिस्टम बना रखा है। इंसान अपना पूरा सिस्टम इसी उसूल पर चलाता है, ठीक इसी उसूल पर अल्लाह भी क़यामत के दिन अपनी सज़ा या इनाम कायम कर देंगे।"

"बात तो सही है, लेकिन मुझे यह गलत फहमी हो रही थी कि हर इंसान के पास किसी पैगम्बर का पहुँचाना ज़रूरी है।"

"नहीं यह बिलकुल ज़रूरी नहीं कि हर इंसान के पास पैगम्बर खुद जाए और उसे यकीन दिलाए कि अच्छाई और बुराई का नतीजा यह कुछ होने वाला है, नहीं यह रहनुमाई (मार्गदर्शन) खुद उनके अन्दर पहले से ही है, अब जो लोग इस रहनुमाई की कदर करते हुए इसे अपनाते हैं और इसके अनुसार अपने आमाल (कर्म) करते हैं तो उनके अन्दर की अच्छाई और ज़्यादा बढ़ती जाती हैं जिससे जन्नत में उनके दर्जे बढ़ते जाते हैं। और जो इस रहनुमाई को ठुकरा कर इसे दबा कर इसके खिलाफ अमल करते हैं उनके दिल सख्त होते जाते हैं।"

यह कह कर अस्र ने नाएमा का हाथ पकड़ा और बोला:

"अब आओ मैं तुम्हे दिखाता हूँ कि किस तरह के लोग सच्चाई को फ़ौरन क़ुबूल कर लेते हैं और हर क़ुर्बानी दे कर उस पर जम जाते हैं और किस तरह के लोग हर निशानी देखने के बाद भी अपनी गुमराही पर जमे रहते हैं।"

.....

हर तरफ जश्न का माहोल था, बहुत सारे लोग एक मैदान में जमा थे। सुबह का समय था और सूरज चमक रहा था लेकिन उसकी धूप अभी इतनी गर्म नहीं हुए थी जिससे मैदान में मौजूद लोगों को कोई परेशानी महसूस होती। मैदान के एक कोने में फिरोन का दरबार सजा था, फिरोन के दरबारी और लश्कर अपनी जगह पर मौजूद थे, जबकि आस पास भारी संख्या में मिसरी लोग जमा हुए थे। मैदान के दूसरी तरफ कौम बनी-इसराइल के लोग खड़े थे, यह गिनती में बहुत ज्यादा थे लेकिन सदियों की गुलामी और फिरोनो के ज़ुल्म सहते हुए इनकी हालात बहुत ख़राब हो चुकी थी।

अस्र के साथ खड़ी हुई नाएमा ख़ामोशी से पूरे माहोल का जाएज़ा ले रही थी। तभी बनी-इसराइल (यहूदी) की भीड़ में कुछ हल चल सी महसूस हुई। एक तरफ से लोगों की भीड़ को चीरते हुए दो आदमी सामने आकर खड़े हो गए, उनमे से एक को पहचानने में नाएमा को कोई परेशानी नहीं हुई, यह हज़रत मूसा (अ) थे। उन्होंने दाहिने हाथ में एक असा (डंडा) पकड़ा हुआ था, जबकि उनके बराबर में खड़े दुसरे आदमी का परिचय खुद अस्र ने नाएमा को बताया।

"हज़रत मूसा के बराबर में मौजूद आदमी हज़रत हारुन (अ) हैं, जब अल्लाह ने हज़रत मूसा (अ) को रसूल बनाया तो उन्होंने हारुन को अपना मददगार बनाने की अपील की, इसलिए अल्लाह ने उन्हें भी नबी बना दिया।"

"इनको रसूल कब बनाया गया था?" नाएमा ने सवाल किया।

"हज़रत मूसा (अ) दस साल मद्यन में रहे, फिर अपनी बीवी सफूराह के साथ वापस मिस्र आ रहे थे कि रास्ते में पड़ने वाले पहाड़ जिसे कोहे तूर कहा जाता है, उसके नीचे अल्लाह तआला ने उनसे बात की और उन्हें रसूल बनाया।"

"फिर क्या हुआ?"

"इन दोनों ने फिरोन के दरबार में जा कर उसे अल्लाह का पैगाम (संदेश) पहुँचाया, मगर भला वह कहाँ उनकी बात सुनने वाला था। जिसके बाद हज़रत मूसा (अ) ने इस बात के सुबूत में कि वह एक सच्चे पैगम्बर हैं अपने वो मोजज़े (चमत्कार) दिखाए जो निशानी के लिए अल्लाह ने उन्हें दिए थे।"

"उनके असा (डंडे) का सांप बनजाने वाला मोजज़ा?"

"हाँ असा (डंडे) का सांप बनजाने वाला भी और उनके हाथ में से रौशनी निकलने वाला भी। फिरोन उन मोजज़ों को देख कर डर तो गया था मगर उनकी सच्चाई नहीं मानी, बल्कि यह दावा कर दिया कि यह सिर्फ एक जादू है और ऐसा जादू तो उसके देश में बहुत से जादूगर दिखा सकते हैं, इसलिए उसने उनको चैलेंज दिया कि आज के दिन यानि जब मिसरियों के जश्न का दिन होता है वह पूरे देश से जादू गारों को बुला कर हज़रत मूसा (अ) के मोजज़े (चमत्कार) का मुकाबला करेगा।"

अभी अस्र की बात पूरी ही हुई थी कि मिसरियों में शोर मच गया, नील नदी की तरफ से फिरोन अपने महल से निकला और अपनी शान के नारों के बीच अपने लश्कर सहित दरबार की तरफ बढ़ने लगा। फिरोन अपने चहरे ही से एक ज़ालिम आदमी लगता था, उसकी गर्दन तनी हुई थी और आँखों में घमंड था, वह बहुत शान के साथ चलता हुआ एक ऊंची जगह पर शाही तख़्त पर आकर बैठ गया।

अपनी शाही कुर्सी पर बैठ कर उसने कुछ इशारा किया तो पूरे देश से आए हुए बड़े बड़े जादूगरों का एक पूरा गिरोह उसके सामने पेश हुआ। फिरोन ने उनसे कहा:

"तुम जानते हो हमारी कौम कितनी अज़ीम (महान) है, हम कितने ताक़तवर लोग हैं। यह बनी-इसराइल (यहूदी) हमारे गुलाम हैं, इनकी ज़िन्दगी और मौत हमारे हाथ में है, मगर अब उनके बीच एक हीरो पैदा हुआ है जो हमारे देश पर कब्ज़ा करना चाहता है, इसके लिए उसने जादू का सहारा लिया है, मगर जिस तरह यह लोग हमसे ताक़त में नहीं जीत सकते इसी तरह जादू की ताक़त में भी हम इनको हराना चाहते हैं। क्या तुम हमारे लिए यह काम करोगे?"

जादूगरों को अपने जीतने का इतना यकीन था कि उनका ध्यान इस बात में था कि इस मोके पर जब फिरोन की इज्ज़त का सवाल है तो इससे ज़्यादा से ज़्यादा इनाम का वादा ले लें, इसलिए उन्होंने कहा:

"हुजुर हमें इसका क्या इनाम मिलेगा?"

फिरोन ने जादूगरों की बात सुनकर बहुत ख़ुशी के साथ कहा:

"हम तुम्हे अपने दरबार के खास लोगों में शामिल कर लेंगे। शाही दरबार की इज्ज़त, बहुत दौलत और खूबसूरत लड़कियां तुम्हे इनाम में दी जाएंगीं।"

यह सुन कर जादूगरों के गिरोह में ख़ुशी की लहर दौड़ गई और मिसरी लोग फिरोन की जय जय कार करने लगे। दूसरी तरफ बनी-इसराइल अपनी जगह सहमे हुए खड़े थे।

नाएमा समझ रही थी कि अब मुकाबला शुरू होगा मगर वहां एक दूसरा तमाशा शुरू हो गया, फिरोन ने जादूगरों को अपने करीब बैठने का हुक्म दिया। उसने उन्हें अपने इनाम की झलक दिखाने का पहले ही इन्तिज़ाम कर रखा था, उसके इशारे पर जादूगरों के सामने मिस्र की खूबसूरत लड़कियों का एक ग्रुप उतरा और मैदान में बज रहे संगीत पर नाचना शुरू कर दिया। वह लड़कियां अपने हुस्न और डांस से जादूगरों को अपनी तरफ आकर्षित कर रही थी।

नाएमा को इस में कोई दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए वह अस्र से बोली:

"समझ में नहीं आता कि फिरोन ने हज़रत मूसा (अ) से मुकाबले की क्यों ठानी, क्या यह उनके खिलाफ सीधे कोई कदम नहीं उठा सकता था।"

"तुम इस बात को नहीं जानती कि हज़रत मूसा (अ) कौन हैं, मैं तुम्हे बता चुका हूँ कि हज़रत मूसा की पैदाइश के वक़्त बनी-इसराइल (यहूदी) के हर पैदा होने वाले लड़के को क़त्ल करने का हुक्म था, लेकिन अल्लाह की शान देखो कि उसने इनको बचा लिया और इनकी परवरिश शाही महल में शहजादों की तरह हुई। शाही घराने की वजह से मिसरी कौम के सब लोग इन्हें अच्छी तरह जानते हैं कि यह बहुत बहादुर बहुत नेक और सच्चे इंसान हैं, यह झूट नहीं बोल सकते, इस लिए फिरोन यह चाहता है कि उनको मुकाबले में हरा दे ताकि वह झूटे साबित हो जाएं और लोगों के दिले में उनकी इज्ज़त ख़त्म हो जाए उसके बाद उनके खिलाफ कोई कदम उठाए।

वरना एक तरफ तो बनी-इसराइल की बगावत का खतरा है और दूसरी तरफ दरबार और महल में हज़रत मूसा को पसंद करने वाले लोगों की भी कमी नहीं जो बिना वजह के उनके खिलाफ उठाए किसी भी कदम का विरोध भी कर सकते हैं।

लेकिन फिरोन को हज़रत मूसा (अ) के खिलाफ कदम उठाने से रोक देने वाली सबसे बड़ी चीज़ अल्लाह तआला की खास नेमत है जो इनके साथ है यानि अल्लाह ने इन्हें ऐसा मोजज़ा (चमत्कार) दिया है कि जो उसे देखता उसके दिल में इनका डर बैठ जाता है।"

अस्र की बात सुनते हुए नाएमा ने फिरोन की तरफ देखा, उसके सामने वही नाचने वाली लड़कियां नाच रही थी। डांस अपने आखरी पड़ाव पर था और तेज़ से तेज़ होता जा रहा था, लड़कियों का जादू लोगों पर चढ़ चुका था, उनकी ख्वाहिशें (इच्छाएँ) उबल उबल बाहर आ रही थी। लडकियों ने लोगों को अपने जिस्म की तरफ आकर्षित करने के लिए कुछ कमी नहीं छोड़ी थी, अब उन्होंने तेज़ी से घूमना शुरू कर दिया वो तेजी से घूमती हुई राजा के सामने पहुँची, फिर अचानक उनके कदम ठहर गए संगीत की आवाज़ बंद हो गई हर तरफ ख़ामोशी छा गई, लड़कियों ने सर झुका कर राजा को सलामी दी उसके साथ ही दरबार में उनकी वह वाही की आवाज़े तेज़ हो गई।

नाएमा ने इस सब पर दुसरे अंदाज़ में रौशनी डाली, उसे साइकोलॉजी में महारत हासिल थी वह अस्र से बोली:

"यह राजाओं की क्लास कितनी चालाक होती है, इन्हें पता होता है कि इंसानों की कमज़ोरी क्या क्या होती हैं।"

"हर दौर में यही हुआ है, जनता को असल हकीक़त से अँधेरे में रखने और बड़े लोगों को खुश करने के लिए नाचने वाली लड़कियां, डांस, म्यूजिक, शराब, और जिस्म फरोशी एक बहुत बड़ा हथियार बना है, यही तुम्हारे ज़माने में हो रहा है। लेकिन यह लोग इन चीज़ों से ऊपर उठ कर कुछ सोच ही नहीं सकते।"

"सच कहा तुमने।" नाएमा ने अस्र की बात को आगे बढ़ाया।

"काश हमारे पास भी कोई असा होता जो इस जादू को तोड़ देता।"

अस्र ने उसे होंसला देते हुए कहा:

"तुम्हारे पास सबसे बड़ा असा है, बहुत जल्दी उसके बारे में हज़रत मूसा की बातों से तुम समझ जाओगी, अब उनके वो शब्द ध्यान से सुनना जो वो जादूगरों से कहेंगे।"

.....

मुकाबला शुरू होने वाला था, एक तरफ जादूगर खड़े थे और दूसरी तरह हज़रत मूसा और हज़रत हारुन (अ)। जादूगरों के हाथ में रस्सियाँ और लाठियां थीं, तभी हज़रत मूसा आगे बढ़े और बोले:

"तुमने फिरोन के बारे में सुन लिया, अब मैं तुम्हें रहीम और करीम अल्लाह के बारे में बताता हूँ। मैं तुम्हे एक अल्लाह की बंदगी की दावत देता हूँ, वही आसमान और ज़मीन और उसके बीच की हर चीज़ का मालिक है। उस पर ईमान ले आओ तो वो तुम्हें अपनी जन्नत की बादशाही में जगह देगा, हर वो चीज़ जिसका वादा फिरोन कर रहा है इससे कही बढ़ कर तुम्हें खुदा की जन्नत में मिलेगा। उन नेमतों में तुम हमेशा जियोगे, वहां मौत का अंदेशा भी तुम्हें कभी नहीं होगा, और अगर तुम अल्लाह की तरफ से कोई झूठ बाँधोगे तो याद रखो जहन्नम के अज़ाब से बचने का कोई रास्ता तुम नहीं पाओगे।"

नाएमा ने यह शब्द सुने और उसके दिल में उतरते चले गए, उसे अहसास हो गया कि आखिरत का यकीन ही वो असा है जो ऐसे हर सांप के ज़हर से इन्सान को बचा सकता है।

हज़रत मूसा (अ) की जिस बात ने नाएमा के दिल पर असर डाला था उसकी इतनी तासीर थी कि वहां मौजूद हर आदमी ने उनकी बात अपने दिल में उतरती हुई महसूस की। जादूगरों का हौंसला पस्त हो गया, उनमे कानाफूसी शुरू हो गई, कुछ कहने लगे कि हमें मूसा की बात नाम लेनी चाहिए, कुछ की राए यह थी कि उन्हें मुकाबला नहीं करना चाहिए, क्यों कि मूसा सच्चा है तो हम कभी नहीं जीत सकते।

दरबारी करीब बैठे यह सब देख रहे थे, उन्हें शक हो गया कि कहीं यह जादूगर मुकाबले से पीछे न हट जाएं। क्यों कि उन्ही दरबारियों ने जादूगरों को जमा किया था, इसलिए वो जादूगरों से बोले:

"यह पैगम्बर नहीं जादूगर है, अपने जादू के ज़ोर से तुम्हे निकाल कर मिस्र पर कब्ज़ा करना चाहता है। यह तुम्हारी पुरखों की संस्कृति को मिटा कर नई संस्कृति लाना चाहता है। तुम्हे

फिरोन की दोस्ती और इनाम का ऐसा मौका फिर कभी नहीं मिल सकता, जो आज जीत गया समझो वही ज़िन्दगी भर के लिए बाज़ी मार गया।"

डर लालच और तास्सुब (पूर्वाग्रह) का जो जाल सियासी लोग हमेशा बुनते आए हैं वही इस वक़्त उन दरबारियों ने इस्तिमाल किया। जादूगर इस जाल में आगए, उन्होंने मुकाबले के लिए कमर कस ली और पूरे विश्वास के साथ एक लाइन में खड़े हो कर बोले:

"ऐ मूसा! यह बातें छोड़ो, असल बात की तरफ आओ, यह बताओ कि पहले हम अपना जादू दिखाएँ या पहल तुम करोगे।"

जवाब आया:

"तुम्ही पहल करो।"

जादूगरों ने कुछ पढ़ना शुरू किया और फिर ज़ोर से नारा लगाया।

"फिरोन की इज्ज़त की कसम हम ही हावी रहेंगे।"

इसके बाद जो हुआ वह देख कर नाएमा दंग रह गई, उसने ज़िन्दगी में कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था। जादूगरों की लाठियां और रस्सियाँ ज़मीन पर गिरीं और एक पल में ही बड़े बड़े साँपों में बदल गईं, फिर रेंगती हुई तेज़ी से हज़रत मूसा (अ) की तरफ बढ़ने लगीं, नाएमा भी वहीं खड़ी थी।

एक तो सांप फिर वो भी इतने सारे, नाएमा डर गई और उसने अस्र का बाज़ू ज़ोर से पकड़ लिया, नाएमा ने अस्र के चहरे पर नज़र डाली वह इत्मिनान ने खड़ा हुआ था, फिर नाएमा ने हज़रत मूसा (अ) के चहरे को ध्यान से देखा वहां कुछ परेशानी के साए नज़र आ रहे थे।

साफ ज़ाहिर (स्पष्ट) था कि जो मोजज़ा (चमत्कार) हज़रत मूसा ने दिखाया था उसका जवाब आचुका था, साबित हो चुका था कि अगर हज़रत मूसा लाठी को सांप में बदल सकते हैं तो यही काम जादूगर भी कर सकते हैं, लोगों के लिए फैसला हो चुका था.....दोनों तरफ जादूगर ही थे, यह बात दुसरे लोगों ने भी समझी और हज़रत मूसा को भी अहसास हो गया था कि अब मामला क्या बन चुका है।

हर तरफ शोर मच गया, मिसरी ज़ोर ज़ोर से नारा लगाने लगे, दरबारी अपनी कुर्सियों पर से खड़े हो चुके थे, जबकि फिरोन पूरे विश्वास के साथ विजयी अंदाज़ से मुस्कुरा रहा था, उसे मालूम था कि अब हज़रत मूसा अपने असे को सांप बना डालेंगे तब भी किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता, फिरोन ने बड़ी चालाकी से अपना मकसद हासिल कर लिया था।

कौम बनी-इसराइल पर ख़ामोशी छाई हुई थी, उन्हें भी अंदाज़ा था कि क्या हो रहा है, लेकिन यह देख कर नाएमा को हैरत हुई कि जादूगर खुश तो हो रहे थे, लेकिन वो पूरी गंभीरता के साथ अपने साँपों को देख रहे थे जो अब धीरे धीरे हज़रत मूसा (अ) की तरफ बढ़ रहे थे। बनी-इसराइल के लोग भी डर के मारे पीछे हटने लगे थे, लेकिन हज़रत मूसा और हज़रत हारुन (अ) अपनी जगह ही खड़े हुए थे। जब सांप उनके बिलकुल पास पहुँच गए तो हज़रत मूसा (अ) ने अपनी लाठी ज़मीन पर फेंकते हुए कहा:

"ऐ जादूगरों! तुम्हारा काम सिर्फ जादू है और यह असा अल्लाह का हुक्म है, अल्लाह का हुक्म तुम्हारे जादू को बिलकुल मिटा देगा।"

अचानक नाएमा ने देखा कि हज़रत मूसा की लाठी जो मुश्किल से डेढ़ मीटर की होगी, कई गुना लम्बे और बहुत खौफनाक सांप में बदल चुकी है। यह सांप जितना ज़्यादा बड़ा था उससे कहीं ज़्यादा तेज़ था, यह बिजली की तरह आगे बढ़ा और सामने से आने वाले साँपों को तेज़ी से निगलने लगा, एक एक करके उसने सारे साँपों को हड़प कर डाला, जादूगरों के सांप ख़त्म हो गए।

कौम बनी-इसराइल (यहूदी) में ख़ुशी की लहर दौड़ गई जबकि मिसरी और फिरोन के चहरे मुरझा गए, ऐसी हार का तो उन्होंने सोचा भी नहीं था। जादूगर थोड़ी देर तक खामोश खड़े रहे, वो अपनी कला के माहिर थे, अच्छी तरह समझते थे कि जादू क्या होता है और क्या नहीं होता। वो यह भी जानते थे कि उन्होंने रस्सियों और लाठियों को साँपों में नहीं बदला था बल्कि लोगों की आँखों पर जादू किया था जिससे उन्हें यह साँपों जैसे दीखते, उन्हें यह भी मालूम था कि इस वक़्त जो सांप उनके सामने मौजूद है वो हकीक़त में एक लाठी से हकीक़त का सांप बन चुका है।

वो ज़ोर की आवाज़ से बोल उठे:

''हम सारी काएनात के रब पर, मूसा और हारुन के रब पर ईमान लाते हैं।''

यह कहते हुए वो अपनी गलती के अहसास के साथ अल्लाह के हुज़ूर सज्दे में गिर गए। फिरोन के लिए जादूगरों की हार ही कम नहीं थी कि अब यह जादूगर ईमान भी ले आए, वह बहुत गुस्से में खड़ा हुआ और बोला:

''तुम मेरी इजाज़त के बगैर ईमान ले आए....''

लेकिन वह था एक पक्का शातिर और सियासी आदमी, इसमें कोई शक नहीं कि अगली बात जो उसने कही वो कोई आम आदमी सोच भी नहीं सकता था, उसने अपनी रुसवाई का इलज़ाम जादूगरों पर लगाते हुए कहा:

''मैं समझ गया हूँ कि असल बात क्या है, यह मूसा तुम्हारा सरदार है, इसी ने तुम सब को जादू सिखाया है, और आज के दिन के लिए तुमने यह मिली भगत कर ली कि तुम मूसा के सामने हार जाओगे, इस तरह तुम मूसा को सच्चा साबित कर दोगे।''

फिर वह दरबारियों और अपने लोगों की तरफ देखते हुए बोला:

''इन सब का असल प्लान यही है कि इस साज़ बाज़ से यह गद्दी पर कब्ज़ा कर लें और इस शहर के असल लोगों को यहाँ से निकाल कर खुद राजा बन जाएं।''

दरबारियों ने फिरोन की हाँ में हाँ मिलाई, वह बोलता रहा:

''मगर अब तुम्हे पता चलेगा कि तुम्हारा अंजाम क्या होगा, मैं तुम सब का एक तरफ का हाथ और दूसरी तरफ का पैर काट कर तुम्हें पेड़ पर सूली लटकाऊं गा, फिर तुम देख लोगे कि किसका अज़ाब ज़्यादा सख्त और बड़ा है।''

मगर जादूगर जो थोड़ी देर पहले फिरोन के करीबी बनना चाहते थे और उसकी इज्ज़त की कसमें खा रहे थे, वो अब ईमान वाले हो चुके थे, ईमान भी इस सतह का कि जिसके आगे और कोई दर्जा नहीं हो सकता, वो बड़े हौंसले से बोले:

''ऐ फिरोन जो साफ़ दलील हमारे सामने आ गई है और जिस रब ने हमें पैदा किया है जो हमारा असल मालिक है, उससे मुह मोड़ कर हम तुझे तरजीह (प्राथमिकता) कैसे दे सकते हैं।

तुझे जो करना है कर ले, तेरे हाथ में तो बस दुनिया ही की ज़िन्दगी हो सकती है। हम अपने रब पर ईमान ले आए हैं कि वो हमारे गुनाह माफ़ करदे और मूसा के मुकाबले के हमारे इस जुर्म को माफ़ करदे जिस पर तूने हमें उभारा है।

तू हमें मारना चाहता है तो मार दे कोई हर्ज नहीं, हम मर कर अल्लाह के हुज़ूर ही में पहुंचेगे, हम मिस्र की क़ब्ती कौम के वो पहले लोग होने का सम्मान ज़रूर पा लेंगे जो मूसा के रब पर ईमान लाए हैं और उसके लिए किसी से नहीं डरे। अब हम सिर्फ अपने रब से उसके रहम और करम को चाहते हैं।"

फिरोन के इशारे पर सिपाही आगे बढ़े और उन ईमान वालों को गिरफ्तार कर लिया, अस्र ने नाएमा का हाथ पकड़ा और आगे बढ़ गया।

.....

जगह वही थी, वही मैदान.....वही नील नदी का बहता हुआ पानी, नदी के साथ दूर तक खड़ी फसलें, आज हर चीज वही थी, सिर्फ मैदान खाली था। इस मैदान के बीच में थोड़ी थोड़ी दूरी पर खजूर के पेड़ के तने गड़े हुए थे, उन तनों पर खुदा के उन नेक बन्दों की लाशें लटक रही थीं जो एक दिन पहले तक जादूगर थे मगर अब शहीद की मौत पा कर खुदा के प्यारे हो चुके थे, जिन्होंने जान देना गवारा किया मगर सच्चाई को नहीं छोड़ा।

नाएमा ने यह मंज़र (दृश्य) देखा और तड़प उठी, उन सारी लाशों के दाहिने हाथ और बाएं पैर काट दिये गए थे। यह बात उसे अस्र बता चुका था कि उनके यह हाथ पैर जिन्दा होते हुए काटे गए थे, फिर उनके बाकि तड़पते हुए जिस्मों को बड़ी बड़ी कीलों से खजूर के तनों में ठोक कर उन तनों को ज़मीन पर गाड़ कर सीधा खड़ा कर दिया गया, कीलें भी तभी ठोकी गईं थीं जब यह जिन्दा थे।

नाएमा इस सफर में बहुत से लोगों की मौत देख चुकी थी मगर इतनी दर्द नाक़ मौत उसने पहली बार देखी थी, वो भी इस जुर्म में कि कुछ लोगों ने यह कहा कि अल्लाह हमारा रब है। नाएमा वहीं ज़मीन पर बे दम हो कर बैठ गई, उसने दिल में सोचा, कल तक ये लोग उसके सामने जिन्दा खड़े थे, और आज?

उसमे कोई सवाल पूछने की ताक़त भी नहीं रही थी, अस्र उसकी हालत समझ रहा था, वह उसके बराबर में बैठते हुए बोला:

"मुझे मालूम है तुम क्या सोच रही हो, तुम सोच रहो हो कि अल्लाह ने उन्हें क्यों नहीं बचाया?"

"नहीं तुम मुझे यहाँ लाने से पहले हज़रत मूसा और हज़रत खिज्र के वक़्त में यह सब समझा चुके हो, अब मैं जान चुकी हूँ कि अल्लाह के हर काम में बहुत बड़ी हिकमत (Wisdom) और वजह होती हैं। तुम मुझे यह भी समझा चुके हो कि फिरोन जैसे जालिमों का अंजाम जहन्नम है और इन बे गुनाहों का बदला जन्नत है जिन्हें सिर्फ ईमान लाने के जुर्म में सूली दी गई। मगर बात यह है कि जन्नत भविष्य की बात है, एक आम आदमी तो यही सोचेगा कि भविष्य किसने देखा है, हम इंसान तो सिर्फ आज में जीते हैं, हमारा आज यह दुनिया है और दुनिया में तो इन सूली पाने वालों का नुक्सान हो ही चुका है ना, इसकी भरपाई तो मुमकिन नहीं।"

अस्र मुस्कुराया, वह नाएमा का मसला समझ चुका था, यह उसी का नहीं हर इंसान का मसला था, इसलिए उसने तफसील (विस्तार) से जवाब देने का फैसला किया।

तुम इंसानों के लिए यह दुनिया बहुत कीमती है, मगर यह दुनिया अल्लाह की नज़र में कुछ भी नहीं है। तुमने खुद इस सफ़र में देखा कि किस तरह एक के बाद दूसरी नस्ल इस दुनिया को आबाद करती है और जब नई नस्ल आती है तो पिछली नस्लों का नामों निशान भी नहीं रहता। खुद को ज़मीन का खुदा समझने वाले कुछ बरसों और कुछ सदियों में बे नामो निशान हो जाते हैं, तो इसलिए दुनिया में फायदा और नुक्सान की अल्लाह की नज़र में कोई हेस्यत नहीं।"

"दूनिया की बे कीमत होने की बातें क्या इंसान को अमल (कर्म) करने से नहीं रोकतीं?" नाएमा ने वह ऐतराज़ उठाया जो आखिरत के ज़िक्र पर दुनिया परस्त लोगों की तरफ से किया जाता है।

"नहीं! अल्लाह तआला की बात समझलो तो यह ऐतराज़ नहीं हो सकता।"

अस्र ने नाएमा को समझाते हुए कहा:

"दरअसल दुनिया को सब कुछ समझ कर आखिरत को भूल जाने वाले लोगों के सामने ही दुनिया को बे कीमत ज़ाहिर किया जाता है, वरना यह दुनिया 'एक से दुसरे को' के जिस उसूल

पर बनाई गई है उसका ध्यान रखना तो बहुत ज़रूरी है, यहाँ जो अमल (कर्म) नहीं करेगा वो फ़ौरन नुक्सान उठाएगा। रही आखिरत की बात तो आखिरत की सोच तो इंसान को सबसे ज़्यादा अमल (कर्म) करने पर उभारती है।''

''वो कैसे?''

''अच्छा यह बताओ कि एक स्टूडेंट सब से ज़्यादा महनत किस वक़्त करता है?''

नाएमा कुछ देर सोचती रही फिर मुस्कुरा कर बोली:

''एग्ज़ाम के टाइम में।''

''बस यही बात है, आखिरत की सोच दुनिया में इंसान को निकम्मा नहीं करती बल्कि यह बताती है कि दुनिया इम्तिहान का टाइम है इसमें कोई मोमिन हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठ सकता। फिर दीन (धर्म) यह बताता है कि यहाँ इम्तिहान इस बात का नहीं कि दुनिया से अलग हो कर बैठ जाए बल्कि इम्तिहान इस बात का है कि दुनिया के सब मामलों को अपनाओ मगर उन में किसी तरह का ज़ुल्म, ना इंसाफी, झूट, चोरी, रिश्वत वगैरह जैसे कोई गुनाह के काम मत करो, इस लिए एक मोमिन दुनिया के काम तो करता ही है लेकिन उन्ही कामों के ज़रिये (द्वारा) जन्नत भी कमाता है, वह जन्नत जो हमेशा रहेगी, जिसकी नेमते कभी कम नहीं होंगी, इंसान वहां से ना निकलना चाहेंगे ना कोई उन्हें निकालेगा।''

''मगर लोगों के लिए जन्नत बस एक नाम है, उनकी नज़र में ज़रूरी दुनिया की ज़िन्दगी और उसका नफा नुक्सान है।'' नाएमा ने अपना असल सवाल फिर दोहराया।

''हाँ ऐसा ही है, मगर यह इस लिए है कि वो लोग यह बात भूल जाते हैं कि वे इम्तिहान में बैठे हैं। इस इम्तिहान में अल्लाह तआला गैब के परदे में हैं, मगर हर तरफ उन्होंने अपनी निशानियाँ बिखेर रखी हैं। एक तरफ तो इंसान की अपनी फितरत में एक खुदा के होने और अच्छाई बुराई की तमीज़ मौजूद है दूसरी तरफ काएनात में खुदा की कुदरत की अनगिनत निशानियाँ हैं और रसूलों की रहनुमाई (मार्गदर्शन) है।''

''मगर इसके साथ तरह तरह के फिरोन भी तो हैं।''

यह कहते हुए नाएमा की निगाहें सूली पर लटकी लाशों की तरफ थी।

"सच्चाई से रोकने वाले फिरोन भी हैं, इसके साथ यहाँ बुराई की तरफ बुलाने वाले भी हैं। कुछ अपनी ख्वाहिशें (इच्छाएँ) हैं, ईगो है, अपने नीजी फायदे और तास्सुब (पूर्वाग्रह) हैं, शैतानी ताकतें और उनके मश्वरे हैं। मगर यही तो वह रुकावटें हैं जिन्हें अगर कोई पार करले तो अल्लाह तआला उसे अपने करीब करके ख़त्म ना होने वाली दुनिया में ख़ुशी और सुकून के साथ बसा देंगे। जबकि हर बेपरवाह, हटधर्म और ज़ालिम का ठिकाना जहन्नम है। लेकिन इतनी बड़ी सज़ा और इनाम के लिए ज़रूरी है कि इम्तिहान भी परफेक्ट हो, यह परफेक्ट इम्तिहान हो नहीं सकता अगर इंसान को पूरी आज़ादी ना दी जाए, और इसी आजादी के नतीजे में कुछ लोग फिरोन बनते हैं और इसी बिना पर कुछ ईमान वालों को इसी तरह सूली पर लटकना पड़ता है।"

"मगर फिर भी यह आज़माइश बहुत सख्त (कठिन) है।" नाएमा ने सूली पर लटके हुए लोगों को देख कर कहा, फिर अपनी बात जारी रखते हुए बोली:

"अल्लाह तआला की निशानियाँ चारों तरफ सही मगर वे खुद नज़र नहीं आते, हर चीज़ रीज़न के पर्दे में होती है, जन्नत जहन्नम फ़रिश्ते सब आँखों से ओझल हैं। ऐसे में बिना देखे मानने की आज़माइश बहुत बड़ी है, सज़ा और इनाम भी बहुत बड़े हैं, अगर मेरे वश में होता तो मैं ऐसे इम्तिहान में कभी ना बैठती।"

अस्र ने मुस्कुरा कर कहा:

"नाएमा यह तुम्हारी गलत फहमी है, अल्लाह तआला ने तुम्हें या किसी इंसान को ज़बरदस्ती इस इम्तिहान में नहीं भेजा, हर इंसान को उसकी मर्ज़ी के साथ और उससे पूछ कर इस इम्तिहान में भेजा है।"

"यह कब हुआ?" नाएमा तफसील (विस्तार) से जानना चाहती थी।

अस्र ने आसमान की तरफ देखते हुए जवाब देना शुरू किया:

"यह बहुत पहले हुआ था, अल्लाह तआला ने सारे इंसानों की रूहों (आत्मा) को एक साथ पैदा करके उनके सामने अपना पूरा प्लान रखा था, जन्नत, जहन्नम, सज़ा, इनाम, क्या करना है, क्या नहीं करना है, हालात कैसे होंगे हर चीज़ समझा दी थी। तुम इंसानों ने उन सारी शर्तों को क़ुबूल कर लिया।

''मगर क्यों?''

''जन्नत.....नाएमा.....जन्नत।''

अस्र ने एक शब्द में जवाब दिया और फिर खुद ही उसकी तफसील करते हुए बोला:

''जन्नत बहुत खूबसूरत जगह है नाएमा, तुम सोच भी नहीं सकती वह कितनी ऊँची पोस्ट है, कैसे सम्मान का पद है। इंसानों को इस इम्तिहान में उतरने से पहले जन्नत के बारे में समझा दिया गया था। इसके बाद यह मुमकिन नहीं था कि ज़्यादातर इंसान इस इम्तिहान में बैठने को तैयार ना होते, क्यों कि तुम हो ही ऐसे।''

फिर और ज़्यादा आसानी से समझाते हुए कहा:

''तुम्हे याद होगा जादूगरों ने फिरोन से किस तरह इनाम की बात की थी, और फिरोन के इनाम की घोषणा के बाद जादूगरों को कितनी ख़ुशी हुई थी। दुनिया की यह नेमतें आखिरत में हजारों लाखों गुना बढ़ा कर दी जाएंगी। यही मामला आखिरत की सज़ा का है, इस दुनिया में तो सिर्फ एक बार सूली दी जा सकती है मगर आखिरत में तो हर तरह का अज़ाब होगा और इंसान नहीं मरेगा। अल्लाह तआला ने उस वक़्त इंसानों को जन्नत जहन्नम की झलक दिखा दी थी, इसलिए उस वक्त हर आदमी तैयार था कि उसे जन्नत में जाना है और जहन्नम से बचना है।''

''मगर यह जो घटना है यह तो किसी इंसान को याद नहीं।''

''याद ना रहना ही तो इम्तिहान है, लेकिन सारे सुबूत यह बताते हैं कि इंसान फितरी तौर पर सब कुछ जानता है। वो आज भी जन्नत इसी दुनिया में बनाना चाहता है और इसके लिए रात दिन महनत करता है, वो अमर होना चाहता, नए नए स्वाद चाहता है, हमेशा रहने वाली जवानी की तलाश में रहता है। वो आने वाले कल की फ़िक्र में रखता है और उसके लिए पूरी तैयारी करता है, वो पहले इन्वेस्टमेंट और फिर वापस ज़्यादा लेने के कानून को जानता है। वो फायदे के लिए खतरा मोल लेने के उसूल को जनता है।''

''No risk No gain''नाएमा ने आहिस्ता से कहा तो अस्र ने भी उसकी बात को आगे बढ़ाया:

''जो सौदा उस वक़्त इंसानों ने अपने रब से किया था आज भी वह सौदा इंसान सुबह शाम करते हैं। ज़िन्दगी के सारे मामले इसी उसूल पर चल रहे हैं, बस होता यह है कि यह सौदा करने

के बाद इंसान नफा नुकसान को हकीक़त मान कर उसी के मुताबिक (अनुसार) आगे के फैसले करते हैं, जबकि आखिरत का नफा नुक्सान क्यों कि दिखाई नहीं देता बल्कि अपनी अक्ल से समझना पड़ता है इसलिए वो भूल का शिकार हो जाते हैं।''

''तुम सच कहते हो अस्र! इन्सान कहते ही उसे हैं जो अक्ल की आखों से उन चीज़ों को पहचाने जो सामने नहीं दिख रही होती, सिर्फ देख कर ही फैसला करना तो जानवरों का काम है।''

''इन्सान को लापरवाही में डालने वाली एक और चीज़ भी है।''

अस्र ने इस इम्तिहान के एक और गंभीर पहलु को बताते हुए कहा:

''इंसान इस दुनिया में भी अकली उसूलों पर ही सारे मामले करते हैं क्यों कि नफा नुकसान उन्हें सामने नज़र आ रहा होता है। लेकिन अल्लाह के इम्तिहान में असल चीज़ यह है कि यहाँ लोगों की सज़ा और इनाम फ़ौरन नहीं मिलता, जबकि इंसान का मामला ऐसा है कि वो नफा नुक्सान ना देख कर सरकश हो जाते हैं। इसी मसले को हल करने के लिए अल्लाह ने रसूल भेजे हैं जिनके ज़रिये से दुनिया ही में उनकी कौमों का नफा और नुकसान करके अल्लाह तआला अपने होने और अपने प्लान का साफ सुबूत दे देते हैं। इस सज़ा और इनाम को देख कर भी कोई मानने से इन्कार करदे तो वह इसी के लायक है कि उसे जन्नत से महरूम कर के जहन्नम के कैदखाने में हमेशा के लिए बंद कर दिया जाए।''

यह कह कर अस्र खड़ा हुआ और नाएमा से बोला:

''आओ अब मैं तुम्हें इस सज़ा और इनाम का एक और नमूना दिखाऊं।''

.....

नाएमा और अस्र समुन्द्र के किनारे खड़े थे, वहां से वह देख रहे थे कि हज़रत मूसा (अ) अपनी कौम यानि बनी-इसराइल (यहूदी) के साथ इसी तरफ बढ़े आ रहे थे। नाएमा ने देखा कि लोगों कि बहुत बड़ी तादाद उनके पीछे पीछे चल रही है। यह कोई फ़ौज नहीं थी बल्कि काफिला था जिसमे औरतें बूढ़े बच्चे अपने सामन के साथ थे। अस्र नाएमा को हज़रत मूसा की दावत और उनके यहाँ से जाने के बारे में बता रहा था:

"अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (अ) को फिरोन के पास डबल मिशन पर भेजा था। एक यह कि वे फिरोन और उसके साथियों को एक अल्लाह की तरफ पलट ने की दावत दें। दूसरा यह कि वे फिरोन से मांग करें कि वह बनी-इसराइल (यहूदी) को अपनी गुलामी से आज़ाद करदे ताकि वे उनको फिलिस्तीन में ले जाकर बसा दें।"

"एक मिनट एक मिनट, तुम्हारी बात से ऐसा लग रहा है कि हज़रत मूसा पिछले रसूलों की तरह पूरी मिसरी कौम की तरफ नहीं भेजे गए थे, बल्कि सिर्फ फिरोन और उसके साथियों के लिए भेजे गए थे।"

"तुमने बिलकुल ठीक समझा है, कुरआन ने इसका ज़िक्र किया है कि अल्लाह ने हज़रत मूसा को फिरोन और उसकी आल यानि उसके दरबारी और उसके हिमायतियों की तरफ रसूल बना कर भेजा था, पूरी मिसरी कौम का उसमे ज़िक्र नहीं है। इसी लिए तुम अभी देख लोगी कि अज़ाब सिर्फ फिरोन और उसकी फ़ौज, उसके दरबारी और साथियों पर ही आएगा, मिसरी कौम अपनी जगह बाकि रहेगी।"

नाएमा की समझ में यह बात आगई, उसने दूसरा सवाल किया:

"अच्छा दूसरी बात जो तुम्हारी बात से निकली है वो यह कि हज़रत मूसा (अ) का शुरू दिन से ही यह इरादा नहीं था कि बनी-इसराइल मिस्र में रहें, तो सवाल यह है कि फिरोन और उसके दरबारी बार बार यह क्यों कह रहे थे कि यह लोग मिस्र पर कब्ज़ा करना चाहते हैं?"

"यह सियासत है नाएमा, दरअसल बनी-इसराइल (यहूदी) हज़रत यूसुफ (अ) के ज़माने में यहाँ के लीडरों में शामिल थे। बाद के ज़माने में यहाँ के किब्तियों ने यहाँ की सियासयत पर अपना कब्ज़ा कर लिया, और बनी इसराइल को अपनी गुलाम कौम बना लिया। हालांकि उन्होंने बनी-इसराइल को पूरी तरह दबा रखा था लेकिन उनकी संख्या ज़्यादा होने कि वजह से किब्तियों को यह भी खतरा रहता था कि कहीं बनी-इसराइल बगावत ना करदें और मिस्र की हुकूमत पर कब्ज़ा न करलें। फिरोन इसी डर का इस्तिमाल कर के मिसरियों को हज़रत मूसा (अ) के खिलाफ कर रहा था।"

नाएमा ने एक और सवाल किया:

''मगर फिरोन तो जानता था कि हज़रत मूसा बनी-इसराइल को ले जाना चाहते हैं, उसने उन्हें जाने की इजाज़त क्यों नहीं दी ताकि इस डर से मिसरियों की जान छूट जाती?''

''वह ऐसा करता तो फिर उन्हें मुफ्त के इतने सारे गुलाम कहाँ से मिलते, पुराने ज़माने में कौम की पूरी इकॉनमी गुलामों पर टिकी होती थी। आज तो तुम इस के बारे में सोच भी नहीं सकती।''

''लेकिन हज़रत मूसा (अ) इनको फिलिस्तीन क्यों लेजाना चाहते हैं?'' नाएमा के सवाल ख़त्म नहीं हो रहे थे।

''दरअसल मिस्र में रह कर इन में मिस्र के मुशरिकों (बहुदेववाद) की सी आदतें आ चुकी थीं, और दूसरी तरफ सदियों से उनके गुलाम रहने पर इनके अन्दर गुलामी घर कर गई थी। इस दो तरफा कंडीशनिंग से छुटकारा दिलाने का एक ही तरीका था कि बनी-इसराइल को मिस्र और मिसरी से अलग रख कर नए इलाके में एक नए निज़ाम (प्रणाली) के तहत रख कर उनकी सही तरबियत (प्रशिक्षण) की जाती, ताकि यह कौम दुनिया को एक अल्लाह की तरफ आने की दावत देने का काम कर सके।''

''तो क्या यह तरबियत मिस्र में नहीं हो सकती थी?''

''नहीं, इस लिए कि तुम फितने के दौर में खड़ी हो।''

''मतलब?''

''मतलब यह कि बनी-इसराइल अगर सबके सामने एक रब की इबादत करते तो उन पर बहुत ज़ुल्म किया जाता, इसलिए उन्हें अपने घरों में इबादत करने का हुक्म था। तुम इस बात से हालात का अंदाज़ा कर सकती हो कि फिरोन ने कितनी आसानी से उनके बच्चों को क़त्ल करवा दिया।''

''अच्छा फिरोन को लगाम देने के लिए अल्लाह ने कुछ नहीं किया?''

''क्यों नहीं किया, फिरोन और मिसरियों पर समय समय पर हल्के अज़ाब आते रहे।''

''कैसे अज़ाब?''

"उनपर बारिश बंद कर दी गए, तूफान आए, उनकी फसलें ख़राब हुईं, कभी जुएँ आई और कभी मेंडक इतने ज्यादा हुए कि उनका जीना दूभर हो गया। टिड्डी दल का हमला हुआ, फिर एक बार ऐसा हुआ कि उनका सारा पानी खून बन गया।"

"तो क्या किसी अज़ाब के बाद उन्होंने तौबा नहीं की?"

"फिरोन बहुत धोके बाज़ था, वह हर बार हज़रत मूसा से कहता कि अपने रब से दुआ करो कि यह अज़ाब टाल दे तो मैं बनी-इसराइल (यहूदी) को जाने की इजाज़त दे दूंगा, मगर अज़ाब ख़तम होने पर हर बार वह अपने वादे से मुकर जाता था।"

"यह तो बेवक़ूफ़ बनाने वाली बात हुई।"

"उन्होंने बेवक़ूफ़ बनाया नहीं बल्कि खुद बने हैं, अल्लाह का यह कानून है कि इंसान अगर हिदायत (मार्गदर्शन) के लिए सीर्यस है तो सच्चाई के दरवाज़े उस पर खुलते चले जाते हैं, और इस राह पर आने वाली मुश्किलों के लिए उसे हौंसला भी दिया जाता है। मगर जो लोग हिदायत को देख कर भी आँखें बंद कर लेते हैं उनके दिल सख्त होते चले जाते हैं, और फिर उन्हें ढील दी जाती है ताकि वो जो करना चाहें करलें और उसमे खूब तरक्की करलें। लेकिन इसका मतलब यह नहीं होता की वह अल्लाह की पकड़ से बच गया है बल्कि इसका सीधा मतलब यह है कि उसकी पकड़ बहुर सख्त होने वाली है, जैसी अब फिरोन की होने वाली है। तो उन्होंने बेवक़ूफ़ नहीं बनाया बल्कि खुद बेवकूफ बने हैं।"

यह कहते हुए अस्र ने दूर से आते हुए फिरोन के लश्कर की तरफ इशारा किया। उसके ध्यान दिलाने पर नाएमा ने देखा कि बनी-इसराइल तो किनारे पर आकर रुक गए हैं और फिरोन अपने लश्कर के साथ उनके पीछे आ रहा था।

अस्र ने नाएमा को सारे हालात समझाते हुए कहा:

"कल रात अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (अ) को हुक्म दिया कि बनी-इसराइल को ले कर यहाँ से निकल जाएं। यह लोग मिसरियों से अलग एक जगह जिसका नाम 'जशन' है में आबाद थे। इन्हें फिलिस्तीन जाना है लेकिन अल्लाह तआला ने इन्हें शॉट कट रस्ते की बजाए यहाँ इस रस्ते से जाने को कहा जहाँ बीच में समुन्द्र की एक पट्टी पड़ती है।"

''ऐसा क्यों कहा गया?'' नाएमा ने पूछा।

''ताकि यह लोग फिरोन और उसके लश्कर की तबाही का नज़ारा अपनी आँखों से देख सकें।''

अस्र ने जवाब दिया और फिर बनी-इसराइल के बारे में कहने लगा:

''इस समय इनके पास नाव तो हैं नहीं कि उसपर बैठ कर पानी का रास्ता पार करलें, इसलिए अब यह डरे हुए हैं और कह रहे हैं कि हम फिरोन के लश्कर के हाथों मारे जाएंगे। मगर अब अल्लाह तआला ने मूसा (अ) से कहा है कि पानी पर अपना असा (डंडा) मारें, अब तुम देखो कि क्या होता है।''

नाएमा ने देखा कि हज़रत मूसा आगे बढ़े और पानी पर अपना असा मारा, तो पानी फटने लगा और बीच में सूखा रास्ता नज़र आने लगा। एक किनारे से दुसरे किनारे तक साफ रास्ता बन गया जो काफी बड़ा था। रास्ते के दोनों किनारों पर पानी बिलकुल दो पहाड़ों की तरह खड़ा हो गया। नाएमा को अपनी आँखों पर यकीन ही नहीं हो रहा था, ऐसा लग रहा था जैसे यह दो पहाड़ों के बीच का रास्ता है।

बनी-इसराइल बड़े इत्मिनान से हज़रत मूसा की देख रेख में इस रास्ते पर चलने लगे। दूसरी तरफ फिरोन का लश्कर भी अब काफी करीब आने लगा था लेकिन जब तक वो लोग किनारे तक आए बनी-इसराइल इस रास्ते पर काफी आगे जा चुके थे। फिरोन भी उनके पीछे इस रास्ते में उतर गया, उसे साफ़ नज़र आ रहा था कि बनी-इसराइल (यहूदी) ने अभी यह रास्ता पूरा पार नहीं किया था।

अब हालात ऐसे थे कि पानी के बीच बने रास्ते के एक सिरे पर बनी-इसराइल थे जो इस सिरे से बाहर किनारे पर निकल रहे थे और दूसरी तरफ दुसरे सिरे पर फिरोन का लश्कर इस रास्ते में दाखिल (प्रवेश) हो रहा था, धीरे धीरे फिरोन का सारा लश्कर इस रस्ते में उतर गया। जब तक सब बनी-इसराइल इस रास्ते से बाहर आए तब तक फिरोन का पूरा लश्कर इस रास्ते के बीच में आ गया था, तभी दोनों तरफ पहाड़ की तरह खड़ा हुआ पानी तेज़ी से आपस में मिला और फिरोन का पूरा लश्कर बहुत ताकतवर और बड़ी लहरों की चपेट में आ गया।

अस्र ने जल्दी से नाएमा का हाथ पकड़ा और एक तरफ इशारा किया। यहाँ फिरोन डूब रहा था, नाएमा ने उसकी आवाज़ सुनी वह कह रहा था:

''मैं बनी-इसराइल के रब पर ईमान ले आया उसके सिवा कोई रब नहीं, और अब में उसी का वफादार रहूँगा।''

अस्र ने आहिस्ता से कहा।

''अब लाया है तू ईमान, इससे पहले तो नाफ़रमानी ही करता रहा, तू बड़ा फसादी था।''

नाएमा ने उसकी हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा:

''तुमने बिलकुल ठीक कहा।''

''यह मैंने नहीं कहा, यह अल्लाह का कलाम है, और मुझे यकीन है ज़माने की यह गवाही पूरी दुनिया तक पहुंचेगी कि यह लोग नुक्सान में पड़ कर रहे, सिवाए उनके जो ईमान लाए, नेक काम (कर्म) करते रहे और एक दूसरे को सच्चाई पर जम जाने और उसमे सब्र करने की नसीहत करते रहे।''

****

(आखिरी चमत्कार)

फिरोन और उसके लश्कर के डूबने का मंज़र (दृश्य) बहुत कुछ सिखाने वाला था। नाएमा ने फिरोन के लश्कर को डूबते और बनी-इसराइल को बच कर निकल जाते हुए अपनी आँखों से देख लिया था, उसका ईमान यकीन की उचाइंयों को छू रहा था, वह अस्र से बोली:

"मेरे दिमाग की हर गिरह खुल चुकी है, मुझे यकीन हो गया है कि जब क़यामत आएगी तो ऐसे ही अल्लाह तआला अपने वफादारों को बचा लेंगे, और उनका हर मुजरिम अपने जुर्म की सज़ा भुगतेगा.....लेकिन एक मुश्किल है।"

फिर नाएमा मुह ही मुह में बड़ बड़ाई:

"यह ज़्यादा जानना भी बहुत बुरी चीज़ होती है।"

अस्र मुस्कुराया और बोला:

"ज़्यादा जानना बुरा नहीं अच्छी चीज़ है, ज़्यादा इल्म (ज्ञान) वाले लोग ही अल्लाह से डरते हैं, मगर इल्म तभी फायदा देता है जब उससे हिकमत (Wisdom) को देखने की नज़र पैदा हो, बताओ क्या मुश्किल है?"

"बात यह है अस्र कि मैंने मिस्र का इतिहास पढ़ा है, उसमे इस पूरी घटना का सिरे से कोई ज़िक्र ही नहीं है। मैंने तो यह घटना खुद देख ली है, बनी-इसराइल (यहूदी) के इतिहास में यह घटना लिखी है, लेकिन इस ज़माने के मिस्र के इतिहास में इस को इस तरह रिकोर्ड ही नहीं किया गया, यहाँ तक कि इतिहास की बुन्याद पर आज तक लोग इस पर ही एक मत नहीं हुए कि मूसा (अ) के ज़माने के फिरोन का असल नाम क्या था। हालांकि मिस्र के सारे फिरोनों और उनके ज़माने का इतिहास मौजूद है, तो बाकि सज़ा और इनाम वगैरह की तो बात ही क्या है।"

"तुम ठीक कहती हो, बल्कि मैं तुम्हारे इल्म (ज्ञान) को थोड़ा और बढ़ा दूं कि खुद बनी-इसराइल ने इस घटना को सज़ा और इनाम के कानून के तौर पर इस तरह याद नहीं रखा जिस तरह यह हुई है।"

"तुमने तो मेरी बात की ही हिमायत कर दी, इसका मतलब यह हुआ कि एक आम आदमी इस घटना की सच्चाई तक इतनी आसानी से नहीं पहुंच सकता जब तक वह मेरी तरह इसे खुद ना देखले या फिर वह मुसलमानों की तरह कुरआन को अल्लाह की किताब मानता हो जिसमे यह घटनाएं सही सही लिखी हैं।"

अस्र ने हाँ में सर हिलाते हुए कहा:

"इसी लिए हम इस सफर की आखरी मंजिल में ऐसे दौर में जाएंगे जब अल्लाह तआला ने अपनी सच्चाई के सारे सुबूत साफ तौर पर जमा कर दिए हैं। सज़ा और इनाम भी हुआ, सज़ा और इनाम वाली सारी जगह आज भी आबाद हैं, वह किताब भी मौजूद है जिस में यह सज़ा और इनाम की दास्तान बयान हुई है, वह कौम भी मौजूद है जिस पर यह हालात गुज़रे हैं, और सब से बढ़ कर इस सज़ा और इनाम की घटना को उस समय के इतिहास ने पूरी तफसील के साथ रिकॉर्ड भी कर लिया है, यह दौर आखरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का दौर है।"

"अच्छा तो हम हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के ज़माने में जाएंगे?" नाएमा ने खुश होते हुए कहा।

"हाँ! हम उन्हीं के दौर में जाएंगे। सच्चा तो हर रसूल था, मगर आखरी रसूल (ﷺ) की सच्चाई को दुनिया पर साबित करने के लिए अल्लाह तआला ने सारे इन्तिज़ाम कर दिए थे ताकि अब जब तक दुनिया रहे कोई सच्चाई को चाहने वाला आदमी खुदा के होने का इन्कार ना कर सके। उसके ज़रिये (द्वारा) से सच्चाई इस तरह खोल कर रख दी गई है कि अब जिसे भी सच्चाई में कोई दिलचस्पी हो उसे तुक्के मरने की कोई ज़रूरत नहीं, क्यों कि आखरी रसूल (ﷺ) एक ऐसे पैगम्बर हैं जिनके बारे में सिर्फ उनकी कौम का अकीदा ही नहीं या सिर्फ कुरआन ही नहीं बल्कि इतिहास भी पूरी तरह उनके बारे में बता देता है। ये दुनिया में सिर्फ एक ही हस्ती हैं जिनको इतिहास ने नबी या रसूल के रूप में लिख रखा है और उनके ज़रिये होने वाली सज़ा और इनाम जो क़यामत और खुदा के होने का सबसे बड़ा सुबूत है इतिहास ने पूरी तरह से रिकॉर्ड कर रखा है। उनकी सच्चाई इंसानियत पर इतनी कतई है कि इसके बाद अल्लाह तआला ने रसूलों को भेजने का सिलसिला ही ख़त्म कर दिया, अब इनका होना ही क़यामत की सज़ा और इनाम और खुदा के होने का सूरज की तरह चमकता हुआ सुबूत है।"

अस्र बोल रहा था और नाएमा पूरे ध्यान से उसकी बात सुन रही थी।

"अब हम मक्का जाएँगे, उस ज़मीन पर जहाँ इंसानी इतिहास का आखरी और सबसे बड़ा मोजज़ा (चमत्कार) हुआ, और इस मोजज़े को क़यामत तक के लिए हिफाज़त से सबके सामने रख दिया गया ताकि कोई खुदा और क़यामत के होने का इन्कार ना कर सके, कोई सच्चाई की तलाश करने वाला इंसान सच्चाई से महरूम (वंचित) ना रह सके, आओ मैं तुम्हें सच्चाई दिखाता हूँ।"

.....

नाएमा और अस्र ख़ामोशी से खड़े यह मंज़र (दृश्य) को देख रहे थे। यह दोनों इस समय सातवी सदी ईसवी में मक्का दारुल नदवा (काबा के पास सरदारों की मीटिंग के लिए बनाया हुआ एक घर) में खड़े थे, उनके सामने मक्का से सारे रईस और सरदार एक साथ बैठे थे। आज कल इन्हें एक मुश्किल का सामना करना पड़ रहा था उसी मुश्किल ने आज इन्हें एक जगह हो कर एक फैसला कर लेने पर मजबूर किया था। इनका धर्म शिर्क (बहुदेववाद), इनकी सरदारी, इनका कल्चर, हरम काबा में रखे बुतों से जुड़ी इनकी इकॉनमी और अरब के मुशरिकों (बहुदेववादी) की नज़र में इनकी इज्ज़त सब खतरे में थे। इस मसले का कोई आसान हल इनके सामने नहीं था, एक खुदा के वफादार हो कर जन्नत में उसका कुर्ब (नज़दीकी) हासिल करने की दावत (पुकार) इतनी फितरी थी कि हर कोई उसे अपने दिल की आवाज़ समझ कर उसकी तरफ खिंच रहा था।

यही हाल रहता तो थोड़े ही अरसे में इन हटधर्म सरदारों से सिवा सब लोग अल्लाह के बन्दे बन जाते। इस मसले ने इन सब को यहाँ जमा होने पर मजबूर किया था, मगर किसी की समझ में कोई आसान हल नहीं आरहा था। इसी हल की तलाश में सब सोच विचार में गुम थे और एक घहरी ख़ामोशी छाई हुई थी, जिसे अबू जहल की आवाज़ ने तोड़ा:

"यह सब तुम्हारे भतीजे का किया धरा है अबू लहब, तुम उसे समझाते क्यों नहीं।"

"मैं कुछ नहीं कर सकता। खानदान बनू हाशिम का करता धरता मैं नहीं हूँ, बल्कि अबू तालिब है। वह पूरी तरह अब्दुल्लाह के बेटे का बचाव कर रहा है, तुम में से किसी ने मेरे भतीजे के खिलाफ कोई कदम उठाया तो बनू हाशिम और तुम्हारे बीच जंग छिड़ जाएगी।"

उमय्या बिन खल्फ़ ने कहा:

"तो क्या करें? लड़ाई के डर से बैठे रहें और अधर्म को फैलते हुए देखते रहें, अपने बुतों के बजाए एक अल्लाह की इबादत होती देखते रहें।"

"नहीं, मेरा मतलब यह नहीं था, मैं तुम्हें मामले की गंभीरता बता रहा था।"

"मगर क्या इस मसले का कोई हल नहीं है, सोचो अबू लहब तुम्हारा दिमाग तो बहुत तेज़ है।"

अकबा बिन अबी मुइत नामी सरदार ने उम्मीद भरी नज़रों से अबू लहब की तरफ देखते हुए कहा तो अबू लहब सोच में डूबे हुए लहज़े में बोला:

"हाँ एक हल है.... मुहम्मद (ﷺ) पर ईमान लाने वालों पर सख्ती शुरू कर दो। हम में से हर एक का जिस जिस ईमान वाले पर वश चलता है वो उसको मार पीट कर इस दावत पर ईमान लाने से रोके। इस दावत पर अभी तक ज़्यादातर नौजवान और गुलाम ईमान ला रहे हैं, बाकि लोग तो बहुत कम हैं। हम सब मिल कर उन नौजवानों और गुलामों पर सख्ती करते हैं, यह लोग पिटेंगे और मरेंगे तो खुद ही इस नए धर्म को छोड़ देंगे, या कम से कम कोई और आदमी हमारे बुतों को छोड़ कर इस नए धर्म को अपनाने की हिम्मत नहीं करेगा और धीरे धीरे उनका ज़ोर टूट जाएगा।"

यह सुन कर सब लोगों की आंखें ख़ुशी से चमक उठी, अबू जहल उठा और अबू लहब को गले लगा कर बोला:

"लात और मनात (यह उनके दो बुतों के नाम थे) की कसम अबू लहब.....तुमने तो इस मसले को हल कर दिया।"

"चलो साथियों इस नए धर्म को हमेशा के लिए दफन करदें।"

सभा खत्म हुई और वो एक एक करके अपने घरों की तरफ चल दिए।

उनके जाने के बाद नाएमा ने अस्र की तरफ देख कर पूछा:

"अब क्या होगा?"

"यह अल्लाह के आखरी रसूल (ﷺ) की दावत (पुकार) का शुरू का समय है, अभी उनकी दावत पर कम ही लोग ईमान लाए हैं, ऐसे में यह लोग अब उनपर ज़ुल्म की हदे पार कर देंगे।

बरबरियत की नई दस्ताने लिखी जाएंगी, मगर आसमान यह मंज़र अब आखरी बार देखेगा, इसके बाद ऐसा नहीं होगा। आओ इस सितम के दौर को अपनी आँखों से देखलो, तुम्हे मालूम हो जाएगा कि आज तुम्हारे लिए अल्लाह का नाम लेना कितना आसान है और एक दौर में यह कितना मुश्किल था।"

.....

मक्का शहर जो हमेशा से इंसानों को अमन देने का प्रतीक था आज ईमान वालों को वहां जीना मुश्किल होने लगा था। बेदर्दी और ज़ुल्म के मंज़र (दृश्य) हर जगह नज़र आने लगे थे, कहीं सुहेब (र) को अंगारों पर लिटाया जा रहा था जिससे उनकी खाल जल जाती। कहीं बिलाल (र) को तपती धूंप में गर्म रेत पर लिटा कर ऊपर पत्थर रख दिए जाते, फिर उनके गले में रस्सी डाल कर शहर की गलियों में घसीटा जाता, वह इस हाल में भी एक अल्लाह को पुकारते रहे। यह तो मजबूर बेबस गुलामों का हाल था, लेकिन कुरैश कबीले से ईमान लाने वाले भी सुकून से नहीं थे। कुरैश के नौजवान अपने बड़ों से पिट रहे थे और ईमान लाने वाली औरतें अपने खानदान वालों के ज़ुल्म का निशाना थीं। एक एक ईमान वाले को निशाना बनाया जा रहा था, और उन्हें इस्लाम से हटाने की पूरी कोशिश की जा रही थी।

काफी लम्बा अरसा यूं ही गुज़र रहा था, कुरैश के सरदारों के बहुत ज़्यादा ज़ुल्म के बाद अभी तक किसी एक ईमान वाले ने भी इस्लाम नहीं छोड़ा था। इस नाकामी से अबू जहल झुंझलाया हुआ था, उसके अपने गुलाम हज़रत यासिर (र) उनकी बीवी सुमय्या (र) और उनके बेटे अम्मार (र) भी उसके ज़ुल्म और सितम के बावजूद इस्लाम पर पूरी बहादुरी से डटे हुए थे। आज अबू जहल ने सोच लिया था कि वह अपनी इस नाकामी को खत्म कर के ही दम लेगा। आज या तो यासिर (अ) इस्लाम को छोड़ेंगे या फिर वह उनको ख़त्म करके दम लेगा।

यही वह समय था जब अस्र नाएमा को यहाँ ले आया, वो दोनों हज़रत यासिर (र) के घर के पास खड़े अबू जहल को पास आता देख रहे थे। उसके हाथ में एक भाला था, तभी यासिर (र) ने भी उसे देख लिया था और उन्हें अंदाज़ा हो चुका था कि आज अबू जहल के इरादे ठीक नहीं, मगर उन्होंने भागने की कोशिश नहीं की। अबू जहल ने पास पहुँच कर उनसे कहा:

"तू एक अल्लाह की इबादत नहीं छोड़ेगा?"

हज़रत यासिर (र) ने बिना डरे जवाब दिया:

"अगर मैं एक अल्लाह को छोड़ दूंगा तो उसकी पकड़ से मुझे कोई नहीं छुड़ा सकेगा।"

यह जवाब सुन कर अबू जहल आग बबूला हो गया, उसने उन्हें बड़ी बेरहमी से मारना शुरू कर दिया। उनकी चींखे सुन कर उनकी बीवी हज़रत सुमय्या भी बाहर आ गईं, उन्होंने अपने पति को बचाने की कोशिश की, इस पर अबू जहल ने यासिर (र) के साथ उन्हें भी पीटना शुरू कर दिया।

हज़रत यासिर जो अभी तक पिट रहे थे, मासूम बीवी को मार खाता देख कर तड़प उठे। वह अपने आका का कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे, क्यों कि इस ज़माने में गुलामों की आका के सामने कोई हेस्यत नहीं थी, उन्होंने बीवी को हौंसला देने के लिए ज़ोर से कहा:

"ला इलाहा इल्लल्लाह। (अल्लाह के सिवा कोई रब नहीं)"

हज़रत सुमय्या ने भी यही एक खुदा के होने का ऐलान दोहराया, मगर यह ऐलान एक खंज़र बन कर बुतों को खुदा मानने वाले अबू जहल के सीने में चुभ गया। उसने गुस्से में आकर अपना भाला उठाया और हज़रत सुमय्या (अ) के पेट में घोंप दिया, उनके मुह से एक आह निकली, और वे यह कहते हुए ज़मीन पर गिर गईं:

"काबा के रब की कसम मैं कामयाब हो गई...."

बीवी के पेट से खून का फुवारा फूटता देख कर हज़रत यासिर (र) बिलबिला कर आगे बढ़े और अबू जहल को धक्का दे कर हज़रत सुमय्या (र) से दूर किया। दम तोड़ती हुई अपनी सुमय्या को उन्होंने अपनी बांहों में भर लिया। एक कमज़ोर गुलाम इसके सिवा क्या कर सकता था, उनके खून से सने चहरे पर आंसू बहने लगे, मगर होंठों पर शिकायत का कोई शब्द नहीं था। गुलामी और ग़मों की जंजीरों से जकड़ी उनकी जिंदगी में सुमय्या एक अकेली ख़ुशी थी, यह ख़ुशी भी आज तौहीद (एकेश्वरवाद) पर कुर्बान हो गई।

तभी अबू जहल संभल गया, वो गुस्से में किसी सांप की तरह फुंकारता आगे बढ़ा और मयान से अपनी तलवार निकाल कर हज़रत यासिर (र) की कमर में घोंप दी, यासिर (र) सुमय्या (र) को लिये हुए ज़मीन पर गिर गए।

उनकी खुली हुई आँखें आसमान को तक रही थी।

नाएमा ख़ामोशी से खड़ी यह सब देख रही थी, उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे, उसने बहती हुई आँखों के साथ कहा:

"सिर्फ ला इलाहा इल्लल्लाह कहने की यह सज़ा।"

अस्र बड़बड़ाया:

"नहीं अब नहीं, यह अब और नहीं होगा, कम से कम एक अल्लाह का नाम लेने की वजह से नहीं होगा।

आसमान वाले ने फैसला कर लिया है, खुदा का नाम लेने वाले चाहे खुदा को भूल जाएँ, मगर इस्लाम की बुन्याद पर किसी को उनपर ज़ुल्म की इजाज़त नहीं दी जाएगी। यही खुदा का फैसला है मज़हब की बुन्याद पर ज़ुल्म की इजाज़त नहीं दी जाएगी, इसलिए अब यह इम्तिहान भी खत्म हो रहा है, यह इम्तिहान अब ऐसे नहीं लिया जाएगा। अब आखरी दौर शुरू हो रहा है, इंसानियत की सबसे बड़ी संख्या इसी आखरी दौर में पैदा होगी, उन्हें अल्लाह का नाम लेने की आज़ादी होगी वो चाहे तो खुदा को माने या उसका इन्कार करें, अब यह ज़रूरी नहीं होगा कि जो सरदारों का धर्म है आम लोगों का भी वही धर्म हो।"

"लेकिन यह चमत्कार कैसे होगा? हज़ारों साल का यह रिवाज कैसे बदल जाएगा?"

नाएमा के चहरे पर सवालिया निशान था।

"चलो मेरे साथ मैं बताता हूँ यह रिवाज कैसे बदलेगा।"

एक बार फिर वक़्त में उनका सफर शुरू हो गया था।

.....

काबा की बनावट तो वही थे जैसी नाएमा ने अपने दौर में देखी थी, लेकिन उसके आस पास का नक्शा बिकुल बदला हुआ था। चारों तरफ पहाड़ों से घिरी जगह के बीच काबा था, आस पास बहुत सारे घर बने हुए थे। नाएमा ने कुछ अरसा पहले ही अपने नाना के साथ उमरा किया था, मगर आज उसके सामने मौजूद हरम मक्का और नई मस्ज़िद हरम में सिवाए काबा के कुछ भी सेम नहीं था।

अस्र और नाएमा हरम के पास खड़े हुए थे, अस्र नाएमा को अलग अलग घरों के बारे में बता रहा था कि कौन सा घर किस का है। उसने नाएमा को एक दिलचस्प बात बताई:

"तुम देखो कि इन लोगों में बल्कि आखरी रसूल (ﷺ) के शुरू के ज़माने के सब लोगों में से सिर्फ अबू लहब और रसूल (ﷺ) के साथियों में हज़रत जैद (र) के अलावा किसी का नाम कुरआन में नहीं आया। लेकिन इतिहास में इनमे से हर एक आदमी का नाम और उसकी ज़िन्दगी के हालात सब मौजूद हैं। यह है इस आखरी सज़ा और इनाम की ख़ास बात कि इसका पूरा रिकॉर्ड इतिहास में मौजूद है।"

"और कुरआन में?" नाएमा ने पूछा।

"कुरआन में तो यह इतिहास है ही लेकिन उसमे इस दास्तान के अलावा पिछले रसूलों की दास्तानें और सज़ा और इनाम के कानून की एप्लीकेशन भी है, सच्चाई की दावत भी है और उसकी दलीलें (तर्क) भी हैं, साथ में नए ईमान लाने वालों के लिए कुछ कानून भी हैं। मगर बदकिस्मती से उसके इस मोजज़े (चमत्कार) पर लोगों का पूरा ध्यान नहीं है जिसने उसे हमेशा के लिए एक चमत्कार बना दिया है।"

"वह मोजज़ा क्या है?"

"यही कि कुरआन मजीद इस आखरी सज़ा और इनाम के होने का सिर्फ पूरा रिकॉर्ड ही नहीं है बल्कि इस सज़ा और इनाम के होने से पहले ही उसने बता दिया था कि यह कब और कैसे होगा।"

अस्र यहाँ तक पहुंचा ही था कि नाएमा को एक बहुत खूबसूरत आवाज़ आना शुरू हुई, नाएमा को मालूम था यह कुरआन पढ़े जाने की आवाज़ थी, मगर इसमें जो अंदाज़ और आवाज़ थी वह उसने पहले कभी नहीं सुनी थी।

"आज तुम कुरआन को खुद उनकी ज़ुबान से सुन लो जिन पर यह नाज़िल (अवतरित) हुआ है, और यह भी सुन लो कि सज़ा और इनाम होने से पहले उसकी भविष्यवाणी किस शान से की गई थी।"

नाएमा ने देखा कि अल्लाह के आखरी रसूल (ﷺ) नमाज़ में ऊंची आवाज़ से कुरआन मजीद पढ़ रहे हैं। उनकी आवाज़ ने वहां मौजूद हर आदमी पर मानो एक जादू सा कर दिया है, लगता था कि सब अपने दिल के हाथों बिना हिले कुरआन सुनने को मजबूर हैं।

नाएमा को अस्र ने बताया:

"अल्लाह के रसूल (ﷺ) कुरआन की सूरेह क़मर पढ़ रहे हैं।"

सूरेह क़मर में एक एक करके उन सब कौमों की दास्तान शोर्ट में बयान हो रही थी जिन को नाएमा अपनी आँखों से देख चुकी थी। नूह की कौम, आद की कौम, समूद की कौम, लूत की कौम और फिरोन और उसके साथी। कुरआन पढ़ा जा रहा था और नाएमा की नज़रों के सामने सारे मंज़र (दृश्य) घूम रहे थे। किस तरह रसूलों ने अपनी कौम को दावत (पुकार) दी, किस तरह उनकी दावत को ठुकराया गया और फिर कैसे अल्लाह का अज़ाब आया। शायद किसी और ने कुरआन को ज़िन्दगी में इस तरह नहीं समझा होगा जैसे इस समय नाएमा को समझ में आ रहा था। फिर पढ़ा गया:

"क्या तुम्हारी कौम के काफ़िर उन कौमों के काफ़िर से अच्छे हैं या इनके लिए आसमानी किताबों में कोई माफ़ी नामा लिखा हुआ है? या इनका गुमान है कि यह बहुत ताकतवर गिरोह है ? याद रखो कि इनका गिरोह बहुत जल्दी हार खाएगा और यह पीठ फेर कर भागेंगे, बल्कि इनसे जो वादा है उसके पूरा होने का असल समय तो क़यामत का दिन है, और क़यामत का दिन बड़ा ही सख्त और बड़ा ही कड़वा है।"(सूरेह क़मर 43 से 46)

यह शब्द जैसे ही पूरे हुए अस्र ने नाएमा का हाथ पकड़ा और समय में आगे सफर करते हुए वो एक खुले मैदान में पहुँच गए। यह एक जंग का मैदान था, ऐसा लगता था की जंग अभी अभी ख़त्म हुई है, कुछ लोग भागे जा रहे थे, कुछ को रस्सियों से बांध कर गिरफ्तार किया जा रहा था और कुछ लाशें ज़मीन पर इधर उधर बिखरी पड़ी थीं।

अस्र ने यहाँ की तफसील बताते हुए कहा:

"हम सन दो हिजरी में खड़े हैं, यह बदर का मैदान है। बदर की जंग जो सच और झूट को अलग अलग कर देने वाली जंग थी अभी अभी ख़त्म हुई है। तुम देख सकती हो कि मक्का के काफ़िर किस तरह गाज़र मूली की तरह काट दिए गए हैं, उनका ताक़तवर गिरोह हार खा कर भाग गया।

सत्तर सरदार मारे गए, इतने ही गिरफ्तार हुए हैं। यह जंग इंसानी इतिहास की अकेली जंग है जिसमे किसी कौम के सारे बड़े सरदार मारे गए, यह सब के सब काफ़िर और अल्लाह के रसूल (ﷺ) के दुश्मन थे। तुमने जो आयतें सुनी थी वह दस साल पहले मक्का में नाजिल हुई थीं और उनमे इस घटना कि भविष्यवाणी की गई थी।"

नाएमा बड़ी बड़ी आँखों से यह मंज़र देख रही थी, अस्र बोल रहा था:

"नाएमा तुमने एक झलक देखा था कि अरब के सरदारों को अपने गिरोह पर अपनी ताक़त पर कितना नाज़ था, और तुमने एक झलक इसकी भी देखी थी कि मुसलमान कैसे ज़ुल्मों का शिकार थे और कोई उम्मीद ही नहीं थी कि वो कभी इस ज़ुल्म से छुटकारा पाएंगे। अल्लाह ने अपने पैगम्बर को उसी समय बता दिया था कि इन मुजरिमों के साथ क्या होगा, सूरेह कमर में इस भविश्यवाणी से उन्होंने यह बताया था पिछली कौमों के साथ हमने क्या किया, फिर ठीक ठीक यह बताया कि इन मुजरिमों का भी यही अंजाम होगा बल्कि यह पीठ फेर कर भागेंगे। इसके बाद यह बता दिया कि जंग में हार की यह भविश्यवाणी पहली क़िस्त है, इनसे असल वादा आखिरत की सज़ा और अज़ाब का है। मतलब यह हुआ की भूतकाल की घटनाएँ सुना कर भविष्य की बात बिलकुल सही बताई जा रही है तो आगे क़यामत की भविश्यवाणी भी बिलकुल ठीक साबित होगी, और अब तुम अपनी आँखों से देख लो कि कुछ सालों के अन्दर ही इन काफिरों की इस हालत की भविश्यवाणी कैसे सच्ची साबित हुई।"

नाएमा जो अस्र की बातें बहुत ध्यान से सुन रही थी अब सोच रही थी कि किसी एक आदमी की ज़िन्दगी के बारे में की गई कोई भविश्यवाणी तो कभी कभार ठीक हो जाती है लेकिन इतने सारे सरदारों के बारे में एक साथ की जाने वाली सही भविश्यवाणी अल्लाह के सिवा कोई नहीं कर सकता।

अस्र ने उसका चहरा पढ़ते हुए कह:

"यह भविश्यवाणी सिर्फ एक कौम के बारे में ही नहीं थी बल्कि अल्लाह ताआला ने अपनी किताब में यह किया कि इस घटना से दूसरी बड़ी घटना को मिला कर उसकी भी सही भविश्यवाणी कर दी थी।"

"वो कौन सी घटना है ?"

"अरब के पड़ोस में दो सूपर पावर में एक जंग जारी थी, इस जंग में एक तरफ रूम की सल्तनत के इसाई थे और दूसरी तरफ ईरान के आग को पूजने वाले जिन्हें मजूसी कहा जाता है वो थे। ठीक उस समय जब इसाई यह जंग में पूरी तरह हार चुके थे अल्लाह ने यह भविश्यवाणी करदी थी कि इसाई जो आज हार गए हैं जल्दी ही इस जंग में जीतेंगे और उसी वक़्त मुसलमानों को भी अल्लाह की मदद हासिल होगी और वो खुशियाँ मनाएँगे।"

यह कह कर अस्र ने नाएमा को अपने साथ लिया और एक बार फिर वो पीछे समय में जा कर काबा के पास खड़े हुए थे, जहाँ एक जगह और अल्लाह के आखरी रसूल (ﷺ) कुरआन पढ़ रहे थे, अस्र ने नाएमा का ध्यान इस ओर दिलाते हुए कहा:

"खुद अपने कानों से सुन लो कि इस घटना के होने से नौ साल पहले किस तरह उसकी भविश्यवाणी की जा रही है।"

कुरआन में पढ़ा गया:

"रूमी पास के इलाके में हार गए और वो अपनी हार के बाद फिर कुछ सालों में जीत जाएँगे, अल्लाह ही की इजाज़त से हुआ जो पहले हुआ और क्यों कि इससे पहले और बाद में भी यानि हर ज़माने में हुक्म का हक़ अल्लाह ही को है। और उसी वक़्त ईमान वाले खुश हो रहे होंगे अल्लाह की मदद से, वो (अल्लाह अपने कानून के अनुसार) जिस की चाहता है मदद करता है और वह सब पर ग़ालिब रहम करने वाला है। यह अल्लाह का वादा है और अल्लाह अपने वादे को नहीं तोड़ता, लेकिन ज़्यादा तर लोग नहीं जानते वो इस दुनिया की ज़िन्दगी के सिर्फ ज़ाहिर को जानते हैं और आखिरत से वो बिलकुल ही बेपरवाह हैं।"(सूरेह रूम 1 से 7)

यह शब्द पूरे हुए तो अस्र ने नाएमा से कहा:

"सुन लिया तुमने, अल्लाह के रसूल (ﷺ) कुरआन की यह खबर उस समय दे रहे हैं जब इस तरह की बात सोचना भी मुमकिन नहीं था।"

"हाँ मैंने इतिहास में यह घटना पढ़ी है, शुरू में इरानी बादशाह खुसरो ने लगभग पूरी रूमी सल्तनत पर कब्ज़ा कर लिया था, इसका कोई चांस नहीं था कि वो अब जंग में कभी ईरानियों को पछाड़ सकते हैं।"

''बिलकुल सही, लेकिन गौर करो यह एक नहीं बल्कि दो भविश्यवाणी हैं, रूमियों की जीत और मुसलमानों के लिए अल्लाह की मदद। इसलिए जिस समय रूमियों को जीत नसीब हुई उसी के करीब के समय में बदर की जंग की घटना हुई जिसमे मुसलमानों ने अल्लाह की मदद से अपने से तीन गुना बड़े लश्कर को जो सिर्फ संख्या में ही तीन गुना नहीं था बल्कि हथियारों में भी मुसलमानों से कई गुना आगे था उन को एक तरफा हरा कर एक ऐतिहासिक जीत दर्ज की।''

नाएमा खामोश रही उसे अपने आप ही अब्दुल्लाह याद आ गया, उसने भी इस भविश्यवाणी के बारे में बताया था, वो आहिस्ता से बोली:

''मुझे किसी ने यह बात बताई थी मगर उस समय मैं यह बात समझ नहीं सकी थी।''

''इंसान जब तक खुद कुछ समझना ना चाहे कोई उसे कुछ नहीं समझा सकता, दुश्मनी और नफरत से घिरा हुआ आदमी कभी सच्चाई नहीं समझ सकता, चाहे हकीक़त कितनी ही खोल कर बयान कर दी जाए। देखो उसी नफरत का शिकार यह मक्का के सरदार हैं, और अब देखो किस तरह इस सर ज़मीन से उन्होंने निकाले जाने का ऐलान हो रहा है।''

अस्र ने नाएमा को साथ लिया, इस बार भी अल्लाह के रसूल (ﷺ) मक्का में यह आयतें पढ़ रहे थे:

''और बेशक यह काफ़िर इस ज़मीन से तुम्हारे कदम उखाड़ देने की कोशिश में हैं ताकि यह तुमको यहाँ से निकाल दें, और अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारे बाद यह भी यहाँ टिकने ना पाएंगे। हमने तुमसे पहले जो भी रसूल भेजे उनके बारे में हमारा तरीका याद रखो, और तुम हमारे तरीके में कोई बदलाव नहीं पाओगे.....और दुआ करो कि ऐ मेरे रब मुझे जहाँ दाखिल (प्रवेश) कर इज्ज़त के साथ कर और जहाँ से मुझे निकाल इज्ज़त के साथ निकाल, और मुझे ख़ास अपने पास से मदद करने वाली ताक़त नसीब कर!

और ऐलान कर दो कि हक़ (सच) आ गया और बातिल (झूठ) मिट गया और बातिल मिटने वाली ही चीज़ है!''(सूरेह बनी-इसराइल 76 से 81)

कुरआन पढ़ना ख़त्म हुआ तो अस्र ने इस पर अपनी बात रखी:

"तुमने सुन लिया कि क्या कहा जा रहा है? यह मक्का है जहाँ मुसलमान बहुत बुरे हालात में घिरे हुए हैं, उनके लिए जान बचाना ही मुश्किल हो चुका है। काफ़िर उनको यहाँ से निकालने और उन्हें क़त्ल कर देने पर आमादा हैं। कोई इंसान ज़्यादा से ज़्यादा हौंसला कर के यह अंदाज़ा कर सकता है कि किसी तरह यह मुसलमान बस जान बचा कर यहाँ से निकल जाएंगे, लेकिन इतने यकीन के साथ यह बात कहना कि रसूल के निकलने के बाद यह लोग इस ज़मीन में नहीं रह पाएँगे और इस बात को रसूलों के बारे में अपने एक तरीके (सुन्नत) के तौर पर पेश करना सिर्फ और सिर्फ अल्लाह के लिए ही मुमकिन है, और इससे बढ़ कर यह कि इस हालत में हक़ (सच) के आने और बातिल (झूठ) के मिटाए जाने की भविश्यवाणी तो कोई इंसान कर ही नहीं सकता। आओ अब देखो कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) के यहाँ से मदीना जाने के आठ साल के अन्दर किस शान से मक्का और पूरे अरब में अल्लाह के रसूल (ﷺ) की हुकूमत हो गई और मुशरिकों (बहुदेववादियों) से यह ज़मीन खाली हो गई।"

यह कहते हुए अस्र ने नाएमा को साथ लिया, एक बार फिर दिन तेज़ी से बदले, इस बार वो दोनों मक्का से बाहर एक ऊँचे पहाड़ पर खड़े थे। इस पहाड़ से एक तरफ मक्का शहर के अन्दर का मंज़र नज़र आ रहा था और दूसरी तरफ शहर से बाहर का।

नाएमा ने देखा कि हज़ारों की तादाद में अल्लाह के रसूल (ﷺ) के साथी मक्का के अन्दर दाखिल हो रहे हैं। मक्का के रहने वाले जो कल तक मक्का के बल्कि पूरे अरब के सरदार थे आज डर के मारे अपने घरों में छिपे हुए थे। ज़ुल्म सहने और मार खाने वाले मुसलमान आज अपने ऊँटों और घोड़ों पर सवार होकर मक्का में दाखिल हो रहे थे। काफ़िर जंग के मैदान में ही नहीं बल्कि अकीदे (आस्था) के मैदान में भी हमेशा के लिए हार चुके थे।

अस्र ने एक तरफ इशारा करते हुए कहा:

"देखो दुनिया का सरदार आ रहा है, मगर उनकी शान तो देखो आज भी जीतने वाले राजा की तरह सर फख्र से ऊँचा नहीं है बल्कि झुका हुआ है।"

नाएमा ने उस तरफ देखा, अल्लाह के आखरी रसूल (ﷺ) आ रहे थे उनका सर अल्लाह के शुक्र और आज़िज़ी (विनम्रता) के अहसास से इतना झुका हुआ था कि उनका माथा ऊंटनी की गर्दन को छू रहा था।

"इनकी अज़मत (महानता) देखो कि आज इन्होने अपने हर दुश्मन को माफ़ कर दिया, किसी से बदला नहीं लिया।"

आज फिर से एक अल्लाह के प्रतीक इस घर को शिर्क से पाक किया जा रहा था, अल्लाह के रसूल (ﷺ) काबा को बुतों से पाक कर रहे थे, उन बुतों से जिन्होंने लोगों को गुमराह कर दिया था, उन बुतों से जिन्होंने लोगों को आखिरत भुला दी थी। यह फर्जी कहानियों के फर्जी बुत थे कुछ पुराने पैगम्बरों के बुत थे जिनकी तालीम (शिक्षा) को भुला कर लोगों ने उन्हें ही खुदा बना दिया था, और कुछ फरिश्तों के फर्जी बुत थे। आप (ﷺ) एक एक बुत गिराते जाते और कहते जाते:

"हक़ (सच) आ गया और बातिल (झूठ) मिट गया और बातिल तो था ही मिट जाने वाला।"

नाएमा ने भी मन ही मन दोहराया:

"बेशक बातिल (झूठ) मिटने के लिए ही है।"

.....

नाएमा कुछ याद करते हुए बोली:

"मैंने इस दौर का मदीना नहीं देखा, मुझे वो तो दिखादो।"

"हाँ वहां भी चलना है, वहां की खास दो भविश्यवाणी भी तुम्हे दिखानी हैं।"

यह कहते हुए अस्र ने नाएमा का हाथ पकड़ा और वो दोनों कुछ कदम चले। अब नाएमा के सामने खजूर के तने और मिट्टी गारे से बनी छोटी सी मस्ज़िद थी, यह मस्ज़िद नबवी मदीना थी, नाएमा ने उमरा करते वक़्त जिस मस्ज़िद नबवी को देखा था उस के मुकाबले देखने में इसकी शान कुछ भी नहीं थी लेकिन मस्ज़िद नबवी की असल शान उन लोगों से थी जो मस्ज़िद में मौजूद सुबह की नमाज़ सब मिल कर पढ़ रहे थे।

जब नाएमा अस्र के साथ मस्ज़िद में आई तो नमाज़ियों के इमाम अल्लाह के रसूल (ﷺ) की ज़ुबान पर सूरेह फतह के यह अल्फाज़ थे:

"वही अल्लाह हैं जिसने भेजा है अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन (धर्म) के साथ ताकि उसको ग़ालिब करदे सारे दीनों पर और अल्लाह की गवाही काफी है, मुहम्मद अल्लाह के रसूल और जो इनके साथ हैं वो आपस में बहुत नर्म दिल हैं लेकिन इन काफिरों पर सख्त हैं, तुम इनको अल्लाह के फज़ल और चाहत में रुकू सज्दों में झुका हुआ पाओगे, इनकी पहचान इनके माथों पर सज्दों के निशान से है, इनकी यह मिसाल तौरेत (यहूदियों के गरंथ) में हैं, और इंजील (ईसाइयों के गरंथ) में इनकी मिसाल यूँ है कि जैसे नई खेती के मोल हों फिर उसको सहारा दिया फिर वो मज़बूत हो गई, फिर वो अपने तने पर खड़ी हो गई इंसानों के दिलों को मोहती हुई ताकि इन काफिरों के दिल इनसे जल जाएँ, अल्लाह ने इनमे से जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल (कर्म) किये मग्फिरत और एक बहुत बड़े इनाम का वादा किया है।" (सूरेह फतह 28 से 29)

कुरआन पढ़ना पूरा हुआ, अल्लाहुअकबर की आवाज़ आई, सब लोग रुकू में झुक गए, अस्र ने उन लोगों को देखते हुए कहा:

"देखा तुमने नाएमा! जब यह आयतें नाज़िल हुईं थी तो पूरे अरब के मुशरिक मुसलमानों के दुश्मन थे। मुसलमानों को दस साल के लिए जंग बंदी के लिए एक ऐसी संधि पर मजबूर होना पड़ा जिसमे सारी शर्तें मुसलमानों के खिलाफ थी, ताकि अमन हासिल कर सकें।"

"तुम हुदेबया संधि की बात कर रहे हो?"

"हाँ ! मगर उसके बाद यह सूरेह फतह नाज़िल हुई जिस में खुली जीत की खुशखबरी मिली, और यह भविश्यवाणी कि इस्लाम यहाँ के हर दीन (धर्म) पर छा जाएगा।"

"और यह बात मक्का की जीत के वक़्त पूरी हो गई जिसे हम ने अभी देखा।"

"बिलकुल, और जिन साथियों का इन आयातों में ज़िक्र आया था अब तुम उनके बारे में बहुत बड़ी और ऐसी भविश्यवाणी सुनोगी जिस पर इन हालात में यकीन नहीं किया जा सकता था। यह बड़ी भविश्यवाणी मदीना में उस समय नाज़िल हुई थी जब पूरा अरब भूके भेड़ियों की तरह गरीब और बेसहारा मदीना शहर पर टुटा हुआ था।"

यह कह कर अस्र नाएमा को समय में थोड़ा पीछे ले गया। यह बहुत तेज़ सर्दी का मौसम था अल्लाह के रसूल (ﷺ) के साथी इशा (रात) की नमाज़ के लिए ठन्डे पानी से वुज़ू कर के

मस्जिद नबवी में आ रहे थे। नाएमा ने देखा कि इन लोगों में ज़्यादातर के चहरे गरीबी और भूक से मुरझाए हुए थे, बहुत से लोगों के पास सर्दी से बचने के लिए गरम कपड़ा भी नहीं था। कुछ देर में नमाज़ शुरू हुई, अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने सूरेह नूर का एक हिस्सा पढ़ना शुरू किया, इस हिस्से में इंसानी लड़ाइयों के इतिहास की सब से बड़ी भविश्यवाणी थी:

"तुम में से जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक आमाल (कर्म) किये उन से अल्लाह का वादा है कि उनको इस देश में सत्ता सोंपेगा, जैसा कि उन लोगों को सरदार बनाया था जो इनसे पहले मुसलमान (फर्माबरदार) गुज़रे हैं।

और उनके लिए उनके इस दीन (धर्म) को जमा देगा जिसको इनके लिए पसंद किया है, और इन के इस डर के माहोल को अमन के माहोल में बदल देगा, यह मेरी ही इबादत करेंगे और किसी को मेरा साझी नहीं ठहराएँगे, और जो फिर इस सब को देख लेने के बाद भी ना माने तो वही तो असली नाफरमान हैं।" (सूरेह नूर 55)

यह शब्द पूरे होने के बाद अस्र ने नाएमा से कहा:

"सुना तुमने, इन लोगों से जिनके पास ईमान और नेकी के सिवा कुछ नहीं, क्या वादा किया जा रहा है ? मगर तुम देखोगी की आने वाले कुछ समय में इंसानी इतिहास की सबसे चमत्कारी घटना होगी।"

इसके साथ ही अस्र ने नाएमा को साथ लिया और आगे बढ़ा समय में वो कुछ साल आगे आ गए। वो दोनों मदीना ही में थे, लेकिन मदीना कुछ बदल चुका था, वो दोनों चलते हुए मस्जिद नबवी के अन्दर आए जो अब थोड़ी बड़ी हो चुकी थी। उसके सहन में सोने चांदी और दूसरी कीमती चीज़ों के ढेर लगे हुए थे, कुछ लोग आस पास बैठे हुए थे।

अस्र ने उनका परिचय कराते हुए कहा:

"यह जो सामने पेवंद लगे हुए कपड़े पहने हुए हैं, यह हज़रत उमर (र) हैं, उनके साथ ही उस्मान, अली, तलहा, ज़ुबैर और दुसरे साथी (र) बैठे हैं।"

"और हज़रत अबू बकर (र) कहाँ हैं?" नाएमा ने सवाल किया।

''उनका इन्तिकाल हो चुका है, और अल्लाह के आखरी रसूल (ﷺ) भी इस दुनिया से जा चुके हैं।''

अस्र ने इशारा करते हुए बताया:

''यह हज़रत उमर (र) की खिलाफत का दौर है, वह उमर जो एक ज़माने में बकरियां चराया करते थे, और यह उनके साथी जो मक्का में लोगों के ज़ुल्म का शिकार थे। यह सब इसी मस्ज़िद में अल्लाह के रसूल (ﷺ) से कुरआन सुन रहे थे जिसमे इनसे वादा किया गया था कि इन्हें इस सर ज़मीन में सत्ता दी जाएगी, तो देखलो आज दुनिया में यह सूपर पावर हैं, ईरान, मिस्र, रूम, अफ्रीका सब बड़ी ताकतें इनके सामने घुटने टेक चुकी हैं।''

''फिरोन का मिस्र भी?''

नाएमा ने हैरत से कहा तो अस्र बोला:

''मिस्र तो इनकी सल्तनत का बस एक छोटा सा हिस्सा है। तुम सोच नहीं सकती कि कितने कम समय में ज़मीन की सत्ता अल्लाह ने अपने इन बन्दों के क़दमों में डाल दी है, यह बन्दे जिन्हें मक्का में मारा पीटा जा रहा था और मदीने में जिन्हें हर समय हमलों का डर रहता था।''

''यकीन नहीं होता, लेकिन इन्कार भी नहीं किया जा सकता।'' नाएमा ने कहा तो अस्र बोला:

''शायद इससे अच्छी बात इस सब पर नहीं कही जा सकती नाएमा जो तुमने कही है, कि यकीन नहीं होता लेकिन सब जानते हैं कि हकीक़त है इस लिए इन्कार भी नहीं किया जा सकता..... लेकिन एक ज़रूरी बात यह है कि अल्लाह के आखरी रसूल (ﷺ) के मुखात्बीन (श्रोताओं) की यह सज़ा और इनाम खुदा के मौजूद होने का सबसे बड़ा सुबूत ही नहीं बल्कि क़यामत को होने वाले सज़ा और इनाम का जीता जागता नमूना भी है। यह दुनिया में क़यामत की सबको नज़र आने वाली रिहर्सल है, यह इंसानों पर सब कुछ साफ़ खोल कर बयान करदेने वाली चीज़ है, जिसके बाद इंसानियत ख्याली फलसफों (दर्शन) की बहसों से निकल कर सच्चाई की दलील के दौर में पहुँच चुकी है, अब यह मुसलमानों का काम है वो इस दलील को दुनिया तक पहूँचाएँ।''

तभी अज़ान की मधुर आवाज़ आने लगी, नाएमा को लगा हर शब्द उसके कानों से होते हुए दिल में उतरता चला जा रहा है।

अल्लाह सबसे बड़ा (महान) है, अल्लाह सबसे बड़ा (महान) है, अल्लाह सबसे बड़ा (महान) है, अल्लाह सबसे बड़ा (महान) है।

मैं गवाही देता हूँ कोई और रब नहीं सिवाय अल्लाह के, मैं गवाही देता हूँ कोई और रब नहीं सिवाय अल्लाह के।

मैं गवाही देता हूँ मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं, मैं गवाही देता हूँ मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं।

आओ नमाज़ की तरफ़, आओ नमाज़ की तरफ़।

आओ कामयाबी की ओर, आओ कामयाबी की ओर।

अल्लाह सबसे बड़ा (महान) है, अल्लाह सबसे बड़ा (महान) है।

कोई और रब नहीं सिवाय अल्लाह के।

यह शब्द सुन कर नाएमा की अजीब हालात हो गई, मगरिब (शाम) की नमाज़ का वक़्त हो चुका था, दिन ख़तम हो चुका था, नाएमा को मालूम था कि उसका सफर भी ख़त्म हो रहा है, वो मस्जिद के सहन में ही बैठ गई। थोड़ी ही देर में नमाज़ियों से मस्ज़िद भर गई और नमाज़ शुरू हो गई। इमाम हज़रत उमर (र) थे,

उन्होंने सूरेह फातिहा पढ़ी और उसके बाद सूरेह अस्र पढ़ना शुरू की।

"ज़माना गवाह है, बेशक इंसान घाटे में पड़ कर रहेंगे, सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक अमल (कर्म) करते रहे, और एक दूसरे को सच्चाई पर जम जाने और उसमे आने वाली मुसीबतों पर सब्र करने की नसीहत करते रहे।"

अल्लाहुअकबर कहते हुए सब एक साथ अल्लाह की बड़ाई (महानता) को मानते हुए उसके सामने झुक गए। अस्र नाएमा का हाथ पकड़ते हुए ख़ामोशी से मस्ज़िद नबवी के बाहर आ गया। सूरज डूब चुका था और अपनी निशानी के तौर पर अपने पीछे लाली छोड़ गया था, यह सर्दियों का

मौसम था। नाएमा की हालत अभी भी नहीं संभली थी, उसने सच्चाई जानना चाही थी, सच्चाई आज खुल कर उसके सामने आ चुकी थी इतने बड़े सुबूतों के साथ जिनका इन्कार मुमकिन नहीं था। उसे एक तरफ सच्चाई तक पहुँचने की ख़ुशी थी तो दूसरी तरफ जिम्मेदारी के अहसास से उसका दिल निढाल हो रहा था, वह भारी क़दमों के साथ अस्र के साथ आगे बढ़ती रही, वो दोनों खामोश थे। अस्र उसे मस्ज़िद के करीब कब्रिस्तान (बक़ी) की तरफ ले आया, यह पहली बार था जब नाएमा अस्र के साथ इतनी दूर ज़मीन पर बिना वक़्त के बदले चली थी। उसने बक़ी की तरफ देखा अभी इतनी रौशनी बाकि थी कि नाएमा वहां मौजूद कब्रों को आसानी से देख सकती थी।

नाएमा उमरे पर यहाँ आई थी इसलिए वह जानती थी कि यह जन्नतुल बक़ी के कब्रिस्तान हैं। उसने कहा:

"हम जन्नतुल बक़ी के कब्रिस्तान में आ चुके हैं।"

अस्र ने हाँ में सर हिलाया और बोला:

"नाएमा तुम सच्चाई जानना चाहती थी, तुम जानना चाहती थी कि क्यों अल्लाह सच्चाई को खुल कर बयान नहीं करता, तुम्हारे इस सवाल और हर सवाल का जवाब बिलकुल खोल कर तुम्हे दिखा दिया गया है। तुम मेरे बारे में जानना चाहती थी यानि अस्र के बारे में, अब तुम्हे मेरा मतलब भी समझ आ चुका होगा, मैं रसूलों का ज़माना हूँ, हज़ारों सालों से इतिहास में यह गवाही देता आ रहा हूँ कि इंसान बड़े घाटे में पड़ कर रहेंगे।"

"अबू जहल कि तरह, फिरोन की तरह, कौम आद की तरह कौम समूद की तरह।"

नाएमा ने अस्र की बात को आगे बढ़ाया।

"हाँ सिवाए उनके....."

यह कहते हुए अस्र ने अपने दोनों हाथ फैलाए, उसके एक हाथ का इशारा मस्ज़िद नबवी में नमाज़ पढ़ रहे अल्लाह के रसूल (ﷺ) के साथियों की तरफ था और दूसरा जन्नतुल बक़ी के कब्रिस्तान में सो रहे सहाबा की तरफ।

''जो ईमान लाए जो नेक अमल (कर्म) करते रहे, और सच्चाई पर जम जाने और उसमे सब्र करने की नसीहत करते रहे।''

नाएमा ने बड़े जज़्बात से कहा:

''बेशक।''

अस्र बोलता रहा:

''मेरी गवाही नूह (अ) और कौम आद (अ) की दास्तानों में है, कौम समूद और कौम लूत (अ) के निशानों में है, फिरोन और बनी-इसराइल की घटनाओं में है, और सबसे बढ़ कर यह आखरी रसूल (ﷺ) और उनके साथियों को मिले इनाम और उनके दुश्मनों को मिली सज़ा में है, जिसके सुबूत अब सबके सामने हैं और जिन्हें मिटाया नहीं जा सकता, इतिहास भी खुद इसका गवाह है।''

अस्र की बातें नाएमा की रूह के अन्दर तक उतरती चली जा रही थी।

''यह इनाम और सज़ा चींख चींख कर बता रही है कि इस दुनिया का एक जिन्दा खुदा है जो परदे में ज़रूर है लेकिन बे खबर नहीं.... जिसने क़यामत की सज़ा और इनाम को साबित करने के लिए दुनिया में छोटे पैमाने पर रसूलों के ज़माने में यह सज़ा और इनाम करके दिखा दिया। वो सब कुछ देखने वाला और इंसाफ करने वाला रब आने वाली दुनिया में भी यकीनन मुजरिमों को पकड़ेगा और नेक लोगों को बेहतरीन नेमतें देगा और उन्हें अपना करीबी बना लेगा.... क्यों कि दुनिया इम्तिहान है.... असल ज़िन्दगी आखिरत की ज़िन्दगी है।''

यह कह कर अस्र ने अपने हाथ नीचे किये और कब्रों को गौर से देखने लगा, फिर नाएमा से बोला:

''नाएमा! अब क्या तुम दुनिया के सामने खुदा और आखिरत की गवाही दोगी, क्या तुम रसूलों के मिशन को आगे बढ़ाओगी?''

''मैं ज़रूर यह गवाही दूँगी।''

नाएमा ने पूरे इरादे से कहा। फिर एक ख़ामोशी छा गई, ना जाने कितनी देर वो ऐसे ही रहे, फिर अचानक अस्र की आवाज़ आई:

"नाएमा अब मैं तुम से जाने की इजाज़त चाहूँगा।"

अस्र की बात पर नाएमा चौंकी, उसके चहरे पर उदासी आ गई। उसने दूसरी बार इस अदभुत अस्र को गौर से देखा, पहली बार उसने अस्र को गौर से उस वक़्त देखा था जब वह हयूले से इंसान बन कर सामने आया था। अस्र का वुजूद (अस्तित्व) इतना ज़्यादा अजीब और खूबसूरत था कि नाएमा को कभी दोबारा उसे नज़र भर कर देखने की हिम्मत नहीं हुई थी, मगर उस के जाने का सुन कर उससे रहा नहीं गया, उसने उसे नज़र भर कर देखा। उसे महसूस हो रहा था कि वह उसकी आदि हो चुकी है।

"क्या हम.... कभी दोबारा मिल सकेंगे?"

नाएमा ने अटकते हुए सवाल किया, उसका दिल बुरी तरह धड़क रहा था।

"तुमने अगर जन्नत की कामयाबी हासिल करली तो मुझसे मिल सकोगी, इसलिए की जन्नती की हर मांग अल्लाह तआला पूरी करेंगे, मगर....."

"मगर क्या....."

"मगर यह कि उस वक़्त मैं इस रूप में दोबारा नहीं आऊंगा।"

"क्यों? यह कैसे हो सकता है, अल्लाह तआला इतना खूबसूरत रूप ख़त्म करने के लिए नहीं बना सकते।"

"यह तुम से किसने कहा कि यह रूप अल्लाह ने ख़त्म करने के लिए बनाया है, लेकिन यह मेरा रूप नहीं है, मेरा कोई भी शरीर नहीं है, शरीर तुम इंसानों का होता है।"

"तो फिर यह रूप किसका है, कौन खुश नसीब है जिसे अल्लाह ने इतना खूबसूरत और बे मिसाल बनाया है?"

अस्र एक पल सोचने के बाद बोला:

"मुझे नहीं मालूम, मुझे सिर्फ इतना बताया गया है कि यह रूप खुदा के एक प्यारे बन्दे का है, वह खुदा का सच्चा वफादार है, वह अपने रब का एक छोटा सा बंदा है लेकिन अल्लाह की निगाह में अपने ज़माने का लीडर है।"

"क्या मैं खुदा के इस प्यारे बन्दे से मिल सकती हूँ?"

नाएमा के अंदाज़ में बहुत फरयाद थी, वह ना नहीं सुन सकती थी।

"तुम उस से मिलोगी, यही मेरे पास तुम्हारे लिए आखरी पैगाम है।"

"मगर मैं उसको कैसे पहचानूं गी ? क्या वह ऐसा ही होगा जैसा तुम मुझे इस वक़्त नज़र आ रहे हो?"

नाएमा बहुत परेशान थी।

"नहीं, उसका यह रूप तो जन्नत के लिए बनाया गया है, ऐसे रूप अगर दुनिया में बना दिए जाएं तो लोग उनकी पूजा शुरू कर दें।"

यह कहते हुए अस्र ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और नाएमा के हाथों में उसका अपना लॉकेट रख दिया, यह वही लॉकेट था जिसे बेच कर नाएमा ने उस गरीब औरत की मदद की थी। उसे देख कर नाएमा हैरान रह गई, वह सवालिया नज़रों से अस्र को देखने लगी।

"जिस समय यह लॉकेट तुम्हे मिलेगा, उसी समय तुम्हारी मुलाकात उससे हो जाएगी, तुम बगैर किसी शक के उसे पहचान लोगी। मगर नाएमा! इस समय एक दूसरी बात को समझना तुम्हारे लिए ज़रूरी है, वह यह है कि जो सच्चाई को इस सतह पर आ कर देखते हैं जिस पर तुम आ चुकी हो, उनकी आज़माइश बहुत सख्त होती है। तुमने सच्चाई को आखरी सतह पर जा कर देखा है, इसलिए तुम्हारा रास्ता अब इतना ही मुश्किल हो चुका है।"

"मैं बहुत कमज़ोर हूँ।" नाएमा ने रोने की सी आवाज़ में कहा।

इससे पहले कि अस्र कोई जवाब देता मस्ज़िद नबवी से ईशा (रात) की अज़ान की आवाज़ आने लगी, नाएमा आँखें बंद करके अज़ान सुनने लगी। अज़ान पूरी हुई तो नाएमा यह देख कर हैरान थी कि अस्र का वजूद (अस्तित्व) फिर से हयूले में बदल चुका था। यह कमज़ोर होती नाएमा के

लिए एक और सदमा था, वह जहाँ खड़ी थी वहीं बैठ गई। अब उसका दिल डर से धड़क रहा था, उसे अंदाज़ा था कि आने वाली ज़िन्दगी में उसके लिए क्या क्या मुश्किलें आ सकती हैं। अस्र जो उसकी परेशानी को समझता था उससे बोला:

"मेरे साथ वापस मस्जिद नबवी में चलो।"

नाएमा हिम्मत करके उठी और कुछ कहे बगैर मस्ज़िद की तरफ चलदी। अँधेरा पूरी तरह फैल चुका था, लेकिन पूरे आसमान में जगमग करते तारे झिलमिला रहे थे, वो दोनों मस्ज़िद के अन्दर गए तो नमाज़ शुरू हो चुकी थी और हज़रत उमर (र) नमाज़ में सूरेह बक्राह की यह आखरी आयतें पढ़ रहे थे:

"रसूल ईमान लाया उस चीज़ पर जो उस पर उसके रब की तरफ से उतारी गई और अल्लाह के नेक बन्दे ईमान लाए। यह सब ईमान लाए अल्लाह पर, उसके फरिश्तों पर, उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर, वे इकरार करते हैं कि हम खुदा के रसूलों में से किसी के बीच फर्क नहीं करते, और कहते हैं कि हमने माना और इताअत (आज्ञाकारिता) की। ऐ हमारे रब हम तुझ से माफ़ी चाहते हैं और हम सबको तेरी ही तरफ लौटना है। अल्लाह किसी पर उसकी ताक़त से ज्यादा बोझ नहीं डालता, हर एक इंसान पाएगा जो कमाएगा और भरेगा जो करेगा। ऐ हमारे रब अगर हमसे कुछ भूल हो जाए या हम गलती कर बैठें तो हमें माफ़ कीजियो, और ऐ हमारे रब हम पर इस तरह का कोई बार ना डालना जैसा हमसे पहले लोगों पर पड़ा, ऐ हमारे रब हम पर कोई ऐसी जिम्मेदारी भी ना डाल जिसको हम उठा ना सकें और हमें माफ़ कर, हमें बख्श दे और हम पर रहम फरमा, तू ही हमारा मौला है, अपने नाफरमान लोगों के मुकाबले में हमारी मदद कर!"

नाएमा यह सुनती रही और उन ईमान वालों को नमाज़ पढ़ते देखती रही जो पैगम्बरों के बाद इंसानों में सबसे अच्छे लोग थे। नमाज़ पूरी हुई तो अस्र ने नाएमा से कहा:

"तुमने सुना कि कुरआन में अभी क्या पढ़ा गया?"

"हाँ ईमान लाने का ज़िक्र था।"

"मगर ईमान के साथ एक दुआ भी की गई है, वह यह है कि अल्लाह तआला हम पर वह बोझ ना डालें जो हम से पहलों पर डाला गया जो हमारी हिम्मत से ज़्यादा हो, इसका मतलब यह है

कि जो बोझ पिछली उम्मतों पर डाले गए वो इन रसूल (ﷺ) के साथियों पर नहीं डाले गए और जो कुर्बानियां इन सहाबा (साथियों) ने दीं अगली नस्लों से वो कुर्बानियां भी नहीं ली जाएंगी। यह तुम्हारे लिए खुश खबरी है कि तुम पर और तुम्हारे ज़माने में अल्लाह का सच्चा दीन बिना मिलावट के पहुँचाने वालों पर अल्लाह तआला ऐसी मुसीबतें नहीं आने देंगे जैसी पहलों पर आईं, यह अल्लाह का फैसला है, तुम्हारा वास्ता किसी फिरोन, किसी अबू जहल से नहीं पड़ेगा, तुम्हे सिर्फ अपने हालात, अपनी गलत इच्छाओं और शैतान के मशवरों से लड़ना होगा।"

"मगर इम्तिहान तो फिर भी होंगे ना?" नाएमा को न जाने क्या अंदेशे थे।

"हाँ! इम्तिहान तो ज़रूर होगा, लेकिन याद रखना कि अल्लाह तआला ने यह दुनिया इम्तिहान के लिए बनाई तो ज़रूर है, मगर ज़्यादातर वो सिर्फ हौंसले का इम्तिहान लेते हैं, इंसान का नहीं।"

नाएमा कुछ देर सोचती रही, उसके सामने सज़ा और इनाम के सारे मंज़र (दृश्य) घूम रहे थे। फिर उसने पूरी हिम्मत और इरादे के साथ जवाब दिया:

"मैंने हर इम्तिहान में उतरने का फैसला कर लिया है, अब मुझे फर्क नहीं पड़ता कि इम्तिहान हौंसले का हो या ज़िन्दगी का।"

"अल्लाह तुम्हारी मदद और हिफाज़त करे, मेरी दुआएं तुम्हारे साथ हैं, उम्मीद है कि तुमसे अब जन्नत में मुलाकात होगी।"

इसके साथ ही अस्र का वजूद (अस्तित्व) हवा में बिखर कर गायब हो गया, नाएमा ने अपने आस पास देखा, उसके चारों तरफ अँधेरा छाया हुआ था, मगर नाएमा के अन्दर कोई डर नहीं था, उसने पूरे हौंसले से अपने कदम आगे बढ़ाना शुरू कर दिया।

****

तेरे जैसा कौन है ?

नाएमा की आँख खुल गई, वह बहुत सुकून में थी, उसका हर शक़ हर उलझन हर परेशानी दूर हो चुकी थी। इत्मिनान सुकून और राहत की एक ऐसी कैफियत (स्थिति) थी जिससे वह निकलना ही नहीं चाहती थी। एक रात में उसकी ज़िन्दगी बदल चुकी थी, उसे दुनिया की हकीक़त समझ में आ चुकी थी। दिमाग की हर गिरह खुल चुकी थी, जिसके बाद नाएमा का फैसला बिलकुल साफ़ था। उसे अब खुदा के लिए जीना था, आखिरत की कामयाबी उसकी ज़िन्दगी का सब से बड़ा मकसद बन चुका था, अब उसकी ज़िन्दगी से गाड़ी बंगले और सब ऐश के लालच निकल गए थे जिनका वो सपना देखती थी। उसके दिल से दुनिया के सब डर निकल चुके थे। अब अगर चाहत थी तो खुदा के करीब वाली जन्नत की और डर था तो खुदा की नाराज़ी और उसकी जहन्नम का, उसे उसकी मंजिल अब अच्छी तरह मालूम थी।

मगर अब उसके सामने सब से बड़ा सवाल यह था कि वह उस मंजिल तक कैसे पहुंचे। अब यह तो मुमकिन नहीं था कि वह इस सपने को बस एक सपना समझ कर भुला दे, वह अच्छी तरह जानती थी कि यह सपना नहीं बल्कि उसकी पुकार का जवाब था, इस स्पष्ट जवाब के बाद पहला रास्ता यह था कि वह हालात की रो में बहती रहती, मगर इसके नतीजे को वह अच्छी तरह जानती थी। इस शादी के बाद उसे एक ऐसी ससुराल में जाना था जहाँ मज़हब और खुदा का कोई गुज़र नहीं था। उसे एक ऐसे आदमी के साथ जीना पड़ता जिसकी जन्नत यही दुनिया थी, इस शादी के बाद तो दीन के फ़र्ज़ भी पूरे करना उसके लिए मुश्किल काम हो जाता, अल्लाह के दीन की मदद और रसूलों के मिशन के काम में अपना हिस्सा डालना तो दूर कि बात है नमाज़ रोज़े तक मुश्किल हो जाते। वह अपनी नन्दों और ससुराल के रंग ढंग देख चुकी थी, उनसे मिली जानकारी से अपने होने वाले पति की सोच को भी जान चुकी थी। उन लोगों की ज़न्दगी में खुदा की कोई अहमयत नहीं थी.... वही खुदा काएनात का रब सब से बड़ा बादशाह जिसकी अज़मत (महानता) और कुदरत को नाएमा ने अपनी रूहानी आँखों से देखा, जिसके करम का शुक्र नाएमा का रोम रोम कर रहा था, वही खुदा जो अब नाएमा के लिए ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पूँजी बन चुका था। वह कुछ भी कर लेती लेकिन इस रिश्ते के बाद उसके हाथ से अपने उस खुदा का वह हाथ धीरे धीरे छूट ही जाना था जिसे बड़ी मुश्किल से उसने थामा था।

उसके सामने एक ही रास्ता मगर बहुत मुश्किल था, वह यह कि वह शादी से इन्कार कर देती, मगर बहाना क्या होता? फिर यह भी ज़रूरी नहीं कि कोई रिश्ता ऐसा आ जाए जो हकीकम में उसे खुदा की तरफ बढ़ने में मदद दे, फिर उसने सोचा:

"अब्दुल्लाह..... यकीनन यही वो इंसान है जो खुदा की तरफ बढ़ने में मेरी मदद कर सकता है।"

एक पल के लिए उसके दिल में अब्दुल्लाह का ख्याल आया तो उसका पूरा वुजूद ही अब्दुल्लाह के खिलाफ खड़ा हो गया। उसे अब्दुल्लाह से बहुत नफरत थी, पहले यह नफरत उसके धार्मिक विचारों से थी फिर उसके वुजूद से ही हो गई। इस नफरत के साथ उसका मन यह बात क़ुबूल करने के लिए तैयार ही नहीं था कि उसकी शादी अब्दुल्लाह से हो।

वह देर तक सर पकड़े बैठी रही, उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था, फिर वह बिस्तर से उठी, उसने कमरे की लाईट ऑन की। रात के चार बज रहे थे, उसकी माँ अमना बेगम करवट लिए सो रहीं थी, नाएमा ने वास रूम जा कर वुजू किया। ज़िन्दगी में पहली बार वह तहज्जुद (आधी रात) की नमाज़ के लिए खड़ी हो चुकी थी, फजर (सुबह) की अज़ान तक वह नमाज़ में खड़ी रही और अल्लाह से दुआ करती रही कि वो उस कि रहनुमाई (मार्गदर्शन) कर दे, जब उसने नमाज़ पूरी की तो उस पर यह स्पष्ट हो चुका था कि उसे क्या करना है, खुदा की मुहब्बत में वह एक ऐसे आदमी के साथ जीने के लिए तैयार हो चुकी थी जिससे वह बहुत नफरत करती थी।

.....

सुबह से दोपहर हो चुकी थी और दोपहर से शाम मगर नाएमा लगातार सोचों में गुम थी। नाएमा ने खुद से ज़बरदस्ती करके अब्दुल्लाह का चुनाव तो कर लिया था मगर अब एक दूसरा पहाड़ उसके सामने आकर खड़ा हो हो गया था। वह किस तरह इस रिश्ते से इन्कार करे और किस तरह इस शादी का रुख अब्दुल्लाह की तरफ फेरे ?

उसे अच्छी तरह मालूम था कि उसकी शादी में अब सिर्फ गिनती के चार दिन ही बाकि हैं, कल उसे मायूस हो कर बैठ जाना था, उसे पता था कि उसके सामने कितनी बड़ी मुश्किल आ चुकी है। सबसे पहले अपनी माँ और नाना से बात करना थी, उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कह कर इस शादी से इन्कार करेगी। सपने की इस बात पर कौन यकीन करेगा और कौन अकलमंद इस बुन्याद पर आखरी समय पर रिश्ता ख़त्म करेगा, फिर यह शादी पहले दिन से

उसकी मर्ज़ी से हो रही थी, हर कदम पर उसकी ख़ुशी शामिल थी, अब मना करने का क्या बहाना करेगी ?

फिर किसी ना किसी तरह माँ और नाना को मना भी लेती कि वो आखिरकार उसके अपने थे, मगर उन्हें आगे जवाब देना था। आखरी समय पर इन्कार के बाद उनकी क्या इज्ज़त रह जाती। फिर क्या अब्दुल्लाह उससे शादी करने पर राज़ी हो जाता, एक बार ठुकराए जाने की बे इज्ज़ती के बाद कैसे मुमकिन था कि वह राज़ी हो जाता और अगर राज़ी हो भी जाता तो शायद ज़िन्दगी भर वो नाएमा से अपनी बे इज्ज़ती का बदला लेता रहता।

उसकी राह में कोई एक पहाड़ या एक खाई नहीं थी, आग के सात समुन्द्र थे जिन्हें उसे पार करना था। आखिर कार वह फिर मुसल्ला बिछा कर अल्लाह के सामने बैठ गई।

"या अल्लाह मैंने तुझे राज़ी करने और तुझे पाने के लिए एक मुश्किल फैसला कर लिया है, इस के नतीजे में सारी शर्मिंदगी और मुसीबतों के दरवाज़े मुझ पर खुल जाएंगे, अगर ऐसा हुआ तो मैं समझूंगी कि मुझे मेरे गुनाहों की सज़ा मिल रही है। मगर अब तू मुझे इतना प्यारा हो चुका है कि तेरी दी हुई सज़ा भी मेरे सर आँखों पर है..... लेकिन तू मुझे माफ़ करदे और इस ना मुमकिन को मुमकिन बना दे। तेरी ताक़त और कुदरत के करिश्में मैं कल रात देख चुकी हूँ, तेरे लिए सब कुछ मुमकिन और सब कुछ आसान है। मैं अपने कमज़ोर वजूद (अस्तित्व) के लिए इसी आसानी की भीक मांगती हूँ, मेरे रब मैं तेरी तरफ आ रही हूँ, अब तू मेरी कश्ती को डुबो दे या मंजिल पर पहुंचा दे यह तेरे हाथ में है। मैं जिस सच को जान चुकी हूँ मर कर भी उससे पीछे नहीं हट सकती, मेरे रब मेरी मदद कर!"

नाएमा देर तक रोती रही और दुआ करती रही, फिर एक इरादे के साथ वह मुसल्ले से उठी और अपने नाना के कमरे की तरफ चल पड़ी।

.....

इस्माइल साहब किसी परेशानी में कमरे में टहल रहे थे, आमना बेगम सर झुकाए सामने पड़े सोफे पर बैठी थीं। वह सोच भी नहीं सकते थे कि नवासी की ख़ुशी उन्हें इतनी महंगी पड़ेगी। उनकी सारी जमा पूँजी शादी की तैयारियों में खर्च हो चुकी थी, क़र्ज़ ले कर अच्छे से अच्छा दहेज़ बनवा लिया था, यहाँ तक कि मकान के कागज़ात गिरवी रख कर फाइव स्टार होटल में

सैकड़ों लोगों के खाने का इन्तिज़ाम भी कर लिया था। यह सब करके वो संतुष्ट थे कि नवासी को बहुत इज्ज़त से वो ब्याह देंगे, मगर इस समय आमना बेगम ने कमरे में आकर जो बात उन्हें बताई थी उससे उनके पाओं तले से ज़मीन निकल गई थी।

शादी सर पर थी, दावत के कार्ड बट चुके थे, बात हर जगह फैल गई थी कि अचानक रिश्ता करवाने वाली औरत का अभी थोड़ी देर पहले फोन आया कि लड़के वाले कह रहे हैं कि हमारे खानदान में यह रिवाज है कि लड़के को सलामी में गाड़ी दी जाती है। हमारी और कोई मांग नहीं मगर नई गाड़ी देना एक खानदानी रसम है। वो चाहते हैं कि यह रसम ज़रूर पूरी हो, वरना लड़के की भाबियाँ ऐतराज़ करेंगी जिनके माँ बाप ने उनकी शादियों में उनके पतियों को नई गाड़ियाँ सलामी में दी थी।

यह सुन कर आमना बेगम के होश उड़ गए थे। उन्होंने पहले तो रिश्ते वाली औरत को खूब सुनाई कि यह बात पहले क्यों नहीं बताई, मगर उनका कहना था कि मुझे खुद अभी यह बताया गया है। फिर कहने लगीं कि एक ही तो बेटी है, और इतना बड़ा रिश्ता है, जहाँ और किया है यह भी कर दें, बेटी हमेशा ऐश करेगी। फिर सफाई देने के लिए कहने लगी कि इतने अमीर लोग लालची नहीं होते। दरअसल उनके खानदान का दस्तूर यही है, यह ज़बरदस्ती नहीं चाहे तो ना करें मगर ऐसा ना हो कि बाद में बच्ची को कुछ बातें सुननी पड़ें। आमना बेगम को अपने और अपने अब्बू के हालात अच्छी तरह मालूम थे, घर तक गिरवी रखा जा चुका था, कई लोगों से क़र्ज़ ले लिये थे तब कहीं जा कर लड़के वालों की हेस्यत के कुछ इन्तिज़ाम हुए थे। ऐसे में यह मांग कमर तोड़ देने वाली थी।

अब दोनों परेशान थे कि क्या करें। यह बात पहले सामने आ जाती तो शायद कुछ हाथ पैर भी मारते, मगर अब तो कुछ भी मुम्किल नहीं था, सिवाए इसके कि उनकी बेटी नाएमा इतनी कोशिश के बाद भी शर्मिंदा सी अपने ससुराल में जाती और सलामी में गाड़ी ना लाने का ताना सुनती। उन्होंने अभी तक नाएमा से किसी मसले का ज़िक्र नहीं किया था, मगर अब इस्माइल साहब की ज़िद थी कि नाएमा को यह बात बताई जाए ताकि वह मानसिक रूप से हर तरह के हालात का सामना करने के लिए तैयार रहे। जबकि आमना बेगम चाहती थी कि ना बताया जाए, वो शादी के बाद कहीं से कोशिश करके गाड़ी देने का इन्तिज़ाम करेंगीं। इस्माइल साहब का

कहना था कि बात मौक़े की होती है, बाद में देने का कोई फायदा नहीं। अभी वो दोनों इसी उधेड़ बुन में थे कि नाएमा कमरे में आ गई।

उसे अन्दर आता देख कर दोनों खामोश हो गए। नाएमा का चहरा भी कुछ बुझा हुआ था, मगर वो अपनी परेशानी में ऐसे उलझे हुए थे कि नाएमा को गौर से नहीं देख सके कि उसकी हालत क्या है।

उसने अन्दर आकर कहा:

"नाना अब्बू मुझे आप दोनों से कुछ बात करनी थी, अच्छा हुआ अम्मी भी यहीं हैं।"

"बेटा हमें भी तुमसे कुछ ज़रूरी बात करनी है।" इस्माइल साहब ने कहा तो आमना बेगम घबरा कर बोली:

"अब्बू पहले इसकी बात सुन लें।" आमना बेगम को अंदाज़ा था कि उसके अब्बू क्या कहेंगे और इसका असर उनकी बेटी पर क्या होगा। मगर इस्माइल साहब इस समय जिस परेशानी में थे उसमें उन्होंने आमना बेगम की बात सुनी अनसुनी कर दी और बोले:

"नाएमा तुम्हे मालूम है कि हमने पहले दिन से इस रिश्ते में तुम्हारी ख़ुशी का सबसे ज़्यादा ख्याल रखा है, इसके लिए हम से जो बन पड़ा हमने किया है। अपनी सारी जमा पूँजी यह सोचे बगैर के हमारा क्या होगा तुम्हारी शादी की तैयारी में खर्च कर दी, अपना घर तक गिरवी रख दिया।"

नाना अब्बू बोल रहे थे और नाएमा के दिमाग में एक के बाद एक धमाके हो रहे थे। उसे नहीं मालूम था कि उस के लिए उसके नाना और माँ क्या क्या कर रहे हैं। वह तड़प कर बोली:

"आप लोगों को ऐसा नहीं करना चाहिए था।"

"ऐसा करना ज़रूरी था बेटी! जब हाथी वालों से रिश्ता किया जाता है तो घर के दरवाज़े भी ऊँचे करने पड़ते हैं।" आमना बेगम ने बेटी को जवाब दिया।

इस्माइल साहब ने अपनी बात जारी रखी:

''बेटा जो हुआ सो हुआ, उसका हमें कोई गम नहीं और इंशा अल्लाह तुम्हारी शादी ऐसी शान से होगी कि ससुराल में तुम्हारी गर्दन ऊंची रहेगी, मगर अब एक मसला ऐसा आ गया है जिस में हम को तुम्हे विश्वास में लेना होगा।''

वह एक पल को रुके और फिर बोलने लगे:

''तुम्हारे ससुराल वालों का रिवाज है कि लड़के को सलामी में नई गाड़ी दी जाती है। वो लोग लालची नहीं हैं, मगर यह उनके यहाँ का दस्तूर है। हम फ़िलहाल अपने हालात की बिना पर यह नहीं कर सकते। यह मांग आज ही सामने आई है, पहले आती तो कुछ ना कुछ इन्तिज़ाम करने की कोशिश भी करते, मगर इतने कम समय में यह बहुत मुश्किल है। फिर भी मैं कोशिश करूँगा, लेकिन मैं यह चाहता हूँ कि तुम्हे यह बात मालूम हो ताकि कोई बात हो तो तुम परेशान ना हो जाना, हौंसले से बर्दाश्त करना, अल्लाह सब ठीक कर देगा।''

नाएमा जो अपनी माँ के बराबर में खड़ी हुई थी यह सुन कर अपना सर दोनों हाथों से पकड़ कर उनके बराबर में बैठ गई। उसे यकीन हो नहीं आ रहा था कि अल्लाह तआला उसकी मुश्किल इस तरह हल कर देंगे। वह तो अपने नाना और माँ को एक बहुत बड़ी परेशानी देने आई थी। अल्लाह ने ऐसा करम कर दिया कि अब वह उन्हें परेशानी से निकालने वाली बन चुकी थी। शुक्र गुज़ारी (आभार) के अहसास से उसकी आँखों से आंसू बहना शुरू हो गए थे, वह 'ओह मेरे अल्लाह मेरे अल्लाह' कह कर फूट फूट कर रोने लगी।

उसका तड़पना देख कर उसके नाना और माँ दोनों परेशान हो गए। उन्हें यह तो मालूम था कि उनकी बच्ची बहुत भावुक है मगर उसे इतना सदमा होगा इसका उन्हें अंदाज़ा नहीं था। उन्हें नहीं मालूम था नाएमा के आंसू सदमे के नहीं ख़ुशी के थे, अल्लाह तआला ने उसकी मदद वहां से की थी जहाँ से वह सोच भी नहीं सकती थी।

उसे रोता देख कर इस्माइल साहब को बहुत अफ़सोस हुआ कि क्यों उन्होंने बिना वजह अपनी बच्ची को यह बात बता दी। वो उसके दिल को बड़ा करने के लिए बोले:

''मेरी बच्ची तू बिलकुल परेशान मत हो, मैं कहीं ना कहीं से इन्तिज़ाम करके शादी से पहले ही गाड़ी का बंदोबस्त करता हूँ, अभी भी हमारे पास कुछ समय है।''

माँ ने भी उसके सर पर प्यार से हाथ रख कर उसका हौंसला बढ़ाने की कोशिश की, मगर अब नाएमा के बोलने की बारी थी। उसने सर उठाया अपने आंसू पोंछे और खड़ी होकर नाना के पास आई और पूरे आत्मविश्वास से बोली:

''नाना अब्बू आपने सारी ज़िन्दगी मेरा और मेरी माँ का बोझ उठाया, मुझे अहसास नहीं था कि मैं आप को बुढ़ापे में भी इतनी परेशानी देने की वजह बन रही हूँ। खुदा की कसम मुझे यह बात पहले मालूम हो जाती तो मैं अपनी ख़ुशी के लिए आप दोनों को ऐसी तकलीफ कभी नहीं देती। मगर अब तो इसका सवाल ही पैदा नहीं होता, मेरे रब ने चाहा तो अब कभी मेरी वजह से आप को कोई परेशानी नहीं होगी।''

नाना हैरत से अपनी नवासी को देख रहे थे, उन्हें उसके आत्मविश्वास से ज़्यादा 'खुदा की कसम' और 'मेरे रब' के शब्दों पर हैरत थी।

उन्होंने दिल में सोचा कि मुश्किल में हर आदमी को अल्लाह याद आ जाता है, यही उनकी नवासी के साथ हुआ। उन्हें अहसास था कि नाएमा इस वक्त जज़्बात में बह रही है। वह उसे हौंसला देते हुए बोले:

''नहीं बेटी! तूने हमें कोई तकलीफ़ नहीं दी, हम भी तुझे कोई तकलीफ़ नहीं होने देंगे।''

नाएमा ने उनकी बात अनसुनी करते हुए अपनी बात जारी रखी, मगर इस बार वह अपनी माँ से बोल रही थी:

''अम्मी यह रिश्ता अभी और इसी वक़्त ख़तम हो रहा है, आप यह अंगूठी वापस कर दीजये।''

यह कहते हुए उसके अपने हाथ से मंगनी की अंगूठी उतारी और माँ के हाथ में रख दी। माँ हक्का बक्का रह गई और इस्माइल साहब भी परेशान हो गए।

''बेटा क्या कह रही हो, यह कैसे मुमकिन है।'' आमना बेगम ने बहुत परेशानी की हालत में कहा।

''जानती हो बेटा दो दिन बाद शादी है, यह तो बड़ी बदनामी की बात होगी।''

''बदनामी होती है तो हुआ करे, वैसे यह बदनामी उनकी होनी चाहिए जिन्होंने गाड़ी की मांग की है। यह अगर उनका दस्तूर है तो पहले दिन बताना चाहिए था, उन्हें पहले से हमारी हेस्यत

मालूम थी। आखरी वक्त में यह बात रखना बलैक-मेलिंग है, मैं मर जाउंगी मगर यह शादी नहीं करुँगी।"

नाएमा ने आखरी फैसला सुना दिया था।

इस्माइल साहब ने उसे समझाते हुए कहा:

"नाएमा! तुम बच्ची हो, तुम्हे अंदाज़ा नहीं कि इसका नतीजा क्या निकलेगा। लोग दस बातें बनाएँगे, तुम्हारी शादी कहीं और करना बहुत मुश्किल हो जाएगा। जो नया रिश्ता आएगा वो ज़रूर पूछेगा कि पिछला रिश्ता क्यों टूटा था।"

"क्या अब्दुल्लाह भी यह पूछेगा?"

नाएमा ने कहा तो इस्माइल साहब और आमना बेगम पर सन्नाटा छा गया, कुछ पल ख़ामोशी के बाद इस्माइल साहब ने कहा:

"मगर बेटा उससे शादी से तुम इन्कार कर चुकी थीं।"

"अब इकरार कर रही हूँ।"

"मगर बेटा उसने अपनी जॉब वगैरा सब छोड़ दी है, तुम्हे शायद पता नहीं उसका अब कोई कैरियर नहीं रहा, अब उसके पास ना पहले जैसी जॉब है ना गाड़ी है ना अपना कोई घर है। तुम कैसे उसके साथ रहोगी ? फिर जानती भी हो भविष्य में उसका इरादा क्या करने का है?"

माँ जो अपनी बेटी को अच्छी तरह जानती थी, एक ही साँस में यह बताती चली गई कि अब्दुल्लाह किन कारणों से उसके लिए अन फिट है।

"मुझे सब मालूम है, लेकिन मैं फैसला कर चुकी हूँ। आप लोगों ने पहले मेरे गलत फैसले में मेरा साथ दिया है, अब मैं एक ठीक फैसला कर रही हूँ। नाना अब्बू अल्लाह के लिए मेरा साथ दीजये।"

नाएमा ने जान बूझ कर आखरी बात अपने नाना से कही थी जिनके लिए अल्लाह का वास्ता और अब्दुल्लाह का नाम दोनों बहुत अहम (महत्वपूर्ण) थे।

''ठीक है बेटा, जो होगा देखा जाएगा, मैं अब्दुल्लाह को अभी बुलाता हूँ।''

.....

इस्माइल साहब ने पूरी बात अब्दुल्लाह के सामने रख दी। वह गर्दन झुकाए उनकी बात सुनता रहा, उसे हालात कि संगीनी (गंभीरता) का अहसास था। वह समझ चुका था कि इस्माइल साहब का परिवार एक बहुत बड़ी मुश्किल में फंस चुका है। शायद अल्लाह की मर्ज़ी यह है कि वह इन्हें इस मुश्किल से निकाले, वह अपने बारे में नाएमा की सोच को जनता था। फारिया ने कुछ दिन पहले उसे फोन कर के सारी बात बताई थी और उससे कहा था कि वह नाएमा की शादी तक उसके घर ना जाए, इसलिए काफी दिनों से वह इस्माइल साहब के घर नहीं आया था, और बहाना यह बनाया था कि पढ़ाई में बहुत बिज़ी है। मगर आज उन्होंने उसे फ़ौरन इस ज़रूरी मसले पर बात करने के लिए बुलाया था।

उसे मालूम था उसे यह कड़वा घूंट पीना था, इस्माइल साहब के परिवार की मदद करना उसकी अख्लाकी (नैतिक) जिम्मेदारी थी। हालांकि इस्माइल साहब ने कहा था कि नाएमा ने शादी के लिए अब्दुल्लाह का नाम खुद लिया है, मगर उसे अंदाज़ा था कि यह ना मुमकिन है। उसने सोचा नाएमा को अपने परिवार की इज्ज़त रखनी थी इसलिए उसने एक ऐसे लड़के से शादी का फैसला कर लिया जिससे वह नफरत करती है। नाएमा ने अपने हिस्से का ज़हर पी लिया था, अब अब्दुल्लाह को अपने हिस्से का ज़हर पीना था।

''बेटा मैं तुम्हारे जवाब का इंतजार कर रहा हूँ।'' इस्माइल साहब जो काफी देर से उसके जवाब का इंतजार कर रहे थे उसे गहरी सोचों में गुम देख कर उससे पूछा था। अब्दुल्लाह ने सर उठाया और आहिस्ता आवाज़ में बोला:

''शादी के लिए मेरी एक शर्त है।''

''बोलो बेटा! तुम्हारी हर शर्त मुझे मंज़ूर है।''

''नाएमा की शादी के लिए आप ने जो क़र्ज़ लिया है और जिस के लिए यह घर गिरवी रखवाया है, उसे शादी से पहले मैं अदा करूँगा। जॉब के शुरू के दिनों में मुझे घर बनाने की चाहत थी, उसके लिए मैंने पैसे जमा किये थे, वह अभी तक मेरे पास हैं, आप वह पैसे लेकर मकान के कागज़ वापस ले लीजये।''

इस्माइल साहब ने यह सुना तो उनकी आँखों से आंसू बहने लगे। वह बोले:

"यह मेरी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी कमी होती अगर नाएमा की शादी तुमसे ना होती। खुदा का शुक्र है उसने मेरी यह महरूमी दूर कर दी, मैं तुम्हारी यह शर्त ज़रुर मानूंगा। मैं अब यह मकान तुम्हारे नाम कर रहा हूँ, इस मकान में तुम और नाएमा रहोगे, लेकिन यह बात मैं नाएमा को नहीं बताऊंगा, तुम उसे शादी के बाद बताओगे।"

"आप ऐसा करना चाहते हैं ती फिर मेरा एक काम और कीजये, यह मकान मेरे नहीं नाएमा के नाम कर दीजये। मैं उसे यह मकान महर में दे दूंगा।"

"अल्लाह तुम्हे खुश रखे बेटा! अल्लाह तुम दोनों को सदा खुश और आबाद रखे।"

अब्दुल्लाह इसके जवाब में खामोश रहा, उसे अच्छी तरह मालूम था कि इस शादी में नाएमा की ख़ुशी नहीं मज़बूरी है। किसी कमज़ोर लड़की की मजबूरी से फाएदा उठाना अब्दुल्लाह को कभी गवारा नहीं था, उसने फैसला कर लिया था कि उसे क्या करना है। वह इस्माइल साहब की इज्ज़त रखने के लिए दुनिया दिखावे को नाएमा से रस्मी शादी कर लेगा, फिर नाएमा को भले तरीके से आज़ाद कर देगा। अब्दुल्लाह अच्छी तरह जानता था कि नाएमा की ख़ुशी उसके साथ आबाद रहने में नहीं उससे आज़ाद रहने ही में मुमकिन थी। अब्दुल्लाह से जान छूटने के बाद नाएमा जैसी खूबसूरत लड़की के लिए अच्छा रिश्ता मिलना मुश्किल नहीं था, रहा अब्दुल्लाह तो जब उसने अपनी ज़िन्दगी अपने रब के लिए खर्च करने का फैसला किया था तभी जान लिया था कि उसे अपने सीने में दो कब्रिस्तान बनाने होंगे। एक में उसे अपनी इच्छाओं को दफ्न करना होगा और दुसरे में अपनी शिकायतों को, तो उसका सीना तो पहले से ही दूसरों से शिकायतों और अपनी इच्छाओं का एक कब्रिस्तान था। इस कब्रिस्तान में आज एक और लाश दफ़नाने का समय आ गया था..... किसी कब्रिस्तान में एक कब्र के बढ़ जाने से कोई फर्क नहीं पड़ता।

अब्दुल्लाह इस्माइल साहब के पास से उठा तो उसका दिल बहुत सुकून में था..... वो इस लिए कि कब्रिस्तान में हमेशा बहुत सुकून हुआ करता है।

.....

नाएमा की शादी उसी तारीख को हुई जो तय हुई थी, सब कुछ वैसे ही हुआ बस इतना फर्क था कि दुल्हा अब्दुल्लाह था। नाना अब्बू ने मकान नाएमा के नाम करके कागज़ात निकाह के समय अब्दुल्लाह को दे दिए थे। शादी के बाद विदा हो कर दुल्हा दुल्हन कहीं और नहीं गए इसी घर में आ गए, और अब शादी के सारे हंगामो से गुज़र कर दुल्हन बनी हुई नाएमा सुहाग की सेज पर अपनी किस्मत का इंतज़ार कर रही थी।

वह सेज पर बनी संवरी बैठी थी। वह खूबसूरत तो हमेशा से थी मगर उस पर दुल्हन की ड्रेस, ज़ेवर और मेकअप, इन सब ने मिल कर नाएमा को वो रूप दिया था कि लगता था वह कोई आसमान की परी है जो ज़मीन पर उतर आई है। आज जिसने भी उसे देखा था वह अब्दुल्लाह कि किस्मत पर हैरत (आश्चर्य) कर रहा था, सिवाए अब्दुल्लाह के, उसके लिए यह ज़िन्दगी के इम्तिहानों में से बस एक इम्तिहान था, जिस से उसे कामयाबी के साथ गुज़रना था। शादी की दावत में पूरे दिन उसके चहरे पर मुस्कान रही और दिल में यह दुआ कि मेरे रब हमेशा की तरह अब भी मेरी मदद कीजये और इस पुल सिरात से मुझे कामयाबी से गुज़ार दीजये।

नाएमा इस सब से बे खबर गहरी सोच में डूबी अब्दुल्लाह का इंतिज़ार कर रही थी। उसका एक बोझ तो उतर चुका था मगर वह जानती थी कि ज़िन्दगी अब उसके लिए बस एक आज़माइश ही बन चुकी है। ग़रीबी तो ख़ैर वह झेलने के लिए तैयार थी लेकिन अब्दुल्लाह के साथ जीना उसके लिए एक सज़ा थी, मगर वह किस को इल्ज़ाम देती..... उसने अपने लिए यह सज़ा खुद चुनी थी।

नाएमा को अपना सपना याद आ गया, उसे वो जादूगर याद आए जिन्होंने सच्चाई के लिए सूली पर चढ़ना मंज़ूर कर लिया था मगर सच को नहीं छोड़ा था, अपना ईमान बचाने के लिए उन्होंने एक दर्द नाक़ मौत क़ुबूल कर ली थी।

"क्या मैं अल्लाह के लिए एक दर्द नाक़ ज़िन्दगी भी गवारा नहीं कर सकती?"

नाएमा ने खुद से सवाल किया, फिर खुद ही जवाब दिया:

"मुझे यह ज़िन्दगी गवारा करनी होगी, वो भी पूरी ख़ुशी के साथ।"

मगर फिर एक और शंका ने उसे घेर लिया। उसने अब्दुल्लाह के साथ शादी से इन्कार किया था, फारिया से उसे घर आने से माना करवाया था। अब्दुल्लाह एक मज़हबी (धार्मिक) आदमी ज़रूर

है लेकिन नाएमा का जिन मज़हबी लोगों से आज तक वास्ता पड़ा था, वो ऊपर से तो बड़े धार्मिक लगते थे और दीन के भाषण भी बहुत लम्बे लम्बे दे लेते थे, नमाज़ रोज़े पर भी खूब ज़ोर देते थे, लेकिन जब उनका किसी से मतभेद हो जाता था तो उनमे और दुसरे आम लोगों में कोई फर्क नहीं रहता था। ऐसे में उनका स्वभाव भी आम लोगों जैसा ही होता था। अब्दुल्लाह ने अगर कुछ ना भी किया और सारी ज़िन्दगी उसे ताने ही देता रहा तो.....?

अब्दुल्लाह से नफरत करते करते वह खुद अगर उसकी नफरत का निशाना बन गई तो.....?

यह सारी बातें पहले नाएमा ने इतनी घहराई से नहीं सोची थीं, और अब जब सोची तो उसे चारो तरफ़ से दुःख ही दुःख अपनी आने वाली ज़िन्दगी में दिखने लगे। फिर अचानक उसे अस्र याद आया, उसे अस्र के शब्द याद आगए:

"इम्तिहान ज़रूर होगा, मगर याद रखना अल्लाह तआला ने यह दुनिया इम्तिहान के लिए बनाई ज़रूर है लेकिन ज़्यादातर वो हौसले का ही इम्तिहान लेते हैं, इंसान का नहीं।"

"मैं पूरे हौसले के साथ इम्तिहान दूँगी, हर कीमत पर अल्लाह तआला से वफादारी निभाऊगीं, सब्र करती रहूँगी। अब्दुल्लाह मेरे साथ जो भी ज़ुल्म करे मगर कम से कम अल्लाह की बंदगी करने से तो वह मुझे नहीं रोकेगा, मेरे लिए बस यही काफी है।"

नाएमा इन्ही सोचों में गुम थी कि कमरे का दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई, दरवाज़े की आवाज़ सुन कर नाएमा थोड़ा सा झिज्की और फिर सर उठा कर अब्दुल्लाह को देखा।

.....

अब्दुल्लाह ने कमरे का दरवाज़ा खोलने के लिए हैंडिल पर हाथ रखा मगर वह दरवाज़ा नहीं खोल पा रहा था, उसे लगा कि उसमे इतनी हिम्मत नहीं थी। वह जानता था कि वह अपनी दुल्हन के कमरे का दरवाज़ा नहीं खोल रहा बल्कि अपनी बर्बादी का दरवाज़ा खुद खोल रहा है।

उसके बोझल मान से आवाज़ आई:

अब्दुल्लाह पागल मत बन! क्यों अपनी ज़िन्दगी से खेल रहा है? क्यों अपना सब कुछ एक ऐसी लड़की पर लुटाने जा रहा है जिसने तुझे सिवाए दुःख के कुछ नहीं दिया, जो तुझ से नफरत करती है, और इस नफरत के सिवा उसके पास तेरे लिए कुछ नहीं।"

अब्दुल्लाह के पास इस बात का कोई जवाब नहीं था, उसके दिल की गहराइयों से निकला:

"ला इलाहा इललल्लाह।"

इन शब्दों ने उसमे कुछ ताक़त पैदा की, उसने आँखें बंद की तो दो आंसू के कतरे उसकी आँखों से निकल कर उसके गालों पर फैल गए। अब्दुल्लाह को यूँ लगा कि बहते कतरों ने उसके दिल के बोझ को कुछ कम कर दिया है। उसने रुमाल से चहरा साफ़ किया फिर एक गहरी साँस ले कर आखिर कार उसने कमरे का दरवाज़ा खोल दिया, वह धीरे से चलता हुआ अन्दर आया, उसने नाएमा को और नाएमा ने उसे देखा।

उसे देख कर अब्दुल्लाह को यूँ लगा जैसे कमरा अजीब सी रौशनी से जग मगा उठा है। उसने नाएमा को कभी नज़र भर कर नहीं देखा था, और जितना देखा था वह भी बहुत सादा देखा था, मगर इस समय दुल्हन के मेकअप में नाएमा ने काएनात की हर खूबसूरती को अपने अन्दर समो लिया था। एक पल के लिए अब्दुल्लाह उस जादूई चहरे को देखा कर सब भूल गया, उस एक पल में उसे यूँ लगा कि उसने जो कुछ इरादे किये थे वो कहीं गायब हो गए हैं, उसे कहीं से आवाज़ आई:

"अब्दुल्लाह किस्मत ने एक बहुत खूबसूरत लड़की को जो तुम्हे दिल से पसंद है, तुम्हारी बीवी बना दिया है। कानून, शरियत, और समाज सब तुम्हारे साथ हैं, कुर्बानी देने और मदद करने के जज्बों को एक कोने में रखो और सब कुछ भूल कर अपनी इच्छाओं के समुन्द्र में डूब जाओ।"

उसके ज़मीर ने भी फ़ौरन आवाज़ लगाई:

"अब्दुल्लाह! क्या अपने रब को भी भूल जाओगे?"

शैतान ने देखा कि इच्छाएँ अब्दुल्लाह को काबू नहीं कर पा रहीं तो उसने गुस्सा, बदला और अना के हथियारों से उसे शिकार करने की कोशिश की:

"भूल गए अब्दुल्लाह! यह वही लड़की है जिसने तुम्हें ज़लील किया था, तुम्हे ठुकरा दिया था। अब यह क्या बेवकूफी है कि अपना सब कुछ देकर इसे आज़ाद कर रहे हो, तुम खुदा के प्यारे हो और उसने तुम्हारे लिए इस लड़की को तुम्हारे क़दमों में ला डाला है। अब समय आ गया है कि तुम इस घमंडी लड़की को इसके घमण्ड का सबक सिखा दो।"

अब्दुल्लाह की आत्मा हार मानने तैयार नहीं थी, वह झल्ला उठी:

"मत भूलो अब्दुल्लाह! कमज़ोर इंसान खुदा का भेजा हुआ होता है, याद रखो जितनी मजबूर यह लड़की तुम्हारे सामने है, इससे हजारों गुना कमज़ोर तुम अपने मालिक अल्लाह रब्बुल आलमीन के सामने हो।"

अब्दुल्लाह के सामने जैसे ही अल्लाह का नाम आया, उस पर छाते अँधेरे रौशनी में बदल गए। अब उसे ख़ुशी की रौशनी के लिए नाएमा की रौशनी की ज़रूरत नहीं थी, आसमान और ज़मीन का वह नूर जो ज़िन्दगी भर उसके हर अँधेरे को उजालों में बदलता रहा था अब उसके साथ था। उसका दिल हमेशा की तरह एक बार फिर साफ़ हो चुका था, उसने नाएमा के चहरे से अपनी नज़रें हटा कर सर नीचे किया और सलाम कर के बैड पर बैठ गया।

दूसरी तरफ नाएमा भी पत्थर की तरह हो गई थी, अब्दुल्लाह को देख कर उसके अन्दर कोई अहसास नहीं जागा, उसके दिल का कोई तार नहीं छिड़ा, उसने खुद पर कंट्रोल करते हुए अब्दुल्लाह के सलाम का जवाब दिया और थोड़ी सिमट कर बैठ गई।

अब्दुल्लाह उससे कुछ फासले पर बैठा हुआ था, उसका सर झुका हुआ था, उसने नाएमा के चहरे को देखने की कोशिश नहीं की। नाएमा की नज़रे भी झुकी हुईं थी, अगर वो दोनों एक दुसरे को देख लेते तो शायद दोनों को मालूम हो जाता कि इस पल उन दोनों के चहरे किसी लाश की तरह जज़्बातों से खाली है।

थोड़ी देर ख़ामोशी रही फिर अब्दुल्लाह ने ही इस सन्नाटे को तोड़ा।

"मुझे मालूम है नाएमा आप किन हालात से गुजरी हैं, नाना अब्बू ने मुझे बताया तो मुझे अपनी खुश नसीबी लगी कि इस मुश्किल घड़ी में आप के परिवार का साथ दूं।"

अब्दुल्लाह बहुत नाप तौल कर बोल रहा था।

"मुझे यह भी मालूम है कि आप के साथ बहुत गलत हुआ है, जहाँ आप की शादी हो रही थी वहां लालच और धोका आड़े आ गया। मुझे अंदाज़ा है कि आखिरी समय में शादी ख़त्म होने से आप को कितना दुःख हुआ होगा, लेकिन उसके बाद जो हुआ शायद यह उससे भी ज़्यादा गलत है।"

आखरी शब्द सुन कर नाएमा ने सर उठा कर अब्दुल्लाह को देखा मगर अब्दुल्लाह उसके होने से बे परवाह सर झुकाए बैठा था, उसने भी सर झुका लिया। अब्दूलाह बोलता रहा:

"एक ऐसे आदमी के साथ ज़िन्दगी गुज़ाने का फैसला करना जो ना पसंद हो बल्कि जिससे नफरत हो एक बहुत मुश्किल फैसला है। लेकिन आप ने अपने नाना और माँ के लिए यह फैसला किया, इससे मेरे दिल में आपके लिए बहुत इज्ज़त बनी है।"

नाएमा तो पत्थर बनी बैठी थी मगर दिल में कहीं यह अहसास उभरा कि अब्दुल्लाह ऐसा नहीं था जैसा उसने समझा था।

"फारिया ने आप की तरफ से मुझसे बात की थी। उसने बताया था कि आप को मेरा अपने घर आना पसंद नहीं, उसने यह भी बता दिया था कि मेरे रिश्ते से आप पहले से ही इन्कार कर चुकी हैं।"

अब्दुल्लाह एक पल के लिए रुका और नाएमा की तरफ देखा, वह अभी भी सर झुकाए बैठी थी। उसने अपनी बात जारी रखी:

"मुझे इस पर आप से कोई शिकायत नहीं है, और ना यह बात मैं आप से शिकवा करने के लिए कह रहा हूँ। मुझे तो आप की यह बात बहुत अच्छी लगी कि आपने अपने परिवार के लिए एक ऐसा फैसला किया जो आप को पसंद नहीं था, और आप ने यह फैसला उस समय किया जब मेरे पास आप को देने के लिए कुछ भी नहीं रहा, मेरी जॉब ख़त्म हो गई।"

उसने एक लम्बी सांस ली, फिर बोला:

"सच्ची बात यह है कि आज में जिस रास्ते पर हूँ उसके लिए मैं आप का अहसान मंद हूँ। आप के इन्कार ने मेरे लिये ज़िन्दगी के बहुत बड़े फैसले बहुत आसान कर दिये। खुदा के करीब जाने का जो सफ़र हजारों बरस में भी तय नहीं हो सकता था वो आप के इन्कार ने कुछ पलों में ही तय कर दिया, इसलिए आप का सम्मान मेरे दिल में बहुत बढ़ गया। लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि मेरे ऊपर इतना अहसान करने वाली और ऐसी बहादुर और हौंसले वाली लड़की के साथ इतना बड़ा ज़ुल्म होने दूं।"

नाएमा की समझ में नहीं आरहा था कि वह क्या बोले और क्या ना बोले। तभी अब्दुल्लाह ने अपनी जेब से कुछ कागज़ात निकाले, और नाएमा की तरफ बढ़ाते हुए बोला:

"यह आप के मकान के कागज़ात हैं, यह मकान अब आप के नाम हो जाएगा, आप के लिए आप के नाना को इसे गिरवी रख कर लोन लेना पड़ा था, मैंने वह लोन चुका दिया, नाना अब्बू ने यह मकान मुझे दे दिया, जो अब मैं आप को महर के तौर पर दे रहा हूँ। यह मेरा आप पर कोई अहसान नहीं बल्कि आप का महर है जो आप का हक़ है।"

नाएमा ख़ामोशी से सुनती रही, उसे महसूस हुआ कि नफरत के जो सांप उसे डस रहे थे कहीं भाग चुके है। उसे याद आया ऐसे ही एक सांप ने काबील में नफरत का ज़हर भरा था, उसके दिल से एक आह निकली:

"काश मैं उस सांप को पहले देख सकती तो उसका फन कुचल देती।"

वह इन्ही ख्यालों में गुम थी कि अब्दुल्लाह एक और कागज़ उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोला:

"यह आप की आज़ादी का कागज़ है, मैं नहीं चाहता कि आप किसी के अहसान में जिन्दा रहें और अपनी ज़िन्दगी मजबूरी में उस आदमी के साथ गुज़ारें जिसके साथ आप रहना नहीं चाहतीं। यह तलाक़ के कागज़ हैं मैंने तैयार कर लिए हैं, इन पर मेरे साइन और डेट की जगह अभी खाली है, शादी के बाद कुछ दिन गुज़र जाएं तो इन पेपर पर डेट डाल कर मुझे दे देना मैं साइन कर दूंगा।"

नाएमा उसकी बात सुन चुकी थी, उसने कभी सोचा भी नहीं था कि अब्दुल्लाह इतनी ऊंची जगह खड़ा होगा। उसे हज़रत मूसा (अ) याद आ गए, दो बेसहारा लड़कियों पर अहसान करके अलग हो जाने वाले मूसा (अ), उसने चुपके से अब्दुल्लाह को देखा।

खुदा से लो लगा कर इंसानों से बेगर्ज़ हो जाना जो पैगम्बरों की शान होता है, अब्दुल्लाह इसकी एक झलक बन कर उसके सामने बैठा हुआ था। उसके दिल से आवाज़ आई:

"परवरदिगार मुझे माफ़ करदे, मैं बहुत शर्मिंदा हूँ, मैंने तेरे एक नेक बन्दे के साथ बहुत ज़ुल्म किया है।"

फिर उसने शर्मिंदा हो कर सर झुका लिया और दिल ही दिल में गिदगिड़ा कर बोली:

"मालिक! मुझे सुधार का एक मौका दीजये, मुझ पर अपना करम कीजये, आप ही मेरे लिए सब कुछ करने वाले हैं।"

वह इसी हाल में थी कि अब्दुल्लाह की आवाज़ एक बार फिर कानो में आई:

"आप की एक अमानत मेरे पास है।"

यह कह कर अब्दुल्लाह ने अपनी जेब में हाथ डाला और कहने लगा:

"आप शादी की तैयारी के सिलसिले में आप की माँ और नाना को मैं आप के खानदानी सुनार के यहाँ ले गया था। जब वो लोग आप के लिए ज़ेवर पसंद कर रहे थे तो मैंने वहां एक बहुत खूबसूरत लॉकेट देखा जिस पर आप के नाम का पहला अक्षर बना हुआ था। मैंने बाद में वह आप की शादी में तोहफा देने के लिए खरीद लिया था, मेरा ख्याल था कि आप की शादी पर वह आप के नाना को दे दूंगा ताकि वो आप तक इसे पहुंचा दें। मुझे क्या खबर थी कि मुझे खुद पति बन कर वह लॉकेट आप को खुद देना होगा, इसे आप अपनी मुह दिखाई का तोहफा समझ लीजये।"

यह कह अब्दुल्लाह ने वही लॉकेट नाएमा के हाथ पर रख दिया जो उसे बहुत पसंद था और उसने गरीब औरत की मदद के लिए बेच दिया था।

नाएमा वह लॉकेट हाथ में पकड़े हुए थी और उसका दिल और दिमाग सुन्न हो रहे थे। उसे अस्र के शब्द याद आ गए:

"जिस समय यह लॉकेट तुम्हे मिलेगा, उसी समय तुम्हारी मुलाकात उस आदमी से हो जाएगी, तुम बिना किसी शक़ के उसे पहचान लोगी।"

.....तो अस्र जिस इंसान का रूप लेकर आया था..... जिसे वह किसी यूनानी देवता का रूप समझती थी..... जिस रूप की वह आदि हो चुकी थी, वह खुदा का प्यारा बंदा यही अब्दुल्लाह था..... जो खुदा की नज़र में एक लीडर था, मगर वह उससे हमेशा भागती रही, नफ़रत करती रही.....

नाएमा अन्दर ही अन्दर कांप रही थी। अब्दुल्लाह उस से बे खबर सर झुकाए बैठा था, फिर वह बेड से उतरा और खड़ा हो कर बोला:

"आप जब चाहें तलाक़ ले कर अलग हो जाएं, तब तक हम दो अजनबी की तरह ज़िन्दगी गुज़ार लेंगे। मुझ पर भरोसा रखये, और मुझे अल्लाह तआला की रहमत से उम्मीद है कि वे आप को एक बहतर आदमी से मिला ही देंगे, अब मैं कपड़े बदल कर लेटूंगा आप भी आराम कीजये।"

यह कह कर वह वाश रूम की तरफ बढ़ गया, नाएमा का दिल चाहा कि वह चींख कर उसे रोक दे, मगर उसके मुंह से शब्द नहीं निकल सके।

नाएमा खामोश बैठी हुई थी मगर उसके आंसू बह रहे थे, वह सोच रही थी कि खुदा कितनी अजीब हस्ती है। पहले वह खुदा से नफरत करती थी, उसने अजीब तरीके से नाएमा के दिल में अपनी मुहब्बत भर दी, वह सब से ज़्यादा खुदा को चाहने लगी, फिर वह खुदा के इस बन्दे अब्दुल्लाह से भी नफरत करती थी, खुदा ने बहुत अजीब तरह से अब्दुल्लाह को भी उसका महबूब बना दिया। उसने आँखें बंद करके धीरे से कहा:

"तू अपनी महरबानियों से अपने बन्दों को अपने क़दमों की धूल बना देता है। ऐ काएनात के रब.... तेरे जैसा कौन है।"

नाएमा के दिल में सुकून छा गया था, उसने आँखे खोलीं, उसके गुलाबी चहरे पर ख़ुशी दमक रही थी, झील जैसी आँखों में मुहब्बत जगमगा रही थी और गुलाब जैसे होंठों पर मुस्कान फेली हुई थी। उसने अपने हाथ में पकड़े हुए लॉकेट को उलट पलट कर देखा और फिर बोली:

"एक गुनागार बंदी पर इतना करम, मेरे रब तेरे जैसा कौन है..... तेरे जैसा रहीम कौन है।"

उसने सोचा:

अल्लाह उस जैसी बेवफा के साथ इतने महरबान रहे हैं तो अपने वफादारों को किस तरह नवाज़ेंगे? उसे वह रूप याद आया जो अस्र ने लिया था और जो दरअसल उसके पति उसके शोहर अब्दुल्लाह का रूप था, उसने उस रूप को नज़र में लाते हुए कहा:

"वफादारों को वे ऐसे नवाज़ेंगे।"

वह यही सोच रही थी तभी अब्दुल्लाह कपड़े बदल कर बाहर आ गया और ख़ामोशी से बेड के दुसरे किनारे पर आँखें बंद करके लेट गया। उसने अपनी आँखों पर रुमाल डाल लिया था।

नाएमा उस की तरह मुंह करके बैठ गई, वह उसे गौर से देख रही थी। अब्दुल्लाह के चहरे पर सुकून था मगर नाएमा यह देख सकती थी कि एक उदासी उसके अन्दर तक पहुँच चुकी है। नाएमा यह सोच कर तड़प उठी कि उसने अपने परिवार की इतनी मदद करने वाले और खुदा के एक प्यारे बन्दे को कितने दुःख दिए है..... उस बन्दे को जो अब उसका भी महबूब बन चुका था।

दूसरी तरह अब्दुल्लाह ख़ामोशी से लेटा सोने की कोशिश कर रहा था। वह मानसिक तौर पर अब सुकून में था, उसने अपनी जिम्मेदारी जहाँ तक उससे हो सका अच्छे से अच्छे तरीके से पूरी कर दी थी। उसे उम्मीद थी अब इस्माइल साहब की फैमली और नाएमा भी धीरे धीरे इन हालात से निकल जाएंगे। वह इन्ही सोचों में गुम था कि उसे अपने पैरों पर एक बहुत नर्म स्पर्श महसूस हुआ, उसने रुमाल आँखों से हटाया तो वो देखा जिस के बारे में वह सोच भी नहीं सकता था।

नाएमा उसके पैरों को चूम कर ख़ामोशी से रो रही है, वह एक दम से उछल कर बैठ गया और परेशान हो कर बोला:

"यह क्या कर रही हो?"

नाएमा रोते हुए बोली:

"अब्दुल्लाह! मैं बहुत बुरी हूँ, मेरी गलतियाँ भी बहुत हैं, लेकिन अब मैं बदल चुकी हूँ, मैं अल्लाह के रास्ते पर चलना चाहती हूँ, अगर आप मुझे छोड़ देंगे तो मैं अकेली कभी नहीं चल सकूँगी। मुझे आप का सहारा चाहिए, अल्लाह के वास्ते मुझे छोड़ने का इरादा बदल दें, मैं आप के सामने हाथ जोड़ती हूँ, मुझे ना छोड़ें।"

यह कह कर उसने अपने दोनों हाथ जोड़ कर अब्दुल्लाह के सामने कर दिये और फूट फूट कर रोने लगी।

अब्दुल्लाह को पल भर के लिए तो कुछ समझ नहीं आया, उसने नाएमा को दोनों हाथों से पकड़ कर कहा:

"नाएमा प्लीज़ चुप हो जाओ.....प्लीज़....." फिर साइड टेबल पर रखे जग से पानी ले कर उसे पिलाते हुए बोला:

''मैं तो सिर्फ तुम्हारी ख़ुशी चाहता था।''

''अब तो आप ही मेरी ख़ुशी बन गए हैं, मैं मानती हूँ कि मैं पहले आप से नफरत करती थी, मगर अब मैं अल्लाह को गवाह बना कर कहती हूँ कि मुझे आप से ज़्यादा इस दुनिया में कोई महबूब नहीं रहा।''

अब्दुल्लाह ने नाएमा की बात का कोई जवाब नहीं दिया, उसने दिल में कहा:

''परवरदिगार! तेरे मानिन्द कौन है? तेरे जैसा कौन है?''

नाएमा जिस के आंसू अब थम चुके थे, उसके दोनों हाथ पकड़ कर बहुत मुहब्बत से बोली:

''आप को नहीं मालूम आप कितने अच्छे और कितने खूबसूरत हैं।''

अब्दुल्लाह के चहरे पर मुस्कान आ गई, वह मज़ाक के अंदाज़ में बोला:

''मैं तुम्हारी परेशानी समझ सकता हूँ, दुल्हन बनते समय तुमने अपना चश्मा नहीं लगाया।''

नाएमा भी हंसने लगी।

''मेरी नज़र इतनी कमज़ोर नहीं है, लेकिन आप को नहीं मालूम..... जो लोग अल्लाह की नज़र में बहुत अच्छे होते हैं जन्नत में जाने के बाद अल्लाह तआला उनको बे हद खूबसूरत रूप देंगे।''

''मुझे मालूम है मगर मेरा ख्याल है कि तुम जन्नत में जाने के बाद भी ऐसी ही रहोगी।''

अब्दुल्लाह की इस बात पर नाएमा हँसते हँसते रुक गई, उसके चहरे पर एक उदासी आई, वह उदास हो कर बोली:

''मुझे मालूम है मैं अच्छी नहीं हूँ।''

अब्दुल्लाह उसके दोनों हाथों को अपने हाथों में दबाते हुए बोला:

''यह बात नहीं, दरअसल तुम इतनी खूबसूरत हो कि समझ में नहीं आता तुम जन्नत में जा कर और खूबसूरत कैसे होगी?''

नाएमा ने शर्मा से सर झुका लिया।

.....

शाम का समय हो रहा था, हर तरफ ख़ामोशी थी मगर कभी कभी पक्षियों की आवाज़ भी आती थी। बारिश कुछ देर पहले ही हो कर थमी थी, ऊँचे पहाड़ों से यह मंज़र (दृश्य) देखने का मज़ा ही अलग था। शादी के दो हफ्ते बाद अब्दुल्लाह और नाएमा एक ऊँचे हिल स्टेशन पर खड़े कुदरत का हिस्सा बने हुए थे, चारों तरफ हरे पहाड़ कहीं जमी हुई बर्फ जो सूरज की धुप में चमक कर चाँदी बन जाती थी, और कहीं पहाड़ों के बीच बहते झरने कुदरत का ऐसा हुस्न के जिसे देख इंसान कुदरत का दीवाना हो जाए।

नाएमा और अब्दुल्लाह बहुत देर तक अल्लाह की इस कारीगरी को देख कर अपने दिलों में सुकून भर रहे थे। जब बहुत देर हो गई तो नाएमा बोली:

"सुनये! यह सब कितना अच्छा लग रहा है।"

अब्दुल्लाह खामोश रहा, नाएमा बात बदलते हुए फिर बोली:

"हम इंशा अल्लाह उमरा करने मक्का जाएंगे।"

"उसमे बहुत पैसे लगते हैं।"

इस बार अब्दुल्लाह ने बहुत छोटा सा जवाब दिया, साफ़ लग रहा था कि वह अभी बात करने से बचना चाह रहा है।

"मैंने नाना अब्बू से बात करली है, शादी में जो हमारे पैसे खर्च होने से बच गए थे, हम उनसे उमरा कर लेंगे, दरअसल....."

नाएमा अपने इस शौंक की वजह बताते हुए बोली:

"पहले में समझती थी कि यह सिर्फ कुछ चीज़े देखने का एक टूर है जिसमे पैसे बर्बाद होते हैं, मुझे अब मालूम हुआ कि यह तो अल्लाह से मुलाकात का नाम है। अल्लाह से मुलाकात से ज़्यादा कीमती तो कोई चीज़ नहीं हो सकती।"

फिर वह अब्दुल्लाह के जवाब का इंतज़ार किये बिना ही बोली:

''जन्नत में तो अल्लाह तआला से मुलाकात होगी ना?''

अब्दुल्लाह को अंदाज़ा हो चुका था कि अब नाएमा ना खामोश होगी ना उसे चुप रहने देगी, उसे कुदरत से अपनी बात चीत को ख़त्म करके अपनी बीवी से बात करना पड़ी, वह मुस्कुराते हुए बोला:

''अगर पहुँच गए तो ज़रूर अल्लाह तआला से मुलाकात होगी।''

''हाँ यह तो है, मगर हम वहां जा कर करेंगे क्या ? क्या जन्नत में हम बोर नहीं हो जाएंगे, देखये ना यह कितनी खूबसूरत जगह है, हम हनीमून पर हैं, फिर भी ज़्यादा दिन यहाँ रहे तो बोर हो जाएंगे।''

''एक फलसफी (दार्शनिक) लड़की से शादी करने का यह बहुत बड़ा नुक्सान है, तुम सवाल बहुत करती हो।''

''तो मान लीजये ना आप के पास कोई जवाब नहीं है।''

''हाँ मेरे पास जवाब नहीं है, मगर मैं जिससे पाता हूँ उसके पास हर सवाल का जवाब है, यह बताओ इंसान बोर क्यों होते हैं?''

नाएमा सोचते हुए बोली:

''समानता (यकसानियत) से।'' नाएमा की बात पर अब्दुल्लाह ने हाँ में सर हिलाते हुए कहा:

''कुरआन मजीद बताता है कि जन्नत में समानता नहीं होगी, वहां लोगों को जो नेमत मिलेगी हर बार कुछ बदलाव के साथ नए अंदाज़ में मिलेगी, यह इस लिए होगा क्यों कि अल्लाह तआला की सिफात (गुणों) की कोई हद नहीं। वो कभी ख़तम नहीं हो सकतीं और ना गिनी जा सकती हैं, इस लिए उनकी हर रचना पिछली रचना से नई और अलग होगी।''

''यह तो जन्नत की बात है ना, हम इसे दुनिया में रह कर कैसे समझ सकते हैं?''

नाएमा इस उलझन से बाहर नहीं आ पा रही थी, यह उसका एक पुराना सवाल था और आज जब उसकी ज़िन्दगी खुद एक जन्नत बन चुकी थी वह आने वाली जन्नत की हकीक़त अब्दुल्लाह से जानना चाहती थी। अब्दुल्लाह ने उसे तफसील (विस्तार) से समझाना शुरू किया:

"अल्लाह तआला की सिफात (गुण) किस तरह काम करती हैं और किस तरह वो बढ़ती चली जाती हैं इसको एक मिसाल से समझो। इंसान इस दुनिया में आने से पहले नौ महीने एक ऐसी दुनिया में जिन्दा रहता, बढ़ता और अपनी ख़ुराक हांसिल करता है जहाँ सिवाए अँधेरे के कुछ नहीं होता। उस अँधेरी दुनिया में अल्लाह की बनाने और पालने की सिफात (गुण) काम करती हैं, लेकिन यही बच्चा जब इस दुनिया में आता है तो खाने की अन गिनत चीज़े और स्वाद पाता है, और ऐसे ही अँधेरे से निकल कर वह तरह तरह के रंग और रोशनी देखता है।"

नाएमा समझने के अंदाज़ में सर हिलाने लगी, अब्दुल्लाह ने आगे कहा:

"तुम समझी कि खुदा वही है, उसकी सिफात (गुण) भी वही हैं, मगर माँ के पेट में बच्चे की क्षमता के हिसाब से अल्लाह की सिफात बहुत कम ज़ाहिर हो रही थी, मगर इस दुनिया में आते ही बच्चे को अल्लाह की दी हुई ख़ुराक के ही हजारों नए रूप सामने आ गए। ठीक इसी तरह जन्नत में जाते ही जो नई दुनिया बनेगी उसमे अल्लाह तआला की सिफात (गुण) और रचनाएं इस तरह सामने आएंगी कि हमेशा हमेशा इन्सान स्वाद, सुरूर, मज़े के नित नए स्वाद चखता ही रहेगा, क्यों कि अल्लाह तआला की सिफात कभी ख़तम ना होने वाली हैं।"

"सुबहान अल्लाह!" नाएमा अपने सवाल का जवाब मिलने पर खुश हो कर बोली।

मगर एक उलझन अभी बाकि थी, उस ने वह भी सामने रख दी।

"मगर इंसान हमेशा हमेशा करेंगे क्या?"

"इंसान अपनी ख़त्म ना होने वाली ज़िन्दगी में अपने रब की ख़त्म ना होने वाली सिफात की खोज और समझ पैदा करेगा, और उसकी हम्द और तस्बीह (स्तुति) करेंगे।

"वह कैसे?" नाएमा ने बड़े शौक से पुछा।

"इस बात को इस दुनिया के विकास की मिसाल से समझो, इंसान यह तजुर्बा कर चुका है कि यह सीमित दुनिया अल्लाह की रचना होने की वजह से अपने अंदर असीमित मुमकिन चीज़ें रखती है, यहाँ जितना कुछ हो चुका है उससे कहीं ज़्यादा होना मुमकिन है।

तुम जानती हो कि इंसान ने अपनी ज़िन्दगी का सफ़र पत्थर के दौर से शुरू किया था, फिर कृषि का दौर आया, उसके बाद औद्योगिक दौर आया और अब इन्फार्मेशन ऐज है। हर दौर में इंसान

ने इसी सीमित दुनिया में रहते हुए ज़िन्दगी को बहतर से बहतर बनाने और उस में नई नई सुविधाएं लाने के लिए और इस दुनिया को ज़्यादा खूबसूरत बनाने के लिए बहुत कुछ खोजा और बनाया है, और यह सिलसिला आज भी जारी है। तुम खुद को कृषि के दौर के किसी आदमी की जगह रख कर देखो तो वो सोच भी नहीं सकता था कि आने वाले कुछ दौर में ही इंसान कितना कुछ बदलव ला देगा। जब इस सीमित दुनिया के कुछ ज़मानों का यह मामला है तो जन्नत की उस दुनिया का क्या मामला होगा जिसे अल्लाह तआला अपनी तमाम सिफात (गुणों) को ज़ाहिर करने के लिए बनाएँगे। इन्ही सिफात के ज़ाहिर होते रहने की वजह से इंसान जन्नत में कमाल की ज़िन्दगी गुजारेंगे। वह नई नई खोज और अविष्कार में बिज़ी रहेंगे, मगर आज के इंसानों की तरह वो उन खोजों और अविष्कारों को पैदा करने वाली हस्ती को नहीं भूलेंगे बल्कि हर खोज पर हर चीज़ पर उसकी तस्बीह (स्तुति) और हर नेमत पर उसका शुक्र अदा करेंगे, शोर्ट में बात यह है कि वहां हर काम मनोरंजन आनंद और एडवेंचर के लिए होगा और हर काम के साथ अल्लाह की तस्बीह (स्तुति) शुक्र और उसका सम्मान करना जारी रहेगा।"

अब्दुल्लाह की बात सुन कर नाएमा के चहरे पर इत्मिनान छा गया, वह आँखें बंद करके बोली:

"मैं कितनी खुश नसीब हूँ कि मेरी शादी आप के साथ हुई है।"

"नाएमा! खुश नसीबी किसी के साथ शादी हो जाना नहीं होता, खुश नसीबी इस काएनात (ब्रह्मांड) के रब का पसंदीदा बंदा बनना है। हम सब इंसान इस काएनात की सबसे खुश नसीब रचना हैं, यह काएनात अल्लाह तआला ने लगभग 14 अरब साल पहले बनाई, यह काएनात इतनी बड़ी है कि अरबों खरबों सितारे और ग्रह इसके सामने ऐसे हैं जैसे एक लाखों पेड़ों के जंगल में एक छोटा सा पत्ता होता है। अल्लाह तआला अपनी इस काएनात का बादशाह अपने किसी पैदा किये हुए जीव को बनाना चाहते हैं उसका करम है कि उन्होंने इसके लिए इंसान को चुना है। नाएमा! हम खुश नसीब हैं कि मुझे और तुम्हें बल्कि हर इंसान को यह मौका मिला है कि हम अपने आप को इस के लायक साबित कर सकें, मगर हकीक़त यह है कि 14 अरब सालों में हमें यह मौका पहली और आखरी बार मिला है, एक बार हमने इसे गवा दिया तो कभी और किसी तरह भी यह मौका दोबारा नहीं मिलेगा।"

अब्दुल्लाह बोल रहा था और नाएमा बहुत ध्यान से सुन रही थी।

"इस मौक़े में से आधी ज़िन्दगी हम गवा चुके हैं, बाकि का भी कुछ भरोसा नहीं, देखो यह ज़िन्दगी..... यह अज़ीम (महान) मौका.... पहला और आखरी चांस बेकार ना हो जाए।"

"मेरे सपने बताते हैं कि ऐसा नहीं होगा।" नाएमा ने अब्दुल्लाह को हौंसला देते हुए कहा।

"नाएमा! समय हर सपने को भुला देता है, हर किताब भुला देता है, हम इंसान शब्द भूल जाते हैं, वादा भी भूल जाते हैं, हमारी याददाश्त बहुत कमज़ोर होती है।"

"तो फिर हम क्या करें?"

"जंग.....हर पल की जंग, अपने जज़्बात अपने तास्सुब (पूर्वाग्रहों) के खिलाफ जंग, अपनी गलत इच्छाओं के खिलाफ, शैतान के मशवरों के खिलाफ जंग।"

"और कहीं गलती हो जाए तो?"

"तौबा कर के फ़ौरन अपने रब की तरफ लौट आओ। यह ज़िन्दगी नहीं एक जंग है, इंसान और शैतान के बीच की जंग, इस जंग से ना हम बाहर रह सकते हैं और ना हार मान सकते हैं। इस जंग में हारना ही हार नहीं बल्कि इस से बचने की कोशिश भी हार है, और हार का मतलब जहन्नम है, जन्नत से महरूमी (वंचित) है।"

यह कह कर अब्दुल्लाह खामोश हो गया। नाएमा भी चुप थी, उसे अब्दुल्लाह की बातों से कुछ याद आ गया था, वह अजीब से लहज़े में बोली:

"आप सच कहते हैं, हमारी याददाश्त बहुत कमज़ोर होती है, हम सपने और किताबें दोनों भूल जाते हैं, शब्दों को और वादों को भुला देते हैं, मैं शादी की खुशियों में यह भूल गई थी कि मुझे गवाही देनी है, अस्र की कसम खा कर यह गवाही देनी है.....रसूलों के ज़माने की कसम खा कर यह गवाही देनी है कि सारे इंसान घाटे में हैं, सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे और एक दुसरे को सच्चाई पर जम जाने और उसमे आने वाली मुसीबतों पर सब्र करने की नसीहत करते रहे, यह होगा.....यह हो कर रहेगा.....वो वक़्त गवाह है.....कसम उस वक़्त की.....कसम उस वक़्त की....."

आखरी शब्द कहते हुए नाएमा की आवाज़ भर्रा गई, उसकी आखों के सामने रसूलों की ज़िन्दगी के वो मंज़र (दृश्य) घूम रहे थे जब अल्लाह की अदालत दुनिया में लगी और मुजरिमों को ज़मीन से मिटा कर वफादारों को ज़मीन का मालिक बनाया गया था।

दूसरी तरफ अब्दुल्लाह एक और दुनिया में था, क़यामत का दिन, जहन्नम और जन्नत के मंज़र, इंसानों को इनाम और सज़ा होने के मंज़र जैसे वह अपनी आखों से देख रहा था।

वह काफी देर तक इन्ही सोचों में गुम रहा, फिर एक पछतावे के साथ बोला:

"मैं भी भूल रहा था नाएमा! मगर मेरे रब ने मुझे याद दिला दिया।"

यह बात कहते हुए अब्दुल्लाह की नज़रों के सामने वह रात थी जब उसे मालूम हुआ था कि नाएमा उसकी ज़िन्दगी से हमेशा के लिए जा रही है।

"तब से मैं यह बात कभी नहीं भूला कि मेरी ज़िन्दगी मेरी ज़िन्दगी नहीं है, यह तो एक मिशन है, लोगों के दिलों से गैरों की बड़ाई निकाल कर अल्लाह की बड़ाई भरने का मिशन, जन्नत की बेमिसाल कामयाबी की खबर लोगों तक पहुँचाने का मिशन, क़यामत के अज़ीम हादसे से पहले लोगों को जगाने का मिशन, रसूलों के मिशन को पूरी दुनिया में फेलाने का मिशन, आखरी रसूल (ﷺ) के पैगाम को हर इंसान तक पहुँचाने का मिशन। क्या तुम इस मिशन में मेरा साथ दोगी?"

अब्दुल्लाह के सवाल के जवाब में नाएमा पूरे इरादे और हिम्मत के साथ बोली:

"मैं इस मिशन में आप के साथ हूँ, और मैं ही क्या अपने रब से सच्ची मुहब्बत रखने वाला और इंसानों का भला चाहने वाला हर मर्द और औरत आप के साथ होगा, यह मिशन हम सब का मिशन होगा, यह मिशन हम सब की ज़िन्दगी होगी।"

.....

हर तरफ ढलती शाम का सुकून फैला हुआ था, समय की रफ़्तार जैसे थम गई थी, ना जाने कितनी देर यह ख़ामोशी रही, फिर नाएमा ने आसमान पर घहरे होते हुए अँधेरे की तरफ देखा और बोली:

"हमें वापस चलना चाहिए, कल सुबह हमें घर लौटना है, ज़िन्दगी शुरू करनी है।"

अब्दुल्लाह ने उसका हाथ पकड़ा और आगे बढ़ते हुए बोला:

"कल हमें ज़िन्दगी नहीं मिशन शुरू करना है, ज़िन्दगी तो जन्नत में शुरू होगी।"

इसके बाद वो दोनों अपनी मंजिल की तरफ बढ़ने लगे।

****

(आखिरी शब्द)

कुरआन मजीद में सारे आलम का रब जिस यकीन के साथ बार बार यह बात दोहराता है कि "क़यामत आकर रहेगी इसमें कोई शक़ नहीं" यह सिर्फ एक दावा नहीं बल्कि एक ज़िन्दा हकीक़त का बयान है। इस दावे की जो सबसे बड़ी दलील कुरआन मजीद में बयान हुई है वह इस नॉविल की शक्ल में बिल्कुल साफ़ (स्पष्ट) हो कर सामने आ चुकी है।

अब यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम कुरआन मजीद के इस बुन्यादी पैगाम और इसकी दलीलों को समझें और उस दिन की तैयारी करें जब बाप अपनी औलाद और माँ अपने दूध पीते बच्चे को भुला देगी।

इस तैयारी का एक हिस्सा तो खुद अपनी इस्लाह (सुधार) है जो अल्लाह की शदीद मुहब्बत और उसके रसूल की सीरत से की जाती है, जबकि दूसरा हिस्सा रसूल के पैगाम को हर मुमकिन इंसान तक पहुँचाना है। यह नॉविल इसी जिम्मेदारी को पूरा करने की एक छोटी सी कोशिश है। कुरआन को समझने की यह कूंजी मेरे पास आप की आमानत थी जो मैंने आप के हवाले करदी है, इस उम्मीद के साथ कि यह अमानत आप एक जिम्मेदारी समझ कर दूसरों तक पहुँचाएँगे।

अच्छी उम्मीदों के....

अबू याहया।

.....

(मेरे कलम से)

आप ने यह कहानी पढ़ी और इसके लिए आपना कीमती वक़्त मुझे दिया इसके लिए मैं आप का शुक्र गुज़ार हूँ।

जब भी कोई आदमी पहली बार कुरआन को समझ कर पढ़ने की कोशिश करता है तो वह कुरआन को ऐसे नहीं पाता जैसे उसने सोचा होता है, मेरे साथ यह हो चुका है इसलिए मुझे इसका पूरा अहसास है। इसकी वजह एक तो यह है कि कुरआन का अंदाज़ ऐसा नहीं है जैसे दूसरी आम किताबों का होता है और दूसरी वजह यह है कि कुरआन मजीद अल्लाह की पहली या एक अकेली किताब नहीं बल्कि आखरी किताब है। यह अपने अन्दर पहली कौमों का इतिहास बयान करती और उनका हवाला देती है, इसलिए ज़रूरी है कि कुरआन को समझने से पहले उसके ज़माने और उससे पहली कौमों का एक सही नक्षा दिमाग में मौजूद हो।

आप ने देखा "क़सम उस वक़्त की" इसी को बहुत आसान कर के बयान कर देती है और कुरआन का जो दूसरा विषय है यानि क़यामत उसको आसानी से "जब ज़िन्दगी शुरू होगी" हमें समझा देती है। इन दोनों किताबों को पढ़ कर कुरआन को समझना बिल्कुल आसान हो जाता है यह तजुर्बा आप इन दोनों कहानियों को पढ़ कर खुद कर सकते हैं।

मेरा इनको आसान हिन्दी में अनुवाद करने का मकसद इसके सिवा कुछ नहीं कि इनकी मदद से आप के लिए कुरआन समझना आसान हो। इसमें जो कुछ भी हक़ बयान हुआ है वो सरासर अल्लाह तआला की तौफीक से है और जितनी भी इसमें गलतियाँ हैं वो सब मेरे अपने नफस की खता हैं।

आपनी नेक दुआओं में मुझे भी याद रखें.... वस्सलाम

मुशर्रफ अहमद।

****